कित्सा-चन्द्रोदय

छठा भाग

लेखक
बाबू हरिदास वैद्य।

कौ.३.

चिकित्सा-चन्द्रोदय

छठा भाग

लेखक

बाबू हरिदास वैद्य

प्रकाशक

हरिदास एण्ड कम्पनी

मुद्रक

सत्यपाल शर्मा,

कान्ति प्रेस, माईथान—आगरा।

पाँचवीं बार १२०० | सन् १९४२ | अजिल्द का मूल्य ३॥) सजिल्द का मूल्य ४)



स्वास्थ्यरक्षा और चिकित्सा-चन्द्रोदय के लेखक एवं नीतिशतक आदि अनेक ग्रन्थों के अनुवादक हरिदास एण्ड कम्पनी के एक मात्र स्वत्वाधिकारी

बाबू हरिदास वैद्य

निवेदन ।

आज इस वृहत्काय ग्रन्थका श्रीगणेश हुए तीन या साढ़े तीन सालसे अधिक नहीं हुए। जब हमने इसे आरम्भ किया था, तब आशा नहीं थी कि हमारे जैसे अल्पज्ञ, मन्दमति और आयुर्वेदसे कोरे लेखककी कृतिका भारतमें इतना आदर और प्रचार होगा; अटक से कटक और काश्मीरसे कन्याकुमारी तक इस ग्रन्थकी माँगोंका ताँता बँध जायगा; इतनी जल्दी हम इस ग्रन्थके नवीन संस्करण होते देख सकेंगे और देशके नामी-नामी विद्वान् इसकी प्रशंसा करेंगे। असल बात यह है कि, जो अभिमान त्याग कर जगदीशके भरोसे पर काम करता है, उसे जगदीश अवश्य साहाय्य प्रदान करते हैं। जिस पर जगदीशकी दया होती है, उसे सफलता होती ही है।

यद्यपि इस ग्रन्थमें हमारा अपना कुछ भी नहीं है, जो है सो पराया है। हम परायी पूँजीके बल खेल खेल रहे हैं; प्राचीन और अर्वाचीन विद्वानोंकी बड़ी मिहनत और खोजसे निकाली हुई अनमोल बातोंको उठा-उठाकर अपने ढँगसे सजा रहे हैं यानी संग्रह कर रहे हैं; अतः हम संग्रहकार हैं और कुछ नहीं। चरक, सुश्रुत और वाग्भट्टके बाद जितने भी वैद्यक ग्रन्थ लिखे गये हैं, वे प्रायः सभी संग्रह ग्रन्थ हैं। विद्वानोंने ऋषि-मुनियोंकी कही हुई अनमोल बातें

घटा-बढ़ाकर और अपने-अपने अनुभवकी पुट लगाकर अपने-अपने ग्रन्थोंमें रख दी हैं। हम भी उन्हीं विद्वानोंकी राहपर चले हैं। पर भेद इतना ही है, कि वे धुरन्धर विद्वान् थे और हम उनकी तुलनामें परले सिरेके अज्ञ और अनाड़ी हैं। वे आयुर्वेदके पारगामी थे और हमें आयुर्वेदके सिर-पैरकी भी ख़बर नहीं; वे प्राणाचार्य और भिषक्चूड़ामणि थे और हम साधारण या निम्न श्रेणीके वैद्य भी नहीं। इतने पर भी हमारे जैसे क्षुद्रातिक्षुद्र लेखककी कृतिकी इतनी इज्ज़त और क़दर हो रही है और देशके हज़ारों सहृदय [illegible] साधारण लोग मुक्त कंठसे प्रशंसा कर रहे हैं, क्या यह कम आश्चर्य की बात है ? मतलब यह कि, हम किसी योग्य नहीं। जो हो रहा है, वह जगदीशकी कृपासे ही हो रहा है।

हमारा इरादा छठे और सातवें भागोंको गत सितम्बरमें ही निकाल देनेका था। इसी लिए पुस्तकें दो प्रेसोंमें दी गईं, पर बीच-बीचमें हमें आधि-व्याधियोंने बहुत सताया। इससे कई बार काम रोक देना पड़ा। लेकिन जब देखा कि आफतें पीछा न छोड़ेंगी, तब फिर काम जारी करना पड़ा और प्रूफ वग़ैरःका भार दूसरे लोगों पर छोड़ना पड़ा। हमने रोग-शय्यासे उठकर देखा, तो मालूम हुआ कि ग्रन्थ तो ठीक छप गये हैं; पर प्रूफ संशोधन-सम्बन्धी कुछ भूलें यत्र-तत्र रह गई हैं। उनमेंसे आधी भूलोंके लिये तो प्रूफरीडर अपराधी हैं, पर आधीसे अधिकके लिए वे अपराधी नहीं। वे भूलें छपते समय टाईप टूट जाने या उठ जानेसे हुई हैं। ऐसी भूलें प्रायः सभी पुस्तकोंमें होती रहती हैं। इस बीमारीकी दवा नहीं। अधिकांश भूलें संस्कृत श्लोकोंमें हुई हैं। पर उनसे पाठकोंकी उतनी हानि नहीं, इससे हमें दुःख होने पर भी सन्तोष है। फिर भी, हम उनके लिए पाठकोंसे बारम्बार क्षमा प्रार्थना करते हैं। आशा है, सहृदय पाठक हमें क्षमा प्रदान करके [illegible] उदारताका परिचय देंगे।

औषधियाँ तैयार करने, काढ़ा औटाने, चूर्ण बनाने, तेल और घी पकाने, अनेक तरहके विष-उपविष शोधने, चूर्ण वगैरःकी कितनी मात्रा सेवन कराने और किस समय सेवन कराने तथा अनुपान तजवीज करनेके नियम वगैरः हम पहलेके भागोंमें लिख आये हैं; लेकिन अनेक पाठकोंके यह समझाने से, कि जो कोई सभी भाग न ख़रीदेगा, उसे ये नियम कैसे मालूम होंगे इत्यादि—हमने पुनरुक्ति [illegible]ार छोड़कर, इस छठे भागके अन्तमें भी, चन्द ज़रूरी-ज़रूरी नियम-क़ायदे लिख दिये हैं, पर बिल्कुल नये रूपमें। उनमें कितनी ही बातें ऐसी भी हैं जो पहले नहीं लिखी गईं, अतः पाठक उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ें और समय पर दवाएँ तैयार करनेमें उनसे मदद लें।

कलकत्ता,
५ जनवरी, सन् १९२५ ई०।

विनीत—
हरिदास।

निवेदन ।

इस समय पृथ्वी पर घोर विश्वव्यापी महासमर चल रहा है। एक तरहसे महाप्रलय सी मची हुई है। किसी देशका माल दूसरे देश में नहीं आता। इसीसे काग़ज़ नहीं मिलता और काग़ज़ बिना पुस्तकें कैसे छप सकती हैं? हमें इस छठे भागके छपाने को काग़ज़के लिये बड़ी आफतें उठानी पड़ीं, तब कुछ काग़ज़ हाथ आया है और छठा भाग छपकर तैयार है। इस समय छपाई के सिवा काग़ज़में बहुतसा धन व्यय करना पड़ा है। आशा है, जनता हमें घाटा न खाने देगी।

आज सन् १९४२ ई० और १९९८ विक्रमी है, हमारी उम्र भी सत्तर तक पहुँच गई है। इस बार तो हमने स्वयं इस भागके प्रूफ तक देखे हैं, आगे ऐसी आशा नहीं है। जगदीशकी जो इच्छा होगी वही होगा। इस देशमें जगदीश फिर शान्ति स्थापन करें, जिससे यह देश फिर फले-फूले। किसकी हार और किसकी जीत होगी, इसे भगवान् के सिवाय कोई नहीं जानता। सदा धर्मकी जय होती आई है। जिधर धर्म होता है उधर ही जगदीश कृष्ण होते हैं और जिधर वह होते हैं उधरकी ही जय होती है।

मथुरा
५-२-१९४२

निवेदक
हरिदास वैद्य।

विषय-सूची

छठा भाग ।

पहला अध्याय ।

—

छठा अध्याय।

सातवाँ अध्याय।

❀ समाप्त ❀

॥ श्रीः ॥

चिकित्सा-चन्द्रोदय

छठा भाग

पहला अध्याय

खाँसी रोगका वर्णन ।

खाँसी किसे कहते हैं ?

जब मनुष्यके मुँहसे काँसीके फूटे हुए बर्तनकी जैसी आवाज निकलती है—वह धों-धों या खों-खों करता है, तब कहते हैं कि खाँसी हुई है। खाँसीको संस्कृत में "कास" अँगरेजीमें "काफ़" और बोलचालकी जबानमें "खाँसी" कहते हैं।

खाँसीका विशेष सम्बन्ध किस अंगसे है ?

खाँसीका विशेष सम्बन्ध फैंफड़ोंसे है; पर फैंफड़ोंके सिवा उन अंगोंसे भी है, जो श्वास लेनेमें फैंफड़ोंके साथी हैं। मतलब यह है कि, दिमाग़के लिए जिस तरह छींक है; उसी तरह फैंफड़ोंके

लिए खाँसी है। दिमाग़ छींकसे अपनी तकलीफको दूर करता है और फैंफड़े खाँसीसे अपने कष्टको दूर करते हैं। खुलासा यह है कि, फैंफड़े और उनसे सम्बन्ध रखने वाले श्वास-यंत्रोंमें जब कुछ ख़राबी होती है, प्रायः तभी खाँसी होती है।

नोट—फैंफड़ों और उनसे सम्बन्ध रखने वाले अंगोंके सम्बन्धमें हमने पहले भागमें लिखा है। पाठकोंको उनके सम्बन्धकी बातें अच्छी तरह याद कर लेनी चाहियें। बिना उनका ज्ञान प्राप्त किये, खाँसी और श्वासकी अच्छी चिकित्सा हो नहीं सकती।

खाँसीके निदान कारण।

आयुर्वेद-ग्रन्थोंमें लिखा है,—श्वासके साथ धूल और धूआँके श्वास-नलीमें जाने, जल्दी-जल्दी खानेके कारण खाने-पीनेकी चीजों के श्वास-नलीमें होकर अन्दर जाने, रूखे पदार्थ ज़ियादा खाने, मल-मूत्र और छींक आदि वेगोंके रोकने एवं ज़ियादा मिहनत करने से खाँसी होती है। "वैद्यविनोद" में लिखा है:—

धूमोपघाताद्रजसो व्यायामाद्रुक्षभोजनात्।
विमार्ग गत्वादन्नस्य क्षवथोश्च विधारणात्।
उदाननुगतः प्राणो भग्न कांस्यसम स्वरः।
निरोति वक्त्रा दुष्टः सन सकासो मुनिभिर्मतः॥

धूआँ लगनेसे, मुँहमें धूल भर जानेसे, कसरत या मिहनत करनेसे, रूखा अन्न खानेसे, भोजनके समय अन्नके विमार्ग*

* हमारे गलेमें दो नालियाँ हैं:—(१) श्वास-नली, और (२) अन्न-प्रणाली। श्वास-नलीसे हम साँस लेते हैं और अन्न-प्रणालीसे अन्नको पेटमें पहुँचाते हैं; यानी हमारे शरीरमें हवा और राहसे जाती है और भोजन-पान दूसरी राह से। अगर कोई आदमी जल्दी-जल्दी खाता है, तो खाये-पिये पदार्थ, अन्नकी नलीमें न जाकर, श्वास-नलीमें चले जाते हैं। इसीको विमार्गमें जाना कहते हैं। ऐसा होनेसे खाँसी होती है।

में जानेसे और छींकके रोकनेसे—"प्राणवायु" कुपित हो जाता है। कुपित हुआ प्राणवायु, उदान वायुसे मिलकर, फूटे हुए काँसी के वर्तनकी जैसी आवाज़ करता हुआ बाहर निकलता है। इस आवाज़को ही मुनि लोग "खाँसी" कहते हैं।

खुलासा यों समझिये कि, ऊपर लिखे हुए कारणोंसे वायु कुपित होता है। एक दोष दूसरे दोषको कुपित करता है। इस नियम के अनुसार, कुपित 'वायु' कफ और पित्तको कुपित करता है। उस समय काँसीके फूटे हुए बासनमें चोट लगनेसे जैसी आवाज़ निकलती है, वैसी ही आवाज़ मनुष्यके गलेसे निकलती है। उस आवाज़का निकलना ही खाँसीका साधारण लक्षण है।

हिकमतसे खाँसीके कारण।

हिकमतकी किताबोंमें लिखा है कि, खाँसी फैंफड़ों और उन अंगोंकी गति है, जो श्वास लेनेमें उसके साथी हैं। खाँसीके यों तो बहुतसे कारण हैं, पर निम्न-लिखित कारण मुख्य हैंः—

(१) फैंफड़ोंके मुख या मांसमें गरमी-सर्दी होना।

(२) फैंफड़ोंमें घाव या फुन्सियाँ होना।

(३) श्वास-नलीमें धूल या धूआँ आदिका जाना।

(४) खट्टी, कसैली या तेज़ चीजें खाना।

(५) खाये-पिये पदार्थोंका ग़फ़लतसे श्वास मार्गमें जा पड़ना।

(६) श्वासवाही अङ्गोंके निरोग रहनेपर भी, आमाशय, नरखरा, तिल्ली और जिगर आदि में ख़राबी होना।

नोट—यद्यपि आयुर्वेदमें खाँसीका होना और तरहसे लिखा है, पर खाँसी होनेके कारण हिकमत और वैद्यक दोनोंमें एकही मिलते हैं। तीसरे, चौथे और पाँचवें कारण हमारे यहाँ भी यही लिखे हैं। फैंफड़ोंमें घाव होनेसे क्षतज खाँसी होती है। वायुसे वातज, गरमीसे पित्तज और सरदीसे कफज खाँसी होती है। हमारे यहाँ लिखा है,अपने कारणोंसे पहले वायु—प्राणवायु कुपित होता है, फिर

वह पित्त और कफको कुपित करता है, तब खाँसी होती है। हिकमतमें लिखा है, फैंफड़ोंमें गरमी-सर्दी पहुँचने या घाव होने अथवा आमाशय, तिल्ली और जिगर आदिमें खराबी होनेसे खाँसी होती है। यद्यपि मतलब एक ही निकलता है, तो भी मानना पड़ेगा कि, हिकमतका निदान, खाँसीके सम्बन्धमें, हमारे यहाँसे अच्छा है। वास्तवमें, खाँसीका सम्बन्ध फैंफड़ोंसे ही है।

डाक्टरी से खाँसी के कारण।

डाक्टरीमें खाँसीके निम्न-लिखित कारण लिखे हैं:—

(१) शरीरकी कमजोरी। (२) अति मैथुन।
(३) बहुत मिहनत। (४) जुकाम होना।
(५) सर्दी। (६) तेज़ चीज़ सूँघना।
(७) मौसमका बदलाव। (८) बुरी हवा वगैरः।

डाक्टरीमें पहले छै कारणोंसे क्षयज खाँसीका होना लिखा है और लिखा है, कि क्षयज खाँसी कोढ़की तरह पुश्तैनी भी होती है। सातवें और आठवें कारणसे "हूपिङ्ग काफ़" या सूखी खाँसी का होना लिखा है।

खाँसी की सम्प्राप्ति।

"हारीत संहिता"में लिखा है—जब कण्ठमें रहने वाला 'उदान वायु, ऊपरकी ओर विपरीत हो जाता है और कफके साथ 'प्राण-वायु'का मेल हो जाता है, तब हृदयमें जमा हुआ कफ खाँसीके साथ कण्ठमें आ जाता है; इसीसे खाँसी चलती है। हारीत मुनि कहते हैं:—

न वातेन विना श्वासः,
कासो न श्लेष्मणा विना।
न रक्तेन विना पित्तं,
न पित्तरहितः क्षयः॥

बिना वायुके श्वास रोग नहीं होता, बिना कफके खाँसी नहीं होती, बिना रक्तके पित्त नहीं होता और बिना पित्तके क्षय नहीं होता। यह सिद्धान्त है। इसे वैद्यको खूब याद रखना चाहिये।

खुलासा यह है कि, बिना वायुके कोप किये श्वास रोग नहीं होता, बिना छातीपर कफ जमे खाँसी नहीं होती, रक्तके बिना पित्त नहीं बढ़ता और बिना पित्तके कुपित हुए क्षय रोग नहीं होता।

मतलब यह है कि, खाँसीके इलाजमें वैद्यको 'कफ' का पूरा ध्यान रखना चाहिए; क्योंकि जब तक छातीपर कफ आता रहेगा, खाँसी किसी दवासे आराम न होगी। यही वजह है कि, जुकाम या नजलेकी खाँसीका आराम करना कठिन हो जाता है। न जुकाम जाता है और न खाँसी पीछा छोड़ती है। मूर्ख वैद्य खाँसी नाशार्थ गरम-सर्द दवाएँ दिये जाते हैं; पर धातुकी ओर ध्यान नहीं देते, इससे उल्टी खाँसी बढ़ती रहती है; क्योंकि बिना जुकामके मिटे खाँसी जा नहीं सकती, और जुकाम बिना धातु ठीक किये आराम हो नहीं सकता। जब तक जुकाम रहेगा, छातीपर कफ जमा होता रहेगा। जब तक कफ छातीसे अलग न होगा, खाँसी कभी न जायगी। खाँसीके बहुत दिनों तक बने रहनेसे क्षय और शोष रोग हो जायेंगे। फिर तो रोगी सूख-सूखकर मर जायगा।

खाँसीके इलाजमें कफका ध्यान रखना परमावश्यक है, क्योंकि बकौल हारीत मुनिके खाँसीकी जड़ "कफ" और श्वासकी जड़ "वायु" है। बहुतसे अज्ञानी वैद्य कफ और वायु नाश करनेके लिए दमादम गरम दवाएँ और गरम रस दिये जाते हैं, जिससे कफ सूखकर जम जाता है। उस हालतमें, मरीज़को खाँसते समय बड़ी तकलीफ होती है और हर समय कफ घर-घर घर-घर किया करता है। अव्वल तो ऐसा सूखा हुआ कफ बड़ी मुश्किलसे निकलता है और यदि निकलता है तो बड़ा कष्ट होता है। इस दशामें, रोगीको गरम दवा और गरम पथ्य देना जान-बूझकर मारना है। जब तक कफ छातीसे छूटकर मुँह या गुदा द्वारा न निकल जाय, गरम दवा न देनी चाहिये, बल्कि कफको छुड़ाने और निकालने वाली दवा देनी चाहिये।

हिकमतसे खाँसीकी सम्प्राप्ति।

तिब्बे अकबरी आदि ग्रन्थोंमें लिखा हैः—

(१) फैंफड़ोंके मुँह या मांसमें, सादा गरम दुष्ट प्रकृति पैदा हो जानेसे खाँसी हो जाती है।

(२) पित्त वाले खूनके फैंफड़ोंमें आ जाने और फैंफड़ोंके उससे भर जानेसे खाँसी आने लगती है, क्योंकि वह खून खिंचाव और जलन करता है। उस समय तबियत उस जलन और खिंचाव के दूर करनेको खाँसी उठाती है।

(३) जब कोई गरम या पतली चीज़, सदा, सिरकी तरफ़से उतरकर फैंफड़ोंमें खुजली और जलन करती है, तब खाँसी हो जाती है।

(४) फैंफड़ोंमें सादा शीतल प्रकृति पैदा होनेसे खाँसी चलने लगती है।

(५) जब सिरसे मवाद उतरकर, फैंफड़ोंमें गाढ़ा और चेपदार होकर रुक जाता है, तब खाँसी चलने लगती है।

(६) फैंफड़ों और छातीकी तरीसे भी खाँसी हो जाती है, पर ऐसी खाँसी बूढ़ों और तर प्रकृति वालोंको जियादा होती है।

(७) फैंफड़ोंमें धूल या धूआँ भर जाने या ज़ोरसे चिल्लानेसे खरखरापन होकर खाँसी हो जाती है।

(८) फैंफड़ोंकी खुश्की और गरमीसे खाँसी चलने लगती है।

(९) फैंफड़ों या छातीके घाव, फैंफड़ों और छातीकी सूजन, छातीके पर्दोंकी सूजन, दिल और फैंफड़ोंके बीचके पर्देकी सूजन तथा जिगर, तिल्ली और नरखरेकी सूजनसे भी खाँसी हो जाती है।

(१०) फैंफड़ोंमें फुन्सियाँ होनेसे खाँसी हो जाती है।

(११) आमाशयके संयोगसे भी खाँसी हो जाती है।

खाँसीके पूर्व्वरूप।

जब किसीको खाँसी होने वाली होती है, तब मुँह और कंठकी नलीमें जौके छिलकेसे भरे जान पड़ते हैं, गलेमें खुजली चलती है और कोई चीज निगलते समय कंठमें दर्द होता है।

"चरक" में लिखा है, गले और मुंहमें काँटे-से भरे रहते हैं। कंठ में खाज आती है और कंठ सूखनेकी वजहसे खाया हुआ अन्न अटक जाता है।

सुश्रुत कहते हैं, कंठ में खाज चलती है, भोजन कुछ-कुछ रुकता है, गले और तालू लिपे हुएसे रहते हैं, आवाज़ भारी और भरभराई सी हो जाती है, भोजनपर अरुचि और अग्नि मन्द हो जाती है।

खाँसीकी क़िस्में।

चरक, सुश्रुत और वाग्भट्ट प्रभृति सभी आचार्योंने पाँच प्रकार की खाँसी लिखी हैं, केवल हारीत मुनिने आठ प्रकारकी लिखी हैं। "चरक" में लिखा है:—

वातादिभ्यस्त्रयोये च क्षतजः क्षयजस्तथा।
पञ्चैतेस्युर्नृणां कासावर्द्धमानाः क्षयप्रदः॥

वातज, पित्तज, कफज, क्षतज और क्षयजके भेदसे मनुष्यको पाँच तरहकी खाँसियाँ होती हैं। इन पाँचोंमें से पहलीसे दूसरी उत्तरोत्तर प्रबल होती हैं और क्रमसे बढ़कर शरीरका क्षय करती हैं। मतलब यह कि खाँसी पाँच तरहकी होती हैं:—

(१) वातज। (२) पित्तज।
(३) कफज। (४) क्षतज।
(५) क्षयज।

नोट—हारीतने सन्निपात्तज, वातपित्तज और कफ-पित्तज ये तीन अधिक लिखी हैं; पर इन तीनोंके लक्षण क्षयज काससे मिलते हैं; इसीसे और वैद्योंने ये तीन नहीं लिखी हैं।

सब तरहकी खाँसियोंके निदान लक्षण ।

वातज खाँसीका वर्णन ।

निदान या कारण ।

"चरक" के मतानुसार वातज खाँसीके निम्न-लिखित कारण हैं:—

(१) रूखे, शीतल और कसैले पदार्थ खाना ।

(२) कम खाना ।

(३) एक ही रस खानेकी आदत रखना ।

(४) बहुत ही ज़ियादा मैथुन करना ।

(५) मलमूत्रादि वेगोंको रोकना ।

(६) ज़ियादा मिहनत करना ।

वातज खाँसीके लक्षण ।

(१) हृदय, कनपटी, पसली, पेट, छाती और सिरमें दर्द होता है ।

(२) कुपित वायु छाती, कंठ और मुखको सूखा रखता है ।

(३) रोएँ खड़े हो जाते हैं ।

(४) ग्लानि होती है ।

(५) खाँसीकी आवाज़ ज़ोरदार होती है ।

(६) मोह होता है ।

(७) मुँहकी कान्ति या रौनक़ बिगड़ जाती है ।

(८) बल, ओज, इन्द्रियाँ और स्वर क्षीण हो जाते हैं ।

(९) गला बँधा रहता या बैठ जाता है ।

(१०) नींद-सी आयां करती है ।

(११) स्वर फटा रहता है।

(१२) सूखा कफ गलेमें लिहसा रहता है।

(१३) सूखी खाँसी आती है, जिसमें कफका नाम भी नहीं रहता। अगर कफ निकलता है, तो बड़ी कठिनतासे निकलता है और उसके निकलने पर रोगीको चैन आजाता है। कफके सूख जाने या कम हो जानेका कारण "कुपित वायु" है।

(१४) चिकने, खट्टे, नमकीन और गरम पदार्थ खाते ही "वातज" खाँसी शान्त हो जाती है; लेकिन भोजनके पचते ही वायु फिर बलवान हो जाता है और खाँसी आने लगती है।

नोट—वातज खाँसीको साधारण लोग "सूखी खाँसी" कहते हैं। इसकी मुख्य पहचान ये हैं:—

(१) कफ बिल्कुल नहीं आता। अगर कभी आता है, तो रोगीको आराम आ जाता है।

(२) चिकने, खट्टे, नमकीन और गरम पदार्थ खाते ही खाँसी दब जाती है और भोजन पचते ही फिर उठने लगती है।

(३) छाती, कनपटी, पसली और सिरमें दर्द होता है।

सूचना—ऐसी खाँसीमें दवाओंके मेलसे पकाये हुए घी, तैल अथवा अवलेह पीने-चाटनेसे जल्दी लाभ होता है। जैसे "पिप्पल्यादि घृत"।

सूखी खाँसीपर हिकमतका मत।

हिकमतमें सूखी खाँसी कई तरहसे लिखी है:—

(१) अगर कोई गरम और पतली चीज, सिरसे उतारकर, फैंफड़ोंके मुँहमें जलन और खुजली करती है, तो सूखी खाँसी आने लगती है। रातको और सोनेके बाद इस खाँसीका जोर बढ़ता है। जल्दी ही इसका इलाज न करनेसे फैंफड़ोंमें घाव हो जाते हैं।

२

(२) फैंफड़ोंपर गरमी और खुश्की पहुँचनेसे जो खाँसी आती है, उसमें भी मवाद या कफ नहीं आता। भूख-प्यास और चलने फिरनेके समय यह खाँसी बढ़ जाती है, क्योंकि इनसे तरी नष्ट हो जाती है। तर चीजोंके खानेसे यह खाँसी दब जाती है। इस खाँसीवालेका श्वास तंग हो जाता है, खाँसनेपर कफ नहीं आता, शरीर दुबला हो जाता है, और नाड़ी जल्दी-जल्दी चलने लगती है। जब यह बढ़ जाती है और दिलपर गरमी पहुँच जाती है, तब "तपेदिक" या "यक्ष्मा" रोग हो जाता है।

(३) जो खाँसी छातीके घाव, फैंफड़ोंके ज़ख्म, छाती और फैंफड़ोंकी सूजन, दिल और फैंफड़ेके बीचके पर्देकी सूजन, तथा जिगर, तिल्ली और नरखरेकी सूजनसे पैदा होती है, वह भी सूखी ही होती है। उसमें दर्द और खिंचाव होता है। उसका मेल हमारे यहाँ की क्षयज या क्षतज खाँसी से खाता है।

डाक्टरी मत।

हूपिंग काफ—सूखी खाँसी।

यह खाँसी दो वर्षकी उम्रसे प्रायः सोलह सालकी उम्र तक होती है। कभी-कभी बड़ी अवस्थावालोंको भी यह खाँसी हो जाती है। यह खाँसी देरसे उठती है और मुँहसे थोड़ा ल्हेसदार पानी आनेपर शान्त हो जाती है। खाँसीके साथ लम्बी सी आवाज़ निकलती है और मुँह खुल जाता है। कभी-कभी यह वबाकी तरह फैल जाती है। इसका कारण ज़ुक़ाम, बुरी हवा या ऋतुका बदलना है।

नोट—जिस तरह वातज खाँसी वायुके कोपसे होती है, उसी तरह हूपिंग काफ भी वायुके कोपसे होती है। डाक्टर लोग इस खाँसीमें टिंचर स्टील यानी

मुरक्कवात फौलाद देते हैं। अथवा २।३ रत्ती हैडरेट आफ क्लोरल शहदमें देते हैं। खाँसीके दस दिनकी पुरानी होनेपर, जैतूनका तेल ६ माशे, रोगन बलसान ३ माशे और लौंगका तेल दो बूँद मिलाकर छाती पर मलनेकी राय देते हैं। आकके फूलोंके जीरेमें लौंग १ तोले, कालीमिर्च १ तोले और सफेद कत्था १ तोले मिला-पीस और चने बराबर गोलियाँ बनाकर चूसनेसे भी यह आराम होजाता है।

पित्तज खाँसीका वर्णन।

निदान या कारण।

पित्तकी खाँसीके निदान या कारण ये हैं:—

(१) कड़वे, गरम, दाहकारी, खट्टे, खारी पदार्थ अधिक खाना।

(२) आग और धूप जियादा सेवन करना।

पित्तज खाँसीके लक्षण।

पित्तकी खाँसी होनेसे रोगीमें नीचे लिखे चिह्न पाये जाते हैं:—

(१) खाँसी आनेसे पीला और चरपरा पित्त गिरता है अथवा पीला कफ आता है या पित्त-मिला कफ आता है।

(२) आँखें, नाखून, कफ और चेहरा ये पीले हो जाते हैं।

(३) मुँहका जायका कड़वा या चरपरा-सा हो जाता है।

(४) बुखार चढ़ आता है या बुखार आयेगा, ऐसा मालूम होता है।

(५) मुँह सूखा रहता है और प्यास बहुत लगती है।

(६) गरमी बहुत मालूम होती है।

(७) कण्ठ या गलेमें जलन मालूम होती है।

(८) खाँसीके वेगके निरन्तर रहनेसे तारेसे चमकते दीखते हैं।

(९) मूर्च्छा या बेहोशी होती है।

(१०) चक्कर या भौंर आती हैं।

(११) पित्त और ख़ूनकी क्षय होती हैं, यह वाग्भट्टका मत है।

(१२) आवाज़ बिगड़ जाती है।

(१३) नशा-सा बना रहता है।

नोट—पित्तज खाँसीको साधारण लोग गरमीकी खाँसी कहते हैं। इसकी मुख्य पहिचान ये हैं—

(१) छाती या गलेमें जलन होना।

(२) हल्का-हल्का ज्वर रहना।

(३) मुँह सूखना।

(४) मुँहका स्वाद कड़वा रहना।

(५) प्यास बहुत लगना।

(६) खाँसते समय गरमी लगना।

(७) कड़वा और पीला कफ निकलना।

पित्तकी खाँसीपर हिकमत।

हिकमतमें कई प्रकारकी खाँसी लिखी हैं:—

(१) फैंफड़ोंमें सादा गरम प्रकृति पैदा हो जानेसे जो खाँसी होती है, उसमें प्यास बहुत लगती है, छातीमें कुछ भारीपन मालूम होता है, जो गरमी पहुँचनेसे बढ़ जाता है। ऐसी खाँसीमें ईसबगोलका लुआब या ख़मीरा बनफ़शा खिलाना और कोई लेप करना अच्छा है।

(२) पित्तवाले ख़ूनके फैंफड़ोंमें आ जाने और उससे उनके भर जानेसे जो खाँसी होती है, उसमें खिंचावट और जलन होती है। श्वास बड़ा और गरम होता है। चेहरा लाल हो जाता है। कफ नहीं आता, क्योंकि मवाद पतला होता है। कभी-कभी पित्त आता है और ज़ोरकी खाँसी होनेसे मवाद भी आता है। इस खाँसीमें

जिगरकी गरमी शान्त करना और काढ़े वग़ैरः पिलाकर तबियतको नर्म करना अच्छा है।

(३) वह खाँसी जो पित्तवाले खून के फुन्सियाँ पैदा करनेसे होती है, उसमें नाड़ी जल्दी-जल्दी चलती है, और पेशाब गरम होता है। उसमें सरदीसे लाभ और गरमीसे हानि होती है। उसमें पित्तनाशक जुलाब देना अच्छा है।

कफज खाँसीका वर्णन।

——::❀::——

निदान या कारण।

कफज खाँसीके निम्नलिखित कारण हैं:—

(१) भारी, अभिष्यन्दी और मीठे पदार्थ खाना।

(२) मिहनत न करना।

(३) दिनमें सोना।

कफज खाँसीके लक्षण।

कफज खाँसीके ये लक्षण हैं:—

(१) अग्नि मन्द हो जाती है।

(२) भोजनपर रुचि नहीं होती।

(३) वमन या कय होती हैं।

(४) पीनस या जुकाम होता है।

(५) रोएँ खड़े हो जाते हैं।

(६) मुँहका स्वाद मीठा रहता है।

(७) मुँह कफसे लिहसा रहता है।

(८) शरीर कफसे भरा जान पड़ता है।

(९) खाँसीमें पिलाई लिये सफेद, गाढ़ा और चिकना कफ निकलता है।

(१०) शरीर भारी रहता है।

(११) खाँसते समय छाती कफसे भरी जान पड़ती है।

(१२) उबकियाँ आती हैं। मुँहसे पानी और थूक गिरता है, पर अन्न बाहर नहीं आता।

(१३) हृदयमें अत्यन्त वेदना होती है। अथवा हृदय ऐंठता है।

(१४) निद्रा या ऊँघ आती है।

(१५) शरीरमें जड़ता होती है।

(१६) चक्कर आते हैं।

नोट—कफज खाँसीको साधारण लोग कफकी खाँसी या तर खाँसी कहते हैं। उसके मुख्य लक्षण ये हैं:—

(१) मुँहमें कफ भरा रहना या गला कफसे भरा जान पड़ना।

(२) सिरमें दर्द होना।

(३) गले या शरीरमें खाज सी आना।

(४) बहुत ही खाँसनेसे गाढ़ा-गाढ़ा कफ निकलना।

हिकमतसे कफज खाँसी।

(१) फैंफड़ों और छातीकी तरीसे खाँसी आती है। ऐसी खाँसी बूढ़ों और तर प्रकृति वालोंको होती है। उसमें कफ बहुत निकलता और गलेमें चिपटा रहता है। छातीमें खरखराहट होती है। वह खाँसी नींदमें और जागनेके बाद बहुत चलती है।

(२) फैंफड़ोंमें सरदी पहुँचनेसे एक खाँसी होती है। उसमें प्यास कम लगती है। उसमें गरमीसे लाभ और सरदीसे हानि होती है।

क्षतज खाँसीका वर्णन।

निदान या कारण।

क्षतज खाँसी होनेके निम्नलिखित कारण हैं:—

(१) जियादा मिहनत करना।
(२) अपने बल-बूतेसे जियादा बोझ उठाना।
(३) अत्यन्त मैथुन करना।
(४) बहुत चिल्ला कर पढ़ना।
(५) बहुत पैदल चलना।
(६) घोड़े-हाथियोंसे ज़ोर करना।
(७) अपनेसे अधिक बलवानसे लड़ना।

सम्प्राप्ति।

ऊपर लिखे कारणोंसे जब छाती या फैंफड़ोंमें चोट लगती या सदमा पहुँचता है, तब उनमें ज़ख्म हो जाते हैं। उस समय मनुष्यको खाँसी आती है और उसमें खून-मिला कफ विशेष आता है।

अथवा यों समझिये, कि बहुत मिहनत करने, अत्यन्त मैथुन करने या बहुत भारी बोझ उठानेसे रूखे आदमीका वायु कुपित हो जाता है। कुपित हुआ वायु, छाती और फैंफड़ोंको सख्त करके, उनमें घाव पैदा कर देता है, तब खाँसी आने लगती है।

जब तक छाती या फैंफड़ोंमें घाव नहीं होते—केवल सख्ती और सूजन रहती है, मनुष्यको सूखी खाँसी आती है, जब फैंफड़ों और छातीमें घाव हो जाते हैं, कफके साथ खून आने लगता है।

क्षतज खाँसीके लक्षण।

जब फैंफड़ोंमें क्षत या घाव हो जाते हैं, तब नीचे लिखे हुए लक्षण देखनेमें आते हैं:—

(१) खून-मिला कफ खाँसीमें आता है।

(२) कण्ठमें वेदना होती है। गला खरखर करता है।

(३) छातीमें सूई चुभानेका सा दर्द होता है।

(४) ऐसा जान पड़ता है, मानो कोई छातीको चीरता है।

(५) छातीमें ऐसा दर्द होता है, कि हाथ नहीं लगाया जाता। दर्दके मारे आदमी बेचैन हो जाता है।

(६) जोड़ोंमें दर्द या सन्धियोंमें फूटनी होती है।

(७) ज्वर चढ़ता है।

(८) प्यासका जोर रहता है।

(९) साँस चलता है।

(१०) आवाज़ बिगड़ जाती है।

(११) रोगी कबूतरकी तरह कुड़कुड़ाता या अव्यक्त शब्द निकालता है।

(१२) पसलियोंमें दर्द होता है।

(१३) कँपकँपी आती है।

(१४) वीर्य, रुचि, बल और वर्ण नष्ट हो जाते हैं।

(१५) क्षीण हुए मनुष्यके खून-मिला पेशाब आता है।

(१६) पीठ और कमर जकड़ जाती है।

नोट—नं० ११ तकके लक्षण सभी आचार्योंने लिखे हैं; पर नं० १२ से १६ तकके लक्षण वाग्भट्टजीने विशेष लिखे हैं। जब खूनकी कय होती हैं, खून-मिला पेशाब होता है, पसलियोंमें दर्द होता है, कमर और पीठ जकड़ जाती हैं तब रोग असाध्य समझा जाता है।

उरःक्षत, सिल और क्षतज खांसीके लक्षण सर्वथा एक ही हैं । उरःक्षत के सम्बन्धमें हमने पाँचवें भाग में विस्तारसे लिखा है, पाठकोंको उसे भी देख लेना ज़रूरी है ।

हकीमी मत ।

जियादा खाँसी आनेसे, चोट लगनेसे, गिर पड़नेसे, धक्का लगने से, किसी रगका मुँह खुल जाने या टूट जानेसे और फैंफड़ोंमें घाव हो जानेसे, सिल, उरःक्षत या क्षतज खाँसी होती है ।

लक्षण ।

(१) हर समय धीमा-धीमा ज्वर बना रहता है, तपेदिक या क्षय के सारे चिन्ह प्रकट हो जाते हैं ।

(२) गाल लाल हो जाते हैं, खासकर ज्वरकी दशा में ।

(३) खाँसनेसे पीप निकलता है ।

(४) कभी-कभी रातको या दूसरे समय पसीने आते हैं ।

अन्तिम दशा ।

(५) जब शरीरका क्षय अन्तिम दशाको पहुँच जाता है और रोगीका अन्त समय आ जाता है, तब, तपेदिककी तरह, नाखून शीतल हो जाते हैं और पाँव की पीठ सूज जाती है ।

(६) पीपमें फैंफड़े के टुकड़े आते हैं ।

(७) जो दोष निकलता है, वह बहुत गाढ़ा होकर निकलता-निकलता बन्द हो जाता है । मूर्ख हकीम समझता है, कि रोगीको आराम है; पर वह चार दिनसे अधिक नहीं जीता ।

नोट—बहुधा ऐसा होता है, कि फैंफड़ेके घावोंके अन्तमें, खांसी पैदा होकर साफ खून आने लगता है । अगर इस दशामें खांसी और खून को बन्द करते हैं, तो खून फैंफड़ों में रुककर रोगी को मार डालता है । अगर बन्द नहीं करते, तो खूनके बहुत निकलनेसे भी रोगी मर जाता है ।

क्षयज खाँसीका वर्णन।

निदान या कारण।

(१) विषम भोजन।
(२) प्रकृति-विरुद्ध भोजन।
(३) अत्यन्त मैथुन।
(४) मलमूत्र और अधोवायु रोकना।
(५) बहुत ही चिन्ता-फिक्र करना।

सम्प्राप्ति।

ऊपर लिखे कारणोंसे मनुष्यकी जठराग्नि बिगड़ जाती है। जठराग्निकी ख़राबीसे वात, पित्त और कफ कुपित होकर "क्षयज खाँसी" करते हैं। खुलासा यह है, कि विषम भोजन आदि से जब जठराग्नि बिगड़ जाती है, तब रस ठीक तरहसे नहीं बनता। जब रस ही नहीं बनता, तब रक्त आदि धातुएँ कहाँसे बन सकती हैं? अतः सब धातुएँ क्षय होने लगती हैं। उस समय क्षयज खाँसी होती है। बहुत करके यह खाँसी वीर्य-क्षय से होती है। इस विषयको हमने पाँचवें भाग में, राजयक्ष्माके बयानमें, कई तरहसे समझाया है।

क्षयज खाँसीके लक्षण।

(१) शरीरमें शूल चलते हैं।
(२) ज्वर होता है।
(३) दाह या जलन होती है।
(४) मोह होता है।

(५) बल क्षीण हो जाता है।

(६) दुर्बल रोगी थूकता है।

(७) जब मांस क्षीण होने लगता है, तब खखारमें पीप-मिला खून आता है। सुश्रुत।

वाग्भट्टमें लिखा है:—

(१) बदबूदार, राधके समान पीला, गंधवाला, हरा और लाल कफ मनुष्य थूकता है।

(२) पसलियाँ स्थानभ्रष्ट हो जाती हैं।

(३) हृदय गिरता-सा जान पड़ता है।

(४) आप-ही-आप गरमी और शीतकी इच्छा होती है।

(५) बहुत-सा खाने पर भी बल-क्षय होता है।

(६) मुँह चिकना और प्रसन्न हो जाता है।

(७) दाँत और नेत्र सुन्दर हो जाते हैं।

(८) अन्त में पीनस और श्वास आदि पैदा होते हैं।

नोट—हमारे शास्त्रोंमें विशेषकर यही पाँच खाँसी लिखी हैं। पर इनके सिवा और भी खाँसी होती है। उनके सम्बन्धमें भी हम आगे लिखेंगे।

डाक्टरी मतसे क्षयज खाँसी।

डाक्टरोंने भी क्षयज खाँसी—जिसे वे "थाइसिसपिलमोनेलस" कहते हैं—होनेके कारण अति मैथुन, अति परिश्रम, जुकाम, सर्दी लगना और तेज़ चीज़ सूंघना आदि लिखे हैं। वे लोग इसे पुश्तैनी भी कहते हैं।

लक्षण।

(१) पहले बिना ज्वर और सरदीके सूखी खाँसी होती है।

(२) कफ-मिला खून या साफ़ खून आता है।

(३) हाथोंके तलवे सदा गर्म रहते हैं।

(४) गले में ख़राश रहती है।

(५) पसलियों में दर्द नहीं होता या थोड़ा-थोड़ा होता है।

(६) फैंफड़ों के ऊपर एक तरह का शब्द होता है।

(७) सिरमें दर्द होता है।

(८) भूख कम लगती है।

(९) किसी काम में दिल नहीं लगता।

(१०) कमज़ोरी रहती है।

(११) रातमें बेकली रहती है।

(१२) बाल गिरते हैं।

(१३) अंगुलियों के अगले भाग मोटे हो जाते हैं।

(१४) सबेरे और रात को खाँसी का ज़ोर रहता है।

(१५) मिहनत करनेसे खाँसी बढ़ जाती है और मिहनतके बाद जल्दी-जल्दी श्वास आने लगता है।

(१६) कभी-कभी ज्वर चढ़ता है।

(१७) जीभ पर सफेद लेप-सा दीखता है।

(१८) अगर स्त्री रोगी होती है तो उसका रजोधर्म बन्द हो जाता है या अधिक होता है।

(१९) इलाज करनेसे आराम हो जाता है और यदि रोग फिर प्रकट होता है, तो पैर फूल जाते हैं और ज्ञान नहीं रहता। ऐसा रोगी मृत्यु-यन्त्रणासे अधीर होकर मर जाता है।

होमियोपैथिक मतसे क्षयज खाँसी।

होमियोपैथीके मतसे नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) भूख की कमी।

(२) पाचनशक्ति न होना।

(३) प्यास लगना।
(४) वमन होना या वमनकी इच्छा होना।
(५) थोड़ी खाँसी चलना।
(६) छातीमें वेदना होना।
(७) कमज़ोरी।
(८) देहमें गरमी मालूम होना।
(९) हवा लगते ही जाड़ा लगना।
(१०) यह रोग प्रायः १२ वर्षसे २२ वर्षकी उम्र वालोंको अधिक होता है। यह ख़ास पहचान है, कि नाख़ूनोंके अगले हिस्से नीचे हो जाते हैं।

नोट (१)—डाक्टरी या एलोपैथीके मतसे रोगीको दूध, शोर्बा, मक्खन, अण्डे और रोटी वगैरः पुष्टिकर चीजें देनी हित हैं। खटाई बिलकुल न देनी चाहिये। मकान साफ़ और हवा खुली रखनी चाहिये। गरम कपड़े पहनने चाहियें और खारी जलसे नहाकर शरीर फौरन पोंछ लेना चाहिये।

(२)—क्षयज खाँसी और क्षतज खाँसीमें जो भेद है, उसे पाठकोंको अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। इन दोनोंकी पहचान यद्यपि साफ़ है; फिर भी नौसिखिये चक्कर खा जाते हैं, इसीसे हमने यह नोट लिखा है। "हारीत-संहिता"में वातपित्तज प्रभृति खाँसियोंके के लक्षण भी लिखे हैं। उन्हें हम पाठकों के लाभार्थ नीचे लिखते हैं। उनके सिवाय कव्वेकी खाँसी वगैरःके लक्षण भी यूनानी ग्रन्थोंसे लिखते हैंः—

वातपित्तज खाँसी।

इस खाँसीमें धसक, खुजली, प्यास, कूखमें शूल, नींद न आना और सूखी खाँसी चलना—ये लक्षण होते हैं।

पित्तकफज खाँसी।

इस खाँसीमें धूएँकी सी गन्ध आती है, आँखें पक जाती हैं, नेत्र खूब लाल हो जाते हैं और कफमें खून आता है।

त्रिदोषज खाँसी।

इस खाँसीमें खुजली, जलन, श्वास, वमन, शोष, अरुचि, सिर-दर्द, सूजन और मुँहसे थूक गिरना—ये लक्षण होते हैं।

कव्वेकी खाँसी।

एक प्रकारकी खाँसी कव्वा लटकनेसे भी होती है। कव्वा कमज़ोर होनेसे लटक जाता है अथवा बहुत खाँसी चलने और कमजोरी होनेसे लटक जाता है। छोटे बालकोंका कव्वा बहुधा लटक जाता है। कव्वा लटकनेसे, हर समय, गलेमें सुरसुराहट या खसखसी सी लगी रहती है। ऐसा मालूम होता है, मानो गलेमें कोई चीज़ अटक रही हो। कव्वेकी खाँसीवालेको ज़रा भी आराम नहीं मिलता, हर समय खस-खस होतो रहती है। नातजुर्बेकार हकीम-वैद्य खाँसीकी दवा करते रहते हैं पर वह आराम नहीं होती; प्रत्युत बढ़ती ही जाती है। यह खाँसी बिना कव्वा उठाये नहीं जाती; अतः ऐसी खाँसी होनेपर कव्वा उठाना चाहिये।

नजलेकी खाँसी।

एक खाँसी जुकाम या नजलेसे होती है। यह खाँसी बड़ी मुश्किलसे आराम होती है। अगर चढ़ी उम्रमें यह खाँसी होती है, तो शायद ही आराम होती है। जिन लोगोंकी धातुपर गरमी पहुँच जाती है, उन्हें प्रायः जुकाम बना ही रहता है। जुकामके आराम न होनेसे खाँसी हो जाती है। जब तक धातुरोग आराम नहीं होता, खाँसी नहीं जाती; क्योंकि जुकाम बना रहता है और उसकी वजह से गलेमें कफ आया करता है। जब तक कफ आता रहता है, खाँसी आराम नहीं होती। यह खाँसी कई तरहकी होती है:—

(१) एक चीज़ गरम और पतली सदा ऊपरसे यानी सिरकी तरफ़से उतरती रहती है और फैंफड़ोंके मुँहमें खुजली और जलन पैदा करती है।

इसकी वजह यह है, कि दिमाग़में गरमी और कमज़ोरी होनेसे वह अपने पोषक रसको पचा नहीं सकता। जब वह उसे भारी मालूम होता है, जब वह अधिक हो जाता है, तब वह नज़लेकी तरह फैंफड़ोंके ऊपर उतर आता है। इस मौक़ेपर दिमाग़ी गरमीसे उसमें तेज़ जलन हो जाती है।

इस हालतमें सूखी खाँसी आती है। उसमें कफ नहीं निकलता। रात के समय और सोनेके बाद इस खाँसीका ज़ोर होता है। दिमाग़ी गरमी और नज़लेका असर दिखता है। यह खाँसी बहुत बुरी है। अगर इसका शीघ्र ही उपाय नहीं किया जाता, तो फैंफड़े दुबले हो जाते और उनमें घाव हो जाते हैं। थूकमें मवाद इसलिये नहीं आता कि वह पतला होता है।

(२) एक और खाँसी होती है, उसमें भी सिरसे मवाद उतरकर फैंफड़ोंमें आता है और वहाँ वह गाढ़ा और चेपदार होकर रुक जाता है। इसमें यह खास बात होती है, कि ज़ुकामके बाद ऐसा होता है और खाँसीमें चेपदार मवाद भी निकलता है तथा छाती भारी मालूम होती है। कभी-कभी ऐसा भी होता है, कि चेपदार तरी सिरकी तरफ़से फैंफड़ोंपर सदा गिरा करती है और उस रोगीकी हालत उरःक्षत या सिल वालेकी सी हो जाती है; यानी फैंफड़े दुबले हो जाते हैं और उनमें घाव हो जाते हैं।

नोट—इस खाँसीमें मवादको नरम और पतला करने, पकाने और छातीसे हटानेवाली दवा देनी चाहिये। जब मवाद पक जाता है, तब वह समान रूपसे गाढ़ा और पतला होता है; यानी न बहुत गाढ़ा होता है और न पतला। अगर मवाद नीला, पीला, पिघले हुए शीशेके जैसा हो तो उसे बदबूदार समझो। यह पकने का चिन्ह नहीं है।

रोगोंमें खाँसी।

पाण्डु रोगमें, राजयक्ष्मामें, गुल्म या गोलेके रोगमें, चोट लगने पर, धातुक्षय होनेमें, बवासीर और जुकाममें खाँसी होती है। माता के कुपथ्यसे छोटे बालकोंको खाँसी आने लगती है।

नोट—क्षय और त्रिदोषकी खाँसीमें "मुलहटी" सेवन करना सबसे अच्छा है। मुलेठीका सत्त या रुब्बेसूस और भी अच्छा होता है।

आमज खाँसी।

आम यानी कच्चे रससे पैदा हुई खाँसीमें शूल रोगकी पीड़ा होती है, जोड़ोंमें फूटनी होती है; भ्रम, ग्लानि, शोष, सिर दर्द और नेत्रगंभीरता ये लक्षण होते हैं।

खाँसीकी उपेक्षासे हानि।

खाँसी बहुत बुरा मर्ज़ है। यह अनेक रोगोंको पैदा करने वाला है, इसीसे कहते हैं, "लड़ाईका घर हाँसी और रोग का घर खाँसी"। अतः खाँसी होते ही, सौ काम छोड़कर पहले उसकी चिकित्सा करनी चाहिये। कहा है:—

कासाच्छ्वास क्षयच्छर्दिस्वरसादादयो गदाः।
भवन्त्युपेक्षया यस्मात्तस्मात्तं त्वरयाजयेत्॥

खाँसीका इलाज न करनेसे श्वास, क्षय, छर्दि और स्वरकी शिथिलता आदि रोग होते हैं, इसलिये खाँसीको जल्दी जय करना चाहिये। वाग्भट्टने भी कहा है—"कासवृद्धया भवेच्छ्वासः" अर्थात् खाँसीके बढ़नेसे श्वास रोग होता है। इसी वजहसे उन्होंने अपने ग्रन्थमें खाँसीके बाद "श्वास" लिखा है।

साध्यासाध्यत्व।

जुकाम वगैरः से लोगोंको खाँसी आने लगती है। अगर धातु शुद्ध होती है, तो बिना किसी प्रकारके इलाजके ही खाँसी आराम हो जाती है। अगर धातु दूषित होती है, तो खाँसी जड़ पकड़ लेती है—बिना धातु शुद्ध किये आराम नहीं होती। अतः खाँसी जब अनेक उपायोंसे भी न जाय, कम-से-कम तब तो धातुका ख़याल करना चाहिये। कितनी ही बार शरीरपर सर्दी या गरमीका असर पड़नेसे खाँसी हो जाती है, उसमें वातादिक दोषोंके लक्षण नहीं मिलते। वह शीघ्र ही आराम हो जाती है; पर जो खाँसी कुपथ्य करनेसे होती है, उसमें वात, पित्त और कफके लक्षण मिलते हैं। वह शरीरमें घर कर लेती और दिक़्क़तोंसे जाती है।

जो खाँसी यक्ष्मासे होती है, वह ताक़तवरसे ताक़तवरके शरीर का नाश कर देती है। हाँ, अगर बलवान आदमीकी जठराग्नि प्रभृति बलवान हो, तो साध्य होती है, पर ऐसा बहुत कम होता है; यानी वह असाध्य ही होती है। यही बात क्षतज या उरःक्षत खाँसीके सम्बन्धमें समझिये।

क्षयज खाँसी सब दोषोंसे होती है; यानी उसमें तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हैं। इसीसे वैद्य उसे दुश्चिकित्स्य कहते हैं। जब वह बुढ़ापेमें होती है, तब उसे याप्य कहते हैं।

कितनोंने लिखा है, कि क्षयज और क्षतज खाँसी क्षीण मनुष्यों को मार डालती हैं; किन्तु बलवानकी ऐसी खाँसी कष्टसाध्य होती हैं, यानी बड़ी-बड़ी दिक़्क़तोंसे आराम होती हैं।

नयी पैदा हुई क्षत और क्षयकी खाँसी अच्छी दवा, श्रेष्ठ परि-चारक—रोगीकी सेवा करने वाला, उत्तम वैद्य और आज्ञाकारी रोगी—इन चार पादोंके ठीक होनेसे साध्य होती है; अन्यथा नहीं।

एक खाँसी बूढ़ोंको होती है। उसे 'जरा कास' या बुढ़ापेकी खाँसी कहते हैं। वह भी कष्टसाध्य या असाध्य होती है।

वातज, पित्तज और कफज—ये तीन खाँसियाँ साध्य होती हैं; यानी अच्छा इलाज होनेसे, सहजमें, आराम हो जाती हैं। बिना चिकित्सा या जल्दी चिकित्सा न करनेसे ये भी क्षयकी खाँसी-जैसी हो जाती हैं।

जुकामकी खाँसी जुकाम आराम होनेसे जाती रहती है। अगर उसमें ग़फ़लतकी जाती है, तो वह भी असाध्य हो जाती है। अतः उसे सर्दीकी मामूली खाँसी समझ कर उपेक्षा न करनी चाहिये।

दो दोषोंसे हुई वातपित्तज और पित्तकफज खाँसी कष्टसाध्य होती हैं।

सब खाँसियोंमें क्षतज और क्षयज खाँसी बुरी हैं। ये स्वभावसे ही असाध्य होती हैं। पर रोगीका बल-मांस क्षीण न होने तथा थोड़े दिनकी होनेसे आराम होनेकी उम्मीद हो सकती है।

हिकमतके मतसे

खाँसीका वर्णन।

हिकमतकी किताबोंमें ग्यारह तरहकी खाँसी लिखी हैं:—

पहली खाँसी।

सादा गरम दूषित प्रकृति फैंफड़ोंके मुख या मांसमें पैदा हो जानेसे खाँसी हो जाती है।

इस खाँसीमें प्यास बहुत लगती है, फैंफड़ेका सिर और नरखरा लाल हो जाता है, छातीमें कुछ भारीपन जान पड़ता है और गरमी पहुँचनेसे बढ़ जाता है, किन्तु सर्दी पहुँचनेसे आराम मालूम होता है।

इसका कारण गर्म हवामें रहना, गर्म चीज़ें खाना और गरम इत्र वगैरः सूँघना है। इनकी वजहसे, दुष्ट प्रकृति शरीरमें और ख़ासकर दिमाग और फेँफड़े प्रभृति श्वास लेनेके अंगोंमें पैदा हो जाती है।

नोट—फेँफड़ेकी और आमाशयकी गरमीमें यह फर्क है, कि जिसके फेँफड़ेमें गरमी होगी, उसे शीतल जलकी अपेक्षा शीतल हवासे आराम मालूम होगा; किन्तु जिसके आमाशयमें गरमी होगी, उसे शीतल हवासे तो कम लाभ होगा, पर शीतल जलसे चैन मिलेगा और खाँसी न होगी। ऐसी खाँसीमें गरमीको शान्त करनेवाली दवा और पथ्य देना चाहिये। जैसे,—ईसबगोलका लुआब या खमीरा बनफ्शा। कोई लेप करना भी अच्छा है।

दूसरी खाँसी।

(२) एक खाँसी पित्तवाले खूनके फ़ेँफड़ोंमें आ जाने और उससे उनके भर जानेसे होती है, क्योंकि वह खून फेँफड़ोंमें भरकर खिंचावट और जलन करता है। उस समय उस जलन और खिंचावसे बचने या उन्हें दूर करनेको खाँसी चलती है।

ऐसी खाँसी होनेसे श्वास बड़ा और गर्म होता है, चेहरा लाल हो जाता है, थूक नहीं आता, क्योंकि मवाद पतला होता है। लेकिन कभी-कभी पित्त या जोरकी खाँसी होनेसे कुछ-कुछ मवाद आता है।

नोट—इस प्रकारकी खाँसीमें वास्लीककी फ़स्द खोलो। काढ़े वगैरः पिलाकर तबियतको नर्म करो। बिना मवादकी सूखी खाँसीमें जो दवा दी जाती है, वही दो। अगर जिगरमें गरमी हो, तो उसे शान्त करो। उसकी शान्तिसे फेँफड़ों का पोषक खून सुधरेगा।

तीसरी खाँसी।

(३) एक चीज़ गरम और पतली सदा सिरसे नीचे उतरती और फ़ेँफड़ोंके मुँहमें खुजली और जलन करती है। फिर उससे खाँसी होती है।

यह खाँसी सूखी होती है। इसमें थूक नहीं आता। रातको और सोनेके बाद खाँसीका ज़ोर होता है। यह खाँसी ख़राब है। जल्दी उपाय न करनेसे फैंफड़ोंमें घाव हो जाते हैं।

सोनेके बाद यह खाँसी इसलिये आती है, कि जागतेमें जो रुतूबत दिमाग़से उतरकर फैंफड़ोंपर जाती है, उसे आदमी गिरनेसे पहले ही खखारकर निकाल देता है, वह फैंफड़ों तक नहीं जाती, अगर जाती भी है तो थोड़ी; पर नींदके समय मनुष्य उसे खखारकर निकाल नहीं सकता, अतः वह फैंफड़ोंपर गिरती है और इसीसे सोनेके बाद यह खाँसी उठती है।

चौथी खाँसी।

(४) सादा ठण्डी दुष्ट प्रकृति फैंफड़ोंमें पैदा होकर खाँसी करती है। इसके कारण (पहली खाँसीमें लिखे हुए) सादा गरमीके कारणोंसे विपरीत हैं। इस दशामें प्यास कम लगती है। गरम दवा और नहानेसे लाभ होता है।

नोट—अगर शीतल हवा और बर्फ़के पास रहने या शीतल जल पीनेसे यह रोग हो, तो पहिले इन कारणोंको दूर करो। जहाँ तक हो सके, श्वासको रोको। क्योंकि श्वासके रोकनेसे फैंफड़े गरम होते हैं और सरदी जल्दी ही नाश हो जाती है।

पाँचवीं खाँसी।

(५) सिरसे मवाद उतरकर फैंफड़ोंमें गाढ़ा और चेपदार होकर रुक जाता है, तब ख़ाँसी होती है। इसकी पहचान यह है, कि यह जुकामके बाद होती है तथा खाँसीमें चेपदार दोष ज़ियादा निकलता और छातीपर बोझ-सा मालूम होता है।

नोट—इस खाँसीमें मवादको नर्म करने, पकाने और छातीसे छुड़ाने वाली दवा दो। अगर इसका इलाज जल्दी नहीं किया जाता, तो फैंफड़ोंमें घाव हो जाते हैं।

छठी खाँसी।

(६) फैंफड़ों और छातीकी तरीसे खाँसी होती है। ऐसी खाँसी बूढ़ों और तर प्रकृति वालोंको अधिक होती है। इस खाँसीमें कफ बहुत निकलता और गले में चिपटा रहता है तथा छातीमें खराखराहट होती है। यह खाँसी नींद में और जागनेके बाद बहुत होती है।

नोट—मवादको पकाओ। जब पकालो, फौरन निकालनेके उपाय करो।

सातवीं खाँसी।

(७) फैंफड़ोंपर खुश्की और गरमी पहुँचनेसे होती है। यह खाँसी भूख-प्यास की हालतमें और चलने-फिरनेके समय बढ़ जाती है, क्योंकि इनसे तरीका नाश होता और खुश्की बढ़ती है। तर चीजोंसे यह खाँसी दब जाती है।

इस खाँसीके होनेसे श्वास तंग हो जाता है, थूक में मवाद नहीं निकलता, शरीर दुबला हो जाता है, और नाड़ी जल्दी-जल्दी चलती है। जब यह रोग बढ़ जाता है और दिल पर गरमी जियादा हो जाती है, तब तपेदिक हो जाता है।

नोट—इस खाँसीमें ये उपाय करोः—

(१) सूंड़ी, गुदा और पैरोंको बादामके तेलसे तर रखो।
(२) पीनेके पानीमें बिहीदानेका लुआब मिला दो।
(३) तरी बढ़ाने वाले पदार्थ खानेको दो।
(४) जौ खाने वाली बकरी का दूध पिलाओ। अगर ज्वर हो तो दूध न दो। इस रोगमें दूध अमृत है।

(५) भुसीका हरीरा और बादाम का तेल खिलाओ।
(६) मीठे पानीसे नहाना और तरी लाने वाले बफारे में बैठना अच्छा है।

आठवीं खाँसी।

(८) फैंफड़ों में धूल या धूआँ भरने अथवा ज़ोरसे चिल्लानेसे खरखरापन होकर खाँसी आती है।

नोट—इस खाँसीमें ये उपाय करोः—

(१) चटनी या अवलेह चटाओ।
(२) हरीरा पिलाओ, जिससे फैंफड़े का खरखरापन और सुस्ती मिटे तथा सफाई हो।
(३) तरी बढ़ाने वाली गोली मुखमें रखो।
(४) तर तेल घूँट-घूँट भर पीओ।
(५) गले पर तेल मलो और सूंड़ी तथा गुदापर तेल चुपड़ो।

नवीं खाँसी।

(९) फैंफड़े या छातीके घाव, इनकी सूजन या छातीके पर्देकी सूजन, दिल और फैंफड़ेके बीचके पर्देकी सूजन, जिगर-लिवर और तिल्लीकी सूजन और नरखरेकी सूजन—इनसे भी खाँसी होती है। यह खाँसी भी खुश्क होती है। इसमें दर्द और खिंचाव होता है। जिस अङ्गमें तकलीफ होती है, उसमें तकलीफ के चिन्ह प्रकट होते हैं।

नोट—जिगर या पर्देके सिरमें या उसके नीचे सूजन पैदा होती है, तब जिगरके लटकनेकी जगह खिंचती है, क्योंकि झिल्लियाँ मिली हुई हैं। अतः फैंफड़ोंकी जगह भी खिंचाव होता और उसमें तकलीफ होती है। इन भागों के खिंचावसे श्वासमार्ग तंग हो जाते हैं, तब जिगर वाली शक्ति अपनी तकलीफ दूर करनेको हवा चलाकर खाँसी पैदा करती है। इस तरह सूखी खाँसी आती है।

सूचना—इस खाँसीका मेल उरःक्षत या सिल और क्षयज खाँसीसे खाता है। उन्हींका-सा इलाज इसमें करना चाहिये। लिवर और उरःक्षत वगैरः के लिए पाँचवें भागका अन्तिम अंश देखिये।

दसवीं खाँसी।

(१०) फैंफड़ेमें पित्त वाला खून फुन्सियाँ पैदा करके खाँसी करता है। इस रोगीकी नाड़ी जल्दी-जल्दी चलती है। पेशाब गरम होता है। इसमें सरदीसे लाभ और गरमीसे हानि होती है।

नोट—फस्द खोलना, पछने लगाना और पित्तके दस्त कराना अच्छा है।

ग्यारहवीं खाँसी।

(११) आमाशयके संयोगसे भी खाँसी होती है। जिस समय आमाशय भरा होता है, खाँसी ज़ियादा चलती है, पर ख़ाली होनेपर खाँसी कम हो जाती है।

नोट—वमन और दस्तोंसे आमाशयको साफ करो। शर्बत बनफशा और जूफ़ा पिलाओ।

सिल या फैंफड़ोंमें पीप पड़ना।

यह रोग उन्हें होता है, जिनके दिमाग़से चेपदार रुतूबतें फैंफड़े पर गिरा करती हैं। इससे श्वास तंग हो जाता और खाँसी आने लगती है। अगर फैंफड़ेमें घाव हो जाते हैं, तो बहुत कम आराम होता है।

यह रोग उत्तर दिशाके शीतल देशोंमें, गरमी और जाड़ेमें होता है; पर पूर्व्वीय देशोंमें ख़रीफ़के मौसममें होता है। जिसे यह रोग ख़रीफ़में होता है, वह आराम नहीं होता। गरमीमें तो इसका पैदा होना बहुत ही ख़राब है।

हकीमोंके मतमें "सिल" से मतलब उस घावसे है, जो फैंफड़ों में होता है। हकीम कुरसी इसे अलग रोग नहीं मानता। वह कहता है, ज्वरके सदैव बने रहनेके कारण, तपेदिकके साथ फैंफड़ेमें जो घाव हो जाता है, उसे "सिल" कहते हैं। कामिलुस्सनाआका लेखक कहता है, फैंफड़े या छातीके घावको "सिल" कहते हैं। अनेक हकीमोंका मत है, कि सीने और फैंफड़ोंमें जो पीप जमा हो जाती है, उसे सिल कहते हैं।

सिल रोग कैसे होता है ?

(१) तेज़ नजला फैंफड़ों पर गिरता है और मवादके पकनेसे पहले अपनी तेज़ीसे फैंफड़ोंको जला कर ख़ाक कर देता है।

(२) फैंफड़ोंकी सूजनमें पीप पड़ जाती है और वह घायल हो जाता है।

(३) पसलीकी सूजनका मवाद या सीनेकी सूजन या उस झिल्लीकी सूजन जो पीठके पास है पक जाय और उसमें पीप पड़ जाय और जब वह खाँसीसे निकलती हुई फैंफड़ोंके ऊपर जावे, तो उसे जला कर ख़ाक कर दे।

(४) ज़ियादा खाँसी होनेसे अथवा चोट वगैरः लगने या गिर पड़नेसे या धक्का लगनेसे किसी रगका मुँह खुल जाय या कोई रग टूट जाय और गलेसे खून आने लगे और फैंफड़ेमें घाव हो जाय।

मतलब यह है कि, इन चार प्रकारोंसे सिल या उरःक्षत या क्षतज खाँसी होती है।

लक्षण।

इस रोगीको हर समय धीमा-धीमा ज्वर बना रहता है। तपेदिक या क्षयके सारे चिन्ह प्रकट हो जाते हैं, गाल लाल हो जाते हैं, ख़ास-

कर ज्वरकी हालतमें। खाँसनेसे पीप निकलता है। कभी-कभी रात को या दूसरे समय पसीने आते हैं।

जब शरीरका क्षय या घटाव अन्तको पहुँच जाता है, तब तपेदिक की तरह नाखून शीतल हो जाते हैं। जब मनुष्यका अन्त समय आ जाता है, तब पाँवकी पीठ सूज जाती है। पीपमें फैंफड़ोंके टुकड़े और रगोंके तार या तन्तु आते हैं। जो दोष निकलता है, वह बहुत गाढ़ा होकर बन्द हो जाता है। मूर्ख हकीम समझता है कि रोगी आराम हो गया, पर रोगी इस हालतमें चार दिनसे जियादा नहीं जीता।

बहुधा ऐसा होता है, कि फैंफड़ोंके घावोंके अन्तमें खाँसी पैदा होकर साफ खून आने लगता है। अगर इस दशामें खाँसी और खूनको बन्द करते हैं, तो खून फैंफड़ोंमें रुककर रोगीको मार डालता है। अगर उसे बन्द नहीं करते, तो उसके बहुत निकलनेसे भी रोगी मर जाता है।

खाँसीकी चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें ।

(१) सबसे पहले यह देखना चाहिये कि, रोगीकी उम्र क्या है, उसमें बल है कि नहीं, जठराग्निका बल कैसा है और खाँसीमें किस दोष (वात, पित्त, कफ) की अधिकता है। इन बातोंको अच्छी तरह देख भालकर और साध्यासाध्यका विचार करके दवा देनी चाहिये।

(२) गरमीकी खाँसीमें गरम और सरदीकी खाँसीमें सर्द दवा न देनी चाहिये। जिस दवा या रससे कफ सूखकर छातीपर जम जाय, वैसी दवा या रस न देना चाहिये। बहुतसे अनाड़ी खाँसीमें गरम दवा और गरम पथ्य दिये जाते हैं, जिससे रोगीको खाँसते समय बड़ा कष्ट होता है। छातीपर कफ घर-घर घर-घर करता है। छातीसे कफ छूटते समय छातीमें पीड़ा होती है। अगर ऐसे ही मौक़ेपर रोगी हाथमें आवे, तो आप भी गरम दवा न दें। ऐसा करनेसे रोगी फौरन ही मर जायगा। इस हालतमें ऐसे उपाय करने चाहियें, जिनसे छातीपर जमा हुआ कफ मुँह या गुदाकी राहसे निकल जावे। ऐसे मौक़ेपर एक या दो तोले अलसीके काढ़ेमें तोले भर मिश्री मिलाकर पिलानेसे कई रोजमें कफ छूटकर निकल जाता है। अलसी खाँसीकी रामबाण दवा है। हमने कफ छाँटने वाली दवाएँ आगे कितनी ही लिखी हैं।

(३) वातज या सूखी खाँसी जब पुरानी हो जाती है, बड़ी मुश्किलों से जाती है। ऐसी खाँसी बिना तेल पिये नहीं जाती। ऐसे मौक़ेपर अलसीका तेल बड़ा काम करता है। पर तेल पीनेसे रोगी जी चुराते हैं। कुछ भी हो, जब सूखी खाँसी किसी तरह न जाय, तब 'पिप्पल्यादि घृत' बनाकर खिलाओ अथवा तेल पिलाओ, पर तेल पिलाओ तो रोगी

को दूध भूलकर भी न दो। ६ मांशे या १ तोले गुड़को बराबरके सरसोंके तेलमें मिलाकर चटानेसे भी सूखी खाँसी आराम हो जाती है। अलसीके काढ़ेमें मिश्री मिलाकर पिलाने या तिलोंके काढ़ेमें मिश्री मिलाकर पिलानेसे सूखी खाँसी जाती रहती है। मतलब यह है, कि सूखी खाँसीमें तेल या तेलिहा पदार्थ अवश्य लाभ दिखाते हैं। कहा है:—

रुक्षस्यानिलजं कासमादौ स्नेहैरुपाचरत्।
सर्पिर्भिर्वस्तिभिः पेयाक्षीरयूषरसादिभिः॥

अगर रूखे आदमीको वातज खाँसी हो, तो पहले स्नेह पान आदि उपचारोंसे काम लेना चाहिये; यानी घी तेल आदि पिलाने चाहियें। घी, दूध, पेया और मांस-रस आदि देने चाहियें और गुदा में पिचकारी लगानी चाहिये।

बहुत करके तैल आदि चिकने पदार्थ, दूध, ईखका रस, गुड़के पदार्थ, दही, काँजी, खट्टे फल, शराब, स्वादिष्ट खट्टे और नमकीन पदार्थ वातज खाँसीमें पथ्य हैं। ग्राम्य, अनूप और जलचर जीवोंका मांस-रस, जौ, शालि चाँवल, गेहूँ, कौंचके बीजोंका रस अथवा यूष भी पथ्य है। दशमूलके काढ़ेके साथ पकाई हुई पेया भी वातज खाँसीमें हित है।

(४) पित्तज खाँसी हो, तो मुलेठीका काढ़ा पिलाकर या अमलताश आदिका नर्म जुलाब देकर पहले पित्तको निकाल देना चाहिये। इस खाँसीमें मीठी चीजें जियादा फायदा करती हैं। इस खाँसीमें गरम दवा कभी न देनी चाहिये।

(५) कफज खाँसीमें नमक-मिला गरम जल पिलाकर पहले कफ को निकाल देना चाहिये; तब और दवा देनी चाहिये। अगर छाती पर जमा हुआ कफ न निकाला जायगा, तो कोरी दवाओंसे लाभ न होगा। अगर किसी दवासे लाभ होगा भी, तो देरसे होगा। इस खाँसी

में हरड़ या मैनसिल आदिका धूआँ पिलानेसे भी जल्दी फ़ायदा होता है। सरसोंके तेलमें सेंधानोन मिलाकर छातीपर मलनेसे भी, कफकी गाँठ बँधकर, कफ निकल जाता है। इस खाँसीमें लंघन करानेसे भी लाभ होता है; लेकिन लंघन और वमन करानेमें इस बातको न भूलना चाहिये कि, अगर कफ कच्चा हो, तो पहले लंघन कराये जायँ और यदि कफ पका हो तो पहले वमन करानी चाहियें। इस खाँसीमें जौका पथ्य अधिक हितकर है।

(६) क्षतज खाँसीकी चिकित्सा बलकारक, शमन और पित्तज खाँसी नाशक औषधियों तथा अन्यान्य मीठी दवाओंसे करनी चाहिये। इस खाँसीमें यवागू खूब ठण्डी करके पीनी चाहिये।

इस रोगीको ईख, इक्षुवालिका, कमल, कमलनाल, कमोदनी और सफेद चन्दनके द्वारा औटाया हुआ दूध 'शहद' मिलाकर घाव भरनेको पिलाना चाहिये। अगर पेया देनी हो, तो इन्हीं दवाओंके काढ़ेके साथ पकाकर और 'शहद' मिलाकर पिलानी चाहिये। यह पेया भी घाव भरनेमें उत्तम है।

(७) क्षयज खाँसी मनुष्योंके मारनेके वास्ते पैदा होती है। अगर यह नयी होती है और चिकित्साके चार पाद ठीक होते हैं, तो शायद कभी आराम हो जाती है। क्षयज और क्षतज खाँसी बलवान् के होती है तो साध्य या याप्य होती है। बूढ़े और कमजोरके होनेसे आराम होनेकी आशा नहीं। क्षयज खाँसी विशेष करके सन्निपातसे होती है, इसलिये इसमें, सन्निपातमें हितकारी हो वैसी ही चिकित्सा करनी चाहिये।

खाँसीमें पथ्यापथ्य ।

पथ्य ।

स्वेदन—पसीने लेना, विरेचन—जुलाब लेना, वमन—कय करना, धूम्रपान—धूआँ पीना, नियमसे एक समान भोजन करना और दिनमें सोना—शास्त्रकारोंने खाँसीमें पथ्य लिखे हैं ।

नोट—पित्तज खाँसीमें नर्म दस्तावर दवा देकर दस्तकी राहसे अथवा मुलेठीका काढ़ा पिला कर मुँहकी राह से पित्तको निकाल देना चाहिये । पित्तके निकल जानेसे खाँसी जल्दी आराम हो जाती है । इसी तरह कफ की खाँसीमें, आध सेर गरम पानीमें दो तोले साँभर नोन मिलाकर पिला देनेसे, कय होकर कफ निकल जाता है अथवा आध सेर गरम पानीमें २ तोले साँभर नोन और २ तोले शहद मिलाकर पिला देने और उँगली डालकर कय करा देनेसे भी कफ निकल जाता और खाँसी जल्दी आराम हो जाती है । कफकी खाँसीमें धूआँ पीना भी अच्छा है । शुद्ध मैनसिलको पानीके साथ सिलपर पीसकर, उसे बड़बेरी के पत्तोंपर ल्हेस कर सुखा लेने और सूखे पत्तोंको चिलममें तमाखूकी जगह रखकर, ऊपरसे आग रखकर, पीनेसे कफकी खाँसी चली जाती है । इसी तरह वातज खाँसी बिना स्नेहपान कराये यानी घी तेल पिलाये नहीं जाती । अलसीका तेल पीनेसे वातज—सूखी खाँसी बहुत जल्दी आराम हो जाती है । किस खसीमें घी तेल आदि चिकनी चीजें पिलाना हित है, किस खाँसीमें दस्त कराने चाहियें और किसमें वमन करानेसे लाभ होगा—ये सब बातें याद रखनेसे ही वैद्य खाँसी-जैसे भयंकर रोगको जीत सकता है । 'सब धान बाईस पसेरी, वाली कहावत चरितार्थ करनेसे हानि होती है ।

कटेहली, बिजौरा नीबू, छुहारे, पुहकरमूल, अड़ूसा, छोटी इलायची, मुलेठी, हरड़, गोमूत्र, लहसन, त्रिकुटा—सोंठ-मिर्च-पीपर, शहद, धानकी खील, अदरख, काकड़ासिंगी, पुराना गुड़, अलसी, कपूर, नेत्रवाला, दाख, पीपरामूल, चव्य, चीता, दशमूल—ये सब

चीजें किसी न किसी प्रकारकी खाँसीमें काम आती हैं। पर कौनसी खाँसीमें कौन चीज़ पथ्य है, यह बात वैद्यको जाननी चाहिये।

नोट—शहद गर्म होता है और कफके रोग नाश करनेमें रामबाण दवा है; पर शहद पुराना उत्तम होता है—नया नहीं। नया शहद नुकसान करता है। कम-से-कम १ सालका पुराना शहद दवाके काममें लेना चाहिये। अदरखका स्वरस ६ माशे और पुराना शहद ६ माशे मिला कर चाटनेसे कफज खाँसी, सरदीकी खाँसी, जुकाम और श्वास रोग निश्चय ही आराम हो जाते हैं, पर पित्तज खाँसीमें यही नुसख़ा हानि करता है। अड़ूसा खाँसी की हुक्मी दवा है। रक्तपित्त—खाँसीके साथ खून आनेपर भी अड़ूसा तत्काल फल दिखाता है। अड़ूसेके पत्तोंका रस ६ माशे और शहद ६ माशे तथा छोटी पीपरोंका चूर्ण १ माशे मिला कर तीन चार दिन पीनेसे असाध्य खाँसी भी आराम हो जाती है। यह नुसख़ा पाँचों प्रकारकी खाँसियोंपर रामबाण और अनेक बारका परीक्षित है। इसी तरह मुलेठी और दोनों तरहकी कटेली भी खाँसीमें महोपकारक हैं।

खाने पीनेके पदार्थ—जौ की रोटी, गेहूँकी रोटी, साँठी चाँवल, शालि चाँवल, पुराने चाँवलोंका भात, बिना छिलकोंकी उड़दकी दाल, मूंग और कुल्थीकी दाल; परवल, नैनुआ, पुराना सफेद कुम्हड़ा, बैंगन, गूलर, सहँजना, बथुआ, ख़रबूज़ा, केला, नरम मूली,—इन सबकी घी और सेंधेनोनके साथ छोंकी हुई तरकारी, नरम बैंगनका भुरता, गाय या बकरीका दूध, घी, मलाई, पुराना घी, दवाओंके साथ पकाया हुआ घी, मिश्री, बिजौरा नीबू, कैथकी चटनी, लहसन, प्याज़, सोंठ, अदरख़, कालीमिर्च, सफेद ज़ीरा, छोटी इलायची, सेंधानोन, शहद चाटना, धानकी खील खाना और गरम करके शीतल किया हुआ खूब साफ पानी पीना—ये सब खाँसीमें पथ्य हैं। मांस खाने वालोंके लिये मागुर आदि छोटी मछलियोंका शोरबा, बकरे आदि गाँवके पशुओंका मांस-रस, अनूप देशके हिरन आदिका मांस-रस और शराब—ये सब पथ्य हैं।

क्षयज खाँसी या यक्ष्मा रोगीको नीचे लिखा हुआ जूस परम हित और पुष्टिकर है:—जौ २ तोले, कुल्थी २ तोले और बकरेका मांस

८ तोले—इनको ९६ तोले पानीमें औटाओ। जब २४ तोले पानी रह जाय, उतार कर पानी छान लो। इस पानीको फिर दो तोले घी डाल-कर छौंक दो। फिर इसमें अन्दाजकी हींग, सोंठ, कालीमिर्च और छोटी पीपर पीस कर डाल दो। जब अच्छी तरह पक जाय, इसे नीचे उतार लो और थोड़ा सा 'अनारका रस' मिला दो। यह यूष कमज़ोर यक्ष्मा-रोगियोंको बड़ा ही लाभदायक है।

खाँसी या यक्ष्मा वालोंको, सवेरेके समय, पुराने चाँवलका भात और तरकारी देनी चाहिये; पर रातको गेहूँकी पतली रोटी, परवल, बैंगन आदिका साग और बकरीका दूध देना चाहिये। लेकिन कफका कोप ज़ियादा हो, तो दिनमें भी भात न देना चाहिये। भातके बदले गेहूँकी रोटी देनी चाहिये।

अगर रोगी कमज़ोर हो और अग्नि भी मन्दी हो, तो दिनको पुराने चाँवलोंका भात या रोटी दो, पर रातको दूधमें पकाया हुआ साबूदाना, अरारूट या बारली दो। अगर सवेरे भी भात रोटी न पचे, तो दोनों समय साबूदाना और बारली दो। पथ्य देनेमें दवासे कम विचारकी जरूरत नहीं है।

सूखी खाँसी वालोंको, रातको सोते समय, सूखी मलाई और मिश्री खाना पथ्य है, पर मलाई खाकर पानी भूल कर भी ४।५ घण्टों तक न पीना चाहिये। सवेरे ही गायका ताजा मक्खन २ तोले और मिश्री २ तोले मिला कर नित्य खानेसे भी सूखी खाँसी जाती रहती है और साथ ही बल बढ़ता है, पर ऊपरसे पानी न पीना चाहिये। खाँसीमें पुराना घी खाना पथ्य लिखा है; लेकिन पुराना घी खानेसे बहुधा गलेमें जलन होते देखी गई है; इसलिये हम पुराने घीकी राय नहीं दे सकते। खाँसीमें कच्चा घी खानेसे भी अवश्य हानि होती है, इसलिये पिप्पल्यादि घृत या और कोई घी पका कर खाना चाहिये। ये घी अकेले भी पिये जाते हैं, और भोजनके साथ भी खाये जा सकते

हैं। इनसे घीका काम भी हो जाता है और खाँसी भी आराम हो जाती है। पिप्पल्यादि घृत वातज खाँसीमें तो रामबाण है ही—पर और सब खाँसियोंको भी आराम करता है।

पानी।

खाँसी रोगमें औटा कर शीतल किया हुआ पानी व्यवहार करना चाहिये। कच्चा—बिना औटाया पानी खाँसी और जुकाममें बड़ी हानि करता है। पानी औटानेकी तरकीबें हमने "चिकित्सा-चन्द्रोदय" दूसरे भागमें लिखी हैं।

अपथ्य।

गुदामें पिचकारी लगाना, नस्य सूँघना, धूपमें फिरना-बैठना, आगके सामने रहना, बहुत राह चलना, धूएँमें रहना, स्त्री-प्रसंग करना, दस्त क़ब्ज़ करने वाले पदार्थ खाना-पीना, छातीमें जलन करने वाली चीज़ें खाना, बाजरा चना प्रभृति रूखे अन्न खाना, मैला और कच्चा पानी पीना, विरुद्ध भोजन करना, मछली खाना, दिशा-पेशाब और छींक प्रभृति वेग रोकना, कफको छाती पर सुखाने वाले गरम पदार्थ खाना या बहुत गरम दवाएँ खाना, रातमें जागना, चिल्लाकर बोलना, कसरत करना, मिहनतके काम करना, दाँतुन करना, फल या घी खाकर पानी पीना, आलू, अरबी और लाल मिर्च आदि खाना—ये सब खाँसीमें अपथ्य या हानिकारक हैं। स्त्री-प्रसंग तो खाँसी रोगमें भूल कर भी न करना चाहिये। स्त्री-प्रसंग करते हुए अमृत खानेसे भी खाँसी आराम न होगी। भोजन भी हल्का और कम करना चाहिये।

शास्त्रकारोंने फस्द आदिसे खून निकालना, दाँत घिसना, कन्द, सरसों, पोईका साग, भारी और शीतल अन्नपान भी खाँसीमें अपथ्य लिखे हैं।

खाँसीकी सामान्य चिकित्सा।

मरिचादि बटी।

काली मिर्च १ तोले, छोटी पीपर १ तोले, जवाखार ६ माशे और अनारका छिलका २ तोले,—इन चारोंको महीन कूट-पीसकर छान लो। फिर इस चूर्ण में ८ तोले शुद्ध साफ गुड़ मिलाकर एक-दिल कर लो और तीन-तीन माशे की गोलियाँ बनालो। यही वैद्यक-शास्त्रकी मशहूर "मरिचादि बटी" हैं।

इन गोलियों के चूसनेसे सब तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं। वैद्य लोग इन गोलियोंसे बहुत काम लेते हैं। हमने भी अनेक बार परीक्षा की है।

जिसे खांसी आती हो उसे चाहिये, कि खाँसी उठते ही एक गोली मुँहमें रखकर चूसे—उसे खाय नहीं। जब एक गोली ख़तम हो जाय, दूसरी गोली फिर मुँहमें रख ले। पथ्यापथ्यका ध्यान रखे। अवश्य लाभ होगा।

कास मर्दन बटी।

सफेद पपरिया कत्था ४ तोले, सेलखड़ी २ तोले, शुद्ध कपूर १ तोले और छोटी इलायचीके बीज आधे तोले—इन सबको अलग-अलग पीस-छान लो।

डेढ़ पाव बबूलकी छाल लाकर कुचल लो। फिर उसे एक कोरी हाँडीमें रखकर, ऊपरसे अढ़ाई सेर पानी डाल दो और चूल्हे पर

चढ़ा कर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ, जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर छान लो। अब इस काढ़ेमें ऊपरका पिसा-छना मसाला मिला दो और फिर आग पर पकाओ और चलाते रहो, जब मसाला गोली बनाने लायक़ गाढ़ा हो जाय, उतार लो। इसके बाद चने-समान गोलियाँ बना कर, छायामें, सुखा लो। अगर मसाला हाथके चिपकने लगे, तो थोड़ी-सी सेलखड़ी पीस कर पास रख लो। मसालेको सेलखड़ीके, परथनकी तरह, लगा-लगा कर गोली बना लो।

इन गोलियोंको मुखमें रख कर चूसनेसे सब तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं। २४ घण्टे बाद ही छाती पर जमा हुआ कफ निकलने लगता है। २।३ गोली मुँहमें रख कर सो जानेसे रातको खाँसी तकलीफ़ नहीं देती। २४ घण्टेमें, हर दिन, २० गोली तक चूसी जा सकती हैं। नयी खाँसी पर तो ये गोली रामबाण ही हैं, पर पुरानीमें भी कम लाभ नहीं दिखातीं। हम इनको ३५ सालसे आज़मा रहे हैं। इनसे मुँहके छाले और घाव भी आराम हो जाते हैं। छोटे बच्चे जो गोली चूसना न जानते हों, उनके मुँहमें गोली पीसकर जीभपर लगा देनी चाहिये। परीक्षित हैं।

लवंगादि गुटिका।

लौंग १ तोले, काली मिर्च १ तोले, बहेड़ेका छिलका १ तोले और सफेद पपरिया कत्था ३ तोले—इन सबको पीस-छानकर रख लो। फिर ऊपर लिखी "कासमर्दन बटी" की तरह, बबूलकी छालका काढ़ा बना-छानकर, उसमें ऊपरकी पिसी-छनी दवाएँ मिलाकर, मन्दाग्निसे पकाकर, मटर-समान, गोलियाँ बनाकर, छायामें सुखा लो। यही "लवंगादि गुटिका" है।

इन गोलियोंके मुँहमें रखकर चूसते रहनेसे पाँचों तरहकी ख़ाँसी आराम हो जाती हैं। २।३ घण्टे बाद ही लाभ नज़र आने लगता

है और २४ घण्टोंमें तो खासा फायदा दीखने लगता है। ५।६ दिनमें जोरकी नयी खाँसी आराम हो जाती है। पुरानी खाँसीमें भी ये अकसीरका काम करती हैं, पर कुछ देर लगती है। परीक्षित हैं।

कासंसंहार वटी।

कालीमिर्च, भुनासुहागा, काकड़ासिंगी, लौंग, भुनी फिटकरी, भारंगी, हरड़का छिलका, छोटी पीपर और लाहौरी नमक—इन सब को बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर पीस छान लो और फिर इन सबके वजनके बराबर नौ तोले पिसी-छनी "सौंठ" इसमें मिला दो। सब मसालेको खरलमें डाल कर, ऊपरसे "नीबूका रस" दे-देकर खूब खरल करो। जब मसाला गोली बनाने के लायक़ हो जाय, जंगली बेरके समान गोलियाँ बनाकर, छायामें सुखा लो।

इन गोलियोंके दिनमें ३।४ बार खाने और रातको एक या दो गोली खाकर सो जानेसे सब तरहकी खाँसी जल्दी ही आराम हो जाती हैं। यह नुसख़ा हमारे एक वैद्य-मित्रने अपना आज़मूदा बताया है। वे इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं, इसीसे हमने लिखा है और मालूम भी ठीक ही होता है, पर हम खुद परीक्षा नहीं कर सके। पाठक ज़रूर बनाकर देखें, उन्हें निराश न होना पड़ेगा।

कासहर वटी।

कालीमिर्च, छोटी पीपर, करंजेके बीज़ोंकी गिरी, कटाईके बीज, भुना सुहागा और सफेद कत्था एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो। फिर इसमें "शुद्ध अफीम" छै माशे भी मिला दो और खरलमें डाल कर "अदरखके रस" के साथ ३ घण्टे तक घोटो और रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बनाकर, छायामें, सुखा लो।

इन गोलियोंसे यों तो सभी तरहकी खाँसियोंमें फायदा होते देखा है, पर बूढ़ोंकी और नजले या जुकामकी खाँसीमें विशेष उपकार होते देखा है। जिस रोगीको श्वास और खाँसीसे चैन न मिलता हो, उसे ये अवश्य दी जानी चाहिएँ।

एक-एक गोली सवेरे-शाम खानी चाहिये। अगर रातको नींद न आती हो, तो एक गोली मुँहमें रखकर रस चूसते हुए सो जाना चाहिए। परीक्षित हैं।

हरीतक्यादि बटी।

हरड़का छिलका, करंजेके बीजोंकी मींगी, काकड़ासिंगी, कालीमिर्च और छिली हुई मुलहटी—इन्हें एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो। फिर खरलमें डाल, पानीके साथ घोटकर, चने-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंमें से एक-एक गोली मुँहमें रखकर चूसनेसे निश्चय ही खाँसीमें लाभ होता है। परीक्षित हैं।

अर्कादि बटी।

आककी मुँहबन्द कलियाँ १ तोले, सफेद पपरिया कत्था १ तोले और कालीमिर्च १ तोले—इन सबको खरलमें घोटकर, आधी-आधी रत्तीकी गोलियाँ बना लो और छायामें सुखा लो। ये गोलियाँ भी सब तरहकी खाँसी आराम करनेमें रामबाण हैं। सवेरे-शाम एक-एक गोली खानी चाहिये। परीक्षित हैं।

व्योषान्तिका बटी।

तालीसपत्र, चीतेकी जड़की छाल, चव्य, सौंठ, अम्लवेत, काली मिर्च और छोटी पीपर, ये सब एक-एक तोले, दालचीनी, छोटी इलायची और तेजपात चार-चार माशे लेकर महीन पीस-छान लो।

फिर इस चूर्णको साफ गुड़में मिला कर जंगली बेर-सामान गोलियाँ बना लो ।

इन गोलियोंके, बलाबल-अनुसार, खानेसे खाँसी, श्वास, अरुचि, पीनस, हृद्रोध, वाणी-रोध, ग्रहणी और बवासीर रोग नाश होते हैं। यह योग "चक्रदत्त" का है । हमने कभी परीक्षा नहीं की, पर उत्तम होनेमें सन्देह नहीं ।

पथ्यादि बटी ।

हरड़, सोंठ, नागरमोथा और गुड़—इनको बराबर-बराबर लेकर गोलियाँ बनालो । ये गोलियाँ हर तरहकी खाँसीमें मुफीद हैं। इनके भी मुँहमें रखनेसे खाँसी शान्त होती हैं । वृन्दने कहा हैः—

पथ्याशुण्ठीघनगुडैर्गुटिकां धारयेन्मुखे ।
सर्व्वेषु श्वासकासेषु केवलं वा विभीतिकम् ॥

सब तरहके श्वास और खाँसीमें ऊपरकी गोली या खाली बहेड़े का छिलका मुँहमें रखनेसे लाभ होता है ।

त्रिफलादि बटी ।

हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, देवदारु, छोटी पीपर, शोधा हुआ मीठा तेलिया विष, छोटी हरड़, कालीमिर्च और शोधे हुए काले धतूरेके बीज—इन सबको एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो। फिर खरलमें डाल कर, ऊपरसे "भाँगरेका रस" देदे कर घोटो और रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो । इन गोलियोंसे श्वास और खाँसी नाश होते हैं । सवेरे-शाम एक-एक गोली खानी चाहिये ।

चणकादि बटी ।

भुने-छिले चने १ तोले, सफेद सज्जी १ तोले और काली मिर्च १ तोले—इनको पीस-छान कर खरलमें डालो और ऊपरसे अदरखका

रस देदे कर घोटो और चने-समान गोलियाँ बना कर छायामें सुखा लो। इन गोलियोंमेंसे एक-एक गोली सवेरे-शाम खानेसे सब तरहकी खाँसी नाश हो जाती हैं।

हरिद्रादि बटी।

हल्दी १ तोले और सफेद सज्जी ३ माशे—इन दोनोंको महीन पीस-छान कर, पानीके साथ घोटो और छोटे बेर-समान गोलियाँ बना कर सुखा लो। इन गोलियोंके सवेरे-शाम मुँहमें रखकर चूसनेसे सब तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं।

मधुष्ठ्यादि बटी।

छिली हुई मुलेठी, कतीरा, सम्मग़ अरबी, निशास्ता और मिश्री, समान-समान लेकर, कूट-पीस-छान लो। फिर पानीके साथ खरल कर, चने-समान गोली बना कर मुखमें रखो। इन गोलियोंके चूसनेसे तर और खुश्क—सूखी और गीली, दोनों तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं।

कत्थेकी गोलियाँ।

सफेद पपरिया कत्था महीन पीस-छान कर खरलमें डालो और ऊपरसे "अड़ूसेके पत्तोंका स्वरस" देदे कर घोटो। जब घुट जाय, मटर-समान गोलियाँ बनाकर, छायामें, सुखा लो। इनमेंसे एक या दो गोली दिनमें २।३ बार खानेसे सब तरहकी खाँसी नाश हो जाती हैं।

नोट—अगर अड़ूसेके पत्ते न मिलें, तो अदरखके स्वरसमें भी गोली बना सकते हो।

टंकादि बटी।

भुना हुआ सुहागा १ तोले, कच्चा सुहागा १ तोले और कालीमिर्चें

२ तोले—इन तीनोंको महीन पीस-छान कर, खरलमें डालो और ऊपरसे "घीग्वारका रस" दे-देकर घोटो और रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना कर, छायामें सुखा लो। इनमेंसे एक-एक गोली, दिन में तीन बार, चार-चार घण्टेपर, खानेसे सब तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं। कई बार आज़माइश की है। परीक्षित हैं।

नोट—ये गोलियाँ बालकोंकी कफज खाँसीपर खूब चमत्कार दिखाती हैं। एक या दो रत्ती भुना हुआ सुहागा, बँगला पानमें रख कर, दिनमें २।३ बार खानेसे सब तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं। कई बार परीक्षा की है।

गुडूच्यादि वटी।

गिलोयका सत्त ६ माशे, निर्दोष ताम्बा भस्म ६ माशे और बेल का गूदा ६ माशे—इनको पीस-छान कर, खरलमें रखो और ऊपरसे "अड़ूसेके पत्तोंका स्वरस" देदे कर ३ घण्टे तक घोटो। घुट जाने पर, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना कर, छायामें, सुखा लो। इन गोलियोंके सवेरे-शाम खानेसे खाँसी चली जाती है।

कासहर मोदक।

हरड़, पीपर, सोंठ, कालीमिर्च और गुड़ इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और गुड़में मिलाकर छै-छै माशेके मोदक बना लो। इनके सवेरे-शाम खानेसे खाँसी नाश होकर अग्नि तेज़ होती है। परीक्षित हैं।

कासान्तक गुटिका।

कायफल, पिठवन, भारंगी, नागरमोथा, धनियाँ, बच, हरड़, सोंठ, पित्तपापड़ा, काकड़ासिंगी और देवदारू—इनको तीन-तीन माशे लेकर, अधकचरा कर लो और आध सेर पानीके साथ काढ़ा बना लो। जब चौथाई पानी रहे, इसी काढ़ेमें पिसी हुई कालीमिर्च

१ तोले, छोटी पीपर १ तोले, जवाखार ६ माशे और अनारके छिलके २ तोले, इन सबका पिसा-छना चूर्ण मिला दो और आठ तोले गुड़ भी मिला दो। जब पकते-पकते गोली बनाने योग्य गाढ़ा हो जाय, आगसे उतार कर, चार-चार माशेकी गोलियाँ बनालो। इन गोलियों के मुखमें रख कर चूसते रहनेसे सब तरहकी खाँसी निश्चय ही आराम हो जाती हैं। परीक्षित हैं।

नोट—जब काढ़ा चौथाई रह जाय, मलकर छान लेना, फिर उसमें पिसी हुई कालीमिर्चादि मिला कर आगपर पकाना; जब गाढ़ा हो जाय, आगसे उतार कर गोली बनाना।

कणादि बटी।

छोटी पीपर, कचूर, पोहकरमूल, हरड़, सोंठ और नागरमोथा—इनको एक-एक तोले लेकर, महीन पीस-छान लो। फिर चूर्णसे दूना साफ गुड़ लेकर, उसमें चूर्णको मिलाकर, गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंसे भयानक श्वास और खाँसी आराम हो जाते हैं। एक-एक गोली मुखमें रख कर चूसते रहना चाहिये। परीक्षित हैं।

शृङ्गी बटी।

काकड़ासिंगीको महीन पीस कर, पानीके साथ खरल करलो और रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक-एक गोली, तीन तीन घण्टेपर, मुखमें रख कर चूसनेसे सब तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं।

अमृतादि बटी।

गिलोय, कौड़ीकी भस्म और काली मिर्च—इनको क्रमसे २ माशे, ५ माशे और ६ माशे लेकर पीस-छान लो। फिर अदरखके

रसके साथ खरल करके, मिर्च-समान गोली बना लो और छायामें सुखा लो।

सवेरे-शाम एक-एक गोली खानेसे वायु, कफ, अफारा और खाँसी रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित हैं।

कासान्तक बटी।

निरुत्थ वंगभस्म १ तोले, छोटी पीपर २ तोले, हरड़का छिलका ३ तोले, बहेड़ेका छिलका ४ तोले, रूसेकी पत्ती ५ तोले और भारंगी ६ तोले—इन सबको अलग-अलग पीस-कूटकर छान लो।

फिर इन दवाओंको खरलमें डालकर बबूलके काढ़ेके साथ १२ घण्टे तक घोटो। दूसरे दिन, फिर बबूलका काढ़ा बनाकर, उसीके साथ घोटो। तीसरे दिन, काढ़ेके साथ घुटी हुई दवाओंको शहद डाल-डालकर १२ घण्टे तक घोटो। चौथे दिन, शहद डाल-डाल कर फिर १२ घण्टे तक घोटो। जब मसाला गाढ़ा हो जाय, जंगली बेर के समान गोलियाँ बनाकर सुखा लो। श्वास और खाँसी नाश करनेमें यह नुसख़ा रामबाण है।

सवेरे-शाम एक-एक गोली खानेसे श्वास, खाँसी और क्षय रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं। परीक्षित हैं।

नोट—काढ़ा बबूलकी छालका बनाना चाहिये। पावभर छालमें २ सेर पानी डालकर काढ़ा बनाओ, जब डेढ़पाव पानी रह जाय, मलकर छान लो। इसी तरह दूसरे दिनकी घुटाईको फिर ताज़ा काढ़ा बना लो।

अकरकरादि बटी।

अकरकरा १ तोला, लटजीरा १ तोला, हींग १ तोला, छोटी पीपर १ तोला, चनेकी भुनी दाल १ तोला, अफीम ६ माशे और लौंग ६ माशे—इन सबको ज़रा कूटकर, मदार (आक) के दूधमें २४ घण्टे तक भिगो रखो। इसके बाद सेंहुड़के डण्डेका गूदा निकालकर, उसमें मदारके दूधमें

भीगी हुई दवाको भरकर, उसे बन्द कर दो और उसपर मिट्टीका गाढ़ा-गाढ़ा लेप करके सुखा दो। फिर सात सेर जंगली कण्डोंकी आगमें उस दवा-भरे डण्डेको रखकर फूँक दो, पर ध्यान रखो कि दवा जलने न पावे। आग शीतल होने पर, डण्डेमेंसे दवाको निकाल कर खरल करो और चने-समान गोलियाँ बना लो।

इन गोलियोंके सवेरे-शाम खानेसे नजले और जुकामकी खाँसी तथा दमा निश्चय ही आराम हो जाता है। हम इतनी ही आज़मा सके हैं। पर कहते हैं, कि इनसे सब तरहका दमा और खाँसी आराम हो जाते हैं। पाठक और तरहकी खाँसियोंमें इन्हें आज़मा देखें। नजलेकी खाँसीपर तो इन्हें बेखटके दें। परीक्षित हैं।

नोट—अफीमको शुद्ध कर लेना या अदरखके रसमें घोट लेना। लटज़ीरे का दूसरा नाम अपामार्ग या अपांग अथवा चिरचिरा है।

रसराज बटी।

शोधा हुआ पारा ६ माशे, शोधी हुई गंधक ६ माशे, शोधा हुआ मैनसिल ६ माशे, कालीमिर्च ६ माशे और छोटी पीपर ६ माशे—इनको तैयार करो।

पहले पारे और गंधकको १२ घण्टे तक घोटो। इसके बाद मैनसिल मिलाकर २ घण्टे तक घोटो। अन्तमें, मिर्च और पीपर मिलाकर २ घण्टे तक घोटो। इसके बाद पानोंका रस दे देकर ६ घण्टे तक घोटो। जब मसाला गोली बनाने लायक़ हो जाय, मटर-समान गोली बनाकर सुखा लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खानेसे सब तरहके श्वास और खाँसी आराम हो जाते हैं।

कासगजकेसरी बटी।

सेंहुड़के पत्ते आगपर तपा-तपाकर पीसो और एक पाव रस निचोड़ लो। फिर मदारके पत्त आगपर तपा-तपाकर पीसो और कपड़ेमें निचोड़ कर एक पाव रस निकाल लो।

फिर काले धतूरेके पत्तोंको पीसकर, कपड़ेमें निचोड़कर एक पाव रस निकाल लो।

फिर डेढ़ पाव अड़ूसेके पत्तोंको एक सेर गायके दूधमें डालकर पकाओ, जब पाव भर रस रह जाय उतारकर छान लो।

शेषमें, ऊपरके चारों रसोंको मिलाकर, हाँडीमें, आगपर पकाओ; जब पकते-पकते गाढ़ा हो जाय, उसमें पीपर, लौंग, भुना सुहागा, छोटी इलायचीके बीज, शुद्ध अफीम और सोंठ—एक-एक तोले पीस छानकर मिला दो और उतारकर खरलमें कुछ देर घोटो और चने-समान गोलियाँ बना लो।

इन गोलियोंमें से एक-एक गोली सवेरे-शाम खानेसे खोकला खाँसी और दमा-श्वास आराम हो जाते हैं। अच्छा नुसख़ा है।

शिंगार अभ्रक।

अभ्रक भस्म निश्चन्द्र १६ माशे, चन्द्रोदय, शुद्ध गंधक, सार, शिंगरफ़, शुद्ध कपूर, खस, बालछड़, लौंग, तज, नागकेशर, तालीस पत्र, जावित्री, गजपीपर, तेजबल, और धायके फूल एक-एक माशे; छोटी इलायची २ माशे, जायफल २ माशे; सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, हरड़के छिलके, बहेड़ेके छिलके और आमलोंके छिलके चार-चार माशे—सबको पीसकर, ३ घण्टे तक, पानीके साथ खरलमें खरल करो और चने-समान गोलियाँ बना लो। यह यूनानी ढँगका शिंगार अभ्रक है।

सेवन-विधि—खाँसीमें एक-एक गोली सवेरे-शाम खा लो। अगर ताक़त लानी हो, तो गोली खाकर दूध पीओ। अगर जीर्ण ज्वर हो, तो गोलीको पीसकर शहद या शर्बत अनारमें खाओ। अगर पेशाब बहुत आते हों, तो एक गोली फालसेकी छालके लुआबमें मिश्री मिलाकर उसके साथ खाओ।

नोट—दो रुपये भर फालसेकी छाल रातको आध पाव पानीमें भिगो दो। सवेरे मल-छानकर लुआब निकाल लो और तोले-भर मिश्री मिला दो।

शृङ्गाभ्र।

अभ्रक भस्म निश्चन्द्र ८ तोले, शुद्ध कपूर, जावित्री, सुगन्धवाला, गजपीपर, तेजपात, लौंग, जटामासी, तालीसपत्र, दालचीनी, नागकेशर, कूट और धायके फूल तीन-तीन माशे, हरड़, बहेड़ा, आमला और त्रिकुटा डेढ़-डेढ़ माशे, जायफल, इलायची और शुद्ध गंधक छै-छै माशे तथा शुद्ध पारा ३ माशे लो।

पहले पारे और गंधकको चौबीस घण्टे तक खरल करो। जब उसमें चमक न रहे, उसमें अभ्रक भस्म और कपूर मिलाकर घोटो। फिर सारी पिसी-छनी दवायें भी उसी खरलमें डाल दो और पानी दे-देकर घोटो। जब सारा मसाला घुट जाय, भीगे चने-समान गोलियाँ बना लो।

इस दवासे खाँसी आदि नाश होकर बल-वीर्य बढ़ता है। अनुपान—अदरखका रस और पानका रस। दवा खाकर थोड़ा-सा जल पीना चाहिये। मात्रा—एकसे चार गोली तक। एक या दो गोली खाकर, ऊपरसे अदरख और पानका मिला हुआ एक या दो तोले रस पीना चाहिये। रसके बाद पानी पीना चाहिये। कफ-प्रकृति या सर्द मिजाज वालेकी पुरानी खाँसी, श्वास और पेटके रोगमें इससे निश्चय ही लाभ होता है। हमने सर्द मिजाज वालोंकी पुरानी खाँसी इसदवासे अनेक बार आराम की है।

शास्त्रमें इसकी बड़ी लम्बी-चौड़ी तारीफ लिखी है, पर उतना हम आजमा नहीं सके। शायद तारीफ सच्ची ही हो, पर हम बिना आजमाये कैसे कह सकते हैं? लिखा है,—इन गोलियोंसे आमाशय

से पैदा हुए सभी रोग एवं वात, पित्त और कफके सभी रोग आराम होते हैं। ये बल वीर्य और पुरुषार्थ बढ़ातीं तथा बूढ़ेको जवान बनाती हैं और सभी रोगोंमें दी जा सकती हैं। इन पर गायका घी, दूध और मांस-रस—ये पथ्य हैं। इनके सिवा, और भी अनेक पदार्थ अपनी प्रकृतिके अनुसार, रूपवती नारियोंके हाथोंसे बनवा कर, खाये जा सकते हैं। इन गोलियोंके खाने वाला सौ स्त्रियोंसे संभोग करके भी सन्तुष्ट नहीं हो सकता। इनके सेवन करने वाला अगर कुछ दिनोंके लिये साग-सब्ज़ी और खटाई छोड़ दे तो अच्छा। अपनी प्रकृतिके अनुसार पथ्य पदार्थ खाने वाला, इन गोलियोंके सेवनसे, दीर्घायु और कामदेवके समान रूपवान हो सकता है और उसके बाल कभी भी सफेद न होंगे।

हम पाठकोंको सलाह देते हैं, कि वे इन गोलियोंको सर्द मिज़ाज वालोंको अवश्य दें, गरम मिज़ाज वालोंको न दें। अभ्रक, जहाँ तक हो हज़ार आँच की लें। अगर न मिले, तो सौ आँच की ही लें। पहले पारे और गंधकको ठीक २४ घण्टे घोट लें, तब और दवाएँ मिलावें। पारा और गंधक भूल कर भी अशुद्ध न लें। परीक्षित हैं।

पारेकी कजली।

शोधी हुई गंधक १६ तोले और त्रिकुटा एक तोले—इनको मिलाकर, काजलके समान महीन कर लो। पीछे सवा हाथ लम्बे सफेद कपड़ेपर इस पिसी हुई दवाको फैला दो और कपड़ेको लपेट कर बत्तीसी बना लो। ऊपरसे बत्तीपर एक डोरा भी लपेट दो। इसके बाद उस बत्तीको ३ घण्टे तक काले तिलोंके तेलमें भिगो रखो।

इसके बाद, जमीनमें एक काँचका साफ गिलास रक्खो। बत्तीके एक सिरेको चिमटेसे पकड़ लो और दूसरे सिरेको दियासलाईसे जला लो। जलता हुआ सिरा गिलासपर कर दो।

बत्तीके जलनेसे तेल टपक-टपक कर गिलासमें गिरेगा। जब बत्ती जल जाय और तेल टपक चुके, तेलको तोलो। जितना तेल हो, उतना ही या उसका आधा शुद्ध पारा उस तेलमें मिला कर, एक मोती घोटनेके खरलमें या विलायती खरलमें घोटो। जब बिना चमककी कजली हो जाय, निकाल कर शीशीमें रख दो। कम-से-क़म २४ घण्टे घुटाई होनी चाहिये; क्योंकि चमक रहना अच्छा नहीं। यही "पारे की कजली" है।

सेवन-विधि—इस कजलीके सेवन करनेसे सर्द मिज़ाजवालों की पुरानी खाँसी अवश्य आराम हो जाती है। हमने इससे ऐसे अनेक रोगी आराम किये हैं, जिनको खाँसीने बरसोंसे घेर रखा था, जिनकी उम्र भी ४०।४५ को पार कर गई थी और जिन्हें शीतल पदार्थोंके खाने और शीतल स्थानोंमें रहनेसे खाँसी हैरान करती थी। हमारी रायमें, यह उन्हींको देनी चाहिये, जिनकी खाँसीमें कफ बहुत गिरता हो, जिन्हें गरम चीज़ें खानेसे लाभ दीखता हो और खाँसी दबती हो। जिनके मुँहसे कफ तो बहुत गिरता हो, पर भीतर जलन मालूम होती हो, उन्हें न देनी चाहिये। सारांश यह, कि जिन्हें गरम दवा और गरम पथ्यसे फायदा होता हो, जिन्हें सर्द स्थान और सर्द चीजोंसे हानि होती हो, जिनकी उम्र ५० के क़रीब हो, जिनके गलेसे कफ बहुत गिरता हो, उन्हींको यह कजली देनी चाहिए। उनके लिये यह अमृत है।

इसकी मात्रा आधी रत्तीसे दो रत्ती तक है। अनुपान शहद है, यानी कजलीको शहदमें मिला कर सवेरे-शाम चाटना चाहिये। इसके कुछ दिन चाटनेसे असाध्य पुरानी खाँसी, श्वास और शूल प्रभृति रोग आराम हो जाते हैं। यह आमको नाश करके शरीरको हलका करती है।

इसके सेवन करने वालेको नमक, खटाई, लाल मिर्च, साग-तरकारी, दही, अचार, स्त्री-प्रसंग और राह चलना वगैरःसे बचना चाहिये। परीक्षित है।

कास लक्ष्मी-विलास बटी।

निरुत्थ बंगभस्म, निश्चन्द्र अभ्रक भस्म, ताम्बा भस्म, काँसी-भस्म, शुद्ध पारा, हरताल भस्म, शुद्ध मैनसिल और शुद्ध खपरिया—इनमेंसे हरेकको एक-एक तोले लेकर मिला लो और फिर तीन दिन तक केशुरियाके रस और कुल्थीके काढ़ेमें खूब खरल करो।

इसके बाद इसमें छोटी इलायचीके दाने, जायफल, तेजपात, लौंग, अजवायन, जीरा, त्रिकुटा, तगरपादुका, दालचीनी और नीला बंसलोचन छै-छै माशे पीसकर मिला दो और फिर केशुरियाका रस और कुल्थीका काढ़ा दे-देकर घोटो और चने-समान गोलियाँ बना लो।

इन गोलियोंसे राजयक्ष्मा, खूनकी खाँसी, श्वास, पीलिया, हलीमक, शूल, बवासीर और प्रमेह आदि रोग नाश होते तथा अग्नि बढ़ती और बल आता है। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाकर शीतल जल पीना चाहिये।

श्वास कुठार रस।

शुद्ध हिंगुल, शुद्ध गंधक, भुना सुहागा, कालीमिर्च और त्रिकुटा—एक-एक तोले लेकर महीन पीस लो और खरलमें डालकर पानीके साथ घोटो। घुटनेपर दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

इन गोलियोंसे सब तरहकी खाँसी और सन्निपात नाश होते हैं। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाकर, ऊपरसे अदरखका रस एक तोले पीना चाहिये।

समशर्कर लौह ।

लौंग, जायफल, कूट, अजवायन, त्रिकुटा, चीतेकी जड़, पीपरामूल, अड़ूसेकी जड़की छाल, कण्टकारी, धानकी खील, काकड़ासिंगी, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, नागकेशर, हरड़, कचूर, शीतलचीनी, और नागरमोथा,—इनको बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्णमें लोह भस्म १ तोले, अभ्रक भस्म १ तोले और जवाखार १ तोले पीसकर मिला दो। फिर इसमें, सारे चूर्णके बराबर, २२ तोले सफेद चीनी मिला दो और घीकी चिकनी हाँडीमें रख दो।

इस दवाके सेवन करनेसे सब तरहकी खाँसी, रक्तपित्त, श्वास और क्षयज खाँसी नाश होकर बल और अग्निकी वृद्धि होती है। मात्रा चार माशेकी है।

वृहत् शंगाराभ्र ।

शुद्ध पारा, शुद्ध आमलासार गन्धक, शुद्ध सुहागा, नागकेशर, कपूर, जायफल, लौंग, तेजपात और काले धतूरेके शोधे हुए बीज—एक-एक तोले लो।

निश्चन्द्र अभ्रक भस्म १००० या १०० आँचकी ४ तोले, तालीसपत्र, नागर-मोथा, कूट, जटामासी, दालचीनी, धायके फूल, छोटी इलायचीके बीज, त्रिकुटा, त्रिफला और गजपीपर दो-दो तोले लो।

पहले पारे और गंधकको २४ घण्टे तक खरल कर लो। पीछे इसमें और सब दवाएँ पीस-छानकर मिला दो और पीपरका काढ़ा दे-देकर ६ घण्टे तक घोटो। घुट जानेपर एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

सेवन-विधि—डेढ माशे दालचीनीके चूर्ण और ६ माशे शहदके साथ सवेरे-शाम एक-एक गोली खानेसे मन्दाग्नि, अरुचि, पीलिया,

पेट के रोग, सूजन, ज्वर, ग्रहणी, खाँसी, श्वास और यक्ष्मा आदि रोग नाश होकर बल वीर्य और अग्निकी वृद्धि होती है।

वसन्तराज रस।

त्रिकुटा, त्रिफला, कुटकी, हरड़, शुद्ध धतूरेके बीज, गुजराती इलायची, चिरायता, कपूर, लौंग और जायफल,—इनको बराबर-बराबर, एक-एक तोले, लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्णमें १ तोले लोहाभस्म और १ तोले शुद्ध अफीम भी मिला दो। शेषमें, सारे मसालेको, १२ घण्टे तक, सहँजने के रसमें घोटो। यही "वसन्तराज रस" है। इसके सेवनसे सब तरहकी खाँसी, और स्वरभङ्ग रोग नाश होते हैं।

वसन्त तिलक रस।

सोना भस्म १ तोले, अभ्रक भस्म २ तोले, लोहा भस्म ३ तोले, शुद्ध पारा ४ तोले, शुद्ध गंधक ४ तोले, बंग भस्म २ तोले और अबीध मोती ४ तोले—इन सब को, बारह-बारह घण्टे, अड़ूसेके रस, गोखरूके रस और ईखके रसमें खरल करके बद्धमूषमें रखो। फिर उस मूषको गज़-भर गहरे चौड़े लम्बे खड्डेमें रख कर, जंगली कण्डोंकी आग लगातार २४ घण्टे तक दो। इसके बाद, आग ठण्डी होने पर, मूषको निकाल लो। मूषमें से रस निकाल कर खरलमें रखो। फिर ऊपरसे कस्तूरी ४ तोले और कपूर ४ तोले डालकर खरल करो। यही "वसन्त तिलक रस" है। इसकी मात्रा २ रत्तीकी है। यह श्वास और खाँसीकी महौषधि है।

शृंग्यादि चूर्ण।

काकड़ासिंगी, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपर, पोहकरमूल, हरड़ का बक्कल, बहेड़ेका बक्कल, बीजहीन आमले, कटेरी या भटकटैयाका

पञ्चाङ्ग, भारंगी, सेंधानोन, संचरनोन, बिड़नोन, समन्दर नोन और कँचिया नोन—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीस कर, कपड़े में छान लो और शीशीमें रख दो ।

यह चूर्ण हमने ही नहीं, हमारे गुरुजी ने भी अनेकों बार आज़-माया है । यह श्वास और खाँसी की अचूक महौषधि है । इसके सेवन करनेसे, छाती पर जमा हुआ कफ छुटकर, श्वास और खाँसी आराम हो जाते हैं । इतना ही नहीं, इस चूर्णसे हिचकी, श्वास, ऊर्द्ध श्वास और अरुचि एवं मन्दाग्नि भी नाश हो जाती है । वैद्यविनोद-कर्त्ताने इसे खाँसी रोगमें लिखा है, पर हमने देखा है, कि यह श्वासको भी नष्ट करता है । जब मनुष्य की भीतरी नाड़ियों और छाती पर कफ जम जाता है, कफके जम जाने से श्वास-नलीमें हवा के आने-जानेकी राह बन्द हो जाती है; तब मनुष्य कष्ट के साथ बारम्बार श्वास लेता है । ऐसी हालतमें, अगर रोग के आरम्भमें प्रस्वेद कराकर यानी पसीने निकाल कर, कफ पतला कर लिया जाय और फिर यह चूर्ण दिया जाय, तो पतला हुआ कफ दस्त की राहसे निकल जायगा और रोगीका पीछा श्वास और खाँसी से छुट जायगा । शरीर का पसीना निकालनेसे शरीर हलका और कफ पतला हो जाता है । उस समय "शृंग्यादि चूर्ण" जैसी वात-कफ नाशक दवा देनेसे कफ सहजमें निकल जाता है । ध्यान रखो, यह चूर्ण वात-कफ नाशक है और श्वासमें 'वात-कफ' प्रधान होते हैं, अतः वात-कफकी खाँसी और श्वासमें ही इसका देना हितकर है ।

सेवन विधि—इस चूर्णकी मात्रा, जवानके लिए, तीनसे ६ माशे तक है । सवेरे-शाम एक-एक मात्रा खाकर, गरम जल पीना चाहिये । फिर लिखे देते हैं, कि इसे वात-कफज या कफज खाँसीमें ही देना चाहिए । सुपरीक्षित है ।

पिप्पल्यादि चूर्ण।

पीपर, काली मिर्च और सूखा अनारदाना—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णमें जवाखार और गुड़ मिला कर सेवन करनेसे दारुण क्षयसे पैदा हुई खाँसी, श्वास, पीनस, वमन, ज्वर और मन्दाग्नि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

समशर्कर चूर्ण।

लौंग १ तोले, जायफल १ तोले, छोटी पीपर १ तोले, काली मिर्च २ तोले और सोंठ ४ तोले,—इन सबको पीस-छान कर तोलो। जितना चूर्ण हो, उतनी ही उत्तम "मिश्री" पीस कर उसमें मिला दो और साफ बर्तनमें रखदो। यह "समशर्कर चूर्ण" है।

यह नुसख़ा अनेक ग्रन्थोंमें लिखा है और आज़माने पर अच्छा पाया गया है, इसीसे हमने भी लिखा है। इसके सेवन करनेसे खाँसी, ज्वर, अरुचि, प्रमेह, गुल्म, मन्दाग्नि और संग्रहणी रोग नाश हो जाते हैं। लिखा है:—

सितासमं चूर्णमिदं प्रसह्य, रोगाननेकान्प्रबलान्निहन्ति।
कासज्वरारोचकमेहगुल्म, श्वासाग्निमांद्यग्रहणीप्रदोषान्॥

मरिचादि चूर्ण।

काली मिर्च १ तोले, छोटी पीपर १ तोले, अनारके सूखे छिलके २ तोले, जवाखार ६ माशे और साफ पुराना गुड़ ८ तोले—इनको पीस-छान कर चूर्ण बना लो। वृन्द ने लिखा है:—

सर्वौषधैरसाध्या ये कासाः सर्वे वैद्यनिर्मुक्ताः।
अपि पूयं छर्दयतां तेषामिदमौषधं पथ्यम्॥

इस चूर्णसे वैद्यों द्वारा सर्वथा असाध्य कह कर त्यागे हुए अथवा पीप वमन करने वाले, भयंकर खाँसीसे दुखी रोगी भी आराम हो जाते हैं।

नोट—मरिचादिबटी और मरिचादिचूर्ण एक ही हैं। कोई चूर्णसे काम लेते हैं और कोई गोलियोंसे। इस योग के उत्तम होनेमें जरा भी शक नहीं।

तालीसादि चूर्ण।

तालीस पत्र १ तोले, काली मिर्च २ तोले, सोंठ ३ तोले, छोटी पीपर ४ तोले, तेजपात ६ माशे, छोटी इलायची ६ माशे और सफेद चीनी २० तोले ले लो। पहले दवाओंको कूट-पीस कर छान लो। फिर चीनी मिलाकर रख दो। यही "तालीसादि चूर्ण" है।

इस चूर्णके सेवन करनेसे खाँसी, श्वास और अरुचि आदि रोग नाश हो जाते हैं।

नोटः—अगर यह चूर्ण पित्तज खाँसीमें देना हो, तो इसमें पांच तोले नीली झाँईका बंसलोचन भी मिला देना चाहिए। इसे सवेरे-शाम सेवन करना चाहिए।

तालीसादि मोदक

ऊपरके चूर्णकी चीनीमें बराबर पानी मिला कर चाशनी कर लो। फिर उसमें दवाओंका चूर्ण मिलाकर मोदक—लड्डू बना लो। आग पर पकनेसे लड्डूचूर्णसे हलके हो जाते हैं। इनके सेवन करनेसे खाँसी, श्वास, अरुचि, पीलिया, ग्रहणी, तिल्ली, सूजन, अतिसार, जी मिचलाना और शूल आदि नाना रोग नाश होते हैं।

नोट—हारीतने इस चूर्ण या मोदकमें दालचीनी और लौंग भी लिखी हैं।

सितोपलादि चूर्ण।

मिश्री १६ तोले, नीली झाँईका बंसलोचन ८ तोले, छोटी पीपर ४ तोले, छोटी इलायचीके बीज २ तोले और दालचीनी १ तोले—इनको पीस-छान कर रख लो। यही "सितोपलादि चूर्ण" है।

सेवन-विधि—इसे ना-बराबर घी और शहदमें मिला कर चाटने से श्वास, खाँसी, क्षय, हाथ-पैरोंकी जलन, मन्दाग्नि, जीभ जकड़ना,

पसलीका दर्द, अरुचि, जीर्ण ज्वर और और ऊपरका रक्तपित्त नाश होकर शरीररक्षा होती है। इससे पुराने बुख़ार और खाँसी-श्वास में अवश्य-अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

सितोपलादि चटनी

मिश्री १६ तोले, बंसलोचन ८ तोले, छोटी इलायचीके बीज ४ तोले, तज २ तोले और छोटी पीपर १ तोले—सबको पीस-छान कर रख लो।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा १ से २ माशे तक है। यह "शहद" या "शर्बत अनार" में मिला कर खानेसे बुख़ार और ख़ुश्कीको नाश करता, तरावट लाता और भूख बढ़ाता है। अगर ताक़त बढ़ानी हो, तो मूंगे की शाख और अबीध मोती, गुलाब जलमें घोटकर, इसमें मिला दो और शेषमें कुछ चाँदीके वर्क भी मिला दो। पीछे शहद या शर्बत अनारमें मिला कर चाटो। इस तरह चाटनेसे खाँसी और क्षय रोग भी नाश होंगे तथा बल बढ़ेगा। यह चटनी ऊपर वाले "सितोपलादि चूर्ण" से शीतल है।

जातिफलादि चूर्ण

जायफल, लौंग, छोटी इलायचीके बीज, तेजपात, दालचीनी, नागकेशर, शुद्ध कपूर, सफेद चन्दनका बुरादा, काले तिल, नीली झाँई का बंसलोचन, तगर, सूखे आमले, तालीसपत्र, छोटी पीपर, बहेड़ेका छिलका, काला जीरा, चीते की छाल, सोंठ, बायबिडंग और कालीमिर्च—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस कर, कपड़े में छान लो। फिर इस चूर्णको तोलो। यह चूर्ण जितना हो, उतनी ही खूब घुली हुई "भाँग" इसमें पीस-छान कर मिला दो। इसके बाद इसे फिर तोलो और सारे चूर्णके बराबर उत्तम "मिश्री" पीस-

छान कर मिला दो और किसी साफ बर्तनमें मुख बन्द करके रख दो। यही "जातीफलादि चूर्ण" है। शास्त्रमें लिखा है:—

कर्षमात्रं ततः खादेनमधुनाप्लावित सुधीः।
अस्य प्रभावत् ग्रहणी कास श्वासारुचिक्षयाः।
वातश्लेष्मप्रतिश्यायाः प्रशमंयान्तिवेगतः॥

इसमें से १ कर्ष चूर्ण शहदमें मिलाकर खानेसे ग्रहणी, खाँसी, श्वास, अरुचि, क्षय—कफक्षई, वात-कफ की वृद्धि और जुकाम ये रोग नाश होते हैं।

यद्यपि इससे ग्रहणी और श्वास-खाँसी आदिका आराम होना लिखा है, पर संग्रहणी रोगपर यह चूर्ण प्रधान है; इसीसे हमने "चिकित्सा-चन्द्रोदय" तीसरे भागमें, संग्रहणी रोग नाशार्थ, इसे लिखा है। पर हमने अनेक बार देखा है, कि इसके सेवनसे श्वास और खाँसी भी निश्चय ही नाश हो जाते हैं और रोगी की रात चैन से कटती है। इसीसे हमने इसे यहाँ फिर लिखा है।

शास्त्रमें इसकी मात्रा एक कर्ष की लिखी है। कोई कर्षको १ तोलेके बराबर और कोई १६ माशेका समझते हैं। अगर कोई अनजान वैद्य, केवल शास्त्रपर भरोसा करके, भाँग न खाने वाले कमज़ोर रोगीको १ कर्ष चूर्ण देदे, तो लाभके बजाय हानि ही होगी। इसलिये काम विचार कर करना चाहिये। शास्त्रमें जो मात्रा लिखी है, वह ग़लत नहीं; पर आजकल ग़लत है; क्योंकि अब पहले जैसे बलवान आदमी नहीं होते। जो लोग प्राचीन ग्रन्थोंके नुसख़ोंसे इलाज करते हैं, उन्हें सावधान होना ज़रूरी है। इसीसे अनुभवी वैद्य अच्छा माना गया है।

सेवन-विधि—स्त्रियों और कमज़ोर रोगियोंको १ से ३ माशे तक की मात्रा ठीक होगी। पर हाँ, जो भाँग खानेके अभ्यासी हैं; उन्हें

चार छै माशे भी दे सकते हैं। इसकी एक मात्राको "शहद" में मिला कर चाट जाना चाहिए। कोई-कोई इसे "शर्बत गुलबनफ़शा" या "शर्बत उन्नाव" के साथ भी चटाते हैं। यह वात रोगीके मिज़ाज और वैद्य की समझपर मुनहसिर है। इस चूर्णको शामके वक्त चाटना और ऊपरसे निवाया दूध पीना अच्छा है।

नोट—आजकल, धातुपर गरमी पहुँचने वगैरः कारणोंसे, लोगोंको जुकाम वना रहता है। जुकाम या नजलेसे खाँसी और क्षय हो जाते हैं। क्षय होने पर, बहुधा, कफके साथ खूनभी आता है। इस दशामें हम सवेरे ही १ या दो माशे "लवंगादि चूर्ण" शहद या शर्बत बनफशामें चटाकर, ऊपरसे मिश्री-मिला गायका दूध आध पाव पिलाते हैं और शामको "जातिफलादि चूर्ण" "शहद" या "शर्बत बनफशा" में चटाकर मिश्री-मिला गुनगुना दूध पिलाते हैं। अगर रोगीको पाखाना साफ नहीं होता और कफमें खून भी आता दीखता है, तो दिन-रातमें तीन वार ६ माशेसे २ तोले तक "द्राक्षारिष्ट" भी चटाते हैं। यक्ष्मा और क्षयज खाँसीकी यह सिद्ध और अनुभूत चिकित्सा है। लवंगादि चूर्ण और द्राक्षारिष्ट वनानेकी विधि "चिकित्सा-चन्द्रोदय" पांचवें भागके पृष्ठ ६०६—६११ में लिखी है।

अश्वगन्धादि क्काथ।

असगन्ध, गिलोय, शतावर, दशमूल, खिरेंटी, अड़ूसा, पोहकर-मूल और अतीस,—इन आठों दवाओंको चार-चार या पाँच-पाँच माशे—बराबर-बराबर लेकर, काढ़ेकी विधिसे, काढ़ा बना लो। इस काढ़ेके सवेरे-शाम पीनेसे क्षय रोग और खाँसी नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—गिलोय, अडूसा, असगन्ध और शतावर आदि सदैव गीले लेने चाहियें, पर दूने नहीं। काढ़ेकी दवायें कुल मिला कर दो से चार तोले तक ले सकते हैं। जितनी दवा हो, उससे सोलह गुने पानीमें, मिट्टीकी हाँडीमें, काढ़ा पकाना चाहिये और आठवाँ भाग पानी रहने पर, उतार कर मल छान लेना और निवाया-निवाया पीना चाहिये। हाँडीपर ढकना न रहना चाहिये। विशेष जाननेके लिए "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भाग के पृष्ठ १७३, १३२-१३५ और १३१-१३३ देखिये।

वासकादि क्वाथ ।

अडूसा, सोंठ, नागरमोथा, भारङ्गी, चिरायता और नीमकी छाल—इनको बराबर-बराबर चार-चार माशे लेकर काढ़ा बनालो और शीतल होनेपर "शहद" मिलाकर पी लो। इस काढ़ेसे श्वास और खाँसी निश्चय ही आराम हो जाते हैं।

बृहती क्वाथ ।

दो तोले कटेरीका पञ्चाङ्ग या जड़ लेकर, ३२ तोले पानीमें काढ़ा बनाओ, जब आठवाँ भाग या चार तोले पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो और २ माशे "पीपरोंका चूर्ण" मिलाकर पी लो। इस काढ़ेसे अनेक बार ७ दिनमें ही दारुण खाँसी आराम होते देखी है। परीक्षित है।

कंटकार्यावलेह ।

कटेरी या भटकटैयाका पञ्चाङ्ग ४०० तोले लेकर, १०२४ तोले पानीमें डालकर, मन्दाग्निसे पकाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर छान लो। यह काढ़ा तैयार हुआ।

गिलोय ४ तोले, चव्य ४ तोले, चीतेकी छाल ४ तोले, नागरमोथा ४ तोले, काकड़ासिंगी ४ तोले, सोंठ ४ तोले, पीपर ४ तोले, कालीमिर्च ४ तोले, धमासा ४ तोले, भारंगी ४ तोले, रास्ना ४ तोले और कचूर ४ तोले, इन १२ चीजोंको अलग-अलग पीस-छान कर, चार-चार तोले चूर्ण तैयार कर लो और फिर एकमें मिला दो।

नीली झाँईका बंसलोचन ८ तोले और छोटी पीपर १६ तोले—इनको भी पीसकर रख लो।

अब काली तिलीका तेल ३२ तोले, घी बत्तीस तोले और शहद ३२ ताले भी तैयार कर लो।

अब उस पके हुए काढ़ेको किसी क़लईदार बर्तनमें भर कर चूल्हेपर चढ़ाओ और मन्दाग्निसे पकने दो। पकते समय इसमें, गिलोय प्रभृति १२ दवाओंका पिसा-छना चूर्ण, तेल और घी भी डाल दो और चलाते रहो। जब अवलेहके जैसा गाढ़ा होनेपर आवे, नीचे उतार लो। जब शीतल हो जाय, उसमें शहद, बंसलोचन और पीपर मिला दो। बस, यही "कंटकार्यावलेह" है।

इस अवलेहके चाटनेसे श्वास और खाँसी निस्सन्देह आराम हो जाते हैं।

वासावलेह।

दो सेर अड़ूसे की छाल और १६ सेर पानीको एक क़लईदार बर्तनमें चढ़ाकर काढ़ा बनाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर छान लो।

फिर इस काढ़ेमें एक सेर 'बूरा' और पाव भर 'घी' डाल कर पकाओ। जब गाढ़ा होनेपर आवे, उसमें छोटी पीपरोंका पाव भर "चूर्ण" मिलाकर नीचे उतार लो। जब शीतल हो जाय, उसमें एक सेर "शहद" भी मिला दो। यही "वासावलेह" है।

इस अवलेहके चाटनेसे यक्ष्मा, खाँसी, श्वास, पसलीका दर्द, हृदयका शूल, ज्वर और रक्तपित्त ये आराम होते हैं। परीक्षित है।

पिप्पली घृत।

पहले छोटी पीपर १ पाव लेकर महीन पीस लो। फिर उस चूर्ण को बकरीके दूधके साथ सिलपर पीस लो। यही "कल्क" है।

अब गायका घी अढ़ाई सेर, बकरीका दूध दस सेर और ऊपर की पीपरोंकी लुगदी—तीनोंको, क़लईदार बर्तनमें, मन्दाग्निसे पकाओ। जब दूध जल कर घी मात्र रह जाय, उतार लो। फिर इसे छान कर अच्छे बर्तनमें रख दो। यही "पिप्पली घृत" है।

इस घीकी मात्रा ४ तोले तक है। इसके पीनेसे सब तरहकी नई और पुरानी खाँसी आराम होती हैं। अगर रोगी पथ्यसे इसे पिये और घी पच जाय, तो खाँसी खड़ी न रहेगी। घी पीकर पानी कभी न पीना चाहिए। परीक्षित है।

रास्नादिक घृत ।

रास्ना, खिरेंटी, त्रिकुटा और गोखरू—इन सबको बराबर-बराबर पाँच-पाँच तोले लेकर, पानीके साथ, सिल पर पीस कर लुगदी बना लो।

फिर एक सेर घी और चार सेर बकरीका दूध तथा ऊपर की लुगदीको क़लईदार बर्तनमें रख, मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। यही "रास्नादि घृत" है।

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे चार तोले तक है। इसे पीकर ऊपरसे "कंटकारीका स्वरस" पीनेसे सब तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं।

भृगु हरीतकी ।

जड़, छाल और पत्तों समेत कटेरीका सर्वाङ्ग ४०० तोले और हरड़ १०० नग लेकर, दोनोंको एक बासनमें डालकर, १०२४ तोले जलमें पकाओ। पकते-पकते जब चौथाई काढ़ा रह जाय, उतार कर महीन कपड़ेमें छान लो और हरड़ोंको अलग रख दो।

फिर उस काढ़ेमें पहलेकी पकाई हुई १०० हरड़ और ४०० तोले गुड़ डाल कर मन्दाग्नि से पकाओ। जब पक कर अवलेहके समान हो जाय, उसे उतार कर शीतल कर लो।

इसके बाद उस तैयार हुए अवलेहमें सोंठ ४ तोले, कालीमिर्च ४ तोले, छोटी पीपर ४ तोले, छोटी इलायचीके बीज ४ तोले,

दालचीनी ४ तोले, तेजपात ४ तोले, नागकेशर ४ तोले और शहद २४ तोले—इनको मिला दो। शहदके सिवा, सोंठ, मिर्च आदिको पीस-छान कर मिलाना। बस, अब "भृगुहरीतकी" तैयार हो गई। यह अवलेह चाटा जाता और हरड़ खाई जाती है।

इस अवलेहके बल और अग्नि अनुसार चाटनेसे खाँसी रोग निश्चय ही आराम हो जाता है।

खाँसीपर ग़रीबी नुसख़े।

नोट—नीचेके नुसख़ोंका सम्बन्ध "सामान्य चिकित्सा" से ही नहीं है। यहाँ सब तरहकी खाँसियोंको आराम करने वाले नुसखे अलग-अलग लिखे जाते हैं। जो नुसख़ा सब तरहकी खाँसियोंपर लिखा हो, उसीका सम्बन्ध "सामान्य चिकित्सा" से समझना चाहिये, सबका नहीं। यहाँ बहुतसे नुसखे खास तरहकी खाँसियोंपर भी लिखे जाते हैं।

(१) कटेरीकी जड़का चूर्ण १ माशे और छोटी पीपरोंका चूर्ण १ माशे—दोनोंको ६ माशे "शहद" में मिलाकर चाटनेसे समस्त खाँसी नाश हो जाती हैं। परीक्षित है।

नोट—कटेरीके फूलोंका चूर्ण १ माशे और पीपरका चूर्ण १ माशे—इन दोनोंको "शहद" में मिलाकर चाटनेसे भी खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२) काकड़ासिंगीको महीन पीस-छानकर, पानीके साथ जंगली बेरके समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम, एक-एक गोली मुँहमें रख कर चूसनेसे सब तरहकी खाँसी—ख़ासकर कफकी खाँसी—आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(३) शलग़मपर कपड़-मिट्टी करके सुखा लो और फिर उसे भूभल या तन्दूरमें भून लो। भुन जाने पर, उसमेंसे ६ माशे रस निकाल लो। उस रसमें २ माशे "मिश्री" मिला कर पीलो। इस तरह सवेरे-शाम पीनेसे ४।६ दिनमें खाँसी जाती रहती है।

(४) गेहूँ १ तोले लेकर पाव भर पानीमें पकाओ और पकते समय उसमें १ या २ माशे "लाहौरी नमक" भी डाल दो। जब तीसरा भाग जल रह जाय, उतार कर छान लो और पी जाओ। इससे ७ दिनमें खाँसी जाती रहती है।

(५) गावज़ुबाँ ३ माशे ६ रत्ती, सौंफ ४ माशे, छिली मुलेठी १६ माशे, खसका पोस्ता नग १, सम्मग अरबी २ माशे, लिसौढ़े नग १७, ख़तमीके बीज ४ माशे और बड़े मुनक्के नग ११—इनको आध सेर पानीमें औटाओ, जब छटाँक या डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, उतार कर छान लो और रुपया-भर 'मिश्री' मिला कर पीलो। इस नुसख़ेको एक हकीम साहब सूखी और पित्तकी खाँसीपर बहुत ही अच्छा कहते हैं। उनका कहना है, कि कई बार यह नुसख़ा सभी तरह की खाँसियोंमें अच्छा पाया गया है।

(६) छिली मुलेठी १६ माशे, बड़े मुनक्के १६ माशे, खसखसके डोंडे दानों समेत ७ नग, लिसौढ़े ४ माशे, अलसी ४ माशे, सादा अंजीर ३ दाने, सौंफकी जड़ २ माशे और ज़ूफ़ा २ माशे—सबको तीन पाव जलमें डाल कर काढ़ा करो। जब एक पाव पानी रह जाय, उसमें आध सेर "मिश्री" मिला कर चाशनी करो।

फिर बादामकी गरी ४ माशे, निशास्ता ४ माशे, चिलगोज़ेकी मींगी ४ माशे, काकड़ासिंगी ८ माशे, रुब्बेसूस—मुलेठीका सत्त ४ माशे, सम्मग अरबी ४ माशे, छोटी पीपर २ माशे और मुनक्का बिना बीजके १ माशे—इन सबको पीस कर उसी चाशनीमें डाल दो

और उतार लो। इसकी मात्रा ७।। माशेके क़रीब है। इसके सेवन करनेसे खाँसी जाती रहती हैं।

(७) गोंदीका लुआब निकाल कर, उसमें बराबरकी "चीनी" मिला कर चाशनी करो। अन्तमें थोड़ा-सा "बबूलका गोंद" पीस कर मिला दो। इसमेंसे चार-चार माशे खानेसे खाँसी जाती रहती है।

(८) गुदाके मुँहपर "सरसोंका तेल" दिनमें कई बार चुपड़ना खाँसी नाश करनेके लिए बहुत ही उत्तम उपाय है; ख़ास कर वात-जनित सूखी खाँसीमें तो अक्सीर ही है।

(९) अड़ूसेके पत्तोंको केलेके पत्तोंमें लपेट कर ऊपरसे कपड़-मिट्टी कर दो और भूभलमें पका लो। पक जानेपर, छै माशे रस निचोड़ लो। फिर उस रसमें १ माशे पीपरका चूर्ण और ३ माशे शहद मिला कर चाटो। इस उपायसे सब तरहकी खाँसी जाती रहती हैं। परीक्षित है।

(१०) अड़ूसेकी छाल २ तोलेको ३२ तोले पानीमें औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर छान लो। शीतल होनेपर, उसमें १ माशे पीपरका चूर्ण और ४ माशे शहद मिला कर चाटो। इससे सब तरह की खाँसी जाती रहती हैं। परीक्षित है।

(११) अड़ूसेके ६ माशे स्वरसमें ६ माशे शहद मिला कर, ७ या २१ दिन, चाटनेसे धातु-क्षय, श्वास और खाँसी रोग अवश्य आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१२) अड़ूसेका स्वरस ६ माशे, शहद ६ माशे और साँभर नोन १ माशे—तीनोंको मिलाकर ज़रा गरम कर लो और पी जाओ। इस नुसखेसे सब तरह की खाँसी ३।४ दिनमें ही दब जाती हैं। जब खाँसीमें किसी दवासे लाभ न हो, इसे काममें लाइये। अवश्य लाभ होगा। डबल परीक्षित है।

नोट—इस नुसखेसे पहली ही खूराकमें फायदा नज़र आता है। अगर दैवात् कम लाभ हो (ऐसा असंभव है) तो नमकके बजाय १ माशे "छोटी पीपर" पीस कर मिला दो और पी जाओ। इस तरह तो जरूर ही लाभ होगा। यह नुसखा फेल होते नहीं देखा गया। इससे सब तरहकी खाँसी, मुँहसे खून गिरना और श्वास—ये सब निस्सन्देह नाश हो जाते हैं।

(१३) अड़ूसेका स्वरस २ तोले और शहद ६ माशे—इन दोनों को मिलाकर दिनमें ३।४ बार पीनेसे रक्तपित्त और पित्तकफ की खाँसी—ये अवश्य आराम होते हैं। यद्यपि यह नुसखा शास्त्रोक्त है, पर हमारा परीक्षित है। कहा है:—

वासकस्वरसः पेयो मधुयुक्तो हिताशिना।
पित्तश्लेष्मकृते कासे रक्तपित्ते विशेषतः॥

यह नुसखा पित्त-कफकी खाँसीको नाश करता है, पर रक्तपित्त को खास तौरसे आराम करता है।

(१४) कालीमिर्च और दोनों तरहकी थूहरोंका दूध "गुड़" में मिलाकर खानेसे श्वास, खाँसी, क्षय और हृदय-रोग नाश होते हैं।

(१५) सोंठ, कालीमिर्च और छोटी पीपर—इन्हें महीन पीस-छान कर रखलो। इसमेंसे ३ या ४ माशे चूर्ण ६ माशे "शहद" में मिलाकर चाटनेसे श्वास, कफ और खाँसी नाश हो जाते हैं।

(१६) कड़वे तेलमें गुड़ औटा कर चाटनेसे श्वास और सूखी खाँसी जाते रहते हैं।

(१७) चार तोले सेंधेनोनको "आकके दूध" में मसल कर सुखा और पीस लो। इसमेंसे एक-एक माशे नमक, सवेरे-शाम खानेसे क्षय और क्षयकी खाँसी नाश हो जाते हैं।

(१८) बच, असगन्ध, लटजीरा—औंगा, तुलसीकी पत्ती और सरसों—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्ण के खानेसे क्षय और खाँसी नाश हो जाते हैं।

(१६) अमलताशका गूदा आध पाव और मिश्री एक पाव—दोनों को पीस-कूट कर रख लो। इसमेंसे एक तोले दवा, पानी के साथ, नित्य खानेसे छातीपर जमा हुआ कफ छूट जाता और पाख़ानेकी राहसे निकल जाता है। कफके छूटनेसे खाँसी आराम होती और तबियत हलकी होती है। परीक्षित है।

नोट—अगर किसी खाँसी वालेकी छातीका कफ न छुटता हो और उसे दस्त भी न होता हो, तो उसे इस अमलताशके चूर्णको खिलाइये और हमारी लिखी "कास-मर्दन बटी" दिन भर चूसनेको दीजिये। बालकोंको यही चूर्ण, अवस्थानुसार, कम दीजिये। बच्चे कफको निगल जाते हैं—थूकना नहीं जानते। इससे कफ गुदा-द्वारा निकल जायगा और खाँसी जाती रहेगी।

(२०) ३ माशे हालिमको ३ माशे शहदमें मिलाकर चाटनेसे खाँसी जाती, पसलीका दर्द मिटता और छातीपर जमा हुआ कफ छुट जाता है। यह नुसख़ा ख़ास कर कफकी खाँसीको नष्ट करता और मलको छातीपर गिरने से रोकता है। परीक्षित है।

(२१) तीन रत्ती चिरचिरेका खार, तीन माशे शहदमें मिला कर चाटनेसे कफ और खाँसी नाश होते तथा गले और छातीका जमा हुआ कफ छुट जाता है।

(२२) तीन चार दाने कुचलेके एक या डेढ़ तोले घी में डाल कर जलाओ और कोयले कर लो। फिर कोयलोंको पीस कर रख लो। इसमेंसे दो रत्ती राख सवेरे ही पानमें रख कर खानेसे कफ और खाँसी नाश हो जाते हैं। यह नुसख़ा कफकी खाँसीपर मुफीद है।

(२३) अदरखका स्वरस ६ माशे, शहद ६ माशे और साँभर नमक १ माशे मिला कर चाटनेसे सब तरहकी खाँसी नाश हो जाती हैं। ख़ासकर कफ-जनित खाँसी और ज़ुकाम। परीक्षित है।

नोट—हम अदरखका स्वरस २ तोले और शहद ६ माशें मिला कर सवेरे-शाम पिलाते हैं। इससे श्वास, कफजनित खाँसी, कफ और ज़ुकाम नाश होते

हैं। पर यह किसी-किसीको गरमी करता है। अगर गरमी करे तो मात्रा घटा दो। फिर भी गरमी करे तो दवाको बदल दो, क्योंकि जो दवा गरमी करेगी, वह फायदा न करेगी। परीक्षित है।

(२४) कुछ बहेड़ोंपर, "घी" चुपड़ दो और उनपर दो-दो अंगुल गायका गोबर लपेट दो। फिर धूपमें सुखा कर आगमें दबा दो। पकनेपर, गोबरसे बहेड़े निकाल कर पोंछ लो। इन के छिलके, सुपारीकी तरह मुँहमें रखो और चूसो अथवा पीस कर दो-दो रत्ती मुँहमें डालो और चूसो। इस उपायसे पाँचों प्रकारकी खाँसियोंमें लाभ होता है। परीक्षित है।

(२५) अड़ूसा, कटेरी, सोंठ, पोहकरमूल, कुलथी, भारंगी, काकड़ासिंगी, पीपर, कचूर और बहेड़ेका छिलका—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको "घीग्वारके रस" में खरल करके, जंगली बेरके समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली मुँहमें रख कर चूसनेसे खाँसी आराम हो जाती हैं।

(२६) सोंठ, अड़ूसा, पीपर, चव्य और छोटी कटेरी—इन को बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। सवेरे-शाम एक-एक मात्रा खाकर, गरम पानी पीनेसे खाँसी आराम हो जाती है।

(२७) कायफलकी छालका रस "शहद" में मिला कर चाटने से खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(२८) विलायती अनारका छिलका, छोटी पीपर और काकड़ासिंगी छै-छै माशे; लाहौरी नोन १ तोले, काला नोन १ तोले और बड़ी हरड़का बक्कल २ तोले—इनको पीस कर छान लो। इसमें से एक-एक माशे चूर्ण, दिनमें कई बार, फाँकनेसे खाँसी जाती रहती है।

(२६) काकड़ासिंगी, छिली मुलेठी, बबूरका गोंद, खसखसका पोस्ता, छोटी पीपर और समन्दर-फलकी गरी—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण नित्य खानेसे खाँसी चली जाती है ।

(३०) काली मिर्च, सोंठ, छोटी पीपर और छोटी इलायची चार-चार तोले और गुड़ ८ तोले, सबको पीस-कूट कर मिला लो। इसमेंसे एक तोले दवा, सवेरे ही, नित्य खानेसे, सब तरहकी खाँसी, श्वास और दम रुकना नाश होता है। परीक्षित है।

(३१) शंखकी भस्म ६ माशे "नागरपान"में धर कर खानेसे खाँसी आराम हो जाती है ।

(३२) कतीरा-गोंद, मुलहटी और मिश्री—बराबर-बराबर लेकर पीस लो, फिर बिहीदानेके लुआबमें मसाला मिलाकर गोली बना लो। सोते समय, दो-चार गोली मुँहमें रखनेसे खाँसी जाती रहती है ।

(३३) मुलहटी, काली मिर्च और मिश्रीको कूट-छान कर चने-बराबर गोलियाँ बना लो। रातको, सोते समय, दो चार गोलियाँ खानेसे खाँसी नाश हो जाती है ।

(३४) मदारके पत्ते १००, धतूरेके पत्ते १०० और काला नमक एक पाव—इनको एक हाँडीमें रख कर फूँक दो। जब राख हो जाय, निकाल लो। इसमें से रत्ती दो रत्ती राख, अदरख के रसके साथ, खानेसे खाँसी, दमा और खोकला जाता रहता है ।

(३५) कुछ बहेड़े जला कर राख कर लो। इस राखके चाटनेसे बुढ़ापेमें होनेवाली खाँसी और छातीका रोग नाश हो जाता है।

(३६) अलसी और इस्पन्द पीस कर, दूने "शहद" में मिला कर रख लो। इसमें से १ तोले रोज़ चाटनेसे बुढ़ापेमें होनेवाला छातीका रोग और खाँसी नाश हो जाते हैं।

१०

(३७) शुद्ध कुचला सवा तोले, आकके पत्ते १००, रूसेके पत्ते १००, साँभर नमक अढ़ाई तोले, पीपर अढ़ाई तोले, पीपरामूल अढ़ाई तोले, सोंठ सवा दो तोले, अजवायन दो तोले और काला-जीरा सवा दो तोले—सबको एक हाँडीमें रख कर, मुँह बन्द कर दो और गज़-भर गहरे चौड़े लम्बे गढ़ेमें रखकर फूँक दो। जब राख हो जाय, निकाल लो। इसमें से चार रत्ती राख "पान" में रखकर खानेसे खाँसी और श्वास नाश हो जाते हैं।

(३८) आककी बहुत पुरानी जड़ लाकर, छायामें, सुखा लो। फिर उसकी मिट्टी दूर करके और उसे एक नाँदमें रख कर आग लगा दो। जब जल जाय, ढक दो। शीतल होने पर, कोयले और राख अलग-अलग निकाल लो।

कोयलोंको एक बोतलमें भर कर काग लगा दो और बोतलको एक मिट्टीसे भरे गमलेके बीचमें गाड़ दो। सवेरे-शाम, दोनों समय, छै महीने तक, गमलेमें पानी डालते रहो। इसके बाद बोतलको निकाल कर रख लो।

सेवन-विधि—दो चाँवल-भर राख "पान" में रखकर खानेसे कैसी ही खाँसी क्यों न हो, आराम हो जाती है। दो चाँवल-भर कोयले "गायके दूधकी मलाईके साथ" खानेसे श्वास और खाँसी निश्चय ही भाग जाते हैं। इनको पानमें भी खाते हैं, पर स्त्री-प्रसंग से बचना परमावश्यक है। परीक्षित है।

(३९) छोटी कटेरीकी जड़, छिली मुलेठी, काकड़ासिंगी, कुलींजन और हरड़की छाल,—इन्हें पानीमें जोश देकर गाढ़ा सा कर लो। जब गाढ़ा होने पर आवे, इसमें बबूलकी छाल पीसकर मिला दो और चने-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके चूसने से सब तरहकी खाँसी नाश हो जाती हैं।

(४०) शुद्ध मैनसिल, शुद्ध हरताल, कालीमिर्च, बालछड़ या जटामासी और हिंगोट-गोंदी,—इन सबको बराबर-बराबर लेकर महीन कर लो । फिर इस चूर्णको एक पत्तेमें रख कर बीड़ी सी बना लो और दियासलाईसे जला कर धूआँ पीओ अथवा तमाखूकी तरह चिलममें रख कर, ऊपरसे बिना धूएँकी आग रख कर धूआँ पीओ । धूआँ पी चुकते ही "गुड़ मिला हुआ गरम दूध" पीओ । इस तरह धूआँ पीनेसे एक दोष, दो दोष और तीनों दोषोंसे हुई अथवा सैकड़ों दवाओंसे आराम न हुई खाँसी भी आराम हो जाती है । लिखा है:—

मनःशिलाले मरिचंच मांसी मुस्तेंगुदी चेतिसम विचूर्णाय ।
धूमं पिबेच्चानुपयः सुखोष्णं गुड़ेन युक्तं जयतीह कासान् ॥

अर्थ वही है, जो ऊपर लिखा है । यह नुसख़ा बहुत अच्छा है ।

नोट—अगर खाँसीके मारे नाकसे पानी गिरता हो, गला बैठ गया हो, छींकें आती हों और सूँघने की शक्ति नष्ट हो गई हो—तो धूआँ पीना चाहिये । हुक्के पर आठ अंगुल की नली लगा कर धूआँ पीना चाहिये । श्वास, खाँसी, पीनस, स्वरभंग, जीभके रोग, तन्द्रा और निद्रा प्रभृति रोग धूआँ पीने वालेके पास नहीं आते । जो प्रमेह, तिमिर, रक्तपित्त और उदर रोगोंसे पीड़ित हों, उन्हें धूआँ न पीना चाहिये । धूमपानका धूआँ मुँहसे निकालना चाहिये—नाकसे नहीं, क्योंकि नाकसे धूआँ निकालनेसे नेत्रोंको नुक़सान पहुँचता है । अगर वे समय धूआँ पीने या ज़ियादा धूआँ पीनेसे कोई विकार हो जाय तो शीतल उपचार करना चाहिए ।

(४१) शुद्ध मैनसिलको सिल पर, पानीके साथ, पीस कर, बड़ी बेरीके पत्तों पर लेप करदो और धूपमें सुखा लो । फिर सवेरे ही एक या दो पत्ते लेकर चिलममें रखकर, ऊपरसे आग धर कर, कई रोज़ धूआँ पीओ । धूआँ पीनेके बाद, सुहाता-सुहाता गरम दूध गुड़ मिला कर पी लो । इस उपायसे भयंकर खाँसी भी नाश हो जाती हैं । लिखा है:—

मनःशिला लिप्तदलं वदर्या उपशोषितं ।
सक्षीरं धूमपानं च महाकासनिबर्हणं ॥

हमने इस नुसखेसे कफज खाँसीमें काम लिया है और फायदा होते देखा है। हम मैनसिलको पीसकर, बेरके पत्तों पर ल्हेस देते और फिर छायामें सुखाते हैं। रोगीको, धूआँ पिलानेके बाद, मिश्री-मिला गरम दूध पिलाते हैं। बहुधा, ऐसी चीजोंका धूआँ पीनेसे किसी-किसीके सिरमें दर्द होने लगता, चक्कर आते और जी मिचलाता है। ऐसा होने पर, हम रोगीको अधिक धूआँ पीनेसे रोक देते हैं। और उसे ज़रा-ज़रा सा धूआँ नित्य पीनेको कहते हैं। जब आदत पड़ जाती है, ये उपद्रव नहीं होते। इसमें शक नहीं, कि इस धूमपान से कफकी खाँसी या तर खाँसी, जिसमें अण्ठेके अण्ठे कफके गिरते हैं, आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(४२) "इलाजुलगुर्बा" में लिखा है,—छोटी पीपर, तमाखूकी तरह, चिलममें रख कर, ऊपरसे बिना धूएँकी आग रख कर, धूआँ पीनेसे पुरानी खाँसी जाती रहती है।

(४३) छोटी हरड़ोंको चिलममें रख कर, ऊपरसे बिना धूएँ की आग धर कर, धूआँ पीनेसे सब तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं; पर धूआँ पीकर, ऊपरसे मिश्री-मिला गरम दूध पीना ज़रूरी है। अगर इसके साथ ही, दिनमें चार पाँच बार, बिहीदानेका लुआब भी मिश्री-मिला कर पिया जाय, तब तो कहना ही क्या? परीक्षित है।

(४४) आककी छाल और शक्कर बराबर-बराबर लो और इन दोनोंसे आधा सोंठ, कालीमिर्च और पीपरका चूर्ण ले लो। इन सबको बिना धूएँकी आगमें डाल कर, नलसे, धूआँ पीओ। अथवा इन सबको चिलममें रख कर, और चिलमको हुक्के पर चढ़ा कर, निगालीसे धूआँ पीओ। इसके बाद, मिश्री-मिला गरम दूध पीओ और लगा हुआ पानका बीड़ा खाओ। इस तरकीबसे पाँचों तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(४५) आकका पत्ता ६ माशे, शोधा हुआ मैनसिल ६ माशे, सोंठ १ माशे, छोटी पीपर १ माशे और काली मिर्च १ माशे—इन सबको पीस कर, चिलममें रखो और चिलमको हुक्केपर रख कर धूआँ पीओ। धूआँ पीनेके बाद, मिश्री-मिला दूध या ख़ाली पानी पीओ अथवा लगा हुआ पान खा लो। इस उपायसे भी सब तरहकी खाँसी नाश हो जाती हैं।

(४६) ६ माशे काले धतूरेकी जड़ चिलममें रख कर, धूआँ पीनेसे सब तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं।

(४७) ६ माशे जवासेकी जड़ चिलममें रख कर धूआँ पीनेसे सब तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं।

(४८) धतूरेके शुद्ध बीज १ तोले, रेवन्द खताई ८ माशे, सोंठ ४ माशे और बबूलका गोंद ४ माशे—इन सबको पानीके साथ महीन पीस कर मटर-समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली, सवेरे-शाम, गरम जलके साथ, खानेसे खाँसी जाती रहती है। इस नुसख़ेको पं० रघुनाथ शर्म्मा, राजवैद्य, जम्बू अपना आज़माया हुआ कहते हैं।

(४९) बंगभस्म १ माशे, छोटी पीपर २ माशे, हरड़का बक्कल ३ माशे, बहेड़ेका बक्कल ४ माशे, अड़ूसेकी जड़की छाल ५ माशे, भारंगी ६ माशे और खैरसार २१ माशे—इन सबको महीन पीस-छान कर चूर्ण बना लो। फिर इस चूर्णमें बबूलकी छालके काढ़ेकी इक्कीस भावना दो और चने-समान गोलियाँ बना लो। दिन-भरमें, ४।५ गोली खानेसे सब तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं। इस नुसख़ेको भी उक्त राजवैद्यजी अपना आज़माया हुआ कहते हैं।

(५०) कत्था, मुलेठी, काली मिर्च, लौंग, बबूलका गोंद, अनारका छिलका और मिश्री—इन सबको समान-समान लेकर, एकत्र पीस कर, पानीके साथ चने-समान गोलियाँ बना लो। इन

गोलियोंके दिन-रात चूसनेसे सब तरहकी खाँसी जाती रहती हैं। कोई चौबे ज्वालादत्तजी इसे अपना आजमाया हुआ कहते हैं।

(५१) कायफल ४ माशे, काकड़ासिंगी ४ माशे, भारंगी ४ माशे, मुलेठीका सत्त १ तोले और कीकरका गोंद ४ माशे—इन सबको एकत्र पीस कर और "शहद" में मिला कर चाटनेसे सब तरहकी खाँसियोंका जोर कम हो जाता है। इस योगको बाबू गौरीशंकरजी वैद्य, खेड़ा, अपना परीक्षित बताते हैं।

(५२) सोनेका वर्क़ १ नग, सूखे आमलोंका चूर्ण ३ माशे और शहद १ तोले—इनको मिला कर चाटनेसे हृदय-रोग और खाँसी जाते रहते हैं। परीक्षित है।

(५३) अबीध मोती १ तोले लेकर, घीग्वारके ४ तोले पट्ठेमें रख दो और उसीके टुकड़ेसे छेदको बन्द कर दो। फिर इस पट्ठेको दो सराइयोंके बीचमें रख कर, कपड़-मिट्टी कर दो और सुखा लो। फिर चार सेर जंगली कंडोंके बीचमें सराइयोंको रखकर आग लगा दो। आग शीतल होनेपर मोतियोंको निकाल लो।

इसमेंसे रत्ती भर मोती सितोपलादि चूर्णकी चटनीमें मिलाकर, १ चाँदीका वर्क भी मिला दो और चाटो। इससे हिचकी, खाँसी और श्वास रोग जाते रहते हैं। साथ ही लिंगेन्द्रियका बल भी बढ़ता है। यह नुसखा हमने यक्ष्मा और उरःक्षतकी खाँसीमें कई दफ़ा आजमाया है। बहुत उत्तम है।

(५४) मीठे कद्दूके बीजोंकी गरी, खीरे-ककड़ीके बीजोंकी गरी, खशखाश और निशास्ता—इनका शीरा निकाल कर, उसमें मिश्री या शर्बत गुल-बनफशा मिला कर पीनेसे उरःक्षत या सिलकी खाँसी और रूखी-सूखी खाँसी जाती रहती हैं।

बालकोंकी खाँसीपर नुसख़े ।

(१) सुहागा अध-कच्चा ६ माशे, भुना हुआ ६ माशे और काली मिर्च १ तोले—इनको महीन पीस कर, ग्वारपाठेके रसमें घोट कर, गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके चूसनेसे बच्चोंकी खाँसी आराम हो जाती है।

(२) एक तोले पोस्ते भून कर, उनमें एक माशे लाहौरी नोन और १ माशे कालीमिर्च मिला कर रख दो। इसमेंसे माशे भर दवा, दिनमें तीन-चार बार, चाटनेसे छोटे बालकोंकी कफको खाँसी नाश हो जाती है।

(३) "रियाज़ आलमगीरी" में लिखा है—एक कपड़े या थैलीमें "कव्वेकी बीट" बाँध कर, बालकके गलेमें लटका देनेसे खाँसी चली जाती है।

नोट—रविवारको कव्वेकी बीट थैलीमें रख कर, बालकके गलेमें लटका देनेसे बालकका कव्वा उठ जाता है। परीक्षित है।

(४) बालकोंकी गुदामें दिनमें २ बार सरसोंका तेल लगा देनेसे सब तरहकी खाँसी दब जाती हैं, ख़ासकर सूखी खाँसी।

(५) बड़े मुनक्के ४० माशे, शहद ५ तोले, काली मिर्च ६ माशे, पियाबाँसा ६ माशे, भारंगी ६ माशे, नागरमोथा ६ माशे, अतीस ४ माशे, बच ४ माशे और खुरासानी अजवायन ४ माशे—सब दवाओं को कूट-छान कर "शहद" में मिला दो। इसमेंसे बालकोंकी

अवस्थानुसार दवा चटानेसे बालकोंकी खाँसी, उर्द्ध्वश्वास और कफका घरघराहट नाश हो जाता है।

(६) काकड़ासिंगी, अतीस और पीपर—इनको कूट-पीस और छानकर, "शहद" में मिलाकर चटानेसे बालकोंका ज्वर, खाँसी, कय होना अवश्य आराम हो जाता है। अनेक बारका परीक्षित है।

(७) काकड़ासिंगी, नागरमोथा और अतीसको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ज़रा-ज़रा सा चूर्ण "शहद" में मिलाकर चटानेसे बालकोंकी खाँसी, ज्वर और कय होना निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(८) काकड़ासिंगी और मूलीके बीज बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "ना-बराबर घी और शहद" में चटानेसे बालकों की खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(९) काकड़ासिंगीको पीस-छान कर रख लो। इसमेंसे १ रत्तीसे चार रत्ती तक चूर्ण माशे-भर शहदमें चटानेसे बालकोंकी कफकी खाँसी और कफका घर-घर होना आराम होकर बालक पुष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(१०) बड़ा मुनक्का एक नग लेकर, उसमेंसे बीज निकाल दो और एक-एक रत्ती दालचीनी और काकड़ासिंगी महीन पीस कर उसमें भर दो और बालकोंको खिला दो। इसके नित्य खानेसे बालकों की सब तरहकी खाँसी निश्चय ही चली जाती है, साथ ही कफका घर-घर करना और कफ खाँसी आराम हो जाते हैं। यह दवा सबसे अधिक गुणकारी और परीक्षित है।

(११) नागरमोथा और छिली मुलहठी—"बराबर-बराबर लेकर" पीस-छान लो। इसमेंसे ४ रत्ती दवा एक माशे शहद और माँके दूधमें घोलकर पिलानेसे बालकोंकी खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(१२) काकड़ासिंगी, अतीस, छोटी पीपर, छिली मुलेठी और सम्मग अरबी—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान कर रखदो। इसमें से एक माशे चूर्ण, दो माशे शहदमें मिला कर, दिनमें २ बार, खास कर सवेरे, चटानेसे बालकोंकी कफकी खाँसी और वमन आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(१३) सम्मग अरबी* १॥ तोले, कतीरा १ तोले, निशास्ता× १ तोले, छिली मुलहटी ६ माशे और सफेद मिश्री २० तोले—इन्हें पीस-छान कर रखदो। इसमें से चार रत्ती दवा "शहद" में मिला कर चाटनेसे बालकोंकी खाँसी आराम होजाती है।

नोट—मौसम गरमीका हो तो १ तोले तरबूज़की मींगी और मिला देनी चाहिएँ।

(१४) बहेड़ेका छिलका ६ माशे, छिली मुलेठी ६ माशे, काकड़ासिंगी ६ माशे और दक्खनी अकरकरा ६ माशे—सबको पीस कर, ख़ाली अनारमें भर कर, ऊपरसे मिट्टी ल्हेस दो। फिर कण्डोंकी आगपर अनारको रख दो। जब दवा उफनने लगे, अनारको निकाल लो। फिर शहद दो तोले, बकरीका दूध २ तोले ८ माशे और मूंगा ३ तोले—इनको भी पीस कर उसी अनारमें भरदो और अनारको फिर आगपर रख दो। जब दवा अनारके भीतर पकने लगे, उसे आगसे उतार लो। इसमें से बलाबल-अनुसार दवा खिलानेसे बालकोंकी हर तरहकी खाँसी जाती रहती है।

---

* सम्मग अरबी बबूलके गोंदको कहते हैं।

× निशास्ता गेहूँके सत्तको कहते हैं।

विशेष चिकित्सा।

वातज खाँसीकी चिकित्सा।

(१) कचूर, छोटी पीपर, नागरमोथा, जवासा, भारंगी और काकड़ासिंगी—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस कर छानलो। फिर इसमें गुड़ मिला दो और रखदो।

इसकी मात्रा २ माशे की है। हर मात्राको "काली तिलीके तेल" में मिला कर अवलेह या चटनी बना लो और दिनमें दो या तीन बार चाटो। इसके चाटनेसे वातजनित सूखी खाँसी, जिसमें कफ का नाम भी नहीं आता, अवश्य आराम हो जाती है। जिसे तेल नापसन्द हो, वह इसे शहदमें चाट सकता है, पर इस दवामें गुड़ मिलानेकी जरूरत नहीं। परीक्षित है।

नोट—यह नुसखा "चक्रदत्त" और "वैद्य विनोद" में लिखा है, पर हमने अनेक बार आज़माया है। वातज सूखी खाँसी जब पुरानी हो जाती है, तब बिना तेल घी पिये आराम नहीं होती, इसलिये जहाँ तक हो सके इसे तेल मिला कर ही चाटना चाहिये। इसको कोई "शट्यादि अवलेह" और कोई "अपराजिता अवलेह" कहते हैं।

(२) वमनेटी, कचूर, काकड़ासिंगी, छोटी पीपर और सोंठ—इनको समान-समान भाग लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्णमें "पुराना गुड़" मिला दो। इसकी मात्रा २।३ माशेकी है। एक-एक मात्रा "काली तिली" के तेलमें मिलाकर चाटनेसे वातज सूखी खाँसी अवश्य आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(३) सोंठ, जवासा, काकड़ासिंगी, कचूर, दाखऔर मिश्री—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। मात्रा ३ माशेकी है। हर मात्रा

को "काली तिलीके तेल" में मिलाकर, सवेरे-शाम चाटनेसे वात-जनित सूखी खाँसी आराम हो जाती है। चक्रदत्त और वृन्दने लिखा है, इस नुसखेसे दुस्तर वातजनित खाँसी चली जाती है।

(४) बेलगिरीकी जड़, खंभारीकी जड़, पाटलाकी जड़, अरनी की जड़ और सोनापाठाकी जड़—इन पाँचोंको "वृहत् पंचमूल" कहते हैं। इन सबको कुल २ तोले लेकर, ३२ तोले जलमें पकाओ; जब आठवाँ भाग जल रह जाय, मल-छानकर पी लो। इससे वातजनित सूखी खाँसी आराम हो जाती है।

नोट—अगर दो तीन दिनमें लाभ न होवे, तो इस काढ़ेमें "पीपरोंका चूर्ण" भी मिला लो।

चक्रदत्तने लिखा है :—

पंचमूलीकृतः क्वाथः पिंप्पलीचूर्णसंयुतः ।
रसान्नमश्नतो नित्यं वातकासमुदस्यति ॥

पंचमूलके काढ़ेमें, पीपरोंका चूर्ण डाल कर पीने और मांसरसके साथ अन्न खानेसे वायुकी सूखी खाँसी नष्ट हो जाती है। परन्तु वृन्दने लिखा है:—

पंचमूलीकृतः क्वाथः पिप्पलीचूर्ण संयुतः ।
सेवितो मस्तुतो नित्यं वातकासमुदस्यति ॥

पंचमूलके काढ़ेमें पीपरोंका चूर्ण मिला कर, दहीके तोड़ या मस्तुके साथ सेवन करनेसे वातज यानी सूखी खाँसी चली जाती है।

मतलब यह है, जिसने जिस तरह आज़माया है उसने उसी तरह लिखा है। हमने इसे दहीके तोड़ या मस्तुके साथ कभी नहीं आज़माया। हाँ, पीपर डालकर काढ़ा पिलाया और लाभ उठाया है। बहुत उत्तम योग है।

शास्त्रमें लिखा है:—

उभाभ्या पंचमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम् ।
कासेश्वासे च तन्द्रायां सन्निपाते प्रशस्यते ॥

वृहत्पंचमूल और लघुपंचमूल दोनोंको मिलाकर "दशमूल" कहते हैं। ये खाँसी, श्वास, तन्द्रा और सन्निपातमें हितकर हैं।

(५) कुछ बहेड़े "घी"से चुपड़ कर, गायके गोबरमें लपेट लो और फिर सुखा कर आगमें पकालो । पकनेपर गोबरसे निकाल कर पोंछ लो और छिलकोंको हर समय मुँहमें रख कर चूसो । हर प्रकारकी खाँसीपर, खासकर वातज या सूखी खाँसीपर रामबाण उपाय है । परीक्षित है ।

(६) सवेरे ही मक्खन और मिश्री और रातको सोते समय मलाई और मिश्री खानेसे वातज या सूखी खाँसी आराम हो जाती है । परीक्षित है ।

(७) गुदामें कड़वा तेल या नारायण तेल चुपड़नेसे सब तरह की खाँसियोंमें लाभ होता है । वातज सूखी खाँसीमें तो इसकी बहुत ही जरूरत है ।

(८) एक केले की पकी गहरमें, छिलका हटाकर, एक पीपर या ५ काली मिर्च दबा दो और रातको उसे ओसमें रखदो । सवेरे ही छिलका छील कर, पहले पीपर या मिर्च खा लो और पीछे केला खा लो । इस उपायसे वातज और पित्तज दोनों खाँसियोंमें बहुत लाभ होता है । परीक्षित है ।

(९) गुलबनफशा ६ माशे, हंसराज ६ माशे, छिली मुलेठी ६ माशे, खतमीके बीज ३ माशे, अलसीके बीज ३ माशे और उन्नाव ६ दाने—इनको कुचल कर डेढ़ पाव जलमें पकाओ; जब छटाँक-भर पानी रह जाय, मल कर छान लो । शीतल होने पर ३ माशे शहद और ३ माशे मिश्री मिला कर पी लो । इस नुसखेके सवेरे-शाम पीनेसे वातजनित सूखी खाँसी १०।१५ दिनमें जड़से चली जाती है । बड़ा ही उत्तम नुसखा है । परीक्षित है ।

(१०) छोटी पीपर २० तोले लाकर महीन करलो । फिर इस चूर्णको बकरीके दूधके साथ पीस कर लुगदी बना लो । इसके बाद

गाय का घी अढ़ाई सेर, वकरी का दूध दस सेर और ऊपरकी लुगदी को, क़लईदार बर्तनमें डाल, आग पर चढ़ा दो और मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब दूध जल कर घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और किसी साफ़ बर्तनमें रख दो। सूखी खाँसी जब किसी दवा से आराम नहीं होती, तब इस घीसे अवश्य आराम हो जाती है। इसका नाम "पिप्पली घृत" है। सैकड़ों बार परीक्षा की है।

इसकी मात्रा जवान आदमी को १ तोलेसे ४ तोले तक है। घी पीकर पानी पीना तो दूर किनार है, कुल्ले भी न करने चाहियें।

(११) एक पाव गीली या सूखी भारंगी लेकर कुचल लो और रातको पानीमें भिगो दो। सवेरे ही उसे सिलपर पीस कर लुगदी बना लो।

फिर सूखी भारंगी आध सेर और लाकर कुचल लो और रात को ही १६ सेर पानी में भिगो दो। सवेरे ही उसे चूल्हेपर चढ़ा कर औटाओ। जब दो सेर पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो।

अब एक सेर घी, चार सेर दहीका पानी, दो सेर भारंगीका काढ़ा और भारंगीकी लुगदी—इन चारोंको क़लईदार बर्तनमें रख कर मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और किसी साफ़ बासन में रख दो। इसका नाम "भाङ्ग्र्यादि घृत" है।

इसके पीनेसे सूखी खाँसी अवश्य आराम हो जाती है। मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक। समय—सवेरे-शाम। परीक्षित है।

(१२) छिली मुलहटी ६ माशे, नीलीझाँईका बंसलोचन ६ माशे, कतीरा १ तोले, बबूलका गोंद ६ माशे और मीठी घीयाके छिले हुए बीज ६ माशे—इन सबको पीस-कूट कर छान लो और इस चूर्णके बराबर ही "मिश्री" पीस कर मिला दो। इस चूर्णको शहद और

पानीमें मिला कर चाटनेसे सूखी खाँसी अवश्य नाश हो जाती है। इसकी मात्रा चार माशे की है। हर मात्राको दो माशे शहद और ज़रासे पानीमें मिला कर अवलेह सा बना लो और दिनमें तीन बार, सवेरे, दोपहर और शामको चाटो।

नोट—इस चूर्णको चाटा जाय और इसके साथ ही नीचे लिखी नं० १३ की गोलियाँ दिनमें १०।१५ तक चूसी जायँ तब तो सोनेमें सुगन्ध ही हो जाय। क्योंकि ये गोलियाँ छातीपर जमे हुए कफको पका कर निकाल देती हैं और खाँसी जाती रहती है। परीक्षित हैं।

(१३) पपरिया कत्था अढ़ाई तोले, बबूलका गोंद ६ माशे, छिली मुलेठी १ तोले, शुद्ध कपूर ३ माशे, बहेड़ेका बक्कल ६ माशे, कतीरा ६ माशे और तुख्म-खतमी १ तोले—इन सब दवाओंको कूट-पीस कर छान लो। फिर इस चूर्णको खरलमें डाल कर, ऊपरसे बिहीदानेका लुआब डाल-डाल कर घोटो। जब घुट जाय, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके हर समय मुँहमें रख कर चूसनेसे छातीपर जमा हुआ कफ निकल जाता और खाँसी आराम हो जाती है। दिन भरमें १० से १५ गोली तक चूसी जा सकती हैं। ऊपरके नं० १२ अवलेहको चाटने और इन गोलियोंके चूसनेसे बहुत ही जल्दी लाभ होता है। परीक्षित है।

(१४) अनारका छिलका ४ माशे, मुलेठी २ माशे और बहेड़ेका छिलका २ माशे—इनको पाव भर पानीमें औटाओ। छटाँक भर पानी रहनेपर उतार लो और १ तोले मिश्री मिलाकर पिला दो। इसके सेवन करनेसे सूखी खाँसी जाती रहती है।

नोट—अगर खाँसी बहुत ही हो, तो २ माशे जवाखारको ४ माशे शहद में मिला कर चटाओ, इससे कफ निकल जायगा।

(१५) गेरूमिट्टी २ तोले, सेलखड़ी २ तोले और अबीध मोती २ माशे—इन सबको खरलमें घोट लो। मात्रा २ रत्ती की है। इसकी

एक-एक मात्रा "लऊक सपिस्ताँ"* में मिलाकर चटानेसे पेचिश और खुश्क खाँसी आराम हो जाती हैं। अगर कहींसे खून आता हो, तो दवामें "बंसलोचन और छोटी इलायची" और मिला दो। फिर उसे "शर्बत अनार या अनारके रस" में चटाओ। खून फौरन बन्द हो जायगा।

(१६) मुलेठी, दाख, जवासा और गिलोय—इन सबको कुल २ तोले लेकर, आध पाव दूध और आध पाव पानीमें पकाओ। जब पानी जल कर दूध मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और १ तोले "मिश्री" डाल कर पी लो। इससे वातज—सूखी खाँसी जाती रहती है।

नोट—वातज ख़ाँसीमें रूखेपनकी वजहसे कफ़ सूख जाता है, इसलिए कफ को पतला करनेके लिए पहले स्निग्ध यानी चिकनी चिकित्सा करनी चाहिए। अगर शरीरमें बहुत ही रूखापन हो, तो पहले घी, दूध आदि पिला कर चिकनापन लाना चाहिये। अगर कब्ज हो, तो गुदामें तेल या घीकी पिचकारी लगानी चाहिए और दवाओंके साथ पका कर दूध देना चाहिए।

(१७) असगन्ध १ तोले और मुलेठी १ तोले दोनोंको आध पाव दूध और आध पाव पानीमें पकाओ। जब दूध मात्र रह जाय, छान कर १ तोले मिश्री मिला दो और पी जाओ। इससे भी वातज सूखी खाँसी नाश हो जाती है।

(१८) लिसौढ़े दाख, मुलेठी और अड़ूसा—चार-चार माशे लेकर, पाव भर पानीमें पकाओ; जब १ छटाँक पानी बाक़ी रह जाय, मल-छान लो और १ तोले मिश्री तथा १ तोले शहद डाल कर पी लो। इस से वातज और पित्तज दोनों तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं।

---

* लिसौढ़े ५०, उन्नाव २०, मुलेठी १ तोले, तुख़म खतमी १ तोले, पोस्तेके छिलके २ तोले और बिहीदाना ६ माशे—इन सबको दो सेर पानीमें औटाओ, जब चौथाई पानी रह जाय, मल-छान लो। फिर इस काढ़ेमें आध सेर चीनी डाल कर पकाओ और ऊपरसे बादामकी गरी ६ तोले, पोस्ता-दाना १ तोले, जौ १ तोले, कतीरा ६ माशे, गोंद ६ माशे और मुलेठी ६ माशे पीस कर डाल दो। यही "लऊक सपिस्ताँ" है और खाँसीमें मुफीद है।

(१९) बादामकी मींगी, छुहारे बिना गुठली के, बिना बीज के दाख और नारियलकी गरी—बराबर-बराबर लेकर एकत्र महीन पीस लो और एक-एक माशेकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको मुँहमें रख कर चूसनेसे वातज और पित्तज खाँसी नष्ट हो जाती हैं।

(२०) मुलेठी, बंसलोचन, तुरंजबीन, दालचीनी और बबूलका गोंद—सबको समान-समान लेकर महीन पीस लो और चार-चार रत्तीकी गोलियाँ बना लो। दिन-भर में २-३ बार गोली खानेसे वातज—सूखी खाँसी आराम हो जाती है।

(२१) मुलेठीका चूर्ण १ तोले, छोटी पीपरोंका चूर्ण १ तोले और कूट १ तोले—इन सबको पीस कर रख लो। इसमेंसे ६ रत्ती चूर्ण, ६ माशे शहदमें मिला कर दिनमें ३।४ बार खानेसे वातज खाँसी दूर हो जाती है।

(२२) तुलसीके पत्ते १ माशे, अदरख १ माशे, लौंग २ माशे और कपूर १ चाँवल-भर—इन सबको मिला कर चबाने और खानेसे वातज या सूखी खाँसी जाती रहती है।

(२३) बेलकी छाल, अरलूकी छाल और पाडरकी छाल—चार-चार माशे लेकर, ३२ तोले जलमें औटाओ; जब ८ तोले पानी रह जाय, मल कर छान लो। फिर इसमें ३ रत्ती "पीपरका चूर्ण" डाल कर पी लो। इससे वातज खाँसी जाती रहती है।

(२४) दशमूलकी दवाओंको दूध और पानीमें पकाओ। जब दूध मात्र रह जाय, उसमें २ रत्ती "पीपरोंका चूर्ण" डाल कर पीलो। इससे वातज खाँसी जाती रहती है।

(२५) इस खाँसीमें "दशमूल घृत" भी हितकारी है।

(२६) केलेकी पकी गहरको मिश्री, शहद और घीके साथ खानेसे पुरानी खाँसी, सूखी खाँसी, क्षयकी खाँसी, हृदय-रोग, श्वास और रक्तपित्तमें बहुत लाभ होता है। परीक्षित है।

नोट—घी और शहद बराबर-बराबर मत लेना; एक कम और दूसरा ज़ियादा लेना।

वातज खाँसीमें पथ्य पदार्थ।

"वैद्यविनोद" में लिखा है, वातज खाँसी वालेको गाँवके, अनूप देशके या पानीके जीवों का मांस या मांस-रस, अनेक तरहकी चिकनी चीज़ें, अनेक तरहके अन्न, गेहूँ, चाँवल और जौ पथ्य हैं। "चक्रदत्त" में लिखा है, कि वातज खाँसीमें दही, काँजी, बिजौरा नीबू, शराब, स्वादु खट्टे और सलौने पदार्थ पथ्य हैं। शालि चाँवल, साँठी चाँवल, जौ और गेहूँ—इनके रस और उड़द तथा कौंचके बीजोंके यूष हितकर हैं।

पित्तज खाँसीकी चिकित्सा।

नोट—पित्तकी खाँसीमें, अगर कफ क्षीण या खुश्क हो गया हो, तो मीठे और चिकने पदार्थों से उसे नर्म करो। अथवा निशोथ आदि साधारण दस्तावर दवाओं द्वारा दस्त करा कर, कफको पित्तसे अलग करो। यदि कफ अत्यन्त गाढ़ा हो गया हो, तो जवाखार और शहद आदि चटा कर उसे पतला कर लो। (देखो पृष्ठ ८६ के नं० १४ का नोट)।

(१) खिरेंटी, अड़ूसा, छोटी कटेली, बड़ी कटेली और बीज निकाले हुए दाख—इनको मिला कर अढ़ाई तोले लो। फिर पाव भर पानीमें सारी दवाएँ डाल कर पकाओ; जब छटाँक या डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, मल-छान कर शीतल कर लो। शीतल होने पर, चार माशे मिश्री और दो माशे शहद मिला कर पी जाओ। सवेरे-शाम

इस काढ़ेके पीनेसे पित्तजनित खाँसी, जिसमें खाँसते समय गरमी मालूम होती और पतला-कड़वा कफ निकलता है, आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—चक्रदत्त और वैद्यविनोद प्रभृति ग्रन्थोंमें इस नुसखेकी खूब तारीफ़ लिखी है और है भी यह ऐसा ही।

(२) बिना बीजके मुनक्के, बिना गुठलीके आमले और बिना गुठलीके छुहारे—इन तीनोंको आठ-आठ माशे लेकर, आध पाव पानीमें पकाओ, जब चौथाई पानी रह जाय मल कर छानलो। फिर इसमें पाँच काली मिर्च और आधी पीपर पीस कर मिला दो और चाटो। इस नुसख़ेके सवेरे-शाम सेवन करनेसे पित्तकी खाँसी निश्चय ही आराम हो जाती है। यह नुसख़ा हमारा सैकड़ों बारका परीक्षित है।

नोट—यह योग हमने "चक्रदत्त"से लिया और अनेकों बार आज़माया, वहुत ही कम चूकता है। दवा चाट कर पानी न पीना चाहिये। अगर पित्त बहुत ही बढ़ रहा हो, तो "मुलेठीका काढ़ा" पिला कर क़य करा देनी चाहिए और "चिकित्सा-चन्द्रोदय पहले भाग"में लिखी मुंजिस देकर, दो चार दस्त भी करा देने चाहिएँ। दस्त और कय कराकर यह दवा खिलानेसे पित्तज खाँसी बहुतही जल्दी आराम हो जाती है। वृन्द और चक्रदत्तने इस नुसखेमें "आँवले" लिखे हैं, पर कोई-कोई आँवलोंकी जगह "मुलेठी" लेते हैं।

हमने इस नुसखेको काढ़ेके रूपमें बदल दिया है; पर चक्रदत्तने लिखा है—मुनक्के, आमले, छुहारे, छोटी पीपर और काली मिर्च बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो और ना-बराबर "घी और शहद"में एक-एक मात्रा चूर्ण मिलाकर चाटो। इस तरह भी यह नुसखा अवश्य फायदा करता है, पर हमने जिस तरह लिखा है उस तरह ज़ियादा फायदा करता है।

(३) कमलके बीजोंको महीन पीसकर छान लो। इसमेंसे २ या ३ माशे चूर्ण "शहद" में मिला कर चाटनेसे पित्तकी खाँसी आराम हो जाती है। इसे सवेरे-शाम दोनों समय चाटना चाहिये। परीक्षित है।

नोट—कमलगट्टोंको ही कमल के बीज कहते हैं। इनके छिलके उतार कर, भीतरकी हरी-हरी पत्तियाँ भी निकाल दो, तब पीसो-छानो; क्योंकि हरी पत्तियाँ हानिकर होती हैं।

(४) कचूर, नेत्रवाला, बड़ी कटेरी, सोंठ और बूरा—इनको कुल दो तोले लेकर पाव भर पानीमें पकाओ, जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर छान लो। फिर इसमें दो माशे "घी" मिला कर चाटो। इसके पीनेसे पित्त की खाँसी जाती रहती है।

(५) काकोली, बड़ी कटेरी, मेदा, महामेदा, अड़ूसा और सोंठ—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनाओ और छान लो। इस काढ़े को चार तोले दूधमें मिला कर फिर पकाओ और जब दूध मात्र रह जाय, रोगीको पिलाओ। इस दूधसे पित्तकी खाँसी नष्ट हो जाती है।

(६) पञ्चमूल, छोटी पीपर और दाख—इनका काढ़ा पका कर छान लो और फिर उसे दूधमें मिला कर दूध पकालो। शीतल होने पर, उसमें थोड़ी सी "चीनी और शहद" मिला कर पीओ। इस दूधके पीनेसे पित्त की खाँसी आराम हो जाती है।

(७) बिना गुठलीके छुहारे, छोटी पीपर, बिना बीजोंके दाख, मिश्री और धानकी खील—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो, फिर तीन-तीन माशे चूर्ण "ना-बराबर" घी और शहदमें मिला कर चाटो। इस नुसख़ेसे पित्तकी खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(८) क्षीर-वृक्षोंके फुनगे या अंकुर आध सेर लेकर, चार सेर पानीमें औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो। फिर एक सेर दूध, एक सेर घी और ऊपरके एक सेर क़ाढ़े को क़लईदार कढ़ाईमें डाल कर मन्दाग्नि से पकाओ। जब दूध और काढ़ा जल कर घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और एक साफ़ बर्तन में रख दो और ऊपरसे एक पाव उत्तम "शहद" मिला दो। इस घी

के सेवन करनेसे पित्तज खाँसी आराम हो जाती है। मात्रा ६ माशे से २ तोले तक है। सवेरे-शाम दोनों समय घी पीना चाहिये। परीक्षित है।

नोट—पीपर, गूलर, पाखर, बड़ और वेंतके वृक्ष "क्षीरवृक्ष" कहलाते हैं।

(६) बड़, पीपर और गूलरके अंकुर मिला कर १ पाव लो और बिना बीजोंके मुनक्के एक पाव लो—इन सबको सिलपर पीस कर लुगदी बनाओ।

फिर गायका घी एक सेर, बकरीका दूध चार सेर और ऊपर की लुगदी—इन सबको एक क़लईदार बर्तनमें डाल कर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ; जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस घीके पीनेसे भी पित्तज खाँसी आराम हो जाती है। मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक। समय—सवेरे-शाम। परीक्षित है।

नोट—ऊपरके नं० ८ और नं० ६ घी एक ही हैं। इनको "क्षीर घृत" कहते हैं। यद्यपि तैयार करनेकी तरकीबें अलग-अलग हैं, पर फायदा दोनों ही करते हैं।

(१०) दाख एक तोले, मिश्री एक तोले और शहद एक तोले—इन तीनोंको मिला कर अवलेह बना लो। इसके चाटनेसे पित्तज खाँसी नष्ट हो जाती है।

(११) मुलेठीका सत्त, बंसलोचन, बड़ी इलायची, तुरंजबीन और दाख—इन सबको बराबर-बराबर लेकर एकत्र पीस लो। फिर मिश्री और शहदमें मिला कर रख दो। इसे रोज़ चाटनेसे पित्त की खाँसी आराम हो जाती है।

(१२) खिरेंटीकी जड़की छाल, छोटी कटेरीकी छाल, बड़ी कटेरी की जड़की छाल, अड़ूसेकी छाल और दाख—इन सबको चार-चार माशे लेकर पीस लो। फिर ३२ तोले जलमें डाल कर पकाओ, जब ८ तोले पानी बाक़ी रहे, उतार कर मल-छान लो और शीतल होने पर

पी लो। बालकको कम मात्रा दो। इसके पीनेसे पित्तकी खाँसी आराम हो जाती है।

(१३) सूखे आमलोंका चूर्ण २ रत्ती, दाख ३ माशे और छुहारे ६ माशे—इनको एकत्र पीस कर, ३ माशे घी और ६ माशे शहद में मिला कर चाटो। इससे पित्तज खाँसी जाती रहती है।

(१४) धानकी खील, दाख, तवाशीर, मुलेठी और नागरमोथा —सबको एक-एक माशे लेकर महीन पीस लो। फिर ३ माशे घी और ६ माशे शहदमें मिलाकर चाटो। इससे पित्तकी खाँसी आराम हो जाती है।

(१५) छोटी कटेरीके फूलोंका जीरा २ माशे, बिजौरे नीबूकी केशर २ माशे, पीपर २ माशे और दाख ४ माशे—इन सबको एकत्र पीस कर शहद और मिश्रीमें मिला कर खानेसे पित्तकी खाँसी आराम हो जाती है।

(१६) कटेरीके फूलोंका जीरा मिश्रीके साथ पीस कर खाने से पित्तकी खाँसी जाती रहती है।

(१७) लिसौढ़े, मुलेठी और त्रिफला—इनको कुल दो तोले लेकर और ३२ तोले पानीमें काढ़ा बना कर, चार तोले पानी रहनेपर उतार लो और मल-छान कर शीतल कर लो। फिर उसमें शहद और मिश्री मिला कर पी लो। इस काढ़ेसे पित्तकी खाँसी जाती रहती है।

(१८) कमलगट्टेकी गरी, गिलोयका सत्त, सूखे आमले, बंस-लोचन और तुरंजबीन—इन सबको बराबर-बराबर तीन-तीन माशे लेकर एकत्र पीस लो और शहदमें मिला कर चाटो। इससे पित्त की खाँसी जाती रहती है।

(१९) अंजीर एक तोले और छिली मुलेठी एक तोले—दोनोंको कुचल कर, आध पाव दूध और आध पाव पानीमें डाल कर

पकाओ। जब पानी जल कर दूध मात्र रह जाय, उतार कर शीतल कर लो। फिर उसमें एक तोले मिश्री और ४ माशे शहद मिला कर पी जाओ। इससे पित्तकी खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(२०) बहेड़ेको घीमें सान कर, उसपर दो अंगुल गोबर लपेट कर आगमें भून लो। फिर निकाल कर उसे मुखमें रखो। इसके चूसनेसे पित्त और कफकी खाँसी नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(२१) मुलेठी, काली मिर्च और मिश्री—इनको समान-समान लेकर एकत्र पीस लो। फिर इसमेंसे तीन-तीन माशे दिनमें चार-पाँच बार खाओ। इससे भी पित्तकी खाँसी चली जाती है।

(२२) बड़ी इलायचीको आगमें भून कर और शहदमें मिला-कर चाटनेसे पित्तकी खाँसी नाश हो जाती है।

(२३) अड़ूसेको पुटपाककी विधिसे पकाकर उसका "स्वरस" निकालो। फिर उसमें शहद डाल कर खाओ। इसमें पित्त और कफकी खाँसी नाश हो जाती हैं। परीक्षित है।

पित्तज खाँसीमें पथ्य पदार्थ।

चक्रदत्त कहता है, अगर पित्तज खाँसी वालेका कफ पतला हो, तो मीठे पदार्थोंके साथ और अगर कफ कड़ा हो तो कड़वे पदार्थोंके साथ निशोथका जुलाब दो। इस खाँसी वालेको जंगली जानवरों के मांस-रसके साथ जौ और कोदोंके पदार्थ तथा मूंगादिके यूष और कड़वे सागोंके साथ थोड़ा-थोड़ा अन्न खानेको दो।

कफज खाँसीकी चिकित्सा।

नोट—कफकी खाँसीमें अगर छाती भारी हो, मुँहमें कफ भर-भर आता हो, तो पहले नमकके पानीसे कय करा कर कफको निकाल दो। अगर कफ कच्चा हो, तो २।३ लंघन करा दो। इस खाँसीमें चरपरे और कड़वे पदार्थ सेवन करना पथ्य है।

(१) पोहकरमूल, कायफल, भारंगी, सोंठ और छोटी पीपर— इनको मिलाकर दो तोले लो। और काढ़ा बना कर पीओ। इससे कफज खाँसी, श्वास और हृदयकी जकड़न अवश्य आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२) अदरखका स्वरस २ तोले और शहद ६ माशे—दोनोंको मिलाकर सवेरे-शाम पीनेसे श्वास, कफकी खाँसी, जुकाम और कफका नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—अगर २।३ दिन पीनेसे कम लाभ हो, तो इसमें एक माशे "नमक" भी मिला देना चाहिये। इस तरह चाटनेसे तो अवश्य ही आराम होगा, पर यह नुसखा कभी-कभी गरमी करता है, अगर ऐसा हो तो मात्रा घटा देनी चाहिये। फिर भी गरमी करे, तो और दवा बदल देनी चाहिये। क्योंकि जो दवा गरमी करेगी, वह हरगिज फायदा नहीं करेगी।

(३) कायफल, देवदारू, खस, नागरमोथा, काकड़ासिंगी, पित्तपापड़ा, सोंठ, बच, धनिया, भारंगीकी जड़की छाल और हरड़— इनके काढ़ेसे कफकी खाँसी उपद्रव सहित नाश हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—सब दवाएँ मिलाकर कुल दो तोले लेनी चाहियें। फिर उन्हें कुचलकर सोलह गुने पानीमें औटाना चाहिये और चौथा भाग जल रहने पर, उतार कर मल

छान कर पी जानी चाहिये । यही तरकीब कफकी खाँसीके काढ़ोंमें सर्वत्र समझनी चाहिये । अगर इस काढ़ेमें ४ रत्ती हींग और ६ माशे शहद भी, औट जानेपर, मिला दिया जाय तब तो कहना ही क्या ?

(४) दशमूलके काढ़ेमें "पीपरका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे कफकी खाँसी, जुकाम, श्वास, ज्वर और पसलीका दर्द आदि आराम हो जाते हैं । परीक्षित है ।

नोट—दशमूलकी दसों चीज़ें कुल मिला कर दो या तीन तोले लेनी चाहियें । फिर १६ गुने पानीमें काढ़ा बना-छान कर, उसमें ३ माशे "पीपरोंका चूर्ण" मिला कर पी जाना चाहिये ।

(५) शुद्ध मैनसिलको पानीके साथ सिलपर पीसकर बड़ी बेरीके पत्तोंपर लीप देना चाहिये और पत्तोंको छायामें सुखा लेना चाहिये । उनमें से दो-चार पत्ते चिलममें रख कर, ऊपरसे बिना धूएँकी आग रखकर, हुक्केपर धूआँ पीनी चाहिये । धूआँ पीनेके बाद, गरम दूध मिश्री मिलाकर पीना चाहिये । इस तरह कई दिन करने से कफकी खाँसी नाश हो जाती है । परीक्षित है ।

नोट—अगर धूआँ पीनेसे जी घबरावे, चक्कर आवें या सिरमें दर्द हो, तो थोड़ी-थोड़ी धूआँ पीनेका अभ्यास करना चाहिये । यह नुसखा बहुत अच्छा है । ऐसे कितने ही नुसखे हमने पीछे लिखे हैं ।

(६) छोटी पीपर या छोटी हरड़ चिलममें रख कर, तमाखूकी तरह धूआँ पीनेसे कफज खाँसी जाती रहती है; पर धूआँ पीकर दूध-मिश्रीका पीना परमावश्यक है ।

(७) मुलहटी और कालीमिर्च—इनको बराबर-बराबर लेकर भून लो । फिर बराबरकी पिसी मिश्री मिलाकर पीस-छान लो और पानीके साथ घोट कर चने-समान गोलियाँ बना लो । इन गोलियोंके मुँहमें रखनेसे कफकी खाँसी जाती रहती है ।

(८) बड़ी हरड़का छिलका, बहेड़ेका छिलका, काकड़ासिंगी, भारंगी, दालचीनी, भुनी फिटकरी, भुना हुआ सुहागा, चीतेकी छाल,

लौंग, लाहौरी नोन और सोंठ—इनको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। फिर खरलमें डाल कर पानीके साथ घोटो और जंगली बेरके समान गोलियाँ बना लो। दिनमें तीन-चार गोली खानेसे कफकी खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(९) लाहौरी नोन, साँभर नोन, काला नोन, सैंधा नोन, अजवाइन और सुहागा—सबको बराबर-बराबर लेकर एक मिट्टीके कुल्हड़ेमें रखो और मुख बन्द करके कपड़-मिट्टी कर दो। जब सूख जाय, आध गज़ गहरे गड्ढेमें रख कर जंगली कण्डोंमें फूँक दो। आग शीतल होने पर निकाल लो और सब चीजोंको पीस कर, बराबर का सम्भग अरबी या बबूलका गोंद पीस कर मिला दो। इसकी मात्रा १ माशेकी है। इसके सवेरे-शाम खानेसे कफज खाँसी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—हम इस लवणक्षारको एक-एक या दो-दो रत्ती, दिनमें चार-पाँच बार, रोगीको खिलाते हैं। इससे कफ पतला होकर निकल जाता है। यदि दो तीन दिनमें फायदा नहीं होता, तो फिर फायदा नहीं होता।

(१०) तीन दाने शुद्ध कुचलेके एक तोले घीमें भून कर पीस लो। इसमेंसे सवेरे ही दो रत्ती राख पानमें रख कर खानेसे कफकी खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(११) कुछ केलेके पत्ते जलाकर राख कर लो। उस राखमेंसे थोड़ी-थोड़ी राख "नमक" मिलाकर दिनमें कई बार खाओ। इससे कफकी खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(१२) अमलताशका गूदा आध पाव और मिश्री एक पाव पीस-कूट कर मिला लो। इसमेंसे १ तोले चूर्ण खाकर पानी पीनेसे छातीमें जमा हुआ कफ दूर होकर खाँसी आराम हो जाती है। बड़ा अच्छा नुसख़ा है। इससे सारा कफ पाखानेकी राहसे निकल जाता है। परीक्षित है।

१३

(१३) अमलताशका गूदा १ पाव पानीमें घोट लो। फिर उसे तीन पाव बूरेमें पकाकर चाटने योग्य बना लो। इसमेंसे दो तोले चटनी चाट कर, ऊपरसे "अर्क सौंफ" २ तोले पीनेसे कलेजे का कफ छूट कर खाँसी—ख़ास कर सूखी खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१४) तीन माशे हालिमको पीस कर, तीन माशे "शहद" में मिला लो और नित्य चाटो। इससे कफकी खाँसी आराम हो जाती और छाती पर जमा हुआ बलग़म निकल जाता है। इससे पसलीका दर्द भी मिट जाता है। परीक्षित है।

(१५) दो रत्ती चिरचिरेका खार दो माशे "शहद" में मिलाकर या पानमें रख कर कई दिन खानेसे गले और छातीका कफ दूर होकर, कफकी खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(१६) दो रत्ती भुना हुआ सुहागा बँगला पानमें रख कर सवेरे-शाम, कई दिन तक, खानेसे कफज खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१७) इमलीके दो तोले पत्ते लेकर डेढ़ पाव जलमें काढ़ा बनाओ, जब छटाँक भर पानी रह जाय, उसे मल-छान लो। फिर उसमें "दो रत्ती हींग और ३ माशे सेंधा नोन" मिला कर पी जाओ। इससे कफज आदि सब तरहकी खाँसी नाश हो जाती हैं। परीक्षित है।

(१८) अकरकरा, कालीमिर्च, अनारका छिलका, अजमोद, पियाबाँसेकी पत्ती, छोटी कटेरीकी जड़, बबूलकी छाल, सज्जीखार, साँभर नोन और लाहौरी नोन—इन सबको एक-एक माशे लेकर कूट-छान लो। फिर इसमें "शुद्ध अफीम २ माशे" मिला दो और "अदरख के रस" में घोटकर चने-समान गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक-एक

गोली सवेरे-शाम मुँहमें रखनेसे कफज या तर खाँसी जाती रहती है, पर ऊपरसे कसौंदीका ताज़ा फल भून कर खाना चाहिये।

(१९) कुछ बहेड़ोंको घीमें चुपड़ कर, उन पर गायका ताज़ा गोबर दो अंगुल मोटा लपेट दो और सुखा लो। इसके बाद, उस गोबरके गोलेको आगमें पका लो। जब पक जाय, बहेड़ोंको निकाल कर कपड़ेसे पोंछ लो और छिलके-छिलके उतार कर पीस लो। इसमें से दो-दो रत्ती चूर्ण थोड़ा-थोड़ा "नमक" मिलाकर मुँहमें रखनेसे कफज और वातज—हर प्रकारकी खाँसी आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

नोट—अगर गोबर न मिले, तो बहेड़ोंको गेहूँके गुँदे हुए आटेसे भी लपेट सकते हो।

(२०) त्रिफला १ तोले, लाहौरी नोन १ तोले, विलायती अनार के छिलके १ तोले, कौंचके बीजोंकी गिरी १ तोले, रूसे या अड़ूसे के पत्तोंकी राख एक तोले, जवासेकी राख एक तोले, छोटी पीपर ६ माशे और काली मिर्च ६ माशे—इन सबको कूट-पीस और छान कर रख लो। इसमें से एक-एक माशे चूर्ण सवेरे-शाम खानेसे, ३ दिन में कफज खाँसी जाती रहती है।

(२१) सोंठ, छोटी पीपर, काली मिर्च, अजमोद, चीतेकी छाल, सफेद जीरा, बच और चव्य—इनको तीन-तीन तोले लेकर, पानीके साथ सिल पर पीस कर लुगदी बना लो।

फिर सवा सेर घी, अड़ूसेके पत्तोंका रस आध सेर और ऊपर की लुगदी—तीनोंको क़लईदार कढ़ाहीमें रख, मन्दाग्निसे पकाओ; जब घी मात्र रह जाय उतार कर छान लो। शीतल होने पर, जितना घी हो उसका चौथा भाग "शहद" मिला कर रख दो।

यह घी बहुत ही गरम है, अतः इसे कफज खाँसीके सिवाय और खाँसीमें न देना चाहिये। अगर यह पित्तज खाँसीमें बिना समझे-

बूझे दे दिया जायगा, तो रोगीकी जान संकटमें पड़ जायगी। यह कफज खाँसी पर रामबाण है। मात्रा ६ माशेसे दो तोले तक। घी खाकर पानी न पीना चाहिये। परीक्षित है।

(२२) अगर रोगीका मिज़ाज सर्द हो—कफ प्रकृति हो, ठण्डे स्थानमें रहने और शीतल पदार्थ खानेसे खाँसी बढ़ जाती हो, कफ ढेर का ढेर गिरता हो, पर छातीमें जलन न हो और रोगीको गरम चीज़ोंसे फायदा होता हो, तो रोगीको आधी रत्तीसे दो रत्ती तक "पारदकी कजली" जो पहले लिख आये हैं, शहदमें मिला कर चटाओ। इस कजलीसे असाध्य खाँसी और श्वास भी आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२३) बंसलोचन, केशर, बहेड़े का छिलका, लौंग, काकड़ासिंगी, कालीमिर्च, छोटी पीपर, छोटी इलायची, मुलेठी, कत्था और कुलींजन—ये सब छै-छै माशे, कस्तूरी १॥ माशे, बबूलकी छालका स्वरस ६४ माशे, अदरखका रस १० तोले ८ माशे और २५ बँगला पानोंका रस—सबको खरलमें घोट कर, उड़द-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम, एक-एक गोली "अदरखके रस" में खानेसे खाँसी, विशेष कर कफज खाँसी, आराम हो जाती है। इन्हीं गोलियोंको प्याज़के रसमें खानेसे हैजा आराम हो जाता है।

(२४) टके भर शुद्ध सिंगरफ अदरखके आध सेर रसमें घोट कर सुखा लो और रख दो। मात्रा ४ चाँवल से १ रत्ती तक। कफज या बलग़मी खाँसीमें १ मात्रा पानमें रख कर दो। शीत ज्वर वालेको बुख़ार चढ़नेसे १ घण्टे पहले "तुलसीके पत्तोंमें" १ मात्रा दो। मैथुन-शक्ति बढ़ानेको "शहद" में चटाओ।

(२५) एक रत्ती शीशा भस्म "सितोपलादि चटनी" में चटानेसे बुख़ार और खाँसी आराम होते, बदनमें ताक़त आती और पुराने सोज़ाककी वजहसे हुआ कमर और पिंडलीका दर्द जाता रहता है।

(२६) सोंठ, मिर्च, पीपर और बायबिड़ङ्गका डेढ़ माशे चूर्ण और एक या दो रत्ती "अभ्रक भस्म" शहदमें मिला कर चटानेसे खाँसी और श्वास जाते रहते हैं। परीक्षित है।

(२७) अगर खाँसी पुरानी हो, रोगीका मिज़ाज सर्द हो, शीतल पदार्थोंसे हानि होती हो, तो "शिंगाराभ्रक" की गोलियाँ सवेरे-शाम खिलाओ और ऊपरसे "अदरख और पानका रस" एक-एक तोले पिलाओ। शेषमें, थोड़ा जल भी पिलाओ। इससे वात, पित्त और कफसे पैदा हुई सभी बीमारियाँ आराम हो जाती हैं। पुरानी खाँसी और श्वास रोगपर तो रामवाण हैं। परीक्षित हैं।

(२८) लौंग १ तोले, काली मिर्च १ तोले, बहेड़ेका छिलका १ तोले और सफेद पपरिया कत्था ३ तोले—इन सबको पीस कर छान लो। फिर खरलमें डाल कर, ऊपरसे "बबूलकी छालका काढ़ा" दे-दे कर घोटो। घुट जानेपर, चने-समान गोलियाँ बना लो। लोलिम्बराज द्वारा परीक्षित इन गोलियोंके चूसनेसे सब तरहकी खाँसी फौरन ही आराम होती हैं, पर कफज या तर खाँसीपर तो ये गोलियाँ रामबाण ही हैं। परीक्षित हैं।

नोट—छोटी पीपर, पीपरामूल, बहेड़ेका छिलका और सोंठ—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णकी मात्रा २ माशे की है। हर मात्रामें ३ माशे अड़सेका स्वरस और ३ माशे शहद मिला कर, सवेरे-शाम और रातको सोते समय, चाटने और ऊपरकी गोली चूसनेसे कफज खाँसी निश्चय ही नाश हो जाती है। परीक्षित है।

सूचना—अगर ये दोनों दवाएँ सेवन करनेसे गरमी जान पड़े, पेटमें जलन हो, प्यासका ज़ोर हो जाय और खुशकी मालूम पड़े, तो अवलेहकी मात्रा आधी कर दो और गोली १०।१५ के बजाय ५।७ ही चूसो। अगर इन दोनों दवाओंसे गरमी तो बढ़े पर लाभ न हो, तो ५।६ दिन बाद इन्हें बन्द कर दो और दूसरी दवा दो। अगर कफ सूखने लगे, तो कफको तर करने वाली कोई दवा बीच-बीचमें देते रहो।

(२९) छोटी पीपर १ तोले लेकर १ पाव जलमें पकाओ, जब आधी छटाँक पानी बाक़ी रह जाय, उतार कर छान लो। फिर इस

में शीतल होनेपर १ तोला "शहद" मिला दो। इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा दिनमें ३।४ बार पीओ। इस तरह कई दिन पीनेसे कफकी खाँसी जाती रहती है।

(३०) दो माशे पीपरका चूर्ण ६ माशे "शहद" में मिला कर चाटनेसे कफकी खाँसी नष्ट हो जाती है।

(३१) ६ माशे या १ तोले अदरखके रसमें ज़रा सा काला नोन मिला कर पीनेसे कफकी खाँसी आराम हो जाती है।

(३२) कटेरीका पंचाङ्ग २ तोले लेकर कुचल लो और पाव-भर जलमें पकाओ। जब तीन तोले पानी रह जाय, उतार कर छान लो और ३ माशे "पीपरका चूर्ण" डाल कर पी लो। इससे कफकी खाँसी नाश हो जाती हैं। परीक्षित है।

(३३) कटेरीका स्वरस १ तोले, अड़ूसेका स्वरस १ तोले और शहद ६ माशे—तीनोंको मिला कर पीनेसे वात, पित्त और कफकी खाँसी नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(३४) आककी जड़की छालको आगमें जला कर कोयले कर लो। पीछे कोयलोंको पीसकर राख कर लो। इसकी मात्रा १ माशे की है। हर मात्राको ज़रासा "काला नोन या शहद" मिलाकर सेवन करो। इससे कफकी खाँसी जाती रहती है। साथ ही छातीका दर्द भी मिट जाता है। परीक्षित है।

(३५) सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपर, पोहकरमूल, दाख, हरड़, बहेड़ा और आमला—इनको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण एक तोले "शहद" में मिला कर चाटनेसे कफकी खाँसी नाश हो जाती है।

(३६) भारंगीकी जड़की छाल, कूट, जायफल, सोंठ और छोटी पीपर—दो-दो माशे लेकर पाव-भर जलमें पकाओ। जब तीन

तोले पानी रह जाय, मल कर पीलो। इससे कफकी खाँसी नाश हो जाती है।

(३७) मोथेकी जड़का चूर्ण १ तोले, अतीसका चूर्ण १ तोले, काकड़ासिंगीका चूर्ण १ तोले और पीपरोंका चूर्ण १ तोले—इन को एकत्र मिलाकर, "शहद" में घोट लो और अमृतवानमें रख दो। इसका नाम "बाल चतुर्भद्रावलेह" है। यह अवलेह सब तरहकी खाँसी, विशेषकर बालकोंकी कफकी खाँसी, पर रामबाण है। इस से बालकोंकी ज्वर और अतिसार संयुक्त खाँसी भी जाती रहती है। जवान को १ से २ माशे तककी मात्रा है। बहुत छोटे बालकों को १ रत्ती और बड़े बालकों को २ रत्ती देना चाहिये।

(३८) मूँग, आमले, जौ, अनार का छिलका, सूखे जंगली बेर, सूखी मूली, सोंठ, पीपर और कुल्थी—इनको तीन तीन माशे लेकर आध सेर पानीमें पकाओ। जब छटाँकभर पानी रह जाय, मल-छान कर पीलो। इससे कफ की खाँसी नाश हो जाती है।

(३९) कचूर, अतीस, नागरमोथा, काकड़ासिंगी, हरड़ और अदरख—इनको तीन-तीन माशे लेकर, सिल पर पानीके साथ पीस लो और चौगुने यानी ६ तोले जल में घोल लो। फिर उस पानी में "रत्ती भर हींग और दो रत्ती सेंधानोन" डालकर गुनगुना कर लो। इसमें से दो-दो तोले दिनमें तीन बार पीओ। इससे सब तरह की कफज खाँसी चली जाती हैं।

(४०) पाँचों तरह के नोन, जवाखार और सज्जीखार,—इनको बराबर-बराबर लेकर, सेंहुड़ के पोले डण्डे में भरदो और मुख बन्द कर दो। इसके बाद उस पर कपड़मिट्टी करके उसे जंगली कंडों की आगमें फूँकदो। आग शीतल होने पर दवा को निकाल लो। इसकी मात्रा २ से ४ रत्ती तक है। अनुपान—गरम जल है। इसके खानेसे सब तरह की कफ की खाँसी जाती रहती हैं।

(४१) नागर पानों का स्वरस १ पाव और साफ चीनी १ पाव, दोनों को मिलाकर पकाओ। जब पकते-पकते अवलेह के समान हो जाय, तार छूटने लगें, नीचे उतार लो और शीतल होने पर १ पाव "शहद" मिलादो। इसके बाद इसमें सोंठ ६ माशे, अतीस ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, नागकेशर ६ माशे और तुलसी की मंजरी ६ माशे पीस-छानकर मिलादो। इसका नाम "नागवल्ली अवलेह" है। इसकी मात्रा २ माशेकी है। सवेरे-शाम या दिन-रात में चार बार चाटने से कफ की खाँसी अवश्य चली जाती है। परीक्षित है।

(४२) अदरख को चाय की तरह पानीमें पकाकर, फिर उसमें दूध और बूरा मिलाकर पीने से सरदी, जुकाम और खाँसी जाती रहती है।

नोट—अदरख के स्वरस को जरा गरम करके, फिर उसमें "मिश्री" मिला कर पीने से जुकाम जाता रहता है।

(४३) अमलताश के चार तोले पत्तों का काढ़ा पीने से कफ और खाँसी आराम होजाते हैं।

पथ्य पदार्थ।

कफज खाँसी वाला बलवान हो, तो पहले उसे नमकका पानी पिला कर कय करादो। इस तरह कफ निकल जायगा और खाँसी जल्दी मिट जायगी। खानेको जौकी रोटी, कड़वे, रूखे और गरम पदार्थ दो अथवा पीपर और खारी पदार्थ तथा कुलथी और मूलीके यूषों से मिले भोजन दो। भोजन जितना ही हल्का होगा, उतना ही पथ्य होगा। कफकी खाँसीमें कफनाशक सभी पदार्थ जैसे लोह, मंडूर, शंख, कौड़ी, सीप, मूंगा आदि की भस्म, सेंहुड़, आक, बैंगन, चिरचिरा, अड़ूसा और कटेरी का क्षार—ये सब हित हैं।

—::०::—

वात-कफज खाँसीकी चिकित्सा।

(१) कायफल, रोहिष तृण, भारंगी, नागरमोथा, धनिया, वच, हरड़, काकड़ासिंगी, पित्त-पापड़ा, सोंठ और देवदारु—इन सब को दो-दो माशे लेकर, डेढ़ पाव पानीमें काढ़ा पकाओ। जब छटाँक भर पानी रह जाय मल-छान लो। शीतल होनेपर, उसमें "६ माशे शहद और ४ रत्ती हींग" मिलाकर पिला दो। इसका नाम "कट्फलादि क्वाथ" है। इसके पीनेसे वात-कफकी खाँसी, कंठके रोग, श्वास, शूल, क्षय और हिचकी तथा ज्वर नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२) तालीसपत्र १ तोले, काली मिर्च २ तोले, सोंठ ३ तोले, छोटी पीपर ४ तोले, दालचीनी ६ माशे और छोटी इलायची ६ माशे—इन सबको पीस-छान कर चूर्ण बनालो। फिर इसमें ३२ तोले "मिश्री" पीस कर मिलादो। इस "तालीसादि चूर्ण" से वात-कफज खाँसी नाश हो जाती है। वृन्द ने कहा है—

वातश्लेष्मकृते कासे तालीशाद्यं प्रयोजयेत्।
पित्तयुक्ते भवेच्छ्रेष्ठं वंशलोचनयाऽन्वितम्॥

नोट—अगर पित्तका सम्बन्ध हो, तो ५ तोले बंसलोचन भी चूर्णमें मिलादो।

(३) दशमूलकी दसों दवाएँ चार सेर, चौंसठ सेर जलमें डाल कर काढ़ा पकाओ। जब सोलह सेर पानी रह जाय, उतार कर छान लो।

फिर कूट, कचूर, बेलकी जड़, तुलसी, सोंठ, छोटी पीपर, काली मिर्च और हींग दो-दो तोले लाकर, पानीके साथ सिलपर पीस कर, लुगदी बना लो।

दशमूलके काढ़े, इस लुगदी और चार सेर गायके घीको क़लई-दार कढ़ाहीमें चढ़ाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और साफ बासनमें रख दो।

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है। इसके पीनेसे वात-कफकी खाँसी और सब तरहके श्वास रोग नाश हो जाते हैं। इसका नाम "दशमूलाद्य घृत" है।

(४) खाँसीकी सामान्य चिकित्साके पृष्ठ ४२ में लिखी "लवंगादि गुटिका" भी वात कफकी खाँसीपर रामबाण है। सवेरे-शाम या जब खाँसीका ज़ोर हो, ४।५ गोली मुखमें रख कर चूसनी चाहिएँ। परीक्षित हैं।

पित्त-कफज खाँसीकी चिकित्सा।

(१) अड़ूसेकी पत्तियोंका रस दो तोले और शहद ६ माशे—इन दोनोंको मिलाकर सवेरे-शाम चाटनेसे और खूब पथ्य परहेज करने से पित्त-कफकी खाँसी आराम हो जाती है। चक्रदत्तमें लिखा है:—

वासकस्वरसः पेयो मधुयुक्तो हिताशिना।
पित्तश्लेष्मकृते कासे रक्तपित्ते विशेषतः॥

नोट—ऊपरका नुसखा हमारा परीक्षित है। रक्तपित्तमें खूब जल्दी फ़ायदा करता है। अगर हम अड़ूसेके स्वरस और शहदको छै-छै माशे लेकर, उसमें १ माशे साँभर नोन मिलाकर और गुनागुना करके खाँसी वालेको देते हैं, तो २।३ दिनमें ही भयंकर-से-भयंकर खाँसी आराम होनेपर आ जाती है। अगर खाँसी किसी भी दवासे आराम न हो, तो इस नुसखेसे जरूर काम लो। बड़ी खूबी यह है, कि यह नुसखा सभी खाँसियों को नष्ट करता है।

क्षतज खाँसीकी चिकित्सा।

(१) मूर्वा, रसौत, चीतेकी छाल, छोटी पीपर, हल्दी, पाढ़ी और मँजीठ—इनको बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस कर छान लो। इस चूर्णके बलाबल अनुसार "शहद"में मिला कर चाटनेसे "क्षतज खाँसी" आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२) ईखके रसमें घी पका कर खानेसे क्षतज खाँसी आराम होजाती है। परीक्षित है।

(३) पीपर, मुलहटी, दाख, लाख, काकड़ासिंगी और शतावर—ये सब एक-एक तोले, बंसलोचन २ तोले और मिश्री ३२ तोले—सबको पीस-छान कर रख दो। इसकी मात्रा २ माशेसे ३ माशे तक है। सवेरे-शाम एक-एक मात्रा "ना-बराबर घी और शहद"में मिलाकर चाटनेसे क्षतज खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—यह नुसखा चक्रदत्तका है। चक्रदत्तने जहाँ लाख कही है, वृन्दने वहाँ लाजा—खील कही है। चक्रदत्तने कहा है—

पिप्पली मधुकं द्राक्षालाक्षा शृंगी शतावरी।
द्विगुणा च तुगाक्षीरी सिता सर्व्वैश्चतुरगुणा॥

पर वृन्द कहता है:—

मधुकं पिप्पली द्राक्षा लाजा शृंगी शतावरी।

(४) छोटी इलायचीके दाने, तेजपात, दालचीनी, दाख, और छोटी पीपर—ये सब दो-दो तोले; मिश्री, मुलेठी, खजूर और दाख ये सब चार-चार तोले—इन सबको पीसकर 'शहद' में खरल कर

लो। और छै-छै माशेकी गोलियाँ बना लो। इनका नाम "एलादि बटी" है।

बलाबल अनुसार एक या दो गोली सवेरे-शाम खाकर, ऊपरसे मिश्री-मिला धारोष्ण दूध पीने से उरःक्षत, क्षतज खाँसी, श्वास, हिचकी, वमन, क्षय, ज्वर, मूर्च्छा, मद, भ्रम, खून थूकना, पसलीका दर्द, अरुचि, तिल्ली, राजरोग, आमावात और स्वरभेद रोग नाश हो जाते हैं। इतने रोगोंपर तो हम परीक्षा कर नहीं सके, पर इतना कह सकते हैं, कि, इन गोलियोंके लगातार विश्वासपूर्व्वक सेवन करनेसे उरःक्षत, सिल या क्षतज खाँसी और मुँहसे खून आना—ये अवश्य आराम हो जाते हैं। ये गोलियाँ कामदेवको भी उद्दीपित करती हैं; अतः कामी लोग भी इन्हें सेवन करके लाभ उठा सकते हैं। परीक्षित हैं।

(५) पोस्तके बीज ६ तोले और ईसबगोल २ तोले—इन दोनों को एक सेर पानीमें डाल कर काढ़ा कर लो। जब आध सेर पानी रह जाय, कपड़ेमें छान लो।

फिर उस छने हुए काढ़ेको एक क़लईदार बर्तनमें डालकर, ऊपरसे एक सेर मिश्री, डेढ़ तोले खस-खस और डेढ़ तोले बबूरका गोंद भी पीस कर मिला दो। फिर उसे आग पर पकाओ। जब चाटने लायक़ अवलेह सा हो जाय, उतार कर अमृतबानमें भर कर रख दो। इस चटनीके १ तोले रोज़ चाटनेसे उरःक्षत, सिल या क्षतज खाँसी आराम हो जाती हैं। खूब परीक्षा की है।

(६) तीन-चार माशे पीपरकी लाख पीस कर और शहदमें मिलाकर खानेसे उरःक्षत या क्षतज खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(७) सेवतीके एक हज़ार ताज़ा फूल लाकर, आध सेर घीमें भूँज लो। जब लाल हो जाय, नीचे उतार लो। फिर अढ़ाई सेर मिश्री

की चाशनी बनाकर, उसमें भूँजे हुए फूल मिला दो। इसके बाद नीचे लिखी हुई दवाएँ भी पीस-छान कर मिला दो:—

छोटी इलायची, दालचीनी, तेजपात और नागकेशर तीन-तीन तोले, मुनक्का बिना बीजके १८ तोले, गिलोयका सत्त १॥ तोले, तवाखीर १॥ तोले, सफेद जीरा १॥ तोले और साफ कपूर १ माशे।

दवाएँ मिलाकर नीचे उतार लो और शीतल होने पर चाशनीमें चौबीस तोले "शहद" भी मिला दो। फिर इसे उत्तम बर्तनमें रख दो। इसका नाम "सेवती पाक" है। इसके ईजाद करने वाले भरद्वाज मुनि हैं। इसके सेवन करनेसे यक्ष्मा और उरःक्षत अवश्य आराम हो जाते हैं, पर बरस-छै महीने खाना चाहिये। मात्रा ३ से ६ माशे तक है। अनुपान—मिश्री-मिला धारोष्ण दूध है।

शास्त्र में लिखा है, कि इसके सेवन करनेसे जीर्णज्वर, क्षय, खाँसी, मन्दाग्नि, प्रमेह, दिन-रात रहनेवाला ज्वर, सिरके रोग, प्रदर रोग, खूनके रोग, कोढ़, बवासीर, नेत्र रोग और मुख-रोग नाश हो जाते हैं, पर हमने इसे उरःक्षत, क्षतज खाँसी, नेत्र रोग और सिर रोगपर ही आज़माया है। यक्ष्मा और उरःक्षत आराम होने पर अथवा कुछ-कुछ खून आनेकी हालतमें हमने शुरू कराया। ५।७ महीनेमें रोगी निरोग हो गये। अमीरी चीज़ है।

सूचना—हमने उरःक्षत या क्षतज खाँसीके बहुतसे नुसखे ५ वें भागके अन्तमें लिखे हैं। खून बन्द करने के उपाय भी वहीं लिखे हैं। अगर लिवर या यकृतमें सूजन आदि हों, तो उनका भी ख़याल कर लेना ज़रूरी है। इस सम्बन्ध में भी हमने वहीं लिखा है। इस रोगमें "द्राक्षारिष्ट" बहुत उत्तम है। उसे भी पाँचवें भागमें देखिये।

क्षयज खाँसीकी चिकित्सा ।

(१) अड़ूसेका स्वरस १ सेर, सोनामक्खीकी भस्म ८ तोले, मिश्री ८ तोले और छोटी पीपर ८ तोले—इन सबको मिलाकर, क़लईदार बर्तनमें पकाओ, जब अवलेहके समान गाढ़ा हो जाय, उतार लो। फिर शीतल होने पर उसमें आठ तोले "शहद" मिला दो और रखदो इसका नाम "वासावलेह" है। इसके १ तोला रोज़ खानेसे क्षय रोग, क्षयज खाँसी, कफ और बवासीर रोग नाश हो जाते हैं।

(२) मुनक्का १०० तोले, मिश्री ४०० तोले, झड़बेरीकी जड़की छाल ५० तोले, धायके फूल २५ तोले, चिकनी सुपारी १० तोले, लौंग १० तोले, जावित्री १० तोले, जायफल १० तोले, तज १० तोले, बड़ी इलायची १० तोले, तेजपात १० तोले, सोंठ १० तोले, कालीमिर्च १० तोले, छोटी पीपर १० तोले, नागकेशर १० तोले, रूमीमस्तगी १० तोले, कसेरू १० तोले, अकरकरा १० तोले, और कूट १० तोले—इन सब दवाओंको पीस कर, एक मिट्टीके घड़ेमें भर दो और ऊपरसे दवाओंसे चौगुना—सवा छत्तीस सेर पानी भी भर दो। इसके बाद घड़ेका मुँह अच्छी तरहसे बन्द कर दो, ताकि हवा न जाने पावे। फिर उसे ज़मीनमें गहरा गढ़ा खोद कर रख दो और ऊपर-नीचे सब तरफ घोड़े की लीद भर दो। इस तरह चौदह या पन्द्रह दिन ज़मीनमें गढ़ा रहने दो। इसके बाद घड़ेको निकाल कर, उसका, मसाला और पानी भभकेमें भरकर अर्क़ खींच लो। इसके बाद अर्क़में केशर २ तोले और कस्तूरी १ माशे मिला दो और उसे चीनी या काँच के बर्तनमें रख दो।

नोट—कोई-कोई अर्क़ खिंचते समय ही, भभकेमें केशर और कस्तूरीको कपड़ेमें बाँध कर पोटली बना कर छोड़ देते हैं। अर्क़ क़लईदार भभकेमें खींचना चाहिये। दवा भिगोते समय, मिट्टीका घड़ा मज़बूत और इतना बड़ा लेना चाहिये, जिसमें एक मन पानी और सारी दवाएँ आजायँ और फिर भी चौथाई घड़ा खाली रहे। घड़े पर सरावा रख कर, घड़ेके मुँह और सरावेके जोड़ पर कपड़-मिट्टी कर देनी चाहिये।

सेवन विधि—इस अर्क़मेंसे सवेरे ५ तोले, दोपहरको १० तोले और रातको १५ तोले अर्क़ पीना चाहिये। इसके ऊपर भारी भोजन करना चाहिये। इसके इस तरह सेवन करनेसे वीर्य बढ़ता एवं श्वास, खाँसी और क्षय रोग नाश हो जाते हैं। इससे हलका-हलका नशा आता है। इसके सेवन करने वाला स्त्रियोंको अपनी दासी बना लेता है। जिन्हें क्षय रोग और क्षयज खाँसी हो, वे इसे अपने बलाबल अनुसार अवश्य पीवें। इसका नाम "द्राक्षासव" है। आज़मूदा है।

नोट—श्वास और खाँसीमें सवेरे-शाम पीना ठीक होगा। शरीरके दर्दमें भी इसी तरह पीना चाहिये।

(३) "द्राक्षारिष्ट" जिसकी विधि राजयक्ष्मा प्रकरणमें, चिकित्सा चन्द्रोदय ५ वें भागमें लिख आये हैं, क्षयज खाँसी, उरःक्षत और सिल यानी क्षतज खाँसी पर रामबाण है। उसे ऐसे मौके पर अवश्य सेवन करना चाहिये।

(४) पीपर, लाख, पका हुआ कटेरी का फल और पद्माख—इनके बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसकी मात्रा २ से ३ माशे तक है। इसे ना-बराबर घी और शहदमें चाटनेसे क्षयज खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(५) अर्जुन वृक्षकी छाल लाकर कूट-पीस-छान लो। फिर इसमें "अड़ूसेके रस"की सात भावनायें दो और सुखाकर रख लो। इस चूर्णको "नाबराबर घी और शहद तथा मिश्री" के साथ चाटनेसे क्षयज खाँसी आराम हो जाती है।

(६) गायका ताजा मक्खन ३ माशे, शहद ३ माशे, मिश्री ३ माशे और सोनेके वर्क १ रत्ती—इनको मिला कर खानेसे क्षय और क्षयज खाँसी निश्चय ही आराम हो जाते हैं। यह नुसखा कभी नहीं चूकता। परीक्षित है।

नजलेकी खाँसीकी चिकित्सा।

(१) गिलोयका सत ६ माशे, छोटी इलायचीके बीज ६ माशे, नीला बंसलोचन ६ माशे, बबूलका गोंद ३ माशे, छोटी पीपर ३ माशे, तीखुर ३ माशे, दालचीनी १॥ माशे और रूमी मस्तगी १॥ माशे,—इन सबको पीस-छान कर रख लो। इस चूर्णकी मात्रा २ से ४ माशे तक है।

बनफ़शा ६ माशे, उन्नाव बीज निकले हुए ७ दाने, मुलेठी ४ माशे, और मिश्री ६ माशे—इन सबको पावभर पानीमें औटाओ; जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो।

सेवन विधि—ऊपरके चूर्णकी १ मात्रा शहद या शर्बत गुलबनफ़शा में खाकर, ऊपरसे यही काढ़ा पीलो। इस तरह सवेरे-शाम, दोनों समय, चूर्ण खाने और काढ़ा पीनेसे, १५ दिनमें, नजलेकी खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२) बीजों समेत पोस्ते नग ३०, ल्हिसौड़े नग ३०, सौंफ १ तोले, और तुख्म-ख़तमी १ तोले—इनको आध सेर पानीमें औटाओ, जब आधा पानी रह जाय, मलकर छान लो। फिर इस काढ़ेमें पावभर साफ "चीनी" मिलाकर पकाओ। जब गाढ़ा होने पर आवे उतार लो

और छिली मुलेठी नौ माशे, सम्मग अरबी यानी बबूलका गोंद ४॥ माशे और कतीरा २॥ माशे पीस कर मिला दो। इसमें से सवेरे और सोते समय एक-एक तोले चाटो। इससे नजलेकी खाँसी अवश्य आराम हो जाती है, पर १५ दिन तक दवा चाटनी चाहिये। परीक्षित है।

(३) खसके पोस्ते डंटी तोड़े हुए ४ नग और लाहौरी नमक २ माशे—इनको आध पाव जलमें औटाओ, जब चौथाई पानी रह जाय, मल-छान कर सोते समय पी लो, इससे भी नजलेकी खाँसी जाती रहती है।

नोट—बहुतसे लोग नजले और जुकामका भेद नहीं समझते। अगर मल सिरसे उतरकर नाक की राह गिरता है, तो उसे "जुकाम या प्रतिश्याय" कहते हैं, लेकिन यदि वही भेजेका मल कण्ठमें गिरता है, तो उसे "नजला" कहते हैं। जुकाम, नजले और खाँसीका बहुत सम्बन्ध है; अतः हम जुकाम और नजलेके निदान लक्षण और चिकित्सा खाँसीके बाद ही, आगे, लिखेंगे। हिकमत और वैद्यकमें जुकामका जिक्र नाकके रोगोंमें किया गया है, वह मत भी ठीक है और हमारा मत भी ठीक है।

(४) "जातीफलादि चूर्ण" शर्बत गुलबनफ़शा या शहदमें मिला कर चाटो और ऊपरसे मिश्री-मिला गरम दूध पीओ। इस तरह भी जुकाम आराम हो जाता है। अथवा सवेरेके समय "लवंगादि चूर्ण" शहदमें चाट कर दूध-मिश्री पीओ और शामको "जातीफलादि चूर्ण" शहदमें चाटकर दूध-मिश्री पीओ। इस तरह जुकाम और खाँसी दोनों आराम हो जायेंगे। परीक्षित है।

कव्वा लटकनेकी खाँसीकी चिकित्सा।

कव्वेके लटक आनेसे भी खाँसी हो जाती है। वह खाँसी बिना कव्वा उठाये किसी भी दवासे आराम नहीं होती। हर समय

खस-खस लगी रहती है, रोगीको क्षण-भर भी चैन नहीं पड़ता। उसे ऐसा मालूम होता है, गोया गले में कोई चीज़ लटक रही है। इस हालतमें, कव्वा बिना सूजन आये, नीचेकी ओर गिर पड़ता है। जब रोगी मुँह खोलता और जीभको मुखके बाहर निकालता है, तब दूसरे देखनेवाले को कव्वा बढ़ा हुआ-सा दीखता है। अनेक बार ऐसा होता है, कि जबतक कव्वा अंगुलीसे उठाया नहीं जाता, रोगी ग्रासको निगल नहीं सकता।

कव्वेकी जड़ उसके ओर-पासके मांससे मिली हुई है। इसका सम्बन्ध खोपड़ीके ऊपरकी झिल्ली और सिरकी खालसे भी है। इसीसे, अनेक बार, हकीम लोग सिरके तालवेपर खिंचावट करने वाली दवाएँ रखते हैं। तालवेपर रक्खी हुई दवाके खिंचाव करनेसे ही कव्वा उठ जाता है।

यह रोग खूनकी गरमी और सरदीसे होता है। अगर खूनकी गरमीसे होता है, तो जीभ, तालू और कव्वेमें सुर्ख़ी और गरमी होती है। अगर सर्दीसे लटकता है, तो जीभ, तालू और कव्वेमें गरमी और लाली नहीं होती, किन्तु मुँहमें लुआब ही लुआब भरा रहता है और गलेमें कोई चीज़ लटकती हुई तो दोनों ही हालतोंमें मालूम होती है।

यह तो हमने कव्वा लटकनेके सम्बन्धमें कहा, पर अनेक बार कव्वेमें सूजन भी आ जाती है। अगर खूनकी वजहसे सूजन आती है, तो कव्वा सुर्ख़ हो जाता और फूल जाता है तथा उसमें जलन और थोड़ा दर्द होता है।

अगर पित्तकी वजहसे सूजन होती है, तो उसमें चुभन-सी होती है, जलन बहुत होती है, प्यास बढ़ जाती है, और मुँह सूखा रहता है। इस पित्तज सूजनमें, खूनकी सूजनकी अपेक्षा, दर्द बहुत होता है।

अगर सूजन कफकी वजहसे होती है, तो सूजनमें सुस्ती (पित्त की सूजनमें तेज़ी बहुत होती है), सफेदी और नर्मी होती है; पर दर्द कम होता है।

अगर सूजन बादीकी वजहसे होती है, तो सूजनमें सख्ती होती है, तालू, जीभ और कव्वेकी रंगत कालीसी होती है और मुँह का ज़ायका खट्टा होता है।

अगर कव्वेमें खूनकी वजह से सूजन आई हो या वह लटक पड़ा हो, तो नीचे लिखे हुए उपाय करोः—

(१) सिरका गुलावसे कुल्ले करो।

(२) गुलाबके फूल, सफेद चन्दन, अनारके फूल और कपूर को महीन पीसकर कव्वे पर मलो। अथवा सलाईके चौड़े सिरे पर इस दवाको रखकर कव्वेके लगा दो।

अगर पित्तकी वजहसे कव्वेमें सूजन आई हो, तो नीचे लिखे हुए उपाय करोः—

(१) अमलताशके काढ़ेमें तुरंजबीन मिलाकर पिलाओ।

(२) हरी मकोय और हरी कासनीके स्वरसके कुल्ले कराओ।

अगर कफ की वजह से सूजन आई हो तो ये उपाय करोः—

(१) सवेरे ही शहद का बना हुआ गुलकन्द खिलाओ।

(२) काँजी, सिकंजबीन और राई मिलाकर कुल्ले कराओ। इससे कफ कट कर निकल जायगा।

(३) नौसादर महीन पीसकर, एक नलीमें रखो और कव्वे पर फूँको। इसके कव्वे पर लगनेसे कफ नर्म होकर पिघल जायगा।

(४) माजूफल, नौसादर, नमक और फिटकरीको बराबर-बराबर लेकर महीन पीसलो। इस दवाको अँगुली पर लगाकर कव्वेको उसी तरह उठाओ, जैसे दाइयाँ उठाया करती हैं।

अगर सूजन बादी से आई हो तो ये उपाय करोः—

(१) मेथी के लुआब में थोड़ा सा नोन मिलाकर कुल्ले करो।

(२) अगर सूजन फैलनेका भय हो, तो शीतल चीज़ोंके कुल्ले कराओ। जैसे, हरे धनियाका स्वरस और हरे काहूका स्वरस मुँहमें रखो और कुल्ले करो।

अगर कफ या सर्दीसे कव्वा लटक आया हो, तो नीचेके उपाय करोः—

(१) शहदके पानी और जूफेके काढ़ेके कुल्ले करो।

(२) फिटकरी, बारहसिंगेका जला हुआ सींग और नौसादर इनको समान-समान लेकर महीन पीसलो। फिर एक नली या काग़ज़ की भोगली में इसे भरकर कव्वे पर फूँको।

(३) आस और फिटकरी महीन पीसकर खट्टे-मीठे अनारके रसमें मिलालो और कुल्ले करो।

(४) पहले सिरके बाल मुँड़वादो, इसके बाद नीचे लिखी दवा तालुए पर रखोः—मुगास, अकाकिया, धूआँ, खारी मिट्टी और सरेश इन्हें महीन पीसलो। फिर इस चूर्णमें "ईसबगोल" मिलादो। इसके बाद, अधीराके पत्ते, सूखा धनिया और सिरकेको औटालो। औटने पर छानलो और ऊपरकी पिसी हुई दवाएँ उसमें मिलादो और तालवे पर लगादो। यह दवा तालवे पर लगानेसे कव्वेको ऊपर खींचती है और बालक बूढ़े जवान सबके लिए अच्छी है। जो तरी दिमाग़से कव्वे पर आती है, उसे भी यह रोकती है।

(५) माजूफलको सिरकेमें पीसकर बालकके तालुए पर लेप कर दो, कव्वा ऊपर उठ जायगा।

(६) जली हुई मुलतानी मिट्टी सिरकेमें मिलाकर बच्चेके तालवे पर रख दो। इससे भी कव्वा उठ जाता है।

(७) अगर कव्वा लटकनेके बाद कव्वेकी जड़ महीन और सिर मोटा तथा गाढ़ा हो जाय एवं किसी दवासे लाभ न हो, तो जुफ्तको गरम पानीमें गला लो और गरम-गरमसे ही कुल्ले करो, इससे सूजन नर्म होकर नष्ट हो जायगी।

(८) अगर बीमारके कव्वेमें गरमी पैदा हो जानेसे सुर्ख़ी और गरमी जान पड़े, तो हरी मकोय और हरे धनियेके स्वरसके कुल्ले कराओ।

नोट—अगर फिटकरी मिली हुई किसी भी दवासे लाभ न हो, कव्वेकी जड़ पतली और सिरकी तरफ़से बहुत बड़ी हो जाय, गोलाईमें अंगूर जैसी हो जाय, रंग सफेद हो और गलेपर पड़नेसे रोगीके दम घुटनेका खौफ हो, तो किसी चतुर डाक्टरसे कव्वेके बढ़े हुए भागको कटवा देना चाहिये। काटनेमें बड़ी होशियारी की ज़रूरत है। अगर जियादा कट जायगा तो खून बन्द न होगा। कदाचित बहुत-सा खून गले और फेंफड़ेमें भर जायगा, तो रोगी मर जायगा। कव्वा जितना कटना चाहिये, उतना ही काटा जाय, कम और ज़ियादा काटना दोनों ही खराब हैं। अगर कम काटा जायगा, तो पीड़ामें कमी न होगी और ज़ियादा काटा जायगा तो खून बन्द न होगा और गले तथा फेंफड़ेमें भर कर रोगीको तत्काल मार डालेगा। अतः जहाँ तक बने कव्वेको न काटना चाहिये। जिस हालतमें रोगीके दम घुटकर मरनेका भय हो और दवासे लाभ होता ही न हो, तभी अनुभवी आदमीको इसे काटना चाहिये। इसको नश्तरसे काटना ही ठीक है, क्योंकि नश्तर उसे जहाँसे चाहोगे वहाँसे ही काट देगा, पर दवा किसी खास जगहसे नहीं काट सकेगी।

अनुभूत योग।

(९) टिंचर स्टीलको रुईके फाहेमें लगा कर, उस फाहेको कव्वेके लगा दो। कव्वा फौरन उठ जायगा।

(१०) माजूफल, बंसलोचन और छोटी इलायची—इनको समान-समान लेकर महीन पीस लो। फिर उसे नली या काग़ज़की भोंगलीमें भर कर कव्वेपर फूँको, कव्वा उठ जायगा। अथवा इस दवाको सलाई पर लगा कर कव्वेके लगा दो अथवा अंगुली पर

रख कर कव्वेके लगा दो। इस तरह भी कव्वा उठ जाता है और उससे हुई खाँसी मिट जाती है।

(११) कव्वेकी बीट इतवारके दिन लाकर और एक थैलीमें रख कर, बालकके गलेमें लटका दो, कव्वा उठ जायगा।

—:—:ॐ:—:—

घरकी चीज़ोंसे खाँसी नाश।

(१) घी और कालीमिर्च मिला कर चाटने अथवा घी और मिश्री मिला कर चाटनेसे सूखी खाँसी आराम हो जाती है।

(२) गायका घी बालककी छाती पर मलने और सुखा देनेसे दूधके दोषसे जमा हुआ कफ निकल जाता है।

(३) गोमूत्रको औटानेसे बर्तनकी पैंदीमें जो नमक लगा मिलता है, उसमेंसे ३ रत्ती नमक नित्य खानेसे कफ, खाँसी और श्वास नाश हो जाते हैं।

(४) गुड़में सोंठ और कालीमिर्च मिलाकर खानेसे खाँसी और जुकाम नष्ट हो जाते हैं।

(५) ६ माशे गुड़ और ६ माशे सरसोंका तेल मिलाकर चाटनेसे वातज सूखी खाँसी मिट जाती है।

(६) मिश्रीके टुकड़े मुखमें रखनेसे प्यास और खाँसीका जोर घट जाता है।

(७) शहदमें कालीमिर्च और सोंठ मिलाकर चाटनेसे कफ, खाँसी और जुकाम आराम हो जाते हैं।

(८) तीन माशे शहद और ६ माशे घी मिला कर चाटनेसे खाँसी जाती रहती है।

(९) एक तोले गेहूँ और डेढ़ माशे सेंधा नोन पाव-भर जलमें औटाकर और छटाँक भर रहने पर उतार छान कर गरमागर्म पीने से खाँसी नाश हो जाती है।

(१०) मक्केके भुट्टे जलाकर, उनकी राखमें सेंधानोन मिला कर दो-दो माशेकी मात्रासे दिनमें ३-४ बार फाँकनेसे खाँसी, जुकाम और कुकर खाँसी आराम हो जाती है।

(११) दो तोले तिल पाव-भर पानीमें औटाने और छटाँक-भर पानी रहनेपर, तोले भर मिश्री मिला कर पीनेसे सरदीकी सूखी खाँसी आराम हो जाती है।

(१२) एक तोले अलसीको पाव भर पानीमें औटाकर और छटाँक-भर पानी रहनेपर तोले भर मिश्री मिला कर पीनेसे सूखी खाँसी आराम हो जाती है और छातीपर सूखकर जमा हुआ कफ निकल जाता है।

(१३) तवेपर भूने हुए अलसीके बीज "शहद" में मिलाकर चाटनेसे सूखी खाँसी जाती रहती है।

(१४) आध सेर बिनौले कूट कर एक सेर पानी में औटाओ, जब आधा पानी रह जाय, मल-छान लो। इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा काढ़ा घण्टे-घण्टे भरमें पीनेसे सूखी खाँसी आराम हो जाती है। जाड़ा-ज्वर चढ़नेसे चार घण्टे पहले, एक-एक घण्टेमें, आध-आध पाव यही काढ़ा पीनेसे जाड़ेका ज्वर नहीं आता।

(१५) पिसी हुई काली मिर्च गुड़में मिला कर खानेसे जुकाम, खाँसी और पीनस आराम हो जाते हैं।

(१६) काली मिर्च पीस कर और शहदमें मिला कर चाटने से सरदीकी खाँसी और जुकाम आराम हो जाते हैं।

(१७) धनिया ३ तोले और सौंफ २ तोले गायके घीमें भून कर पीस लो। फिर २ तोले मिश्री पीस कर मिला दो। इसमें से छै-छै माशे दवा सवेरे-शाम खानेसे साधारण खाँसी, दमा, भीतरी दाह और पेचिश या मरोड़ीके दस्त आराम हो जाते हैं।

(१८) धनियाको कूट कर उसकी गिरी निकाल लो। इस में से १॥ माशे गिरी पीस कर २ माशे "शहद" में मिला कर चाटो। इससे खाँसी और दमा नाश हो जाते हैं।

(१९) हल्दीको भून कर और शहदमें मिलाकर चाटनेसे खाँसी और श्वास नाश हो जाते हैं।

(२०) लौंग और कत्थेकी गोलियाँ मुँहमें रखनेसे ख़ाँसी आराम हो जाती है।

(२१) पिसी हुई सोंठ गुड़में मिला कर खानेसे जुकाम और खाँसी आराम हो जाते हैं तथा भूख बढ़ती है।

(२२) शर्बत अनारमें दो रत्ती "जवाखार" मिलाकर चाटनेसे खाँसी आराम हो जाती है।

(२३) पानके रसमें तीन माशे शहद मिला कर चाटनेसे कफ, खाँसी और श्वास नाश हो जाते हैं।

(२४) चूना दो तोले और मिश्री चार तोले आध पाव पानीमें घोल दो। इनमें से नितार-नितार कर दस-दस बूँद बालकको पिलाने से खाँसी, श्वास और दूध गेरनेका रोग आराम हो जाते हैं।

(२५) सोंठ और बताशे पानीमें उबाल कर पीनेसे जुकाम, जुकामकी खाँसी और छाती वगैरःकी पीड़ा आराम हो जाती हैं।

(२६) काली मिर्च और बताशे औटाकर गरमागर्म पीनेसे पसीने आकर जुकाम, जुकामकी हरारत, खाँसी और शरीरकी जकड़न आराम हो जाते हैं।

(२७) हल्दीको पानीमें पीस और आगपर पका कर सिरपर लेप करनेसे जुकाम और जुकामकी खाँसी नष्ट हो जाती है।

(२८) हल्दीको आगपर डाल-डाल कर नाकमें धूआँ लेनेसे नाकसे खूब पानी गिरता और जुकाम आदि आराम हो जाते हैं।

(२९) बालककी खाँसीमें छातीपर सरसोंका तेल मलनेसे कफ निकल जाता है।

(३०) सरसोंके तेलमें सेंधानोन मिला कर छातीपर मलनेसे कफकी गाँठें बँध कर निकल जाती हैं।

(३१) गायके गरम दूधमें काली मिर्च और मिश्री मिला कर पीनेसे जुकाम और उसकी खाँसी आराम हो जाती है।

बालकोंकी खाँसीपर और नुसखे।

(३२) काकड़ासिंगी १ रत्ती, नागरमोथा २ रत्ती और अतीस आधी रत्ती—इनको पीस-छान कर "शहद"में मिला कर दिनमें ३।४ बार चाटनेसे बालकोंकी साधारण सर्दी, खाँसी, ज्वर और वमन—ये नाश हो जाते हैं।

(३३) छोटी पीपरोंका चूर्ण २ रत्ती, और अतीस आधी रत्ती "शहद" में मिला कर चार-चार घण्टेमें चटानेसे बालकोंकी सर्दी, खाँसी और ज्वरमें अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(३४) साफ नौसादर १ रत्ती और छोटी पीपरका चूर्ण १ रत्ती दोनोंको एकत्र पीसकर और तुलसीके पत्तोंके रसमें मिला कर ज़रा गरम कर लो। यह नुसख़ा तीन-तीन घण्टेमें देनेसे बालककी खाँसी और श्वास नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३५) अगर बालककी छातीमें सर्दी बैठ गई हो, तो ज़रा सा सफ़ेद प्याज़का रस और सरसोंका तेल मिला कर पका लो और

इस तेलको छातीपर मलो। इस उपायसे छातीपर जमा हुआ दूषित कफ पतला होकर निकल जाता है। परीक्षित है।

नोट—अदरखके रस और सरसोंके तेलको पका कर लगानेसे भी यही लाभ होता है। सरसोंके तेलकी जगह पुराना घी भी लिया जा सकता है। ऊपरके चारों नुसखे परीक्षित हैं।

बच्चोंकी कुकुर खाँसीकी चिकित्सा।

नोट—काली खाँसी या कुकुर खाँसी जिसे अँगरेज़ीमें हूपिंग काफ़ कहते हैं, एक खास तरहकी खाँसी है। मामूली खाँसीसे यह अलग गिनी जाती है। यह खाँसी प्रायः दस सालसे कम अवस्थाके बालकोंको ही होती है। यह छुतहा रोग है। एकसे उड़ कर दूसरेको लगता है। इसके होनेसे बालक कुत्ते की तरह खाँसता है, इसलिए इसे कुकुर खाँसी कहते हैं। बालकको इस खाँसीके होनेसे घोर कष्ट होता है, इसलिए इसे काली खाँसी, कड़वी खाँसी या विषैली खाँसी भी कहते हैं। इस खाँसीके उठते समय बालक जब श्वास लेता है, तब 'हुप, हुप' शब्द करता है, इसलिए अंगरेज़ इसे 'हूपिंग काफ़' कहते हैं।

इस खाँसीका कारण एक विष है। यह विष हवाके साथ फैंफड़ेमें जाकर वहाँ के मज्जातन्तुओंमें क्षोभ उत्पन्न करता है, जिससे ज्वर और खाँसी आदि विकार होते हैं।

इसकी दो अवस्थायें होती हैं। कोई-कोई तीन अवस्था मानते हैं। पहली अवस्था ८।१० दिन तक रहती है। इस हालतमें थोड़ा ज्वर होता और सूखी खाँसी चलती है। खाँसते-खाँसते बालकके चेहरेका रंग बदल जाता है।

दूसरी अवस्थामें, पहलेकी सी खाँसी नहीं रहती। खाँसी उठनेपर जब तक कफ नहीं निकल जाता या कय नहीं हो जाती, बालक अत्यन्त बेचैन रहता है। इस समय बालकके नेत्र लाल हो जाते हैं। किसी-किसी बच्चेकी नाकसे खून गिरता है और किसी-किसीके कय किये हुए कफमें भी खून देखा जाता है। कफ निकल

जानेपर बालकको चैन आता है। यही दूसरी अवस्था है। यह अवस्था कितने दिनों तक रहती है, इसका कुछ नियम नहीं।

जब यह रोग ज़ोरपर होता है, तब २४ घण्टेमें २० से ४० बार तक खाँसी के वेग उठते हैं। जब रोगका बल घटने लगता है, तब वेग भी कम होने लगते हैं। इसीको कोई-कोई तीसरी अवस्था कहते हैं। यह रोग बहुत दिनोंमें आराम होता है। किसीको पैंतालीस दिनमें, किसीको ६० दिनमें और किसीको इससे भी ज़ियादा दिनोंमें।

कितने ही बालकोंके सिरमें खून जमा हो जानेसे मूर्च्छा तक आ जाती है। रोगके पुराने होनेपर दाह और हृदयमें जलन आदि उपद्रव भी होते हैं। बिना उपद्रवकी खाँसी सहजमें नाश हो जाती है; पर उपद्रव होनेसे बालक अत्यन्त क्षीण हो जाता है। एक वर्षसे कम उम्रके बालक क्षीण होनेके कारण मर भी जाते हैं।

यह बहुत बुरा रोग है। जरा सी ग़फ़लतसे बालककी जान जानेका ख़ौफ़ रहता है। इसलिये इस रोगका इलाज करते समय, रोगकी अवस्थापर अवश्य ध्यान रखना चाहिये।

अनेक चिकित्सकोंकी राय है, कि इस रोगमें पहले वातनाशक औषधियाँ देनी चाहियें। परन्तु जो लोग इसे साधारण सरदीका विकार समझ कर गरम और तेज़ दवाएँ देते हैं, वे बालकके दुश्मन होते हैं। वैसी दवाओंसे लाभ होने के बजाय, कभी-कभी कफ़ सूख जानेसे भयंकर परिणाम होता है।

याद रखना चाहिये, यह रोग मियादी है। बिना अपनी मियाद पूरी किये आराम नहीं होता। लेकिन यह समझ कर दवा न करना भारी भूल है। पीड़ा की शान्ति और रोगकी बढ़ती रोकनेको दवा अवश्य देनी चाहिये।

चिकित्सा।

(१) सौंफ, मुलेठीका सत, दाख और आग में भुनी हुई बड़ी इलायचीके बीज बराबर-बराबर लेकर एकत्र पीस-छान लो। इसमें से थोड़ा-थोड़ा चूर्ण "शहद" में मिला कर चाटनेसे कुकुर खाँसी दब जाती है।

(२) काकड़ासिंगी, अतीस, दालचीनी और छोटी इलायचीके बीज बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णमें से १ रत्ती

चूर्ण, एक माशे शहदमें मिला कर चटानेसे, कफ निकल कर खाँसी की पीड़ा शान्त हो जाती है।

(३) बिजौरेके फूलकी केशर और कटेरीके फूलकी केशर—दोनोंको शहदमें मिला कर चटानेसे खाँसी, ओकी और वमन आदि नाश हो जाते हैं।

(४) अदरखके रसके साथ गायका घी पकाओ। उसमेंसे थोड़ा-थोड़ा घी गरम दूध में मिला कर पिलानेसे पुरानी कुकुर खाँसी जाती रहती है।

(५) हल्दी, दालचीनी, बायबिडंग और नागकेशर—प्रत्येक दवा तीन-तीन माशे लो; हींग १ माशे और कस्तूरी १ रत्ती लो। सब को एकत्र पीस कर उड़द-समान गोलियाँ बना लो। बालककी अवस्थानुसार एक या आधी गोली "शहदमें" घिस कर दो। इससे अत्यन्त पीड़ा वाली पुरानी खाँसी भी चली जाती है।

(६) आध पाव गायके दूध और आध पाव पानीमें ज़रा-सा गायका घी डाल कर पकाओ। जब पानी जल कर दूध रह जाय, उसमें थोड़ी मिश्री मिला दो। इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा दूध, दिनमें दो-तीन बार, पिलानेसे पुरानी कुकुर खाँसी जाती रहती है।

(७) बहेड़ेके छिलके और अनारके छिलकेका काढ़ा पका लो। फिर उसे छान कर, उसमें मिश्री मिला दो और फिर पकाओ। जब अवलेह जैसा हो जाय, उसमें छोटी पीपर पीस कर मिला दो। इसमेंसे बालककी अवस्थानुसार चटानेसे कुकुर खाँसीकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(८) सफेद वैसलीन तीन या चार ग्रेनकी मात्रासे बालकको दिनमें २।३ बार देनेसे कुकुर खाँसी २।३ दिनमें ही बहुत घट जाती है।

(९) "इयुलोदिन" नामक दवाकी टेबलेट या टिकिया खिलाने

से २।३ दिनमें ही कुकुर खाँसी कम हो जाती है। यह दवा अँगरेज़ी दूकानोंपर मिलती है।

डाक्टरी मतसे
फैंफड़ोंका वर्णन।

फैंफड़े मनुष्यकी छातीमें दाहिनी और बाईं ओर होते हैं। दाहिना फुफ्फुस बाएँकी अपेक्षा अधिक चौड़ा और भारी होता है। फुफ्फुस गावदुम होता है; यानी वह एक ओरसे पतला और कम चौड़ा होता है, पर दूसरी ओरसे मोटा और अधिक चौड़ा होता है। पतले और नुकीले हिस्सेको फुफ्फुसका शिखर या चोटी कहते हैं। यह पतला और नुकीला भाग गर्दनकी तरफ और मोटा तथा चौड़ा हिस्सा पेटकी तरफ रहता है।

फैंफड़े ऊपरसे चिकने और चमकीले होते हैं और उन पर चित्तियाँ-सी पड़ी होती हैं। छूनेसे वे नर्म जान पड़ते हैं और अंगुलियोंसे दबाने पर वे स्पञ्ज-जैसे मालूम होते हैं। गर्भगत बालकके फैंफड़ेका रंग गहरा लाल होता है; हालके जन्मे बच्चेके फैंफड़ेका रंग गुलाबी होता है; पर प्रौढ़ मनुष्यके फैंफड़ेका रंग नीलापन लिये भूरा-सा होता है। हिन्दुस्तानियोंके दोनों फैंफड़े तोलमें क़रीब एक सेरके होते हैं और स्त्रियोंके एक सेरसे कुछ कम होते हैं; पर यूरोपियनोंके फैंफड़ोंका वज़न सवा सेरके क़रीब होता है।

तन्दुरुस्त आदमीके फैंफड़े हवा भरी रहनेकी वजहसे पानीसे हलके होते हैं। अगर वे मुर्देके शरीरसे निकाल कर पानीमें डाल

दिये जायें, तो तैरने लगेंगे; परन्तु न्यूमोनिया—फुफ्फुस-प्रदाह और क्षय रोग यानी तपेदिक या थाइसिस रोगमें, फुफ्फुसके वे भाग जिनमें ये रोग होते हैं, किसी क़दर ठोस हो जाते हैं, इसलिये उनमें हवा नहीं रहती। बस, हवा न रहनेके कारण वे जल पर नहीं तैरते यानी डूब जाते हैं।

फुफ्फुस पानीमें तभी तैर सकता है, जब कि उसमें हवा भरी हो। गर्भगत बालकके फैंफड़ोंमें हवा नहीं भरी होती, क्योंकि उस समय बच्चा श्वास नहीं लेता। बिना श्वास लिये फैंफड़ोंमें हवा कैसे भर सकती है? जो बालक पेटसे मरे हुए निकलते हैं, उनके फुफ्फुस जलमें नहीं तैरते। जो बालक माँके पेटसे बाहर आकर एक श्वास भी लेता है, उसका फुफ्फुस पानी पर तैरता है। फुफ्फुसके पानीपर तैरनेसे साफ तौर पर मालूम हो जाता है, कि बच्चा पैदा होनेके बाद जिया है या जीता हुआ पैदा हुआ है।

नाकके छेदोंसे लेकर फैंफड़ों तक हवाके जाने और आनेकी जो राहें हैं, उसे "श्वास मार्ग" कहते हैं। नाकके छेदोंसे ही हवा भीतर जाती है; यानी नाकसे हवा कंठमें जाती है। कंठ या गलेसे स्वरयंत्रमें जाती है। स्वरयंत्रसे वह टेंटुएमें जाती है और टेंटुएसे वायुप्रणालियोंमें जाती है। इन नालियोंमें अनेक शाखा-प्रशाखा हैं। उन सबमें होकर वायु सारे फुफ्फुसमें पहुँचती है।

सामनेकी तरफ़, गर्दनके बीचों-बीचमें, एक सख़्त और लम्बी चीज़ होती है। जब हम कोई चीज़ निगलने लगते हैं, तब वह ऊपर को उठती और फिर नीचेकी ओर गिरती दीखती है। इस अंगके ऊपरका मोटा और चौड़ा भाग "स्वरयंत्र" है। नीचेका बाक़ी हिस्सा "टेंटुआ" है।

गर्दनमें टेंटुएके पीछे "अन्न-प्रणाली" है। स्वरयंत्र और टेंटुएमें होकर हवा फैंफड़ोंमें जाती है और टेंटुएके पीछे वाली अन्न-प्रणाली

या अन्न जानेकी नालीमें होकर अन्न भीतर जाता है। दाहिनी वायुप्रणाली दाहिने फैंफड़ेसे और बाईं बायें फैंफड़ेसे सम्बन्ध रखती है। फुफ्फुसमें घुसते ही वायु-प्रणालीकी बहुतसी शाखायें हो जाती हैं। इन शाखाओं द्वारा वायु फुफ्फुसके सब भागोंमें पहुँचती है।

श्वास-कार्य।

हवाका फैंफड़ोंके भीतर जाना और फिर बाहर आना ही "श्वास-कर्म" कहलाता है। एक बार हवा नाकके छेदोंमें होकर फैंफड़ोंके भीतर घुसती है, तब छाती फैलकर पहलेसे बड़ी हो जाती है। इसको "उच्छ्वास" या भीतर साँस लेना कहते हैं। एक बार हवा जिस तरह नाकके छेदोंमें होकर भीतर जाती है; उसी तरह फिर नाकके द्वारा बाहर निकलती है। जब हवा बाहर आती है, तब छाती अपनी असली हालतमें हो जाती है और फैंफड़े भी छोटे हो जाते हैं। इसको "प्रश्वास" या साँसका बाहर निकलना कहते हैं। एक उच्छ्वास और एक प्रश्वास यानी एक बार हवाके भीतर जाने और बाहर आनेको एक श्वास कहते हैं। पूरी उम्रका प्रौढ़ मनुष्य एक मिनटमें १६ या १७ श्वास लेता है। साधारणतः तन्दुरुस्त आदमी एक मिनटमें १६ से २० श्वास तक लेता है। बचपनमें श्वास जियादा आते हैं। हालका पैदा हुआ बालक चँवालीस साँस लेता है, पर पाँच बरसका बच्चा २५।२६ साँस लेता है। जितनी देरमें मनुष्य १ साँस लेता है, उतनी देरमें हृदय चार या पाँच बार फड़कता है।

ऐसा न समझना चाहिये, कि प्रश्वास कर्ममें यानी साँस बाहर आते समय फैंफड़े हवासे ख़ाली हो जाते हैं—उनमें हवा बिल्कुल नहीं रहती। असल बात यह है कि, हमारे साँस बाहर निकालते समय भी फैंफड़े हवासे भरे रहते हैं। हम लोगोंको सदा गहरा श्वास लेना चाहिये, जिससे हवा फैंफड़ोंके कोने-कोनेमें भर जाय।

जो लोग गहरे साँस नहीं लेते, उनके फैंफड़े हवासे अच्छी तरह नहीं भरते ।

रोगोंमें श्वासकी संख्या घट-बढ़ जाती है । बुख़ारकी हालतमें साँस जल्दी-जल्दी आते हैं । ख़ासकर, फैंफड़ोंके रोगोंमें तो जियादा आते ही हैं । जैसे—फुफ्फुस-प्रदाह या न्यूमोनियामें जियादा साँस आते हैं; पर मीठे विष और अफीमके विषसे श्वास कम आते हैं ।

मनुष्य-शरीरमें रासायनिक क्रियाओंके होनेसे अनेक तरहके पदार्थ बनते रहते हैं । उनमेंसे बहुतेरे बेकाम होते हैं और कितने ही तो जहरका काम करने वाले होते हैं । अगर वे शरीरमें रहे आवें, तो अनेक भयानक रोग पैदा हो सकते हैं । इसीलिये रचयिताने शरीरके भीतरसे ख़राब चीजोंके निकालनेका इन्तज़ाम भी किया है । कई अंगोंका काम है, कि जब उनमें खून आवे, तो वे उसमेंसे ज़हरीले पदार्थ निकाल लें और उन्हें श्वास, मूत्र और पसीने द्वारा बाहर पहुँचा दें ।

यों तो खूनको साफ करने वाले मुख्य अंग फैंफड़े, वृक्क और चमड़ा हैं, पर इनके सिवा यकृत-लिवर, प्लीहा-तिल्ली या स्प्लीन प्रभृति भी खूनको साफ करते हैं ।

फैंफड़ों द्वारा तीन ख़राब या हानिकारक पदार्थ बाहर निकलते हैं और एक अच्छी चीज़ उनके अन्दर जाती है । कारबोनिक एसिड गैस, उड़नेवाले हानिकर पदार्थ और जलकी भाफ—ये तीन चीजें ख़राब होती हैं, इन्हींको फैंफड़े बाहर निकालते और आक्सिजन गैसको अन्दर लेते हैं ।

मनुष्य-शरीरमें जो कारबोनिक एसिड गैस पैदा होती है, वह ज़हरीली गैस है । जिस खूनमें यह गैस अधिक होती है, उसका

रंग स्याही माइल होता है। यह कालासा खून शरीरके सारे भागों से इकट्ठा होकर, हृदयके दाहने ग्राहक कोठेमें जाता है। फिर हृदय से यह फैंफड़ोंमें जाता है। वहाँ जाकर इसमेंसे बहुतसा बाहर निकल जाता है और उसकी जगह आक्सिजन गैस आ जाती है। मतलब यह, कि हृदयके दाहिने कोठेसे जो खून फैंफड़ोंमें आता है, वह स्याही माइल होता है। उसमें आक्सिजन कम और कारबोनिक एसिड गैस अधिक होती है। फिर फुफ्फुसोंसे हृदयके बायें कोठे में जो खून जाता है, उसकी रंगत लाल होती है। उसमें आक्सिजन ज़ियादा और कारबोनिक एसिड गैस कम होती है।

फैंफड़े इन दोनों गैसोंके ही लेने और निकालनेका काम नहीं करते, किन्तु कुछ पानी भी, भाफके रूपमें, हवा द्वारा, शरीरसे बाहर करते हैं। प्रश्वास वायुमें उच्छ्वास वायुकी अपेक्षा भाफ अधिक होती है। भाफके सिवा कुछ उड़ने वाले जहरीले पदार्थ भी वायु द्वारा बाहर निकल जाते हैं।

हिकमतके मतसे फैंफड़ोंका वर्णन।

यूनानी हकीमोंने लिखा है, कि फैंफड़ा दिलका पंखा है और उसके अधीन है। वह शीतल हवाको दिलमें पहुँचाता है। इसका रंग गुलाबके फूल जैसा होता है। इसके दो भाग होते हैं:—(१) दाहिना, और (२) बायाँ। फैंफड़ेके लिये खाँसी वैसी ही है, जैसी कि दिमाग़के लिये छींक। दिमाग़ छींकोंसे अपनी तकलीफ दूर करता है और फैंफड़ा खाँसीसे अपनी तकलीफ दूर करता है। हकीमोंका कहना है कि, फैंफड़ों और उनसे सम्बन्ध रखने वाले श्वास यंत्रोंमें जब कुछ ख़राबी होती है, तभी प्रायः खाँसी होती है।

इस बातको न भूलना चाहिये कि, हमारे गलेमें दो नालियाँ हैं:—(१) श्वास-नली, और (२) अन्न-प्रणाली। श्वास

नलीसे हम श्वास लेते हैं और अन्न प्रणालीसे अन्नको पेटमें पहुँचाते हैं। यह समझना ग़लती है, कि जिस नलीसे हम साँस लेते हैं, उसी से खाया-पिया पदार्थ पेटमें पहुँचाते हैं। हमारे शरीरमें हवा और राहसे जाती है, और भोजन-पानके पदार्थ दूसरी राहसे। जब कोई आदमी जल्दी-जल्दी खाता है, तब अक्सर खाये-पिये पदार्थ अपनी अन्नकी नलीमें न जाकर, श्वास-नलीमें चले जाते हैं। श्वास-नलीमें उनके जानेसे खाँसी पैदा हो जाती है। इसी तरह जब श्वास-नलीमें धूल, गर्द या धूआँ प्रभृति चले जाते हैं, तब भी खाँसी हो जाती है; क्योंकि फैंफड़ा उनके निकालनेके लिए खाँसी चलाता है। यह बात वैद्यक और हिकमत दोनोंमें लिखी हैं। पीछे हम जो खाँसी होनेके कारण लिख आये हैं, उन पर ध्यान देनेसे यह बात साफ तौरसे समझमें आ जायगी।

दूसरा अध्याय

प्रतिश्यायका वर्णन ।

(जुकाम या नजला)

सामान्य निरूपण ।

प्रतिश्याय रोगके निदान दो तरहके होते हैं:—

(१) सद्योजनक—तत्काल पैदा करनेवाले ।

(२) चयादिक्रम जनक—संचयादिके क्रमसे पैदा करनेवाले ।

सद्योजनक यानी तत्काल प्रतिश्याय—जुकाम पैदा करने वाले निदान-कारण, प्रबल या जोरावर होनेसे, क्रमकी राह नहीं देखते। वे हेतुओंके जोरसे, समय आये बिनाही, कुपित होकर रोग कर देते हैं।

चय आदि क्रमजनक निदानमें यह क्रम है:—(१) निदान यानी कारणोंसे वातादि दोषोंका संचय होता है। (२) संचयसे दोषोंका कोप होता है, (३) कोपसे फैलाव होता है, (४) फैलाव से स्थान-संश्रय होता है, यानी दोष उन-उन ठिकानोंमें आते हैं। (५) स्थान-संश्रयसे रोग दीखते हैं। (६) शेषमें, दीखने पर भेद होता है।

सद्योजनक निदानपूर्वक सम्प्राप्ति ।

तत्काल प्रतिश्याय पैदा करने वाले नीचे लिखे कारण हैं:—

(१) मल-मूत्रादि वेग रोकना ।

(२) अजीर्ण या बदहजमी होना ।

(३) नाकमें रज या धूलका जाना ।

(४) बहुत जियादा बोलना ।

(५) बहुतही क्रोध करना।

(६) ऋतुचर्याके विपरीत काम करना।

(७) धूएँ वगैरःसे सिरको तकलीफ पहुँचना।

(८) रातमें जागना।

(९) बहुत जियादा सोना।

(१०) बहुत जियादा जलमें रहना या जल सेवन करना।

(११) सर्दी खानेके काम करना।

(१२) तुषार सेवन करना।

(१३) अत्यन्त मैथुन करना।

(१४) अत्यन्त रोना।

(१५) शोक या रंज करना।

ऊपर लिखे १५ कारणोंसे मस्तकमें एक साथ कफ जम जाता है, है, तब बढ़ा हुआ वायु प्रतिश्याय—जुकाम पैदा करता है।

वेग संधारणाज्जीर्ण शोक मैथुन जागरैः।
स्वयं मूर्द्धिगदादोषाः प्रतिश्यायकरामताः॥

मलमूत्रादि वेगोंके रोकने, अजीर्ण, शोक, मैथुन और रातमें जागने से वातादि दोष कुपित होते हैं। फिर वे मस्तकमें ठहर कर प्रतिश्याय—जुकाम—पैदा करते हैं।

चयादिक्रमजनक निदानपूर्वक सम्प्राप्ति।

वात, पित्त, कफ अलग-अलग अथवा तीनों मिले हुए या खून मस्तकमें संचय होकर—जमा होकर, जब अपने-अपने कुपित करने वाले कारणोंसे कुपित होते हैं, तब प्रतिश्याय रोग करते हैं।

पूर्व्व रूप।

प्रतिश्याय होनेसे पहले नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं:—

(१) छींक बहुत आती हैं।

(२) सिरमें बोझा सा मालूम होता है।

(३) अंग जकड़ जाते हैं।

(४) शरीरके अंग टूटने लगते हैं।

(५) रोंगटे खड़े होते हैं।

(६) नाकसे धूएँके जैसी हवा निकलती है।

(७) तालू फट जाता है।

(८) नाक और मुँहसे स्राव होता है; यानी पतला सा पदार्थ गिरता है।

मतलब यह है कि, जब प्रतिश्याय होनेवाला होता है, तब ऊपरके उपद्रव अथवा ऐसे ही और उपद्रव पहलेसे होने लगते हैं। इनके नज़र आते ही जान लेना चाहिये कि "जुकाम" होगा।

प्रतिश्यायके भेद।

प्रतिश्याय कई तरहके होते हैं:—

(१) वातज प्रतिश्याय। (२) पित्तज प्रतिश्याय।

(२) सन्निपातज प्रतिश्याय। (४) कफज प्रतिश्याय।

(५) दुष्ट प्रतिश्याय। (६) रक्तज प्रतिश्याय।

वायु जनित प्रतिश्यायके लक्षण।

वायुके प्रतिश्यायमें नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं:—

(१) नाक रुक जाती है।

(२) नाकसे पतला मवाद गिरता है।

(३) गला, तालू और होंठ सूखते हैं।

(४) कनपटियोंमें पीड़ा होती है।

(५) स्वर नष्ट हो जाता है या गला बैठ जाता है।

पित्त जनित प्रतिश्यायके लक्षण।

पित्तके प्रतिश्यायमें नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) नाकसे गरम और ज़रा पीला मवाद आता है।

(२) शरीर दुबला और गरम हो जाता है तथा रंग पीला या मटियासा हो जाता है।

(३) प्यास बहुत लगती है।

(४) नाकसे धूएँवाली आग सी निकलती जान पड़ती है।

कफ जनित प्रतिश्यायके लक्षण।

कफके प्रतिश्यायमें नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) नाकसे सफेद शीतल कफ ज़ियादा निकलता है।

(२) शरीरका रंग सफेद हो जाता है।

(३) नेत्र सुन्न हो जाते हैं।

(४) सिर भारी हो जाता है।

(५) तालू, होंठ और माथेमें खुजली बहुत होती है।

त्रिदोषज प्रतिश्यायके लक्षण।

यह प्रतिश्याय पक कर अथवा बिना पके ही अचानक बन्द हो जाता है और फिर होता है और बन्द हो जाता है। इसके सिवाय वात, पित्त और कफ तीनोंके लक्षण भी नज़र आते हैं। यद्यपि शास्त्र में तीनों दोषोंके लक्षणोंकी बात लिखी नहीं हैं, तथापि लक्षण होते ज़रूर हैं।

दुष्ट प्रतिश्यायके लक्षण।

जिस प्रतिश्यायमें नीचे लिखे हुए लक्षण हों, उसे दुष्ट प्रतिश्याय समझना चाहियेः—

(१) नाक कभी तर हो जाय और कभी सूख जाय।

(२) नाक कभी बन्द हो जाय और क़भी खुल जाय।

(३) नाकसे बदबूदार साँस निकले।

(४) नाकको खुशबू या बदबू न मालूम हो।

नोट—नाक एक ही समयमें गीली, सूखी और बन्द नहीं होती। जब जिस दोषकी ज़ियादती होती है, तब उसीके अनुसार लक्षण होते हैं। यह प्रतिश्याय कष्टसाध्य भी होता है और असाध्य भी।

रुधिरके प्रतिश्यायके लक्षण ।

खूनके कारणसे जो प्रतिश्याय होता है, उसमें नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) नाकसे खून आता है ।

(२) नाकसे गरम और पीला मवाद भी आता है ।

(३) शरीर दुबला, गरम और पीलासा हो जाता है ।

(४) प्यास बहुत लगती है ।

(५) नाकसे धूएँकी-सी आग निकलती जान पड़ती है ।

(६) आँखें लाल हो जाती हैं ।

(७) छातीमें चोट लगनेका-सा दर्द होता है ।

(८) मुँहसे बदबूदार साँस निकलता है ।

(९) नाकको बदबू-खुशबूका ज्ञान नहीं रहता ।

सभी प्रतिश्याय उचित चिकित्साके अभावमें, कालान्तरमें, असाध्य ।

जो मनुष्य प्रतिश्याय या जुकामकी परवा नहीं करता, इलाज नहींकरता या कराता, उसका प्रतिश्याय, समय पाकर, असाध्य हो जाता है; अतः इसका इलाज फौरन करना चाहिये । कहा है:—

सर्व एव प्रतिश्याया नरस्याप्रतिकारिणः ।
दुष्टतां यान्ति कालेन तदा दुःसाध्याश्च भवन्ति ते ॥

इलाज न कराने वालोंके सभी प्रतिश्याय कालान्तरमें दुष्ट हो जाते हैं । फिर दुष्ट होनेसे असाध्य हो जाते हैं—आराम नहीं होते ।

प्रतिश्यायोंमें कीड़े ।

प्रतिश्यायोंमें कफके कारणसे सफेद, चिकने और बारीक-बारीक कीड़े होते हैं । ऐसे प्रतिश्याय वालोंका मस्तक भीतरसे कफसे लिपा रहता है । माथा भारी, स्तब्ध और शीतल होता है । आँखोंके कोयोंमें और मुँहपर सूजन होती है । ये कफज शिरोरोगके लक्षण हैं ।

प्रतिश्यायके बढ़नेसे और रोग।

प्रतिश्यायके बहुत ही ज़ियादा बढ़ जानेसे नीचे लिखे भयंकर रोग हो जाते हैं:—

(१) आदमी बहरा हो जाता है।

(२) अन्धा हो जाता है।

(३) गन्ध सूँघनेकी ताक़त जाती रहती है।

(४) नेत्रोंमें भयंकर रोग हो जाते हैं।

(५) शोष हो जाता है।

(६) अग्नि मन्द हो जाती है।

(७) खाँसी हो जाती है।

नोट १—"नेत्रोंमें भयंकर रोग होना" लिखनेसे अन्धापन आ जाता है। फिर भी अन्धा होना अलग लिखा है। इसका कारण यह है, कि अन्धापन ज़ियादा होता है।

२—ज़ुकामके इलाजमें आलस्य करना बड़ी ग़लती है। हकीम अकबर अली लिखते हैं:—अगर ज़ुकाम जल्दी नहीं पकता और आराम नहीं होता, तो नीचे लिखी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं:—

(१) आँख, कान, नाकके रोग।
(२) खुनाक नामकी सूजन।
(३) हल्क़ और आमाशयमें दर्द।
(४) आँतें छिलनेका रोग।
(५) पसलीकी सूजन।
(६) पसलीके पर्देकी सूजन।
(७) कुलंज रोग।
(८) सक्तेका रोग।
(९) अपस्मार या मिर्गी।
(१०) दर्द सिर या आधासीसी।
(११) मालीखोलिया।
(१२) सरसाम।
(१३) गहरी नींदका रोग।

(१४) मानिया—एक तरहका उन्माद रोग ।

(१५) सिर घूमना ।

(१६) आँखों के सामने अँधेरा होना ।

जिस अंग पर नजला गिरता है, उसीमें रोग होजाता है । दिमागकी पोल और छेदोंमें मल रुकनेसे सक्तेका रोग हो सकता है। अगर मवाद गरम होता है, तो मृगी रोग पैदा कर देता है । अगर दिमाग़की रगोंमें मवाद होता है, पर मिकदार में थोड़ा होता है तो सिर का दर्द या आधासीसी हो जाती है । इसी तरह और रोग होजाते हैं, अतः जब तक दिमाग में मवाद हो, उसे बन्द न करना चाहिये और यदि बन्द हो जाय तो खोल देना चाहिये ।

कच्चे पीनसके लक्षण ।

अगर पीनस रोग कच्चा होता है, तो नीचे लिखे लक्षण होते हैं:—

(१) सिरमें भारीपन हो ।

(२) अरुचि हो ।

(३) नाकसे पतला मवाद गिरे ।

(४) स्वर बिगड़ गया हो । गला बैठ गया हो ।

(५) बारम्बार थूक आता हो ।

पक्के पीनसके लक्षण ।

जब पीनस पक जाता है, तब नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) कफ गाढ़ा हो या नाकके छेदों में रुक जाय ।

(२) मुँह से शुद्ध शब्द निकले और स्वर शुद्ध हो ।

(३) कफका रोग स्वाभाविक हो जाय ।

पके हुये प्रतिश्यायके लक्षण ।

वाग्भट्ट में लिखा है:—

पक्वलिंगानि तेष्वंगलाघवं क्षवथोः शमः ।
श्लेष्मा सचिक्कणः पीतो ज्ञानं च रसगन्धयोः ॥

जब प्रतिश्याय पक जाता है, तब शरीर हलका हो जाता है, छींक आना बन्द हो जाता है, चिकना-चिकना पीला कफ निकलता है और रस तथा गन्ध का ज्ञान होने लगता है।

प्रतिश्यायमें याद रखने योग्य बातें।

(१) जुकाम होने पर पहले दिन उपवास या लंघन करो।

(२) जलको खूब गरम करके दिन-रातमें थोड़ा-थोड़ा पीओ। कहा है:—

पार्श्वशूले प्रतिश्याये वातरोगे गलग्रहे।
आध्माने स्तिमिते कोष्ठेद्रुयः शुद्धौ नवज्वरे।
अरुचि ग्रहणी गुल्मश्वास कासेषु विद्रधौ।
हिक्कायां स्नेहपाने च शीताम्बु परिवर्जयेत्॥

पसली के दर्द, प्रतिश्याय—जुकाम, वात-सम्बन्धी रोग, गलग्रह, अफारा, दस्तकब्ज, जुलाब लेने, नया ज्वर, अरुचि, संग्रहणी, गोला, श्वास, खाँसी, विद्रधि, और हिचकी रोगमें तथा तेल आनि पीने पर शीतल जल पीना मना है। और भीः—

अरोचके प्रतिश्याये मन्दाग्नौ श्वयथौ क्षये।
मुखप्रसेके जठरे कुष्ठे नेत्रामये ज्वरे।
व्रणे च मधुमेहे च पिबेत्पानीयमल्पकम्॥

अरुचि, प्रतिश्याय—जुकाम, सूजन, क्षय, मुँहसे जल बहना, पेट के रोग, आखोंके रोग, ज्वर, व्रण और मधुमेहमें थोड़ा जल पीना चाहिये।

(३) स्नान या मुँह हाथ धोनेके लिए गरम जल काममें लाओ। यह हकीमो मत है। वाग्भट्ट महाशयभी कहते हैं:—

त्यजेत्स्नानं शुचं क्रोधं भृशं शय्यां हिमं जलम्।

प्रतिश्याय-रोगीको स्नान, शोक, क्रोध, अतिशय शय्या-सेवन और शीतल जलको त्याग देना चाहिये।

(४) जब शरीर खूब हल्का हो जाय, ज़ोरसे भूख लगे तब भोजन करो।

(५) नया अन्न, भारी और देरमें पचने वाले पदार्थ न खाओ। दूध, दही, माठा, घी और मीठे पदार्थ नये जुकाममें हानिकारक हैं।

(६) पीनस और प्रतिश्याय प्रभृति कफप्रधान नाकके रोगोंमें कफनाशक पथ्य दो। कफका उपद्रव थोड़ा-सा भी हो, तो भात न दो। रोटी या इससे भी रूखे भोजनकी व्यवस्था करो। पित्त प्रधान नाकके रोगोंमें पित्तनाशक और रक्तपित्त शान्तिकारक पथ्य दो।

(७) सब तरहके प्रतिश्यायोंमें विना बाहरी हवाके घरमें रहो और सिर पर मोटा कपड़ा बाँधे रहो। बाहरी सरदीसे खूब बचो। कहा है:—

पीनसेषु च सर्वेषु निर्वातागारगो भवेत्।

हकीम अकबर अली साहब भी लिखते हैं—जुकाम चाहे गरम हो, तो भी सिरको ढके रक्खो। शीतल और उत्तरकी हवासे बचो। प्यासका जोर हो, तो भी बर्फ़-मिलाया सुराहीका शीतल पानी मत पीओ।

नहाना जुकामके आरम्भमें हानिकारक है। पर अगर मल पतला और थोड़ा निकले तो नहाना लाभदायक है; क्योंकि नहानेसे पतला मादा निकल जाता और गाढ़ा रह जाता है।

जुकामके अन्तमें नहाना अधिक लाभदायक है। उस समयका नहाना पके हुए मलको पिघला कर निकाल देता है।

जिस आदमीको जुकाम ज़ियादा होता है, उसे आरोग्य रहनेकी दशामें नहाना और पसीने लेना लाभदायक है, क्योंकि वे रतूबतें और भाफके परमाणु, जिनसे जुकाम और नजला पैदा होता है,

पसीने द्वारा निकल जाते हैं। बिना भोजन किये नहानेके स्थानमें जाना चाहिये और धीरे-धीरे शरीर ढक कर बाहर निकल आना चाहिये।

(८) सिरके बाल जल्दी-जल्दी मुँडवा डालने चाहियें तथा सिरमें कंघी करनी और उसे खुजाना चाहिये। कंघी करनेसे रोम-छिद्र खुलते हैं और नजलेका माद्दा हटता है।

(९) जुकाममें दस्तक़ब्जकी शिकायत प्रायः आरम्भसे ही रहती है, अतः कब्ज होनेपर या पेटमें भारीपन रहने पर, कोई मामूली दस्तावर दवा लेकर पेट साफ़ कर लेना चाहिये। अथवा ऐसी दवा लेनी चाहिये, जो दस्तको साफ करे और जुकामको भी मिटावे। नीचे लिखा नुसख़ा दोनों काम करता है:—

सौंफ ४ माशे, मुनक्का ७ दाने, अंजीर २ दाने, गुलबनफशा ४ माशे, उन्नाव ५ दाने और सनाय ६ माशे—इन दवाओंको कुचलकर, पाव भर पानीमें, मिट्टीकी हाँड़ीमें, औटाओ। जब एक छटाँक पानी रह जाय, मल-छान लो और दो तोला मिश्री डालकर पी लो। इस नुसख़ेसे एक या दो दस्त होकर कोठा साफ होता और जुकाम भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

अगर गरम जुकाममें दस्त करानेकी दरकार हो, तो गुलबनफशा, उन्नाव, लिहसौड़े, ख़तमीकी जड़, ख़तमीके बीज और खिश्त—इनका जुलाब दो।

(१०) अगर जुकामका मवाद गलेमें उतरता हो, तो अनार और मसूरका काढ़ा बना कर कुल्ले करो। अगर इससे न रुके तो खशखाशके बीज और खशखाशकी छालको मसूरके काढ़ेमें औटा कर कुल्ले करो। यह जोरदार दवा है। इससे गलेमें जुकामके मवाद का उतारना रुक जाता है।

(११) जुकामवालेको सिरके नीचे ऊँचा तकिया न रखना चाहिये, बल्कि सिरहाना नीचा रखना चाहिये और तकिये पर मुँह

झुका कर सोना चाहिये, जिससे मवाद नाककी तरफ आवे—छाती पर न गिरे।

(१२) जुकाम के आरंभ में छींक हानि करती हैं, इसलिये अगर छींक आवें तो रोकनेका उपाय करना चाहिये।

नोट—छींक दिमाग़के लिये वैसी ही है, जैसी खाँसी फैंफड़े के लिये। छींक दिमाग़की ख़राब और तकलीफ़ देनेवाली चीज़ोंको निकालती है, अतः छींकसे दिमाग़की रक्षा होती है। परन्तु ज़ियादा छींक आना ख़राब है। "शरह अस्बाब" नामक ग्रन्थमें लिखा है—छींकोंके वारम्बार आनेसे नाकका ख़ून उबलता है। बहुधा ज्वरोंमें और ऐसे ही रोगोंमें इससे ताक़त कम हो जाती है।

चार तरहके रोगियोंको ज़ियादा छींक आना बहुत ख़राब है:—(१) जिसको जुकाम शुरू हुआ ही हो, (२) जिसके दिमाग़का गरम होना उचित नहीं, (३) जिसकी छातीमें मवाद भरा हो, और (४) जिसकी नाकसे ख़ून बहुत गिरता हो। परन्तु तीन आदमियोंको छींक आना मुफ़ीद है:—(१) जिसके सिर में थोड़ेसे भाफके परमाणु या थोड़ा सा मवाद हो, (२) जिसके दिमाग़में पका हुआ मवाद हो। जुकामके अन्तमें छींक आना अच्छा है। अगर मवाद गाढ़ा हो, बहुत हो और पका हुआ हो और फिर छींकें आवें, तो समझो कि दिमाग़में ताक़त है। मरने वालेका दिमाग़ कमज़ोर हो जाता है, इसलिये ऐसे आदमीको छींक नहीं आती। (३) औरतोंके बच्चा जननेके समय भी छींक आना अच्छा है, क्योंकि छींककी सहायतासे बालक और ओलनाल जल्दी निकलते हैं।

आयुर्वेदमें दो तरह की छींकें लिखी हैं:—(१) दोषजन्य, और (२) आगन्तुज। नाककी तरुण हड्डी या शृंगाटक नामके मर्मस्थानमें दूषित हुए कफ सहित वायु अधिक छींक लाता है। इसी रोगको वैद्य लोग दोषजन्य छींक कहते हैं। जो छींकें राई आदि तेज़ पदार्थ काममें लानेसे, मिर्च आदि तेज़ पदार्थोंकी गन्धसे, सूर्यके सामने देखनेसे, कफके पिघलनेपर अथवा डोरे आदिसे नाकके तरुण हड्डी नामक मर्मस्थलको रगड़ने या घिसनेसे आती है, उसे "आगन्तुज" कहते हैं।

छींक रोगके सम्बन्धमें हम "नाकके रोगों" में लिखेंगे, पर दो एक उपाय यहाँ भी लिखे देते हैं:—(१) घी, मोम और गूगलको मिलाकर तमाखूकी तरह धूआँ पीनेसे छींक आना बन्द हो जाता है। (२) सोंठ, कूट, पीपर, दाख

और बेल—इनको सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी कर लो। इस लुगदीके साथ तेल पका लो। इस तेलकी नस्य लेनेसे छींक आना बन्द हो जाता है। (३) सुगन्धित गुलरोग़न और वेदका तेल नाकमें सुड़कनेसे छींक आना रुक जाता है। (४) मीठे पानीको औटाकर, सुहाता-सुहाता गुन-गुना सिरपर डालनेसे छींकें आना बन्द हो जाता है।

ऊपरकी दवाओंके अलावः (१) गुनगुना तेल कानों और कानोंकी जड़पर मलने, (२) गरम हरीरा पीने, (३) तकिया गरम करके गुद्दीके नीचे रखने, (४) हाथ, पाँव, आँख, कान और तालू मलने, (५) बिछौनेपर लेटकर करवटें बदलने, (६) चिन्ता करने, (७) काममें लग जाने, और (८) सेव सूँघनेसे भी छींकोंका आना बन्द हो जाता है।

(१३) जुकामका बहना या निकलना ही अच्छा है। उसे गरम दवाएँ देकर बन्द करना मूर्खतासे ख़ाली नहीं। बन्द कर देनेसे अनेक भयंकर रोग हो जाते हैं। अगर रोगी कमज़ोर हो, उसके शरीरमें कफ और सर्दी ज़ियादा हो, तो पहले ही जुकामको पकानेवाली दवाएँ देदो और पकनेपर शिरोविरेचन नस्य देकर सिरकी रुतूबत निकाल दो।

(१४) अगर जुकाममें कफके साथ पित्तका अंग ज़ियादा मिल रहा हो, सिर और नाकमें गरमी ज़ियादा जान पड़ती हो, तो पित्तनाशक और कफको पतला करनेवाली मीठी दवाओंका काढ़ा दो अथवा मधुर औषधियोंके योगसे पकाया हुआ दूध दो। पित्तनाशक औषधियोंके द्वारा घी पका कर उसकी नस्य दो।

(१५) जुकामकी पहली अवस्थामें, पसीने लानेवाली दवाएँ देकर शरीरके स्रोतोंको साफ कर देना—जुकामका बढ़िया इलाज है। हकीमी दवाओंमें "गुलबनफ़शा" पसीना लाने और जुकाम नाश करनेके लिए मशहूर है। आयुर्वेदीय दवाओंमें "तुलसी" इस कामके लिए गुलबनफ़शासे कम नहीं है। तुलसीके पत्तोंकी चायमें नमक डालकर पीनेसे जुकाम, सर्दी, और सर्दीसे हुआ हृदयका दर्द आराम हो जाता है। तुलसीके पत्तोंकी चायमें ज़रासी मिश्री मिला कर मीठी चाय पीनेसे कफ-पित्तका जुकाम आराम हो जाता है।

(१६) जुकामके कारणसे अगर शरीरमें पानीका अंश ज़ियादा हो गया हो, तो उसे रूखे सूखे पदार्थोंसे सोखना चाहिए। भुने चनें खाने और तत्कालके भुने चने सूँघनेसे बहुत जल्दी लाभ होता है। अजवायनका काढ़ा पीने या पानमें अजवायन खानेसे भी सर्दी, जुकाम और कफका नाश होता है। यद्यपि अजवायन अफीमकी जैसी हानि-कर नहीं होती, तो भी पित्त-प्रकृति या गरम मिज़ाज वालोंको हानि करती है।

(१७) जुकाममें बाहरी हवा या सर्दी लगनेसे छाती और पस-लियोंमें दर्द, खाँसी, और बुखार आदि अनेक रोग हो जाते हैं; अतः सरदीसे बचना चाहिए। अगर छाती वग़ैरःमें दर्द हो जाय, तो नारा-यण तेल या नमक मिला सरसोंका तेल गुनागुना करके दर्द-स्थानपर लगाना चाहिए। छातीपर फलालेन बाँधनी चाहिये।

(१८) बहुधा जुकामसे खाँसी हो जाती है। अगर ऐसा हो तो खानेकी दवाके सिवा, छातीपर आकके पत्ते कड़वे तेलसे चुपड़ कर और गरम करके बाँध देने चाहियें। मतलब यह है, छातीपर ऊपरी उपाय करनेसे रोगीको जल्दी सेहत होती है। पसलीमें दर्द हो जाय, तो "पंचकोल" का काढ़ा शहद डाल कर पिलाना चाहिये और "नारायण" तेल पसलियोंपर मल कर, पुरानी रूईसे सेक कर देना चाहिये। अगर "नारायण तेल" समयपर न मिले, तो सरसोंका गरम-गरम तेल मल देना चाहिये।

(१९) अगर जुकाममें बुखार हो जाय, तो बुखारका मामूली इलाज करना चाहिये। विशेष प्रकारके इलाजसे कोई लाभ न होगा, क्योंकि बिना जुकाम गये, ज्वर हरगिज़ न जायगा।

(२०) अगर प्रतिश्यायमें कीड़े पड़ गये हों, तो वैद्यको कृमि-नाशक औषधि और नस्यसे काम लेना चाहिये।

(२१) बहुत क्या—वैद्यको पसीने दिला कर, माथेमें कफ-नाशक तेल लगवा कर, नस्य देकर, ज़रा-ज़रा गरम भोजन कराकर, वमन कराकर और घी पिला कर एवं कटु और खट्टे पदार्थ देकर प्रतिश्यायका उपचार करना चाहिये। पर रोगीका बलाबल आदि देख कर, जहाँ जो उचित हो वहाँ वही करना चाहिये। जो उचित न जँचे उसे न करना चाहिये।

प्रतिश्याय नाशक नुसख़े।

(१) बायबिडङ्ग, सेंधानोन, हींग, गूगल, मैनशिल और बच को—समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। इस चूर्णके सूँघने से प्रतिश्याय—जुकाम नाश हो जाता है।

(२) सत्तूमें घी और तेल मिलाकर, उसे आगपर डाल-डाल कर रोगीको धुआँ देनेसे प्रतिश्याय, खाँसी और हिचकी ये सब आराम हो जाते हैं।

(३) काले जीरेका चूर्ण सूँघनेसे प्रतिश्याय रोग चला जाता है। परीक्षित है।

(४) दालचीनी, तेजपात, इलायची और नागकेशर—इनको समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। इस चूर्णके सूँघनेसे प्रतिश्याय जाता रहता है। परीक्षित है।

(५) दालचीनी, तेजपात, इलायची और नागकेशर आदि खुशबूदार चीजोंका धूआँ पीनेसे प्रतिश्याय जाता रहता है।

(६) भाँगके पत्तोंको पुटपाक-विधिसे पकाकर, उनको तेल और सेंधेनोनके साथ खानेसे या उनके खानेकी आदत डालनेसे सब तरहके जुकाम आराम हो जाते हैं।

नोट—भाँगके गीले या सूखे पत्ते लेकर, सिलपर महीन पीसकर, गोला बना लो। गोलेपर बड़के या जामुनके पत्ते लपेटकर डोरा बाँध दो। फिर ऊपरसे एक-एक अंगुल ऊँची मिट्टी चढ़ा दो और धूपमें सुखा लो। सूखनेपर उस गोलेको जंगली कण्डोंकी आगमें पकाओ। जब गोला लाल सुर्ख़ हो जाय, निकाल लो। फिर उस गोलेके मिट्टी और पत्ते अलग करके, भाँगकी लुगदी बाहर कर लो और एक मोटे कपड़ेमें रखकर रस निचोड़ लो। फिर उसमें नमक और तेल मिलाकर पी लो।

पुटपक्वंजयापत्रं तैलसैन्धवसंयुतम्।
प्रतिश्यायेषु सर्वेषु शीलितं परमौषधम्॥

इसका अर्थ वही है जो उपर लिखा है। "जया" शब्दके लिए "भावप्रकाश" में 'जया-विजया भंगेति यावत। शीलितं भुक्तम्।' लिखा है। इससे तो जयाका अर्थ विजया या भाँग है। पर चक्रदत्तमें भी यही श्लोक है। उसके अनुवादकोंने "जया" का अर्थ "अरणी" लिखा है। और किसी-किसीने जयापत्रका अर्थ जयन्ती-पत्र लिखा है। "निघण्टुरत्नाकर" में लिखा है—भङ्गा गंजा मातुलानी मादिनी विजया जया; अर्थात् भंगा गंजा मातुलानी मादिनी विजया और जया भांगके संस्कृत नाम हैं। जया और जयन्तीका अर्थ निघण्टु में "अरणी" भी लिखा है। "वृन्द-वैद्यक" में लिखा है:—

पुटकंच जयापत्रं सिन्धुतैल समन्वितम्।
प्रतिश्यायेषु सर्वेषु शीलितं परमौषधम्॥

इसका अर्थ यह है, कि पुटक यानी कमल और जयापत्र यानी अरणीके पत्तों में सैंधा नोन और तेल मिलाकर खानेसे सब तरहके जुकाम जाते रहते हैं। "भावप्रकाश" के लेखकने 'जया' शब्दकी टीकामें 'भंग या विजया' दोनों ही शब्द लिख दिये हैं, अतः वहाँ वही ठीक है। वृन्दमें पुटपक्वं न लिखकर "पुटकंच" लिखा है, अतः यहाँ कमल और अरणी ही ठीक जान पड़ते हैं। एक बंगाली ग्रन्थकारने भी अपने ग्रन्थमें जयन्तीके पत्तोंके पुटपाककी बात लिखी है।

(७) बचके पिसे-छने चूर्ण और सत्तूका धूआँ पिलाने और बच का चूर्ण सुँघानेसे प्रतिश्याय नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—पुटपाककी चार तोले दवामें नमक, तेल, शहद, गुड़, ज़ीरा और खार आदि आठ-आठ माशे डालनेका नियम है, पर भांगका पुटपाक इतना खानेसे

महाकाण्ड हो जायगा। अतः रोगीके बलाबल और अभ्यासका खयाल करके मात्रा तजवीज करनी होगी।

(८) पीपर, सहँजनेके बीज, बायबिडङ्ग और काली मिर्च—समान-समान लेकर महीन पीस लो। इस चूर्णको पानीके साथ सिलपर पीस कर, कपड़ेमें रख कर रस निचोड़ लो। इसमेंसे चार, छै या आठ-आठ बूँद रस नाकके दोनों नथनोंमें टपका दो। परीक्षित है। कहा है:—

पिप्पल्यः शिग्रुबीजानि विडंगमरिचानि च।
अवपीडः प्रशस्तोयं प्रतिश्यायनिवारणः॥

नोट—जो दवा नाकमें डाली जाती है, उसे "नस्य" कहते हैं। स्नेहन नस्य बृंहण और रेचन नस्य कर्षण होती है। कफ-विकारमें सवेरे, पित्त-विकारमें दोप-हरको और वात-विकारमें सन्ध्या समय नस्य दी जाती है। अगर रोग प्रबल हो तो रातको भी नस्य दे सकते हैं। अवपीड और प्रधमन—ये रेचन नस्यके दो भेद हैं। तीक्ष्ण चीज़ोंको कूटकर और रस निकाल कर नाकके छेदोंमें टपकाना "अवपीड" नस्य है; और तीक्ष्ण दवाओंके सूखे चूर्णको नलीमें भर कर फूँक द्वारा नाकमें चढ़ाना "प्रधमन" नस्य है।

(९) दशमूलका गरम-गरम काढ़ा पिलानेसे प्रतिश्याय जाता रहता है। परीक्षित है।

(१०) पुरानी शराब पिलानेसे प्रतिश्याय जाता रहता है।

(११) गुड़ और अदरख मिलाकर खानेसे प्रतिश्याय चला जाता है। परीक्षित है।

(१२) कटु पदार्थोंसे पकाये हुए घी और तीक्ष्ण धूएँके पीने एवं कटु औषधियाँ सेवन करनेसे सन्निपातज प्रतिश्याय जाता रहता है।

(१३) पीपलकी छालका खार, छोटी पीपर और गुड़—इनको मिला कर, तोले-भरकी मात्रामें खानेसे पुराना कफ नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(१४) आमले और कुल्थीका यूष खानेसे अथवा इमलीका यूष खानेसे प्रतिश्याय जाता रहता है; पर याद रक्खो इमलीका यूष नये प्रतिश्यायमें ही हित है।

(१५) कमल और जयन्तीके पत्तोंमें सुहागा और तेल मिला कर खानेसे सब तरहके प्रतिश्याय नाश हो जाते हैं।

(१६) भोजनके बाद ही, अच्छी तरह उबाले हुए, गरमा-गरम उड़दोंमें नमक मिला कर खानेसे सब तरहके पुराने प्रतिश्याय नाश हो जाते हैं।

(१७) दही वगैरः खट्टे पदार्थोंसे युक्त चिकने भोजनमें, गुड़ और छोटी पीपर मिला कर खानेसे नया प्रतिश्याय नाश हो जाता और विशेष कर कफ पक जाता है।

(१८) प्रतिश्याय रोगमें पीपरके साथ गुड़ अथवा दहीके साथ गुड़ खाना चाहिये। क्षय रोगमें मदिरा, घी, पीपर और शहद इनको सेवन करना चाहिये। राजयक्ष्मामें 'शिलाजीत' सेवन करना चाहिये। कहा है:—

प्रतिश्याये तथा कृष्णा सगुडा सगुडं दधि।
मद्यं सर्पिः कणा क्षौद्रं राजरोगे शिलाजतु॥

(१९) कलौंजी कपड़ेमें बाँध कर सूँघनेसे प्रतिश्याय नाश हो जाता है।

(२०) गुड़ और कालीमिर्च मिलाकर दही पीनेसे महा कठिन पीनस रोग और प्रतिश्याय नाश हो जाते हैं। अगर घी मिलाकर गेहूँका आटा रोज-रोज खाया जाय, तो ये पीनसादि रोग ठहर ही न सकें।

(२१) अगर नाक भीतरसे सूख गई हो, तो मिश्री मिलाकर दूध पीना चाहिये। साथ ही, बचका चूर्ण पोटलीमें बाँध कर सूँघना भी चाहिये।

(२२) पानके रसकी बूँदें नाकमें टपकानेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है। अनारके फूलका रस सूँघनेसे अथवा दूबका रस सूँघनेसे या गुलाब जल सूँघनेसे नाकसे खून आना बन्द हो जाता है।

(२३) सोंठ, छोटी पीपर और कालीमिर्च—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर जितना चूर्ण हो, उससे चौगुना "गुड़" लेकर उसमें मिला लो और गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके खानेसे सिरका भारीपन, कफ और प्रतिश्याय ये सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२४) कालीमिर्च और देवदालीका फल लेकर महीन पीस लो और सूँघो। इस उपायसे भी सिरका भारीपन, कफ और जुकाम आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२५) गरम दूधमें १०।१५ कालीमिर्च और मिश्री पीसकर मिला दो और पीओ। इससे जुकाम अवश्य आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२६) कलौंजीकी नस्य सूँघने, बकरीका मांस खाने, कय करने, जुलाब लेने, घी पीने और चाय पीनेसे जुकाम आराम हो जाता है। ये सब उपाय परीक्षित हैं।

(२७) अदरखका स्वरस ६ माशे और शहद ६ माशे मिलाकर चाटनेसे जुकाम निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२८) बड़ी हरड़के बक्कलोंको पीस-छान कर चूर्ण बना लो। उसमेंसे ६ माशे चूर्ण बराबरके शहदमें मिलाकर चाटनेसे प्रतिश्याय या जुकाम अवश्य आराम हो जाता है। बड़ा उत्तम नुसखा है। परीक्षित है।

(२९) खट्टा और चिकने दहीका भोजन करनेसे नया जुकाम पक जाता है अथवा नया जुकाम आराम हो जाता और कफ पक जाता है। नये जुकाममें इमलीके पत्तोंके साथ पकाया हुआ यूष

देना हितकारी है। जब कफ पक जावे, तब धीरे-धीरे रेचन नस्य देकर सिरको साफ कर देना चाहिये।

(३०) "चिकित्सा-चन्द्रोदय" चौथे भागके पृष्ठ २८६ में लिखा हुआ "लक्ष्मी विलास रस" शहद और पानके रसके साथ खानेसे प्रतिश्याय और पीनस आदि रोग नाश हो जाते हैं। कफके रोगोंमें शहद और पानके रसका अनुपान उत्तम है। एक गोली खाकर, ऊपरसे ३ माशे शहद और १ माशे पानका रस पी लो या शहद और पानके रसमें गोलीको पीस कर मिला लो और चाट जाओ। जुकामकी यह सर्वश्रेष्ठ दवा है।

जुकाम और नजलेपर यूनानी नुसखे ।

(१) शर्बत जूफा और गुलाब पीनेसे सरदीसे हुआ जुकाम या नजला आराम हो जाता है।

नोट—जो मवाद मस्तकसे नाककी ओर निकलता है, उसे "जुकाम" कहते हैं; पर यदि वह मवाद कण्ठकी ओर गिरता है, तो उसे "नजला" कहते हैं। अगर उस मवादके निकलनेमें छीलन, पिलाई और नेत्रोंमें जलन मालूम हो, तो जुकामको गरमीसे हुआ समझो। अगर आँखोंमें जलन, छीलन और पीलापन न हो, तो सरदीसे समझो।

(२) पोस्त १ तोले और सोंठ एक तोले—इनका काढ़ा पीनेसे जुकाम और नजला आराम हो जाते हैं; बशर्त्ते कि सरदीसे हुए हों।

(३) गेहूँकी चोकर २ तोले और गुलबनफ़शा एक तोले—इन दोनोंका काढ़ा पीनेसे भी जुकाम जाता है।

(४) शर्बत बनफ़शा दो तोले पिलानेसे अथवा शर्बत ख़शख़ाश दो तोले और शर्बत नीलोफर एक तोले मिला कर पिलानेसे गरमी का जुकाम और नजला आराम हो जाते हैं।

(५) एक कपड़ेमें कपूर बाँध कर बारम्बार सूँघनेसे भी जुकाम नाश हो जाता है।

(६) "दियाकूजा" भी जुकाममें बहुत फायदा करता है। यह जुकाम और नजलेके भीतरी कारणोंको भी शान्त करता तथा पेटको साफ करके दिमाग़में ताक़त लाता है।

(७) अगर नाकके भीतर ज़ख्म हो और उससे बदबू आती हो, तो सौ बारके धोये मक्खनमें "कपूर" मिला कर दिनमें चार छः बार नस्य दो। इससे घाव आराम होगा और दुर्गन्ध जाती रहेगी। परीक्षित है।

(८) गुलरोगनमें "कपूर" मिलाकर नाकमें डालनेसे भी नाकके घाव मय बदबूके नाश होजाते हैं।

(९) अगर नाकसे कीड़े गिरते हों, तो एक माशे एलुआ पीस कर, उसमें तमाखूके पत्तोंका रस मिलाकर नाकमें छोड़ो। इससे कीड़े नाश होजायँगे।

नोट—अगर नाकमें घाव होते हैं तो बदबू आती है और अगर घाव पुराने हो जाते हैं, तो उनमें कीड़े भी पड़ जाते हैं। देवदालीके स्वरसकी आठ दस बूँद एक ही दिन नाकमें टपकानेसे सारा मवाद और कीड़े निकल जाते हैं।

(१०) झाऊकी पत्तियोंके बफारेसे जुकाम मिट जाता है।

(११) कूटका बफारा भी जुकामको नाश करता है।

(१२) कोरे काग़ज़का धूआँ नाकमें चढ़ानेसे भी जुकाम आराम हो जाता है।

(१३) शक्कर और चन्दरसका धूआँ गरम जुकामको फायदा करता है।

(१४) सात काली मिर्चें थोड़ेसे पानीके साथ निगल लेनेसे जुकाम आराम होजाता है।

(१५) मुहम्मद ज़करियाने "बरुल साअ़त" नामक पुस्तकमें लिखा है, जुकाम वालेके सिरपर गरम जलके तरड़े देनेसे भेजेमें गरमी पहुँचती है और रोगीको आनन्द आजाता है।

(१६) जुकाम वालेके सिरपर सेका हुआ कपड़ा रखनेसे भेजे में गरमी पहुँचकर आनन्द होजाता है।

(१७) पुरानी रूईकी बत्ती नाकमें रखनेसे नज़ला नाककी तरफ़ गिरने लगता है और नज़लेकी वजहसे हुआ दर्द-सिर आराम होजाता है।

(१८) समन्दर फलकी मींगी औरतके दूधमें पीसकर, नाक के छेदोंमें टपकानेसे नजला आराम होता और भेजा मवादसे साफ होजाता है।

(१९) भुनी हुई कलौंजी २ माशे, नौसादर २ माशे और सोंठ ३ माशे—इनको पीसकर एक कपड़ेमें रखलो और पोटलीसी बनाकर सूँघो। इससे जुकाम आराम हो जाता है।

नोट—कोई-कोई इसमें 'सिरका' भी मिलाते हैं।

(२०) इस्पन्दको थोड़ेसे सिरकेमें भिगोकर भूँज लो और एक कपड़ेमें ढीला-ढाला बाँधकर सूँघो। इससे जुकाम आराम होगा और सुद्दा खुलेगा।

(२१) कलौंजीको महीन पीसकर और गुल रोग़नमें मिला कर सूंघो। इससे भी जुकाम आराम होजाता है।

(२२) मुरमकी, एलुआ, बबूलका गौंद, निशास्ता, गेरू और छालियाँ तीन-तीन माशे, और अफीम १॥ माशे लेकर कूट पीस और छानलो। फिर दो काग़ज़के टुकड़ोंमें सूईसे छेद करलो और उनपर इस पिसी-छनी दवा को मल दो। फिर उन दोनों काग़ज़ोंको दोनों कनपटियों पर लगादो। इससे नज़लेमें बड़ा फायदा होता है।

(२३) अगर नजला बन्द होगया हो और सिरमें दर्द होता हो, तो हरड़के बीज ६ माशे, सफेद चिरिमिटीकी मींगी ४ माशे, काली मिर्च २ माशे और नौसादर १ माशे—इनको कूट-पीस और छानकर रख लो। इसकी थोड़ी सी नास लेनेसे ही पानी बहेगा। यह बहुत तेज़ नस्य है।

(२४) सिरसके बीजोंको महीन पीस-छान कर नास लो। इससे नजलेमें अवश्य लाभ होगा। अगर नाकसे बदबू आती हो, तो हरे तूम्बेका एक बूंद रस नाकमें टपकाओ। अगर हरा तूम्बा न मिले, तो सूखे तूम्बेको पानीमें भिगो कर, रातको ओसमें रख दो। सवेरे ही उसका रस निकाल कर एक बूँद नाकमें टपका दो।

नोट—अगर नाककी बदबू भेजेके दोषसे हो, तो ब्रह्माण्डको साफ़ करो और यदि नाकके घावके कारणसे हो तो घावपर मल्हम लगाओ।

(२५) गधेका पेशाब नाकमें टपकानेसे भी नाककी बदबू नाश हो जाती है।

(२६) लौंग पीस कर तालूपर लगानेसे जुकाम और सरदीका नजला नाश हो जाता है।

(२७) अजवाइन ३ माशे ६ रत्ती, काहूके बीज ३ माशे ६ रत्ती, और पोस्ता १ माशे ७ रत्ती, इन सबको पीसकर मूंग-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके मुखमें रखनेसे नजला नाश हो जाता है।

(२८) जदवार खताई १५ माशे, अजवाइन १८ माशे ६ रत्ती, शुद्ध अफीम २२ माशे ४ रत्ती, बबूलका गोंद ७ माशे ४ रत्ती, कतीरा ७ माशे ४ रत्ती, मुलहटी ७ माशे ४ रत्ती, काली मिर्च ७ माशे ४ रत्ती, इलायचीके बीज ७ माशे ४ रत्ती, नरकचूर ८ माशे, नागरमोथा ८ माशे, बालछड़ ८ माशे, तेजपात ८ माशे, कबाबा ८ माशे, खोलञ्जान ८ माशे, पीपर ८ माशे, अजवायन ८ माशे और इसपन्द ८ माशे, मुरमक्की १५ रत्ती और अकरकरा १५ रत्ती—सबको पीस छान कर

चने समान गोलियाँ बनालो। एक गोली नित्य जलके साथ खानेसे नजला और जुकाम नाश हो जाते हैं तथा भूख बढ़ती है।

(२९) ख़शख़ाशके पोस्त २५ नग पानीमें भिगो कर पानी छान लो और आध सेर चीनीकी चाशनी उसी पानीके साथ बना लो। जब चाशनी गाढ़ी होने लगे, उसमें १८ माशे ६ रत्ती सफेद ख़शख़ाशका दूध और इतना ही ईसबगोलका लुआब डाल दो। जब उतारने लगो, बबूलका गोंद १६ माशे, ख़तमीके बीज १६ माशे, निशास्ता १६ माशे और छिली हुई मुलहटी १६ माशे—इन सबको पीसछान कर मिला दो। इसका नाम "ख़मीरा ख़शख़ाश" है। यह जुकाम के लिए बहुत ही अच्छा है।

(३०) ख़शख़ाशके पोस्ते बीजों समेत ६ तोले ८ माशे लेकर पानीमें भिगो दो। सवेरे ही पानी मल कर छान लो। फिर इस पानीमें मिश्री १६ तोले ८ माशे मिलाकर चाशनी कर लो। जब गाढ़ी हो जाय, उतार लो। मात्रा ३ तोले ४ माशे की है। एक-एक मात्रा खाकर पानी पीनेसे नजलेका छातीपर गिरना बन्द हो जाता है।

(३१) कालीमिर्चका चूर्ण, हल्दीका चूर्ण और कालेनोन का चूर्ण—ये तीनों दवाएँ बराबर-बराबर ले कर पाव भर पानीमें पकाओ। जब आध पाव पानी रह जाय, मल-छान कर गरमागर्म पीलो। इस काढ़ेसे नया जुकाम, सरदी और जुकामसे हुआ सिर का दर्द अवश्य आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३२) भुने हुए चने जुकाम, सरदी, कफ और शरीरके क्लेदको नष्ट करते हैं। तत्कालके भुने हुए गर्मागर्म चने सूंघनेसे जुकाम और सिर दर्दमें विशेष लाभ होता है। इन्हीं गर्म चनोंको पोटली में बाँध कर छाती सेकनेसे कफ जमनेसे हुआ छातीका दर्द मिट जाता है। परीक्षित है।

(३३) कपूर और फिटकरी समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसके सूँघनेसे जुकामके कारणसे हुआ सिरका दर्द, सिरका भारीपन आदि रोग नाश हो जाते हैं। इस नस्यसे गर्दन के ऊपर की श्लेष्मधरा कलाओंमें पहले कुछ व्यग्रता होती है और फिर शान्ति आ जाती है। परीक्षित है।

(३४) गुलबनफ़शा ६ माशे, बताशे ५ माशे, अदरख ४ माशे और कालीमिर्च ४ रत्ती—इन सबको पाव-भर पानीमें पकाओ। जब आधा पानी रहे, मल छान और कुछ शीतल करके पीलो। इस नुसखेसे जुकाममें बड़ा लाभ होता है। परीक्षित है।

(३५) सौंफ ४ माशे, मुनक्का बीज निकाले हुए ७ दाने, अंजीर २ दाने, गुलबनफ़शा ४ माशे, बीजहीन उन्नाव ५ दाने और सनायकी पत्ती ६ माशे—इन सबको पाव-भर पानीमें पकाओ। जब छटाँक-भर जल रह जाय, उतार कर २ तोले मिश्री डाल दो और छान कर पीलो। इससे दस्त साफ होकर जुकाम नाश हो जाता है। जिनको जुकामके साथ दस्तक़ब्जकी शिकायत हो, वे इसी नुसखे को सेवन करें। भरोसा है, उनको खूब तारीफ करनी पड़ेगी।

नोट—अगर किसीका कोठा नर्म हो, तो सनायको कम कर देना चाहिये। अगर कड़ा हो, तो सनाय, मुनक्के, उन्नाव और अञ्जीर अनुमानसे बढ़ा देने चाहियें।

(३६) गुलबनफ़शा ६ माशे और गावजुबाँ ६ माशे—दोनोंको आध पाव पानीमें पकाओ। जब छटाँक-भर जल रह जाय, उसमें १ तोले मिश्री डाल कर मल-छान लो और गरमागर्म पी लो। इस तरह, दिनमें दो-तीन बार पीनेसे ४ दिनमें जुकाम बह कर निकल जाता है।

नोट—जुकामका बह जाना ही अच्छा है। उसे गरम दवाओंसे बन्द करना मूर्खता है। अगर रोगीके शरीरमें कफ और सर्दी अधिक हो और रोगी कमज़ोर हो, तो पहलेसे ही जुकामको पकाने वाली दवाएँ दो। मवाद पक जाने पर,

शिरोविरेचन—सिर साफ करनेवाली नस्य देकर मवादको निकाल दो। जब जुकामको बहाना हो, ऊपरका नुसखा दो। परीक्षित है।

(३७) गुलबनफ़शा ४ माशे, गावजुबाँ ४ माशे, छिली मुलेठी ४ माशे, लिसौड़े ४ माशे और बिना बीजके मुनक्के ७ दाने—इन सब को आध पाव पानीमें पकाओ। जब छटाँक-भर पानी रह जाय, १ तोले मिश्री डाल कर मल-छान लो और पी जाओ। इस काढ़ेसे सब तरहका जुकाम आराम हो जाता है। इस नुसख़ेमें भी नं० ३६ की तरह जुकामको बहानेकी ताक़त है। परीक्षित है।

(३८) २ तोले अड़ूसेको पाव भर पानीमें औटाओ; जब छटाँक भर पानी रह जाय, मल कर छान लो। शीतल होने पर ४ माशे मिश्री और २ माशे शहद मिलाकर पीनेसे साधारण नया जुकाम जल्दी ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३९) कालीमिर्चोंका काढ़ा पीनेसे कफकी अधिकता वाला नया जुकाम आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४०) कालीमिर्च, छोटी पीपर, पीपरामूल और काकड़ासिंगी सबको २ तोले लेकर, पाव भर पानीमें औटाओ; चौथाई पानी रहने पर मल-छान लो और १ तोले मिश्री मिलाकर पी लो। इस नुसखेसे भी कफकी अधिकता वाला जुकाम और उसके उपद्रव नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४१) त्रिकुटा और त्रिफला—दोनोंको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ से ६ माशे तक चूर्ण "शहद" में मिला कर चाटनेसे कफकी अधिकतावाला जुकाम नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४२) कालीमिर्च, मुनक्का, मिश्री और मुलेठी इन सबको एकत्र पीस कर, एक-एक माशेकी गोलियाँ बना लो। दिन-भरमें चार

गोली नित्य खानेसे कच्चा-पक्का सब तरहका जुकाम और खाँसी आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४३) तुलसीके थोड़ेसे पत्तोंको, चायकी तरह, गरम जल में डालकर पकालो और अन्दाज़का नमक डालकर पीलो। इस से पसीने आकर जुकाम, सर्दी और सर्दीसे हुई हृदय की वेदना—ये सब आराम होते हैं।

नोट—जुकामकी पहली अवस्थामें, तुलसीका या गुलबनफशादिका काढ़ा पिलाना सबसे अच्छा है; क्योंकि ये दोनों तरहके काढ़े पसीने लाकर शरीर के छेदोंको साफ कर देते हैं।

(४४) तुलसीके पत्तोंका काढ़ा बनाकर और उसमें ज़रासी "मिश्री" डालकर पीनेसे कफ-पित्त या सर्द-गर्मीका जुकाम और सिर दर्द नाश हो जाता है।

नोट—अगर जुकाम सर्दीसे ही हो, तो तुलसीके पत्तोंके काढ़ेमें "नमक" डालो। अगर सरदीके साथ गरमी भी हो; यानी सरदी-गरमीसे जुकाम हुआ हो, तो नमक न डालकर "मिश्री" मिला दो।

(४५) शुद्ध बच्छनाभ विष, कालीमिर्च और बायबिडंग—एक-एक माशे लो और पीस-छान लो। फिर इस चूर्णमें ४ रत्ती "रससिन्दूर" मिलादो और खरल करके रत्ती-रत्ती-भर की गोलियाँ बनालो। दिन-भरमें दो या तीन गोली खाने और ऊपरसे गरम जल पीनेसे सर्दी, कफ, खाँसी और ज्वरादि जुकामके सब उपद्रव निश्चय ही नाश हो जाते हैं।

नोट—ये गोलियाँ कफाधिक प्रतिश्याय, कफ, सर्दी और कफकी खाँसीमें ही देनी चाहियें; गरमीके जुकाममें नहीं। बच्छनाभ विष जिसे मीठा विष और अँगरेजीमें एकोनाइट कहते हैं, पसीना लानेवाली और कफ, सर्दी और दिलकी कमज़ोरीको नाश करनेवाली है। जुकाम, खाँसी, कफ और सरदीके रोगोंमें डाक्टर लोग बच्छनाभ विष या एकोनाइटका व्यवहार अधिक करते हैं।

(४६) जिनको अक्सर जुकाम होता रहता है, वे "अजवायन" का काढ़ा बनाकर पीते हैं अथवा "अजवायन" को पानमें रखकर खाते हैं। सर्दी, जुकाम और कफके नाश करनेको अजवायन उत्तम चीज है, पर गरम मिज़ाजवालों को अच्छी नहीं है। जिनका मिज़ाज सर्द हो और जिन्हें सर्दी या कफका जुकाम हो, उन्हें अजवायन सेवन करना उत्तम है।

(४७) अदरखको दूधमें पकाकर और मिश्री मिलाकर, गरमा-गर्म पीनेसे जुकाम, सर्दी और इनकी वजहसे हुआ सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(४८) कटेरीका काढ़ा बनाकर और मिश्री मिलाकर, गरमा-गर्म पीनेसे पुराना जुकाम अवश्य आराम होजाता है। नये जुकाम में इसे न देना चाहिये।

नोट—निर्गुण्डीका काढ़ा, मिश्री मिलाकर, गरमागरम पीनेसे भी पुराना जुकाम नाश हो जाता है।

(४९) अदरखके रसको जरा गरम करके और शहद मिलाकर चाटनेसे जुकाम नाश होजाता है। परीक्षित है।

(५०) अदरखको चायकी तरह, जलमें पकाकर और दूध-चीनी मिलाकर पीनेसे सर्दी, खाँसी और जुकाम आदि रोग दूर होते हैं।

नोट—अदरखसे बहुत रोग नाश होते हैं। हम चन्द रोगोंके नाश करनेकी तरकीबें नीचे लिखते हैं:—

(१) अदरखका टुकड़ा दाढ़के नीचे रखनेसे दाढ़ का रोग चला जाता है।

(२) अदरखका रस गरम करके कानमें डालनेसे कानका दर्द जाता है।

(३) अदरखके रसमें पुराना गुड़ मिलाकर खानेसे सारे बदनकी सूजन नाश होती है।

(४) अदरखके रस की २।३ बूँदें नेत्रोंमें डालनेसे वात-कफ-सम्बन्धी नेत्र-पीड़ा नाश होती है।

(५) अदरखके रसमें अजवायनको भिगो और मसलकर सुखा लेने और समयपर खानेसे तत्काल पेटका दर्द आराम होता है।

(६) अदरखका रस और तिलीका तेल एक साथ पकाकर, उस तेलकी मालिश करनेसे सन्धिवात पीड़ा या गठिया मिटती है ।

(७) अदरखको जंभीरी नीबूके रसमें डालकर और नमक मिलाकर खानेसे अजीर्ण और अरुचि नाश होती है ।

(८) अदरखको घीमें भूनकर और ज़रा सा नमक मिलाकर खानेसे अपान-वायुका रुकना और पेटका फूलना नाश होता है ।

(९) अदरखके रसमें शहद मिलाकर चाटनेसे कफज खाँसी, श्वास और सर्दीका जुकाम ये नाश हो जाते हैं ।

(१०) भोजनके पहले अदरखमें सेंधानोन लगाकर खानेसे भूख बढ़ती और रुचि होती है तथा जीभ और कण्ठ शुद्ध होते हैं ।

जुकामके उपद्रवोंके उपाय ।

प्रतिश्याय या जुकामके रोगमें बाहरी सर्दी लगने अथवा और मिथ्याचरण करनेसे छातीका दर्द, पसलीका दर्द, खाँसी और ज्वर आदि अनेक उपद्रव खड़े हो जाते हैं ।

पसलीके दर्दके उपाय ।

पसली और छातीमें दर्द हो तो नीचे लिखे उपाय करोः—

(१) नारायण तेल धीरे-धीरे मलो ।

(२) सरसोंके तेलको गरम करके उसमें थोड़ासा नमक मिला दो और धीरे-धीरे मलो ।

(३) अलसीके तेलको गरम करके और नमक मिलाकर मलो ।

(४) तारपीनका तेल मलो ।

(५) पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इन पाँचोंको "पंचकोल" कहते हैं । इनका काढ़ा पीनेसे पसलीका दर्द जाता रहता है ।

खाँसीके उपाय।

जुकामसे जो खाँसी होती है, उसमें पहले जुकाम होता है और पीछे खाँसी होती है। उसके ये उपाय हैंः—

(१) आकके पत्तोंपर सरसोंका तेल चुपड़ कर, उनको गरम करके रोगीकी छातीपर बाँधो।

(२) आककी जड़की छालको जलाकर, उसमें ज़रासा नोन मिला दो। इसमेंसे चार-चार रत्ती राख खानेसे जुकामकी खाँसी जाती रहती है।

(३) अमरूदको आगमें भूनकर और थोड़ासा नमक मिला कर खानेसे जुकाम की खाँसी जाती रहती है।

(४) पीपर और बड़ी इलायचीके बीज पीस कर छान लो। इसमेंसे एक-एक माशे चूर्ण "शहद" में मिलाकर दिनमें ३।४ बार चाटनेसे जुकामकी खाँसी जाती रहती है।

(५) त्रिफलेको लाकर पीस-छान लो। इसमेंसे तीन-तीन माशे चूर्ण "शहद" में मिला कर सवेरे-शाम चाटनेसे जुकामकी खाँसी चली जाती है।

(६) मुनक्का बीज-रहित, मिश्री और शहद बराबर-बराबर लेकर पीस लो और चाटो। इससे पुराना जुकाम और खाँसी जाते रहते हैं।

गलेका दर्द और गला बैठनेका उपाय।

अगर जुकामसे गला बैठ गया हो या दर्द हो तो यह उपाय करोः—

(१) पानोंके रसके साथ सरसोंका तेल पकाकर गलेपर मलो और ज़रा-ज़रासा नमक मिलाकर गरम पानी पीओ।

सिर दर्दके उपाय।

सरदी, खाँसी, जुकाम और क्षय प्रभृति रोगोंमें सिरका दर्द अधिकतासे होता है। कभी-कभी नये जुकाममें कफके जियादा गाढ़ा

होने या सूख जानेसे सिरकी पीड़ा असह्य हो उठती है और फिर उससे सिरमें तरह-तरह के रोग हो जाते हैं। खाँसीमें, विशेष कर पुरानी खाँसीमें, सिरका दर्द बहुधा हो जाता है । इसी तरह क्षयके आरंभमें नियमित रूपसे सिर दर्द होता है और क्षयके पूर्णरूप धारण कर लेनेपर सिर दर्द भी बढ़ जाता है, इसमें प्रायः सिर घूमता और सिरमें सुई चुभानेकीसी पीड़ा होती है और पसीने बहुत आते हैं । यहाँ हम खाँसीमें सिर दर्द आराम करने वाली दवा लिखते हैं:—

(१) अगर सिरमें भारीपन और सरदी बहुत हो, तो भुने हुए गरम मूंग या भुने हुए गरम चने सूंघो और एक कपड़ेमें गरम भुने हुए चने बाँध कर सिर और ललाटपर सेक करो । इस उपायसे सर्दीका दर्द सिर, भारीपन और सरदीका जुकाम ये सब नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

(२) चूना और नौसादर एकत्र मिला कर एक मिनट तक सूंघनेसे कफज या सिरका दर्द आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

(३) सौंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर और सरसों समान-समान लेकर और एकत्र पीस कर नाकमें चढ़ानेसे छींक द्वारा कफ निकल जाता और कफका दर्द सिर नाश हो जाता है ।

(४) सोंठ या कायफल अथवा कूटको पानीके साथ पीस और गरम करके लेप करनेसे कफ और सरदीका दर्द सिर जाता रहता है ।

(५) जुकाम और सरदी वगैरःसे जो दर्द सिर होता है, वह अड़ूसा, सौंफ, मुलेठी और गुलबनफ़शा आदि पसीने लाने वाली दवाओंके काढ़ेसे आराम हो जाता है । तुलसीके पत्तोंकी चाय बना कर पीनेसे भी ऐसा दर्द सिर मिट जाता है ।

(६) पुराने जुकामसे हुए सिरके दर्दमें त्रिफलेके काढ़ेमें शहद मिला कर पीनेसे लाभ होता है ।

(७) खाँसीके बहुत चलनेसे हुए सिरके दर्दमें अड़ूसेके काढ़ेमें शहद डाल कर पीना चाहिये।

(८) देवदाली जुकाम या नजलेके पुरानेसे पुराने सिर दर्दकी अनमोल दवा है। जुकाम या नजला बिगड़नेसे कैसा ही भयंकर और पुराना सिर दर्द क्यों न हो, सिरके किसी भागमें दर्द हो, शूलसे चलते हों, नाकसे बदबूदार मवाद और कीड़े गिरते हों—आप "देवदालीके स्वरस" की आठ दस बूंदें रोगीकी नाकके दोनों नथुनोंमें या जिस तरफ दर्द हो उस तरफके नथनेमें टपका दीजिये और रोगीको एक मिनट तक सीधा ही लेटा रहने दीजिये। एक दो मिनटमें छींक आवेगी और दवा भी निकल पड़ेगी। फिर इस एक बारके दवा टकपानेसे तीन दिन तक नाक और मुँहसे ख़राब मवाद निकलेगा। चौथे दिन मवाद गिरना बन्द हो जायगा और रोगी भी आराम हो जायगा। अगर कुछ कसर रह जाय, तो फिर एक बार उसी तरह चन्द बूँदें टपका दीजिये। क्या मजाल जो दर्द रह जाय। दवा टपकाते वक्त रोगीको इस तरह लिटाइये कि, उसकी गर्दन खाटकी पाटीसे कुछ नीचे लटकती रहे। दवाके नाकमें जाते ही रोगीको साँस द्वारा उसे ऊपर चढ़ाना चाहिये, ताकि दवा गलेमें न जाय। अगर गलेमें जाय तो हानि नहीं, पर कुछ खराश या अन्य तकलीफें हों, तो गरम पानीके कुल्ले कराइये और अमलताशका गूदा चूसनेको कहिये।

स्वरसकी विधि—देवदालीके पाँच फल लेकर, उसके ऊपर के काँटे उतार फेंको। फिर अन्दरसे बीज निकालकर ६ माशे पानी में—मिट्टीके या काँचके प्यालेमें—आध घण्टे तक भिगो रखो और फिर मसलो। मसलनेसे जालासा उतरे उसे फेंक दो और नीचे गदला और सफेद पानी रह जाय, उसे शीशीमें भरकर और मजबूत कागलगाकर रखदो। यही देवदालीका "स्वरस" है।

दस्तकब्जके उपाय।

जुकाममें बहुधा दस्तकब्ज हो जाता है। अगर दस्त साफ न होता हो, तो नीचेके उपायोंसे काम लोः—

(१) मुलेठी २ तोले, सनाय १ तोले, सौंफ ६ माशे, शुद्ध गन्धक ६ माशे और मिश्री ६ तोले—इनको पीस-छानकर रखलो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। अनुपान जल है। इस चूर्णके खानेसे दस्त साफ़ हो जाता है। बवासीरमें भी लाभ होता है।

(२) अमलताशका गूदा, इमलीका गूदा, दाख, आलूबुखारा, सूखे झड़बेरीके बेर, सनाय और सौंफ दो-दो तोले लेकर, डेढ़ सेर पानीके साथ, मिट्टीके बासनमें पकाओ, जब आध सेर पानी रह जाय, मल कर छान लो। फिर इस काढ़ेमें पाव भर मिश्री मिलाकर पकाओ। जब चाटने लायक चाशनी होजाय, उतार कर रख लो। इसकी मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक है। रातको चाटनेसे सवेरे दस्त साफ हो जाता है। यह नुसख़ा बहुत ही उत्तम है।

(३) अमलताशका गूदा पानीमें घोलकर छान लो। फिर तिगुनी चीनी डालकर चाशनी बना लो। इसके चाटनेसे दस्त साफ़ होता और जुकाम तथा सूखी खाँसीमें लाभ होता है। इस चाशनीको पानी में घोलकर पीनेसे अवश्य ही दस्त साफ़ होता है।

तीसरा अध्याय

श्वास रोगका वर्णन ।

श्वास रोग किसे कहते हैं ?

जिस तरह भागनेसे—लगातार और जल्दी-जल्दी साँस आता है; अगर उसी तरह आरामसे बैठे रहनेपर भी साँस आवे, तो उसे "दमा" या "श्वास रोग" कहते हैं।

श्वास रोग के कारण ।

नीचे लिखे हुए कारणोंसे श्वास रोग होता है:—

(१) दाह करने वाले, देरसे पचने वाले, दस्तको रोकने वाले, रूखे और रसवाहिनी शिराओंको रोककर भारीपन करने वाले पदार्थोंके खानेसे।

(२) शीतल जल पीने और शीतल अन्न खानेसे,

(३) धूल और धूएँके मुँह और नाकमें जानेसे,

(४) अत्यन्त हवा लगनेसे,

(५) अत्यन्त मिहनतके काम करनेसे,

(६) भारी बोझ उठानेसे,

(७) बहुत राह चलनेसे,

(८) मल-मूत्र आदिके वेग रोकनेसे, और

(९) उपवास आदि करनेसे हिचकी, श्वास और खाँसी रोग पैदा होते हैं।

नोट—हिचकी रोग और श्वास रोगके एक ही कारण हैं; अर्थात् जिन कारणों से हिचकी रोग होता है, उन्हीं बहुतसे कारणोंसे श्वास रोग होता है। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

यै रेवकारणैर्हि का देहिनां सम्प्रवर्त्तते।
तैरेवबहुभिः श्वासो व्याधिर्घोरः प्रजायते॥

महर्षि वाग्भट्टने श्वास रोगके और भी कारण लिखे हैं। उन्हें हम अपने पाठकों के ज्ञानवर्द्धनार्थ आगे लिखते हैं:—

कासवृद्धया भवेच्छ्वासः पूर्वैर्वा दोषकोपनैः।
आमातिसार वमथु विष पाण्डु ज्वरैरपि॥
रजो धूमानिलैर्मर्मघातादति हिमाम्बुना।
क्षुद्रकस्तमकश्छिन्नो महानूर्द्धश्च पञ्चमः॥

खाँसीके बढ़नेसे, पहले कहे हुए कड़वे और गरम प्रभृति दोषोंको कुपित करने वाले पदार्थोंके खानेसे, आमातिसारसे, छर्दि रोग या क्षय होनेके रोगसे, ज़हर खाने पीनेसे, पाण्डु रोग या पीलियेसे, बुखारसे, धूल और धूआँके नाक और मुँहमें जानेसे, हवा लगनेसे, मर्मस्थानमें चोट लगनेसे और अत्यन्त शीतल जल पीनेसे श्वास रोग होता है। यह क्षुद्र, तमक, छिन्न, महान और उर्द्ध—इन नामोंसे पाँच तरहका होता है।

महर्षि वाग्भट्टने श्वास रोगके और कारण तो वे के वे ही लिखे हैं, सिर्फ खाँसीका बढ़ना, आमातिसार, छर्दि, विष रोग, पाण्डु रोग और ज्वर तथा मर्मस्थलों* में चोट लगना ये अधिक लिखे हैं।

श्वास रोगके भेद।

एक ही श्वास रोग पाँच प्रकारका होता है:—

(१) महाश्वास, (२) उर्ध्व श्वास,
(३) छिन्न श्वास, (४) तमक श्वास,
(५) क्षुद्र श्वास।

* मनुष्य-देहमें आत्माके आधारभूत १०७ मर्म हैं। मर्मस्थलोंमें जीवका वास समझा जाता है। उनमें चोट लगनेसे मनुष्य मर जाता है। गुदा, हृदय, पेड़ू और नाभि प्रभृति मर्मोंमें चोट लगनेसे मनुष्यके प्राण नाश हो जाते हैं। कुछ मर्म तत्काल प्राण नाश करते हैं और कुछ कालान्तरमें। देखो "चिकित्सा-चन्द्रोदय" पहले भागके पृष्ठ १२१—१२४।

सम्प्राप्ति ।

"सुश्रुत" में लिखा है:—प्राणवायु अपनी प्रकृतिके विरुद्ध होकर, कफसे मिल कर और उर्द्ध्वगामी होकर श्वास रोग पैदा करता है । "भावप्रकाश" में लिखा है:—

यदास्रोतांसि संरुध्य मारुतः कफपूर्व्वकः ।
विष्वग्व्रजाति संरुद्धस्तदा श्वासं करोति सः ॥

जब वायु कफसे मिल जाता है, तब वह उस कफसे प्राण, अन्न और जलके होनेवाले मार्गोंको रोक देता है । उस अवस्थामें वायु आप भी, कफकी वजहसे, चारों ओर घूम नहीं सकता । जब वह अपनी इच्छानुसार चारों तरफ नहीं विचर सकता, तब श्वास रोग पैदा करता है ।

खुलासा यह है कि, जब वात और कफके कुपित होनेसे श्वास-वाही-यंत्र कफसे ढक जाते हैं, तब हवाके घूमनेको जगह नहीं मिलती । कफके करण वायु आजा नहीं सकता, तब श्वास रोग होता है। असलमें हवाके आने-जानेकी राहोंमें कफके आड़े आ जानेसे श्वास रोग होता है ।

अथवा यों समझिये, कि जब श्वास बहानेवाली नालियोंमें कफ भर जाता है, जब वे वायुसे सूख कर या खुश्क होकर खरदरी हो जाती हैं या सुकड़ जाती हैं अथवा जियादा चौड़ी हो जाती या फैल जाती हैं, तभी श्वास रोग होता है ।

नोट—हिचकी और श्वासमें क्या भेद है? हिचकी रोग प्राणवायु और उदान वायु दोनोंके कुपित होनेसे होता है; पर श्वास रोग केवल "प्राणवायु" की गड़बड़ी से होता है । हिचकी रोग बिना आमाशयकी ख़राबीके नहीं होता;पर श्वास रोगमें, आमाशयमें कोई ख़राबी नहीं होती । हिचकी रोगमें आमाशयमें विकार होते हैं; पर श्वास रोगमें हृदय यानी छाती,फैंफड़े और श्वास नलीमें विकार होते हैं । आमाशय और कंठमें उदान वायु रहता है । वही उदान वायु कुपित होकर प्राण वायुसे मिलता और हिचकी रोग करता है । पर श्वास रोगमें हृदयमें विकार होते हैं—

आमाशयमें नहीं—और प्राणवायुका स्थान हृदय है। अतः श्वास रोगमें 'प्राणवायु' ही प्रधान है। बस यही हिचकी और श्वासमें फ़र्क़ है। खुलासा यह है कि हिचकी का सम्बन्ध आमाशयसे है; पर श्वास रोगका छाती, फैंफड़े और श्वास नलीसे। हिचकी पैदा करनेवाले प्राणवायु और उदानवायु दो हैं; पर श्वास रोग पैदा करने वाला अकेला "प्राणवायु" है।

पूर्वरूप।

श्वास रोगके पूर्वरूप निम्नलिखित हैं:—

(१) हृदयमें पीड़ा,

(२) शूल,

(३) अफारा,

(४) मुखका स्वाद ख़राब होना, और

(५) कनपटियोंमें तोड़नेकी सी पीड़ा होना।

खुलासा यों समझिये कि, जिसे श्वास होने वाला होता है, उसके शरीरमें, श्वास रोग होनेसे पहले ये खराबियाँ नज़र आती हैं; यानी हृदय और छातीमें दर्द होता है, शूल चलते हैं, पेट फूल जाता है, मुँहका ज़ायका खराब हो जाता है अथवा किसी चीज़का स्वाद नहीं आता और कनपटियोंमें ऐसा दर्द होता है मानों उन्हें कोई तोड़ता हो। जब ये लक्षण नज़र आवें, तभी समझ लेना चाहिये कि अब "श्वास साहब" तशरीफ लाने वाले हैं।

महाश्वासके लक्षण।

जिसे महाश्वास होता है, उसकी प्राणवायु आवाज़ करती हुई ऊपरको चढ़ती है। प्राणवायुके ऊपरकी ओर चढ़नेसे रोगी को घोर दुःख होता है।

जिस तरह भागनेसे रोका हुआ साँड साँस लेता है अथवा कुछ दिनोंसे मैथुन कर्म न करने वाला साँड साँस लेता है; उसी तरह "महाश्वास" रोगी साँस लेता है।

महाश्वास वालेके ज्ञान-विज्ञान सब नष्ट हो जाते हैं। वह अपने पढ़े हुए शास्त्रोंको भूल जाता है।

महाश्वास वालेकी आँखोंमें भ्रम हो जाता है। उसके नेत्र चञ्चल या फटेसे हो जाते हैं, मल-मूत्र रुक जाते हैं, न पाखाना होता है और न पेशाब। उसकी जीभ तुतला जाती है—बोला नहीं जाता। अगर बोलता है, तो बहुत ही मन्दी आवाज़ निकलती है। श्वासकी आवाज़ दूरसे ही सुनाई पड़ती है।

जिस रोगीमें ये सब लक्षण मिलते हैं, उसे महाश्वासका रोगी कहते हैं। ऐसे लक्षणों वाला रोगी मर जाता है। असल बात यह है कि, महाश्वास रोग मनुष्यके मारनेको ही पैदा होता है।

"सुश्रुत" में लिखा है:—जब मनुष्य बेहोश हो जाय, पसलियोंमें दर्द हो, कंठ या गला सूखे, श्वासमें खर्राटेकी आवाज़ जियादा आवे, नेत्रोंमें सूजन या सुर्खी हो और साँस लेते समय मनुष्य ढीला हो जावे अथवा फैल या सुकड़ जावे—तब समझो कि "महाश्वास" है।

वाग्भट्ट महाराज महाश्वास रोगमें कान, कनपटी और सिरमें दर्द होना जियादा लिखते हैं।

"वैद्यविनोद" में लिखा है:—

विभ्रान्तनेत्रो विकृताननः स्यात्-
श्वासात्प्रवृद्धान्मरणम्प्रयाति ।

महाश्वास रोगीके नेत्र विभ्रान्त और मुख विकृत हो जानेसे वह मर जाता है।

उर्ध्वश्वासके लक्षण।

जिसे उर्ध्व श्वास होता है, उसका श्वास बहुत ऊँचा चढ़ता है, कभी नीचे नहीं आता।

उर्ध्वश्वास वालेके शरीरके सारे छेद और मुँह कफसे घिर जाते हैं। वायुको स्वतंत्र रूपसे घूमनेको राह नहीं मिलती, इसलिए वह कुपित होकर घोर पीड़ा करता है।

उर्ध्वश्वास-रोगीकी नज़र सदा ऊपरकी तरफ रहती है । वह चारों ओर बुरी तरहसे देखता है । यह रोगी बेहोश हो जाता है, वेदनासे विकल होता है, मुँह सूखता है और बेचैनीसे छटपटाता है ।

उर्ध्वश्वासमें नीचेको साँस नहीं लिया जाता । जिस उर्ध्वश्वास वालेको मोह और ग्लानि होती है, वह मर जाता है । सब तरहके श्वासोंमें यह श्वास बहुत ऊँचा चढ़ता है । यही इसमें विशेषता है ।

"सुश्रुत"में लिखा है, उर्ध्वश्वास वाला जब श्वास लेता है, उसके मर्मस्थान खिंचने लगते हैं; वह बारम्बार बेहोश और मूर्च्छित होकर श्वास लेता है; ऊपरकी तरफ देखता है और श्वासकी आवाज़ मन्दी पड़ जाती है ।

"वाग्भट्ट"में लिखा है, जो लम्बे-लम्बे साँस ऊपरको लेता है, नीचे की ओर साँस नहीं लेता, ऊपरकी तरफ देखता है और इस तरह चिल्लाता और विलाप करता है, गोया मर्मस्थानोंमें चोट लगती हो, वह "उर्ध्वश्वास रोगी" है । "वैद्यविनोद" में लिखा है:—

श्वासोयदोर्ध्वं कुपितस्तदाधः श्वासं निरुंध्य प्रतिहन्ति जीवम् ।

जब उर्ध्वश्वास कुपित होता है, तब वह नीचेके साँसको रोक कर जीवका नाश कर देता है ।

खुलासा यह है कि, उर्ध्वश्वास-रोगी ऊपरकी ओर लम्बे साँस लेता है, नीचे की ओर साँस नहीं लेता; क्योंकि ले नहीं सकता । वजह यह है, कि उसके पेटमें वायु नहीं समाता । इस श्वासमें वायुका कोप ज़ियादा रहता है, अतः रोगीके नेत्र स्थिर नहीं रहते—चञ्चल रहते हैं । रोगी इधर-उधर देखता है । शरीरमें दर्द और बेचैनीकी हद नहीं रहती । जब श्वास नीचेकी तरफ रुक जाता है, तब रोगी बेहोश हो जाता है । अगर बारम्बार श्वास रुकता और बेहोशी होती है, तो रोगी इसी श्वाससे मर जाता है ।

छिन्न श्वासके लक्षण ।

जिसे छिन्न श्वास होता है, वह अपनी तमाम ताकतसे रह-रह कर श्वास लेता है ।

छिन्न श्वास वालेके हृदय—छाती और सिरमें ऐसा दर्द होता है, मानों कोई छेदे डालता है। वह समय पर—जब श्वास लेना चाहिये तब—साँस ले नहीं सकता। पेट फूलने, पसीने आने, बेहोशी होने और मूत्राशय—पेशाबकी थैलीमें जलन होनेसे निहायत दुःखी रहता है। नेत्र जलसे भरे रहते हैं। शरीर अत्यन्त क्षीण हो जाता है। रोगीके चित्तमें उद्वेग होता है। वह वृथा बकवाद करता और निरन्तर हाँफता रहता है। उसका मुँह सूखता है। शरीरका रंग बिगड़ जाता है अथवा बदल जाता है और 'एक' आँख लाल हो जाती है। ऐसा रोगी तत्काल मर जाता है। सच पूछो तो यह श्वास मनुष्यके मारनेको ही आता है।

"सुश्रुत"में लिखा है, जिस रोगीके पेड़ूमें जलन होनेसे पेट फूल जाता है और वेदना भी होती है, सारा प्राण वायु रुक-रुककर चलता है यानी टूट-टूट कर साँस आता है, उसे "छिन्न-श्वास रोगी" कहते हैं। "वैद्य विनोद"में लिखा है:—

छिन्न श्वासेन शुष्कास्यो विच्छिन्नो विलपन्नरः।
विचेता विप्लुताक्षो यः स शीघ्रं विजहात्यसून॥

छिन्न श्वास-रोगी थोड़ा-थोड़ा और ठहर-ठहर कर साँस लेता है, उसका मुँह सूखता है, वह विलाप करता और उद्विग्न होता है तथा उसकी आँखें डबडबायी-सी रहती हैं—ऐसा रोगी मर जाता है।

वाग्भट्टने इतना अधिक लिखा है कि, छिन्न श्वास वालेकी नज़र नीचेको रहती है और नेत्र एक जगह अनवस्थित रहते हैं।

खुलासा यह कि छिन्न श्वास वाला रह-रहकर साँस लेता है, लगातार साँस नहीं लेता; यानी उसका साँस टूट-टूट कर आता है। जब वह साँस लेता है, तब उसके हृदय आदि मर्मस्थानोंमें काटने या छेदनेकी सी पीड़ा होती है। उस पीड़ाकी वजहसे ही उससे साँस लिया नहीं जाता। नाभिके नीचे पेड़,

में अत्यन्त जलन होती है, आँखोंमें पानीसा भरा रहता है, चेष्टा बदल जाती है और रोगी आन-तान बकता है। इस रोगीकी एक आँख लाल हो जाती है।

नोट—व्याधिके प्रभावसे एकही नेत्र लाल होता है। अगर दोषोंका प्रभाव होता, तो दोनों नेत्र लाल होते।

तमक श्वासके लक्षण।

जब वायु अपनी राह छोड़कर कुराहोंसे नसोंमें घुसता है, तब वह गर्दन और सिरको जकड़ कर, कफको बढ़ाकर, बढ़ाये हुए कफसे नाकमें पीनस या जुकाम, कण्ठमें घर-घर शब्द और हृदयको पीड़ित करने वाला तीव्र श्वास रोग पैदा करता है।

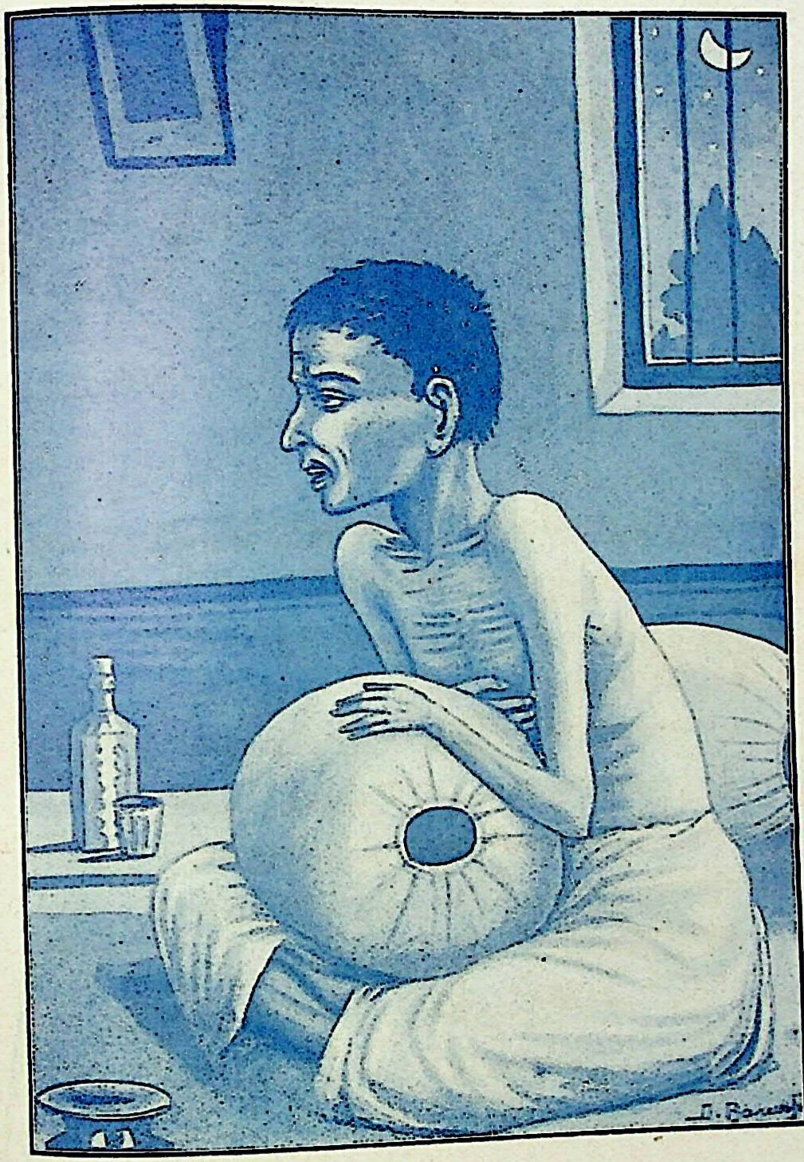
जिसे तमक श्वास होता है, वह अपने तईं घोर अन्धकारमें पड़ा हुआ देखता है, त्रास पाता है, श्वासके वेगसे चेष्टा रहित हो जाता है और खाँसी आनेसे बारम्बार बेहोश होता है। जब उसके गलेसे क़फ निकलने लगता है, तब उसे बड़ी भारी तकलीफ होती है; लेकिन जब कफ निकल जाता है, तब थोड़ी देरको उसे चैन आ जाता है।

तमक श्वास वालेके गलेमें दर्द होता है, अतः उसे बोलनेमें कष्ट होता है। जब वह सोता या लेटता है, तब—वायुकी वजहसे—पसलियोंमें घोर पीड़ा होती है, अतः वह फौरन उठ बैठता है। उठकर बैठ जानेसे कुछ आराम मिलता है। यही वजह है कि तमक श्वास रोगी, रातभर, तकिया सामने रखे बैठे रहते हैं।

तमक श्वास रोगी गरम चीजोंकी इच्छा करता है। उसके नेत्र ऊँचे-ऊँचे और सूजेसे रहते हैं, सिरमें पसीने आते हैं, मुख सूखा करता है, अत्यन्त वेदना होती है और रोगी बारम्बार श्वास ले-लेकर हाथीपर बैठे हुए फीलवानकी तरह हिलता है।

तमक श्वास बादल होनेसे, पानी बरसनेसे, सर्दी पड़नेसे, पुरबाई हवा चलनेसे और कफकारक पदार्थ खाने-पीनेसे बढ़ता है।

तमक श्वास याप्य या कष्टसाध्य है। बड़ी-बड़ी दिक्कतोंसे आराम



तमक श्वास रोगी। पृष्ठ—१७०-१७२

यह रोगी सो या लेट नहीं सकता। जब यह सोता या लेटता है, तब—वायुकी वजहसे—पसलियोंमें घोर पीड़ा होती है, इसलिये यह उठकर बैठ जाता है। उठकर बैठ जाने और सामने तकिया रखनेमें इसे आराम मिलता है।

होता है। अगर नया होता है, तो कदाचित साध्य भी होता है; यानी नया होनेसे उत्तम चिकित्सा द्वारा आराम हो जाता है।

तमक श्वास वाला श्वासके वेगके मारे चेष्टाहीन हो जाता है, यह चरक मुनिका मत है। किन्तु जय्यट आचार्य कहते हैं, उस मनुष्यका श्वास ही रुक जाता है। तमक श्वास वाला गरम चीजें चाहता है, क्योंकि यह श्वास "वात कफ" से पैदा होता है।

"सुश्रुत" में लिखा है:—अगर प्यास बहुत हो, पसीने आवें, कय हों, गलेमें कफ घर-घर घर-घर आवाज़ करता हो और विशेष कर, बरसातके दिनोंमें, सर्दीसे श्वासका वेग बढ़ जाय तो उसे "तमक श्वास" समझो।

अगर श्वासके साथ खर्राटेका शब्द हो, खाँसी और कफका जोर हो, बल घट गया हो, अन्न न भाता हो और सोनेसे तकलीफ मालूम होती हो—तो दुःखदायी "तमक श्वास" समझो।

"वैद्यविनोद" में लिखा है:—

आसीन उष्णैर्लभते च सौख्यं, सुप्तस्य पार्श्वेपरिगृह्यवायुः।
आध्मापयेतं तमकं वदन्ति, मेघाम्बु शीतैः सहयाति वृद्धिम्॥

तमक श्वास रोगी बैठे रहनेसे और गरम पदार्थोंसे सुख पाता है, क्योंकि सोनेसे वायु उसके पसवाड़ोंको पकड़ कर पेटको फुला देता है। तमक श्वास वर्षा और शीतसे बढ़ता है।

तमक श्वासकी स्पष्ट पहचान।

तमक श्वासकी साफ पहचान ये हैं:—

(१) तमक श्वास रोगी सो नहीं सकता, सोनेसे उसे तकलीफ होती है, पर बैठनेसे उसे आराम मिलता है।

(२) तमक श्वास वालेका श्वास बादल होनेसे, वर्षा होनेसे, पूरबकी हवा चलनेसे और सरदी पड़नेसे बढ़ता है।

(३) तमक श्वास वालेका श्वास कफकारी पदार्थोंसे बढ़ता है, अतः उसे सर्द पदार्थोंसे कष्ट होता है; पर गरम पदार्थोंसे उसका कष्ट कम होता और सुख मालूम होता है।

तमक श्वास "वातकफ" से होता है, इसीसे गरम पदार्थोंसे शान्त होता है।

प्रतमक श्वासके लक्षण।

जिस तमक श्वासमें मूर्च्छा और ज्वर भी होते हैं, उसे "प्रतमक श्वास" कहते हैं। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

ज्वरमूर्च्छा परीतञ्च विद्यात्प्रतमकं भिषक्।

वाग्भट्टने कहा है:—

ज्वरमूर्च्छायुतः शीतैः शाम्येत् प्रतमकस्तु सः॥

जो श्वास—मूर्च्छा और ज्वर समेत हो और शीतल आहार-विहारोंसे शान्त होता हो, वह "प्रतमक श्वास" है।

जिस तमक श्वासमें मूर्च्छा और ज्वर होते हैं, जो उदावर्त्त रोग से, धूलकी धाँस जानेसे, अजीर्ण रोगसे, थकान आनेसे और मल-मूत्रादिके वेग रोकनेसे उठ आता है, वह तमोगुणी—गरम—पदार्थों से अत्यन्त बढ़ता और शीतल आहार-विहारोंसे शान्त हो जाता है। उसमें रोगी अँधेरेमें डूबासा हो जाता है।

किसी-किसीने लिखा है, प्रतमक श्वास आम आदि अजीर्ण, विदग्ध अजीर्ण; योगको निरोध करने, बुढ़ापा होने एवं मल मूत्रादि १७ वेगोंके रोकनेसे पैदा होता है। वह अँधेरेसे बढ़ता और शीतल पदार्थोंसे शान्त होता है।

तमक और प्रतमकमें फ़र्क़।

तमक और प्रतमकमें गरमी और सरदीका बड़ा भेद है। तमक श्वास सरदीसे और प्रतमक गरमीसे होता है। अगर तमक श्वास रोगीको सर्द और प्रतमक श्वास वालेको गरम दवा देदी जाय, तो रोग उल्टा बढ़ जायगा, अतः खूब विचार-समझ कर दवा देनी चाहिये।

प्रतमक श्वास गरमीसे होता है। उसमें कंठकी नली मामूलसे ज़ियादा चौड़ी हो जाती है, इससे हौंकनीसी लग जाती हैं; पर तमक श्वास सरदी से होता है; उसमें कंठकी नली उल्टी सुकड़ जाती है, इसलिये रुक-रुक कर और टूट-टूट कर साँस आता है। गरमीके प्रतमक श्वासकी दवा सर्द-तर और सरदीके तमक श्वासकी दवा गरम-तर होती है।

तमक श्वास कफ-मिली वायुसे होता है, पर प्रतमक सूखी और गरम वायुसे होता है, इसीसे तमककी दवा गरम और कफ नाशक होती है; जबकि प्रतमककी तर और ठण्डी होती है। यह भी याद रखो, बुढ़ापेमें श्वास रोग प्रायः सरदीसे ही होता है। बूढ़ों ही को नहीं, औरों को भी बहुधा सरदीका "तमक श्वास" ही होता है।

क्षुद्र श्वासके लक्षण।

जो श्वास रूखेपन और बड़ी भारी मिहनतसे पैदा होता है, उसे "क्षुद्र श्वास" कहते हैं। यह श्वास वायुको बढ़ाता है; पर और श्वासों की तरह, रोगीको बहुत दुःखित और पीड़ित नहीं करता, अन्न-पानों की गतिको नहीं रोकता—खाने पीनेमें बाधा नहीं डालता और इन्द्रियोंको पीड़ित नहीं करता। यह श्वास रोग साध्य होता है, आसानी से आराम हो जाता है। "भावप्रकाश" में लिखा है, महाश्वास आदि चारों श्वासोंके लक्षण यदि प्रकट न हुए हों, तो वे भी साध्य होते हैं।

वाग्भट्ट कहते हैं कि, बहुत ही ज़ियादा खा लेनेसे जब वायु कुपित हो जाता है, तब वह बिना किसी प्रकारके इलाजके—आप ही आराम हो जाने वाले "क्षुद्र श्वास" को करता है।

"वैद्यविनोद" में लिखा है:—

रुक्षान्नपानैरायासैर्वायुः क्षुद्रमुदीरयेत्।
क्षुद्रश्वासो मतस्तेन न च दुःखकरो हि सः॥

रूखे अन्न-पान या रूखे भोजनके पदार्थों और अत्यन्त परिश्रमसे जो श्वास रोग होता है, वह वायुको तो बढ़ाता है, पर बहुत तकलीफ नहीं देता।

पाँचों श्वासोंके संक्षिप्त लक्षण।

(१) महाश्वास रोगी भागनेसे रोके हुए या बहुत दिनसे मैथुन न करने वाले साँडकी तरह साँस लेता हैं। उसके श्वासकी आवाज़ दूरसे सुनी जाती है, आँखें फट जाती है, जीभ तुतला जाती है, दोनों नेत्रों पर सूजन और भीतर लाली होती है तथा रोगी को कुछ ज्ञान नहीं रहता।

(२) उर्ध्वश्वास रोगीका श्वास ऊपर को ही बहुत चढ़ता है, नीचेको साँस लिया नहीं जाता। रोगीकी नज़र ऊपर को रहती है, श्वासकी आवाज़ मन्दी पड़ जाती है, और वह मर्मस्थलोंमें चोट खाने वालेकी तरह विलाप करता है।

(३) छिन्न श्वास रोगीका साँस रुक-रुक कर या टूट-टूट कर आता है, पेट फूल जाता है और पेशाबकी थैलीमें जलन बहुत होती है। रोगी निरन्तर हाँफता और बकवाद करता है। उसकी एक आँख सुर्ख़ हो जाती है।

(४) तमक श्वास रोगीके कंठमें घर-घर शब्द होता है। कफ निकलते समय कष्ट होता है, पर निकल जानेपर चैन मिलता है। सोनेसे कष्ट होता है, पर बैठनेसे आराम मालूम होता है। वह हाथीपर बैठे फीलवानकी तरह हिलता रहता है। वर्षा, बादल, पूरबी हवा और सरदीसे श्वास बढ़ता और गरम तथा कफनाशक पदार्थोंसे आराम होता है। सरदीसे "कंठ नली" सुकड़ जाती है, अतः रोगी रुक-रुक कर श्वास लेता है।

प्रतमक श्वासमें "कंठ नली" चौड़ी हो जाती है, अतः हौंकनी

लग जाती है। यह श्वास गरमीसे होता है, अतः सर्द-तर चीज़ोंसे लाभ होता है।

(५.) क्षुद्र श्वासमें वायु कुपित होता है, पर और श्वासोंकी तरह तकलीफ़ नहीं देता। यह श्वास अपने-आप भी आराम हो जाता है।

नोट—महाश्वास उर्ध्वश्वास और छिन्न श्वासकी चिकित्सा कठिन है; पर यत्न करनेसे रोगी आराम भी हो जाते हैं। तमक श्वास वालेको गरम दवाएं देनेसे अवश्य लाभ होता है। जैसे,—अदरख और शहद मिलाकर चटाना, दशमूलके काढ़ेमें शहद मिलाकर पिलाना, अभ्रक भस्म शहदमें चटाना, अथवा सोंठ मिर्च, पीपर और वायविडंगके चूर्णके साथ शहदमें मिलाकर चटाना। अभ्रक एक या दो रत्ती देना उचित है। प्रतमक श्वासमें ईसबगोलका लुआब, सेवतीका गुलकन्द, खमीरा गावज़ुबाँ, द्राक्षावलेह या द्राक्षासव आदि सर्द-तर या शीतवीर्य दवाएँ देनी चाहियें।

साध्यासाध्यत्व।

आयुर्वेद ग्रन्थोंमें लिखा है:—

प्रायः साध्यास्तु बलिनां सर्वे चाव्यक्त लक्षणाः।
क्षुद्रः साध्यतमस्तेषां तमकः कृच्छ्र उच्यते।
त्रयः श्वासा न सिध्यन्ति तमको दुर्बलस्य च॥

बलवान पुरुषके महाश्वास आदि सभी श्वास, यदि लक्षण पूरे तौर से प्रकट न हुए हों, तो साध्य हैं। इन श्वासोंमें क्षुद्र श्वास बहुत ही आसानी से आराम हो जाता है। तमक श्वासको भी कृच्छ्र कहते हैं, पर तमक कष्टसाध्य है। महाश्वास, उर्ध्वश्वास और छिन्नश्वास के पूरे लक्षण प्रकट हो गये हों, तो वे साध्य नहीं हैं; यानी असाध्य हैं। कमज़ोर आदमीका तमक श्वास भी साध्य नहीं है, यानी असाध्य है।

यों तो सन्निपात ज्वर और हैज़ा आदि अनेक रोग प्राणनाशक हैं; पर श्वास और हिचकी रोग जैसी जल्दी प्राणनाश करते हैं और नहीं करते। अतः श्वास रोगकी चिकित्सा खूब जल्दी और सावधानीसे करनी चाहिये।

श्वास-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

दौरा रोकनेके सरल उपाय।

(१) श्वासका दौरा होते ही, वैद्यको चाहिये कि रोगीको जिस तरह आराम और सुभीता मालूम हो, उसी तरह उसे पलँग या बिछौने वगैरः पर अच्छी तरह बिठावे; पर इस बात पर विशेष ध्यान रहे कि, रोगीके कमरेमें हवाका आना-जाना बन्द न हो।

(२) रोगी जितना सह सके उतने गरम जलमें, एक कपड़ा या फलालैनका टुकड़ा भिगो कर, उससे १०।१५ मिनट तक रोगीकी छातीको सेके।

अथवा

थोड़ासा सेंधानोन गायके घी में खूब महीन पीसकर, रोगीकी छाती के बीचसे गले तक मले।

(३) रोगी सह सके उतना गरम जल एक चौड़े और गहरे बर्तन में भर कर, उसमें रोगीके दोनों पैर रखवावे। इस उपायसे श्वासका जोर फौरन घट जाता है।

(४) १०।१५ बिना बीजके मुनक्के कुचल कर, आधपाव दूध और आधपाव पानीमें औटाओ; जब पानी जल जाय, मलकर छान लो। फिर ऊपरसे ४।५ काली मिर्चों का चूर्ण और एक तोले मिश्री मिला कर, गरमागरम, थोड़ा-थोड़ा, तीन चार बारमें, चमचेसे पिला दो।

अथवा

पाँच-सात बादामोंकी सफेद मिंगी पानीमें पीस कर, कपड़ेमें छान लो और आगपर खूब औटा कर थोड़ा-थोड़ा रोगीको पिलाओ।

अथवा

तीन-चार तोले अंगूरोंका रस निकाल कर कुछ गरम करो और रोगीको पिलाओ।

अथवा

केवल गरम दूध या केवल गरम पानी ही रोगीको पिलाओ। इन सभी उपायोंसे कफ पतला होगा और श्वासका वेग या ज़ोर घट जायगा।

(५) बंसलोचन २ माशे, छोटी इलायची २ माशे और गिलोयका सत्त २ माशे लेकर एकत्र पीस लो। फिर २ तोले शहद और २ तोले दाख—दोनोंका एकत्र अवलेह बनाकर, यानी दोनोंको मिलाकर, उसमें ऊपरकी पिसी हुई दवाएँ मिला दो और रोगीको ३।४ बार चटाओ। उससे भी कफ पतला हो जाता है।

अथवा

"चिकित्सा-चन्द्रोदय पंचम भाग"के अन्तमें लिखा हुआ "द्राक्षावलेह" चटाओ।

अथवा

कफाधिक्य श्वासके दौरेमें, ६ माशे अदरखका रस और ६ माशे शहद मिलाकर चटाओ।

अथवा

सैंधानोन, साँभर नोन, छुतिहा नोन, अजवायन और सुहागा—इनको एक-एक छटाँक लेकर, एक हाँडीमें भर दो और मुख बन्द करके कपड़मिट्टी करो और सुखा लो। फिर एक आध गज़ गहरा और उतना ही लम्बा-चौड़ा गड्ढा खोद कर, उसमें हाँडीको रख दो। नीचे ऊपर हर ओर जंगली कण्डे भर कर आग लगा दो। शीतल होनेपर, हाँडीसे दवाको निकाल कर महीन पीस लो। इसमेंसे दो-दो रत्ती दवा दिन में कई बार खिलाओ। इससे कफ ढीला होकर निकल जायगा।

नोट—ये सब, श्वासका दौरा होते ही, उसके दबानेके उपाय हैं।

२३

मुफ़ीद हिदायतें।

(६) श्वास वालेको मौसम गरमीमें पीने और नहानेके काममें शीतल जल और जाड़ेमें गरम जल लेना चाहिये।

जहाँ तक हो सके, रोगीको बाहरी हवासे बचाओ; परन्तु शीतके भयसे बिल्कुल बन्द हवामें मत रखो। साफ हवाके आने जानेको राहें खुली रखो। जहाँ साफ हवा और धूप न आती हो, जहाँ सील जियादा रहती हो और जहाँ आदमियोंकी भीड़ हो, वहाँ श्वास रोगीको न रक्खो। अगर रोगीको माफ़िक़ हो, तो शाम-सवेरे मैदानकी साफ हवा खिलाओ। रोगीको अत्यन्त सर्दी और गरमी दोनोंसे बचाओ।

(७) रोगीको अधिक मिहनत, स्त्री-प्रसंग, कसरत, भारी भोजन, बासी अन्न, रातको खाना, मादक या नशीले पदार्थ, अत्यन्त दाह-कारक और तीक्ष्ण पदार्थ, अचार, चटनी, चाय, काफी, मछली, मांस और अजीर्ण—इनसे बचाओ।

श्वासका दौरा शान्त होने पर, एक दो दिन तक, भुने गेहूँका दलिया, पतली मूंगकी धुली दाल और साबूदाना दो। हर दिन ऐसा सादा भोजन दो, जो जल्दी ही पच जाय। पहले भोजनके ६ घण्टे बाद दूसरा भोजन दो। शामको बहुत ही थोड़ा हल्का खाना दो, क्योंकि रातको खाने और न पचनेसे श्वास बढ़ता है। गेहूँ, मूँग, जौ, गायका दूध, अंगूर, केला, शन्तरा, अनार, बादाम, दाख, किशमिश, परवल, बैंगन, तोरईं, करेला, बथुआ और पालक आदि पदार्थ पथ्य हैं। इनके सिवाय और भी पदार्थ, जो कफको सुखाने और बढ़ाने वाले न हों, दे सकते हो।

"सुश्रुत" में लिखा है, आमले, बेल, मुनक्के, किशमिश, अंगूर, पुराना घी, पीपर, कुलथीका रस, जंगली जानवरोंका मांस-रस, हींग, नीबू और शहद श्वास रोगमें पथ्य हैं। वाग्भट्टने कहा है:—

यत्किंचित् कफवातघ्नमुष्णं वातानुलोमनम्।
भेषजं पानमन्नं वा हिक्काश्वासेषु तद्धितम्॥

जो दवा और पीनेके पदार्थ कफवात नाशक, गरम और वायुको अनुकूल चलाने वाले हैं, वे श्वास और हिचकीमें हित हैं।

(८) एक-दम शीतल जल डालने, साहस करने, भयंकर पदार्थ दिखाने, एवं अतिहर्ष, अतिक्रोध और त्रासने हिचकी और श्वास नाश हो जाते हैं। कहा है:—

द्रुतं शीताम्बुसेकैश्च साहसक्रूरदर्शनैः।
हर्षणक्रोधसंत्रासैर्हिक्काश्वासं निवारयेत्॥

वाग्भट्ट कहते हैं:—

शीताम्बुसेकः सहसा त्रासविक्षेपभीशुचः।
हर्षेर्ष्योच्छ्वास संरोधा हितं कीटैश्चदंशनम्॥

हिचकी और श्वास रोगीपर शीघ्र ही शीतल जलके छींटे मारो, चित्तको उद्विग्न करने वाले कर्म करो; कँपाना, डराना, सन्ताप देना, खुश करना, श्वास रोकना और कीड़ोंसे कटाना भी हित है।

(९) श्वास और हिचकी रोगमें, विशेष कर, नमक और तेल मिली हुई चिकनी स्वेदन क्रियाओंसे उपचार करो—इससे कफ छूटता, श्वास नष्ट होता और वात भी शान्त हो जाता है। जब पसीना निकल चुके, तब रोगीको मांसरसके साथ भात दो और शहदके साथ अदरखका रस पिलाओ। इससे श्वास, खाँसी, जुकाम और कफ नष्ट हो जाते हैं।

(१०) अगर बलवान रोगीको कफ घेरले, कफ बढ़ जाय और श्वासका जोर हो तो उसे वमन और विरेचनसे शुद्ध करना चाहिये। अगर रोगी कमज़ोर और रूखा हो, तो उसे बनाया हुआ जंगली जीवोंका मांसरस, दुम्बेका मांसरस या जलके किनारेके जीवों का मांसरस देकर तृप्त करो। यह बात सुश्रुतने कही है:—

वलीयसि कफग्रस्ते वमनं सविरेचनम्।
दुर्बले चैव रूक्षे च तर्पणं हितमुच्यते॥

और भी—

स्नेहवस्तिं विना केचिदूर्ध्वं चाधश्च शोधनम्।
मृदु प्राणवतां श्रेष्ठं श्वासि नामादिशंतिहि॥

कोई-कोई कहते हैं, अगर श्वास-रोगी बलवान हो, तो उसे हलका वमन और विरेचन कराना अच्छा है; पर "स्नेहवस्ति" कराना उचित नहीं। वाग्भट्टने कहा है:—

पिप्पली सैन्धव क्षौद्रयुक्तं वाताविरोधियत्।
निर्हृते सुखमाप्नोति सकफे दुष्ट विग्रहे॥

विशेष करके खाँसी, छर्दि और स्वरशिथिलता आदि रोगोंमें पीपर, शहद और सेंधानोन मिलाकर वमन करानी चाहिये, पर वमन की दवाएँ वातविरोधी न होनी चाहियें। वमन करानेसे कफ निकलेगा और श्वास-हिचकीका रोगी सुखी होगा एवं साफ़ छेदोंमें वायु बे-रोकटोक घूमेगा।

कफका ज़ोर ज़ियादा हो, तो छोटी पीपर २ माशे, मैनफल ६ माशे और सेंधानोन ६ माशे—इन सबको एक सेर पानीमें औटाकर, तीन पाव पानी बाक़ी रख लो और मल-छानकर रोगीको गरमागर्म पिला दो।

अथवा इसी तरह पीपर और सेंधे नमकको औटाकर छानलो और शीतल होने पर "शहद" मिला कर पिला दो।

हिचकी और श्वास-रोगीको पहले तेलसे तर करके स्वेदित करना चाहिये। अगर रोगी समर्थ हो, तो उसे वमन-विरेचन कराकर शुद्ध करना चाहिये; पर अगर रोगी कमज़ोर हो तो उसे वमन विरेचनादि न कराकर, रोगकी शान्तिके लिये 'शमन औषधि' दे देनी चाहिये। कहा है:—

ऊर्द्धाधः शोधनं शक्ते दुर्बले शमनं मतम्।

वाग्भट्टने लिखा है, राह रुक जानेसे जैसे बहुत-सा बहता हुआ जल बढ़ जाता है; उसी तरह राह रुकनेसे कफ बढ़ जाता है, अतः इसे शोधना चाहिये। अगर शुद्ध किये हुए श्वास-हिचकी वालेका रोग शान्त न हो, तो छेदोंमें रुके हुए या लगे हुए कफको धूम-पान करा कर यानी मैनशिल आदिका धूआँ पिलाकर निकालना चाहिये।

बहुतसे पाठक स्वेद कराने यानी पसीना निकालनेका मतलब जल्दी न समझेंगे। कहेंगे, श्वास रोगमें पसीने निकालनेकी क्या ज़रूरत? शास्त्रमें लिखा है:—

सर्वेषु श्वासरोगेषु वातश्लेष्मनिबर्हणं।
विदधीत विधिं विद्वानादौ स्वेदं मृदुं ततः॥

सभी तरहके श्वास रोगोंमें, पहले शरीरसे हलका पसीना निकालना चाहिये। इसके बाद वात और कफके नाश करनेका उपाय करना चाहिये।

श्वास रोग होनेसे, हृदयमें रहनेवाला प्राण-वायु, कफसे मिल कर और अपने असली कामको छोड़ कर ऊपरकी ओर चढ़ता है। उसके निकालनेको ही, रोगीको बारम्बार मुँह खोलना और बन्द करना पड़ता है। उससे एक तरहकी हाँफनी आने लगती है। उसीको वैद्यगण "श्वास रोग" कहते हैं।

असल बात यह है, कि भीतरी नाड़ियों और छातीपर "कफ" जम जाता है। उस कफकी वजहसे, श्वास-नलीमें जो वायुके आने जानेकी राह है रुक जाती है, इसीसे रोगीको बारम्बार श्वास लेना पड़ता है और साँस आता भी बड़े कष्टसे है। स्वेद देने या पसीना निकालनेसे कफ पतला हो जाता है और वातश्लेष्म या वात-कफ-नाशक दवा देनेसे वह पतला कफ फौरन, दस्तकी राहसे, निकल जाता है।

ऊपरके श्लोकमें लिखा है, कि शुरूमें ही पसीना देकर, शरीरको हलका और कफको पतला कर ले, तब वैद्य वातकफनाशक दवा दे।

यह मत ठीक है, पर इसमें एक बात विचारने की है। वह यह, कि अगर श्वास बहुत दिनों तक रहा हो और रोगीकी रक्तमांसादि धातुएँ क्षीण हो गई हों तो पसीने वगैरःको रोगी कैसे बरदाश्त कर सकेगा ? इसीसे रक्तमांसादिके सूख जानेपर, स्वेद कर्म या पसीना देनेकी शास्त्रमें मनाही है। अगर धातुक्षीण रोगीको स्वेद आदि कराया जायगा, तो वह, गरमीको न सह सकनेकी वजहसे, बेहोश होकर मर सकता है; अतः रोगके शुरूमें ही, स्वेद कर्म या पसीना निकालनेका काम करना चाहिये। जब रोगी कमज़ोर हो जाय, रक्तमांसादि क्षीण हो जायँ, तब पसीना निकालनेकी दरकार नहीं। यही बात वमन-विरेचनके सम्बन्धमें है। बलवानको कय और दस्त कराकर, पीछे रोग नाशक दवा देनी चाहिये; पर कमज़ोरको वमन-विरेचन बिना कराये ही दवा देनी चाहिये। हमने यह बात खूब खोल-खोल कर समझा दी है, और अब इसे मूढ़ आदमी भी समझ सकेगा। चिकित्सा-कर्ममें तर्क-बितर्क और विचार करनेकी पद-पदपर दरकार है।

(११) अनेक नासमझ वैद्य यह समझकर, कि श्वास रोग वात-कफसे होता है, अतः गरमागर्म रस देनेसे आराम होगा, अपने रोगियोंको गरम रस दे-दे कर मार डालते हैं। क्योंकि गरम दवाओं और गरम भोजनसे कफ सूख कर जम जाता है, जिससे रोगीको खाँसनेमें कष्ट होता है, छातीपर कफ घरघराता और बड़ी कठिनाईसे निकलता है एवं कफ निकलते समय छातीमें वेदना होती है। जब तक कफ पतला करके निकाल न दिया जाय, गरम-गरम दवा देना—रोगीको मारना है।

हम लिख आये हैं कि, एक "तमक श्वास" होता है और दूसरा "प्रतमक श्वास"। तमक श्वास बादल होने, पानी बरसने, शीतल या सीलके मकानमें रहने और शीतल तथा कफवर्द्धक पदार्थोंसे बढ़ता है। तमक श्वास वालेके नेत्र ऊँचे रहते हैं, मुख सूखता है,

सिरमें पसीने आते हैं और वह श्वास फूलनेसे हाथीपर बैठे हुए महावतकी तरह हिलता रहता है। जब तक कफ नहीं निकलता, यह रोगी बहुत ही घबराता है; कफ निकलनेसे क्षण-भरको चैन आता है। गलेमें हर समय खसखस लगी रहती है, बोलनेमें तकलीफ़ होती है और नींद नहीं आती। ज़रा लेटता है और फिर उठ बैठता है, क्योंकि लेटनेपर "वायु" उसकी पसलियोंको पकड़ लेता है। अतः रोगी रात-भर सामने तकिये रखकर बैठा रहता है। बैठनेसे उसे कुछ चैन मिलता है, यह श्वास सर्दीसे होता है।

अगर तमक श्वासके लक्षणोंके साथ रोगीमें ज्वर और मूर्च्छा के लक्षण भी हों, तो "प्रतमक श्वास" समझना चाहिये। यह प्रतमक श्वास शीतल उपायोंसे शान्त होता है, क्योंकि इस श्वास-रोगीको ऐसी गरमी मालूम होती है, मानो उसे किसीने जलते हुए गरम घर में बैठा दिया है। अगर प्रतमक श्वास वालेको गरम दवाएँ या गरम रस दे दिये जायँ, तो वह वैद्यराजको आशीर्वाद देता हुआ यमराज के घर चला जायगा। जो वैद्य ठीक तरहसे निदान किये बिना, अच्छी तरहसे मर्जकी तशख़ीश किये बिना, हर तरहके श्वासमें गरम ही गरम रस खिलाते हैं, वह इस लेखसे सावधान हो जायँ और रोगियोंको वृथा न मारें। मनुष्य-जन्म बड़ी कठिनतासे मिलता है।

हम दोनों तरहके श्वासोंका सीधा भेद बतलाये देते हैं। प्रतमक श्वास गरमीसे होता है और तमक सरदीसे। प्रतमक श्वासमें, कण्ठकी नली चौड़ी हो जाती है, अतः श्वासकी धौंकनी-सी लगी रहती है; पर तमक श्वासमें श्वास नली उल्टी सुकड़ जाती है, अतः श्वास रुक-रुक कर आता है। गरमी सर्दीके श्वासोंकी यह पहचान सर्वोत्तम है। गरमीके श्वास—प्रतमक श्वासकी दवा सर्दतर और सर्दीके श्वास—तमक श्वासकी दवा गरमतर होती है। बहुत करके

श्वास सर्दीसे ही होता है और बूढ़ोंको तो विशेष कर सर्दीसे ही होता है। बुद्धि और तर्कसे खूब समझकर, तब श्वासका इलाज करना चाहिए।

(१२) श्वास रोग बड़ा कठिन है। यह जल्दी ही आराम नहीं होता। अगर कोई दवा जल्दी ही फ़ायदा न करे, तो घबराना न चाहिए। जब दवा रोगसे बलवान होगी, तब अवश्य आराम होगा। हाँ, अगर कोई दवा देनेसे हानि हो या दवा गरमी करे, तो फौरन बदल देनी चाहिये। जो दवा गरमी करती है, वह प्रायः फायदा नहीं करती। श्वास रोगके लिये समय और अच्छी चिकित्साकी ज़रूरत है। कोई भी श्वास सुखसाध्य नहीं होता। सिर्फ क्षुद्र श्वास साध्य माना जाता है। तीन श्वास तो असाध्य ही होते हैं और चौथा तमक कष्ट साध्य होता है। "सुश्रुत" उत्तरतंत्रके ५१वें अध्यायमें लिखा है—

यथाग्नि रिद्धोः खलुकाष्ठसंघेवज्रं यथावा सुरराजमुक्तम्
रोगास्तथैते खलु दुर्निवाराःश्वासश्च कासश्च विलम्बिकाच

जिस तरह काठके ढेरमें पड़ी हुई आग और इन्द्रका छोड़ा हुआ वज्र दुर्निवार होते हैं; उसी तरह श्वास, खाँसी और विलम्बिका रोग दुर्निवार होते हैं। और भी कहा है—

कामं प्राणहरा रोगा वहवोनतु ते तथा ।
यथा श्वासश्च हिक्काच हरतः प्राणमाशुवै ॥

यों तो प्राण नाश करने वाले सन्निपात और हैज़ा आदि बहुतसे रोग हैं; पर श्वास और हिचकी जैसी जल्दी प्राण नाश करते हैं, वैसी जल्दी और नहीं करते।

हमारे लिखनेका मतलब यह है कि, श्वास, खाँसी और हिचकी बड़े कठिन रोग हैं। इनकी चिकित्सामें बड़ी होशियारी, सावधानी, चतुराई और धीरजकी ज़रूरत है।

(१३) वैद्यको इस बातका भी ध्यान रखना चाहिये, कि श्वास और हिचकीकी चिकित्सा एक सी होती है। "सुश्रुत"में लिखा है—

पाण्डुरोगेषु शोथेषु ये योगाः संप्रकीर्त्तिता।
श्वासकासापहास्तेपि कासघ्ना येचकीर्त्तितः॥

जो नुसख़े पाण्डु रोग और शोथ रोगमें कहे हैं, वे श्वास और खाँसीमें हितकारी हैं और खाँसीके नुसख़े श्वासमें हितकारी हैं। ठीक है, श्वास, खाँसी और हिचकीके नुसख़े एक दूसरे को आराम करते हैं।

(१४) वैद्यको रोगीकी प्रकृति या मिज़ाजका भी ध्यान रखना चाहिये, क्योंकि शीत प्रकृति या सर्द मिज़ाज वालेको गरम दवा फ़ायदा कर जाती है, पर गरम मिज़ाज वालेको उल्टी हानि करती है। जैसे, "शिंगारभ्रक या कालेश्वर रस" जो हमने नुसख़ोंमें लिखे हैं, श्वास रोगपर रामवाण हैं; पर अगर वे गरम मिज़ाज वाले को दे दिये जायँ तो बड़ी भारी हानि करेंगे और यदि वही सर्द मिज़ाज वालेको दिये जायँ, तो तत्काल चमत्कार दिखायेंगे। इसलिये रोगीकी प्रकृति और ऋतु आदिका विचार करके और रोगका ठीक निदान करके दवा देनी चाहिये। ऐसे वैद्योंको ही यश मिलता है।

श्वास रोगमें पथ्यापथ्य।

पथ्य।

जुलाब देना, पसीने निकालना, धूमपान कराना यानी धूआँ पिलाना, वमन या कय कराना, दिनमें सुलाना, छातीसे लेकर दोनों पसवाड़ों में दागना, दोनों हाथोंकी बीचकी उँगलियोंमें गरम लोहेसे दागना अथवा कंठकूपमें दागना,—ये सब श्वासमें पथ्य हैं।

पुराने साँठी चाँवल, लाल शालि चाँवल, गेहूँ, जौ, पुराना घी, बकरीका दूध-घी, शराब, शहद, परवल और पका कुम्हड़ा,—ये सब पदार्थ पथ्य हैं।

ख़रगोश, मोर, तीतर, लवा, मुर्ग़ा और अनूप देशके हिरन आदिका मांस पथ्य है।

बथुआ, चौलाई, जीवन्ती, मूली, पोईका साग, बैंगन, लहसुन, जंभीरी नीबू, कुँदरू, बिजौरा नीबू, दाख, छुहारे और छोटी इलायची—ये सब पथ्य हैं।

कटाई, हरड़, पोहकरमूल, त्रिकुटा, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, गोमूत्र और गरम पानी—ये सब पथ्य हैं।

दिनमें पुराने चाँवलोंका भात, मूँग-मसूर की दाल, परवल, करेले और पके कुम्हड़े का साग, बकरीका दूध, खजूर, अनार, आमले और मिश्री आदि पथ्य हैं; बशर्ते कि पचानेकी ताक़त हो। रातको गेहूँकी रोटी और परवल आदि की तरकारी पथ्य हैं। रातको कम और खूब हलका भोजन हित हैं।

अपथ्य।

मूत्र, डकार, प्यास और खाँसीके वेगको रोकना, नस्य सूंघना, गुदामें पिचकारी लगाना, दाँतुन करना, मिहनत करना, राहमें बोझ लेकर चलना, धूलका गलेमें जाना, धूपमें रहना, देरमें पचने वाले पदार्थ खाना, कलेजेमें जलन करने वाली चीजें खाना, अनूप देश—बंगाल आदिके पशु-पक्षियोंका मांस खाना, तेलकी भुनी चीजें खाना, चौला और उड़द कफकारी पदार्थ खाना, खून निकालना, पूरवी हवा खाना, बहुत पानी पीना, भेड़का घी और दूध, मैला जल, मछली, कन्दों के साग, सरसों, रूखे, शीतल और भारी खाने-पीनेके पदार्थ श्वास रोगमें अपथ्य हैं।

बहुत मिहनत, शोक, क्रोध, चिन्ता-फ़िक्र, रातमें जागना, दही, लालमिर्च, अमचूर, जियादा खाना और खासकर रातको जियादा खाना—ये सब श्वास रोगमें बहुत ही हानिकारी हैं।

श्वास रोगकी सामान्य चिकित्सा।

शृङ्गवेर क्वाथ।

दो तोले सोंठको बत्तीस तोले पानीमें औटाओ; जब आठ तोले जल रह जाय, मल कर छानलो। शीतल होने पर, उसमें ६ माशे "शहद" मिलाकर पीलो। कई रोज इस काढ़ेके पीनेसे श्वास, सर्दी की खाँसी और सर्दीका जुकाम ये आराम होजाते हैं।

महाकटफलादि चूर्ण।

कायफल, अरण्डीकी जड़, काकड़ासिंगी, अजवायन, कलौंजी, सोंठ, कालीमिर्च और पीपर—इनको बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस-छान लो। इस चूर्णकी मात्रा २ से ४ माशे तक है। सवेरे-शाम, एक-एक मात्रा चूर्ण, बकरीके दूधके साथ, फाँकनेसे घोर खाँसी समेत श्वास नष्ट होजाता है।

भारंगी गुड़।

भारंगी ४०० तोले, दशमूल ४०० तोले और बड़ी हरड़ ४०० तोले—इन्हें चौगुने यानी ४८०० तोले जलके साथ, मिट्टीके वर्तन या क़लई के वर्तनमें पकाओ। जब चौथाई या १२०० तोले पानी रह जाय, उतार कर "कपड़ेमें काढ़ा छानलो और हरड़ों" को अलग रख लो।

फिर उस छने हुए काढ़ेमें, ४०० तोले उत्तम "गुड़" और काढ़ेसे अलग की हुई "हरड़" डाल कर पकाओ। जब पकते-पकते शीरे या

अवलेहके समान होजाय, उसमें, शीतल हो जाने पर २४ तोले "शहद" मिला दो। सबके बाद, सोंठ, छोटी पीपर, कालीमिर्च, दालचीनी, तेजपात, इलायची चार-चार तोले और जवाखार दो तोले महीन पीस छान कर मिला दो और उत्तम बासनमें रख दो।

इस अवलेहके सवेरे-शाम खानेसे महादारुण श्वास, पाँचों तरह की खाँसी, अरुचि, बवासीर, गोला, अतिसार और क्षय—ये रोग नाश हो जाते हैं तथा स्वर, वर्ण और जठराग्नि—ये उत्तम होते हैं।

हर दिन, दोनों समय, एक-एक हरड़ और दो-दो तोले अवलेह सेवन करना चाहिये।

शृङ्गयादि चूर्ण।

काकड़ासिंगी, सोंठ, छोटी पीपर, नागरमोथा, पोहकरमूल, कचूर और कालीमिर्च—इनको समान-समान लेकर, पीस-कूट और छान लो।

इस चूर्णकी मात्रा २ से ४ माशे तक है। सवेरे-शाम, एक-एक मात्रा चूर्णको चीनी, गिलोय, अड़ूसा एवं पञ्चमूलके काढ़ेमें मिला कर पीनेसे, तीन दिनमें, भयङ्कर श्वास भी आराम हो जाता है।

नोट—गिलोय, अड़ूसा और पंचमूल इनको कुल २ तोले लेकर, बत्तीस तोले पानीमें औटा लो। आठ तोले जल रहने पर उतार लो और मल-छान लो। फिर इसमें "शृंग्यादि चूर्ण" की १ मात्रा और "चीनी" मिलाकर पी लो।

पंचमूली शब्द साधारण है। पंचमूली दो होती हैं:—(१) लघु पंचमूली, और (२) वृहत्पंचमूली। पित्ताधिक्य होनेसे "लघु पंचमूल" और वात तथा कफाधिक्य होनेसे "वृहत्पंचमूल" लेनी चाहियें। लघुपंचमूल वातपित्त, पित्त, वायु, कफ, श्वास, दमा, ज्वर, खाँसी, पथरी, त्रिदोष, शूल, अरुचि और मन्दाग्निको नाश करता है और वृहत्पंचमूल कफ, वात, श्वास—दमा, ज्वर और दूषित हवासे होने वाले रोग नाश करता है। वृहत्पंचमल और लघुपंचमूल, दोनोंकी पाँच-पाँच दवाएँ मिला देनेसे "दशमूल" कहाता है। दशमूलसे तन्द्रा, त्रिदोष, श्वास, खाँसी, ज्वर, सूजन, हिचकी, पीनस, पसलीका दर्द, सिरका दर्द, अरुचि, पसीना, अपतंत्रकवायु, मन्दाग्नि, रह-रह कर आने वाले ज्वर, छातीके रोग और सिरके रोग नाश हो जाते हैं। सन्निपात ज्वर और सूतिका ज्वर पर यह खूब काम देता है।

पंचमूली चार।

सरिवन, पिठवन, कटेरी, बड़ी कटाई और गोखरू—यही पाँच "लघुपंचमूल" की दवा हैं। दो तोले लघुपंचमूल लेकर, अधकचरा कर लो; फिर इससे अठगुना—१६ तोले—दूध और दूधसे चौगुना—६४ तोले—पानी इन सबको मिलाकर पकाओ। जब पानी जल कर दूध मात्र रह जाय, छान कर रोगीको पिलाओ।

यह क्षीरपाक या दूध जीर्ण ज्वरपर तो उत्तम है ही, पर यह दमा, श्वास, खाँसी, मस्तक शूल, पीठका दर्द और जुकामको भी निश्चय ही नाश करता है। परीक्षित है।

नोट—गर्भपात होने पर, लघुपंचमूलके काढ़ेमें पेया या पतला भात पका कर पिलानेसे बहुत लाभ होता है। पेयामें "घी" न डालना चाहिये। परीक्षित है।

दशमूल रस।

दशमूलका रस पीनेसे श्वास रोग जड़से नष्ट हो जाता है और श्वास रोगसे निश्चय ही मरने वाला भी १०० वर्ष तक जीता है। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

दशमूलरसं देयं श्वासनिर्मूलशान्तये।
अवश्यं मरणीयो यो जीवेद्वर्ष शतं नरः॥

दशमूल क्वाथ।

दशमूल दो तोले लेकर, ३२ तोले जलमें काढ़ा पकाओ और चौथाई जल रहने पर मल छान लो। इस काढ़ेमें "अरण्डीकी जड़" अथवा "पोहकरमूलका चूर्ण" डाल कर पीनेसे श्वास, खाँसी और पसलीकी पीड़ा शान्त हो जाती है। बक़ौल वृन्द और वाग्भट्टके, श्वास वालेकी प्यास नाश करनेको भी यही काढ़ा उत्तम है।

नोट—सन्निपात ज्वर, मोह और तन्द्रा होने पर—दशमूलके काढ़ेमें "पीपरका चूर्ण" मिला कर पीना बहुत ही अच्छा है।

धनुस्तम्भ रोगमें—दशमूलका काढ़ा पिलाना और शरीरमें कड़वा तेल मलना हितकारी है।

पक्षाघात रोगमें—दशमूलका काढ़ा हींग और सेंधानोन मिलाकर पिलाना हित है।

सूतिका रोगमें भी—दशमूलके काढ़ेमें पीपरका चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिये।

हृदयशूल, पीठके शूल और कमरके शूलमें—दशमूलका काढ़ा सवेरे ही पीना चाहिये। छाननेपर जो फोक रहे, उसे औटाकर रातको पीना चाहिये।

सूचना—दशमूलके ये सब नुसखे हमारे परीक्षित हैं।

दशमूलादि क्वाथ।

दशमूलके काढ़ेमें "जवाखार और सेंधानोन" मिलाकर पीनेसे श्वास-रोग, दमा, शूल और हृदय-रोग ये सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

दूसरा दशमूलादि क्वाथ।

दशमूलकी दसों दवाएँ, कचूर, रास्ना, छोटी पीपर, अतीस, अरण्डकी जड़, भुईं-आमला, भारंगी, गिलोय, सोंठ और चीतेकी छाल—इनको दो या तीन तोले लेकर, सोलह गुने जलमें काढ़ा बनाओ और चौथाई जल रहनेपर मल-छानकर पिला दो। इस काढ़ेके पीने या इसकी यवागू बनाकर पीनेसे श्वास, हृदयकी जड़ता, पसली का दर्द, हिचकी और खाँसी रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—यवागू और पेया बनानेकी तरकीब, दूसरे भागके पृष्ठ ७७–७८ में देखिये।

बिल्वादि घृत।

छोटी बेलकी गरी एक पाव और हरड़ आध पाव लेकर, अठगुने या तीन सेर पानीमें औटाओ; जब चौथाई यानी तीन पाव पानी रह जाय, उतारकर मल-छान लो।

फिर इस काढ़ेमें गायका ताजा घी एक सेर डालकर पकाओ,

जब आधा पानी जल जाय, उसमें एक छटाँक "काला नोन" पीसकर मिला दो और पकाते रहो। जब पानी जलकर घी मात्र रह जाय, एक अमृतबानमें रख दो।

इसकी मात्रा १ तोलेसे १ छटाँक तक है। जिसे श्वास और पतले दस्त हों, उसे यह घी अमृत है। परीक्षित है।

हरीतक्यादि घृत।

बड़ी हरड़के छिलके आध सेर लेकर, चार सेर पानीमें औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

क़लईदार कढ़ाहीमें, एक सालसे ऊपरका घी एक सेर और ऊपरका काढ़ा डालकर पकाओ। जब खूब पकने लगे, उसमें पिसा हुआ आध पाव "मनिहारी नमक" और एक तोले "अधभूंजी हींग" डालो और पकाते रहो। जब पानी जल कर घी मात्र रह जाय, उतार लो और छानकर साफ बर्तनमें रख दो।

इसकी मात्रा १ तोलेसे ४ तोले तक है। इसके सवेरे-शाम, अपनी ताक़तके माफ़िक़ पीनेसे श्वास रोग नाश हो जाता है। घी खाकर, पानी भूलकर भी न पीना चाहिये। अगर ऊपरसे, लगा हुआ पान या दो-चार इलायची खा ली जायँ, तो हर्ज नहीं। अगर खाँसी श्वासका जोर रहे, तो मुलेठी या मुलेठीका सत्त चूसो अथवा घी चुपड़ कर पकाये हुए बहेड़ेका छिलका चूसो अथवा 'कासमर्दन बटी' दिन में ८।१० तक चूसो। इनमेंसे किसीके भी चूसनेसे श्वास खाँसीका जोर दब जायगा। घी पीकर पानी पीना तो बड़ी बात है, कुल्ला करना भी मना है। अगर घी पीते ही श्वास उल्टा दुःख देने लगे, तो घबरा कर घी पीना न छोड़ना, ४।५ दिन बाद पक्का आराम होने लगेगा। इससे भूलकर भी, उल्टी हानि होनेका खयाल न करना चाहिये। यह घी हमारा परीक्षित है। पहले जरा श्वासको बढ़ा देता है, पीछे एक-दम आराम करता है।

"सुश्रुत" ने लिखा है, श्वास, खाँसी और हिचकीमें—पुराना घी, हरड़, बिड़नोन या मनिहारी नोन और हींगके साथ पकाकर देना श्रेष्ठ है, और नवीन घी, हरड़, बेलगिरी और संचर नोनके साथपकाकर देना उत्तम है। सुश्रुतके ही दोनों घी हमने स्वयं आज़मा कर ऊपर लिखे हैं।

श्वासारि घृत।

बायबिडंग, बड़ी हरड़, त्रिफला, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, बालछड़ और चीतेकी जड़की छाल—इन आठोंको एक-एक छटाँक लेकर जौकुट करलो। फिर इस कुटे हुए चूर्णको रातके समय, बारह सेर पानीमें भिगो दो और सवेरे ही मन्दाग्निसे पकाओ। जब चौथाई या तीन सेर पानी रह जाय, उतार कर मल छानलो।

फिर इस काढ़ेको कलईदार कढ़ाहीमें डालकर, ऊपरसे तीन सेर गायका घी, तीन सेर गायका दूध और तीन सेर बकरीका दूध डाल दो और मन्दाग्निसे पकाओ। जब दूध और काढ़ा जलकर घी मात्र रह जाय, छान लो।

इस घीकी मात्रा ६ माशे से ३ तोले तक है। इसके सवेरे-शाम पीनेसे श्वास, दमा, खाँसी, अरुचि, बवासीर, गोला, जोरसे दस्त होना और कफक्षयी रोग नाश हो जाते हैं। इस पर भी पानी न पीना चाहिये। पान या इलायची खा सकते हैं। अगर यह घी विश्वास के साथ लगातार कुछ दिन पिया जाय, तो श्वासादि रोगोंको निश्चय ही नाश कर देता है। खूब परीक्षित है।

वासक घृत।

अड़ूसेका पञ्चांग एक सेर लेकर, सोलह सेर पानीमें औटाओ; जब चौथाई या चार सेर पानी रह जाय, मल छानकर रखलो।

फिर एक सेर गायका घी और इस काढ़ेको मिलाकर, कलईदार बर्त्तनमें पकाओ। पकते समय "अड़ूसेके फूल १ पाव और अड़ूसेकी

जड़ १ पाव" और मिलादो। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो।

इसकी मात्रा १ तोलेसे ३ तोले तक है। हर मात्रामें थोड़ा सा "शहद" मिलाकर, सवेरे-शाम पीनेसे श्वास रोग नाश हो जाता है। यह नुसखा भी "सुश्रुत" का है और हमारा परीक्षित है।

नोट—पाँचों नोनके साथ पकाया हुआ घी, अड़ूसेके साथ पकाया हुआ घी और कायफलके साथ पकाया हुआ घी श्वासको नाश करता है। दश गुने भाँगरेके स्वरसके साथ पकाया घी भी श्वासनाशक है।

भृङ्गराज तैल।

पहले भाँगरा लेकर पीसो और दस सेर स्वरस निकाल कर रख लो। फिर काली तिलीका तेल १ सेर कलईदार कढ़ाहीमें डालो और ऊपरसे भाँगरेका रस १ सेर डाल दो। जब पकने लगे, थोड़ी-थोड़ी देरमें पाव-पाव-भर रस डालते जाओ और मन्दाग्निसे पकाते रहो। जब सारा रस जल जाय, तेलको उतारकर छान लो और रखदो।

इसकी मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है। इसको दिनमें २।३ बार, कुछ दिन लगातार पीनेसे श्वास और खाँसी निस्सन्देह नाश हो जाते हैं। यह योग भी "सुश्रुत" का है। परीक्षित है।

नोट—अगर छाती पर कफ बहुत ही सूख गया हो, निकलता न हो, तो इस तेलको "अलसीके तेल" में पकाओ यानी तिलीके तेलकी जगह अलसीका तेल और भाँगरेका रस लो। इसके पीनेसे छातीपर जमा हुआ कफ जल्दी छूटता है।

हरिद्रादि अवलेह।

हल्दी, कालीमिर्च, दाख, छोटी पीपर, रास्ना, कचूर और पुराना गुड़—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट-छान लो। इस चूर्णमेंसे ३ माशे चूर्ण "काली तिलीके तेल" में मिलाकर चाटनेसे श्वास रोग नाश हो जाता है। यह नुसखा "भावप्रकाश" का है; पर हमारा परीक्षित है। इससे श्वासमें अवश्य लाभ होता है। यदि इससे लाभ

न हो, तो "भृङ्गराज तैल" पिलाओ। वह इससे कई गुणा बढ़कर है। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

हरिद्रां मरिचं द्राक्षां कणां रास्नां शठीम् गुडम्।
कटुतैले लिहन्हन्याच्छ्वासान्प्राणहरानपि॥

हल्दी, कालीमिर्च और दाख आदि दवाओंके चूर्णको कड़वे तेलमें मिलाकर चाटनेसे प्राणनाशक श्वास भी आराम हो जाता है।

नोट—हमने इसे कड़वे तेलमें नहीं आज़माया, तिली या अलसीके तेलमें आज़माया है। उत्तम चीज़ है। अलसीके तेलमें चाटनेसे कफको अवश्य छुड़ा देता है। पाठक सरसोंके तेलमें भी आज़मा देखें।

बहेड़ेका अवलेह।

६४ तोले बहेड़ोंकी गुठली निकाल फेंको, और छिलकोंको तीन सेर बकरेके पेशाबमें पकाओ; जब गाढ़ा शीरा-सा हो जाय, उतार लो। शीतल हो जानेपर, उसमें शीरेके बराबर "शहद" मिला दो और रख दो। इसमेंसे तोले-तोले-भर चाटनेसे श्वास-खाँसी आराम हो जाते हैं। अच्छा नुसखा है।

श्वास कुठार रस।

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, शुद्ध मीठा तेलिया विष १ तोले, भुना सुहागा १ तोले, शुद्ध मैनसिल १ तोले, कालीमिर्च ८ तोले और त्रिकुटा २ तोले लो। इनमेंसे पहले पारे और गन्धकको १२ घण्टे तक घोट लो। जब कज्जलीमें चमक न रहे, उसमें बाक़ी चीज़ें डालकर फिर १२ घण्टे तक खरल करो। यही "श्वास कुठार रस" है। इसमेंसे दो रत्ती-भर रस पानमें धरकर खानेसे श्वास रोग नाश हो जाता है। यह रस "भावप्रकाश" और "वैद्यविनोद" प्रभृति ग्रन्थोंमें लिखा है। रस-वैद्य इससे खूब काम लेते हैं। हम तो जब तेल, घी, चूर्ण और अवलेह आदिसे लाभ नहीं होता, तब रस देते हैं; क्योंकि आजकलके प्रमेही और सोज़ाकी रोगी रसोंको

सहने योग्य नहीं । हाँ, हम यह कह सकते हैं, कि यह रस उत्तम है। कई बारका परीक्षित है।

सूर्य्यावर्त्त रस ।

शुद्ध पारा १ तोले और शुद्ध गंधक ६ माशे—इन दोनोंको पहले खरल कर लो; पीछे इसमें "ग्वारपाठेका रस" दे-दे कर घोटो। इसके बाद, १।। तोले ताम्बेके पतले पत्तर लाकर, उनपर इसका लेप कर दो और सुखा लो।

फिर एक हाँडीमें इन पत्रोंको रखकर, हाँडीका मुख वन्द कर दो और कपड़मिट्टी करके, कण्डोंकी आगमें १२ घण्टे तक पकाओ। जब आग शीतल हो जाय, हाँडीको निकाल लो। हाँडीसे रस निकालकर खरल कर लो, जब चूर्ण हो जाय रख लो। यही "सूर्यावर्त्त रस" है। इसकी मात्रा दो रत्तीकी है। इससे श्वास नाश हो जाता है। सुना है, यह रस बहुत ही अच्छा है। पर हमने कभी नहीं आजमाया।

कालेश्वर रस ।

दस आँचकी वंगेश्वर ६ माशे, कान्तीसार ६ माशे, ताम्बा-भस्म ६ माशे, १०० आँचकी अभ्रक-भस्म ६ माशे, चन्द्रोदय रस ६ माशे, शुद्ध आमलासार गन्धक ६ माशे, सोनामक्खीकी भस्म ६ माशे और शुद्ध सिमरख ६ माशे—सबको मिलाकर खरल कर लो।

फिर लौंग ६ माशे, जायफल ६ माशे, छोटी इलायची ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, शुद्ध सींगिया विष ६ माशे, शुद्ध काले धतूरेके बीज ६ माशे, शुद्ध जमालगोटा ६ माशे, भुना सुहागा ६ माशे और छोटी पीपर आठ तोले—इन सबको पीस-कूट कर छान लो।

फिर ऊपरकी भस्मों और उनसे नीचेके लौंग वग़ैरहके चूर्णको मिला लो और एक-एक दिन नीचेकी चीजोंमें खरल करोः—

(१) एक दिन अड़ूसेके पत्तोंके रसमें घोटो।

(२) एक दिन निगुण्डीके रसमें घोटो।

(३) एक दिन चिचरीके रसमें घोटो।

(४) एक दिन भाँगके रसमें घोटो।

(५) एक दिन भाँगरेके स्वरसमें घोटो।

हरेक रसमें दिन-भर घोट कर रातको सुखा दो, दूसरे दिन दूसरे रसमें घोटो। जब सब रसोंमें घोट चुको, रख दो। यही "कालेश्वर रस" है।

इस रसकी मात्रा एकसे दो रत्ती तक है। प्रत्येक मात्रा ३ माशे "शहद" में मिला कर, सवेरे-शाम, चाटनी होती है। खूब याद रखो, इस रससे श्लेष्माधिक्य या कफ प्रधान श्वास अवश्य नाश हो जाता है। सच पूछो तो कफके श्वासपर यह रस अमृत है,पर वातपित्तके श्वास पर साक्षात् विष है। ऊपर लिखी मात्रा शास्त्रोक्त है। आजकल इसकी इतनी मात्रा सह लेना खेल नहीं है। पहलेके बलवानोंके लिए यही मात्रा ठीक थी। आजकल तो १ या २ चाँवलसे १ रत्ती तककी मात्रा काफी है। कुछ दिन लगातार सेवन करनेसे लाभ होता है और होता है। सुपरीक्षित है।

शृंग्यादि चूर्ण।

काकड़ासिंगी, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, हरड़का छिलका, बहेड़ेका बक्कल, बिना बीजके आमले, भटकटैया या कंटकारीका पञ्चांग, भारंगी, कूट, जटामासी और पाँचों नोन,—सबको समान-समान लेकर, पीस-छान लो। यही "शृंग्यादि चूर्ण" है। वृन्दने इसकी खूब तारीफ की है। परीक्षामें भी उत्तम पाया गया है। इसके सवेरे-शाम, गरम जलके साथ, खानेसे श्वास, ऊर्द्ध्ववात, खाँसी, अरुचि, और पीनस रोग नाश हो जाते हैं।

इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। इसमें हमने यह बड़ी खूबी देखी, कि यह कफको शीघ्र ही छातीसे छुड़ा कर श्वासको नाश कर देता है। हिचकीपर भी उत्तम है। परीक्षित है।

त्रिकटु बटी।

सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर और भुना सुहागा—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर पानोंके रसमें खरल करके, रत्ती-रत्ती-भरकी गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली दिनमें ३, ४ बार खाने से श्वास और कफ नाश हो जाता है। परीक्षित है।

फलत्रय बटी।

हरड़-बहेड़ेके बकले, बिना बीजके आमले, सोंठ, देवदारू, छोटी पीपर, वच, कालीमिर्च और नागबला—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको १८ घण्टे तक "काले धतूरेके रस" में और १८ घण्टे तक "भाँगरेके रस" में खरल करो और रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम और सोते समय, एक-एक गोली खानेसे श्वास और कफ-विकार नाश हो जाते हैं।

शट्यादि चूर्ण।

कचूर, कमलकन्द, गिलोय, दालचीनी, नागरमोथा, पोहकरमूल, तुलसी, भुइँ-आमला, छोटी इलायची, छोटी पीपर, सोंठ, काली अगर और भीमसेनी कपूर—इनको समान-समान लेकर चूर्ण बना लो; फिर छान कर चूर्णसे दूनी "साफ चीनी" मिला कर रख दो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। इससे श्वास और हिचकी नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

सितोपलादि चूर्ण।

मिश्री १६ तोले, वंसलोचन ८ तोले, छोटी पीपर ४ तोले, छोटी इलायची २ तोले और दालचीनी १ तोले—सबको पीस-छान कर रख दो। मात्रा १ से ३ माशे तक। ६ माशे घी और ३ माशे शहदमें, एक-एक मात्रा मिला कर चाटनेसे श्वास, खाँसी, क्षयी, दाह, हाथ-पाँवकी जलन, पसलीका दर्द, अरुचि, जीर्णज्वर और ऊपरका रक्त-पित्त ये नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

अकरकरादि बटी।

अकरकरा १ तोले, अपामार्ग १ तोले, हींग १ तोले, छोटी पीपर १ तोले, चनेकी दाल भुनी हुई १ तोले, शुद्ध अफीम ६ माशे और लौंग ६ माशे—इन सबको ज़रा-ज़रा कूट कर, २४ घण्टे तक, "आक या मदारके दूध" में भिगो दो।

फिर एक सेंहुड़का डण्डा लेकर, भीतरसे पोला करलो और उसके भीतर आकके दूधमें भीगी हुई दवा भर दो। फिर उसका मुख बन्द करके कपड़मिट्टी करदो। इसके बाद, सात सेर कण्डोंकी आगमें उस डण्डे को फूँक दो; पर दवा जलने न पावे। जब आग शीतल हो जाय, डण्डेको निकाल कर, उसमेंसे दवाको निकाल लो और खरलमें डालकर घोटो। घुट जानेपर चने-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके सवेरे-शाम खानेसे श्वास या दमा नाश हो जाता है। परीक्षित है।

पिप्पल्यादि बटी।

छोटी पीपर ६ माशे, हरड़का छिलका १३॥ माशे, बहेड़ेका बकला १८ माशे, अड़ूसेकी पत्ती २२॥ माशे और भारंगी २७ माशे—इन सबको कूट-पीस कर छान लो। फिर इस चूर्णमें ४॥ माशे उत्तम "बंगभस्म" मिला दो और "बबूलकी छालके काढ़े" में २४ घण्टों तक घोटो। इसके बाद २४ घण्टों तक "शहद" में घोटो और जंगली बेरके समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम, एक-एक गोली खानेसे श्वास, खाँसी और क्षयी रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

कंटकारी क्वाथ।

कंटकारी, अड़ूसा, छोटी पीपर, सोंठ, धाय के फूल, पोस्तके डोडे और बबूलकी छाल—इनको ३।३ माशे लेकर कुचल लो और तीन पाव पानीमें काढ़ा बनाओ। जब डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, मल-छान लो और शीतल होनेपर ३।४ माशे "शहद" मिला कर, सवेरे-शाम पीओ।

इसके पीनेसे श्वास, खाँसी और ज्वरका अवश्य नाश हो जाता है; पर लगातार कई दिन तक पीना चाहिये। परीक्षित है।

शुंठ्यादि चूर्ण।

सोंठ, कालीमिर्च और छोटी पीपर बराबर-बराबर लेकर, २४ घण्टे तक, "बबूलकी छालके काढ़े" में खरल करो; फिर २४ घण्टे तक "भटकटैयाके पञ्चांगके काढ़े" में खरल करो और फिर २४ घण्टे तक "धवके काढ़े" में खरल करो और सुखा लो। शेषमें, चूर्णके बराबर "पिसी हुई मिश्री" मिला दो और रख दो। इसको "शहद" में मिला कर चाटनेसे श्वास, खाँसी और पित्त ज्वर नष्ट हो जाते हैं। मात्रा ३ से ६ माशे तक।

शर्बत पान।

बंगला पानोंका स्वरस आध सेर, अदरखका स्वरस आध सेर, अनारका रस आध सेर, छोटी पीपर सात तोले और कालीमिर्च ५ तोले—इन सबको मिला लो और सवा सेर उत्तम "बूरा" डाल कर चाशनी कर लो; पर चाशनी बहुत गाढ़ी न होने पावे। सवेरे-शाम, एक-एक तोले शर्बत चाटनेसे सब तरहके ज्वर, श्वास, खाँसी नाश होते और भूख बढ़ती है; पर पथ्यकी दरकार है। यह शर्बत बालक, स्त्री, बूढ़े और जवान सबको उत्तम है। परीक्षित है।

शृङ्गवेरादि रस।

अदरखका स्वरस १ छटाँक, प्याजका रस १ छटाँक, लहसनका रस १ छटाँक, घीग्वारका रस १ छटाँक और शहद १ छटाँक—सब को एक चीनीके बर्तनमें भर कर, मुँह बन्द करदो और जमीनमें गढ़ा खोदकर, तीन दिन तक, गाढ़े रहो। चौथे दिन जमीनसे निकाल कर रखदो। यह नुसखा हिकमतका है, पर हमने आजमाया है। इसकी मात्रा १ कौड़ी भर या ३ माशेकी है। इसके बराबर १५ दिन, २१ दिन या १ महीने खानेसे श्वास रोग समूल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

श्वास नाशक लपसी।

गेहूँका सत्त १ छटाँक, चीनी आध पाव, पोस्तेके दाने १ तोले, मीठे कद्दू या लौकीके बीजोंकी मींगी १ तोले और पानी आध सेर—इन सबको क़लईदार कढ़ाहीमें डालकर पकाओ और लपसीसी बनालो। इसके खानेसे श्वास, खाँसी, कलेजेका दर्द, जीर्णज्वर और आँतोंकी गाँठ—ये रोग नष्ट हो जाते हैं तथा शरीर और दिमाग़में तरी और ताक़त आती है। परीक्षित है।

श्वासान्तक लेह।

खसखसके दाने डेढ़ पाव और पोस्तके डोडे एक छटाँक—इन दोनोंको, रातके समय, एक मिट्टीके बर्तनमें, सेर भर पानीमें भिगो दो। सवेरे ही मसालेको सिलपर पीसकर, उसी पानीमें घोल दो और कपड़ेमें छान लो।

इस दूध-जैसे पदार्थको कलईदार कढ़ाहीमें डालकर आग पर पकाओ। जब कुछ गाढ़ा होनेपर आवे, इसमें तीन पाव "मिश्री" पीस कर मिला दो और पकाओ। जब चाटने योग्य हो जाय, इसमें १ छटाँक "मुलेठी का पिसा-छना चूर्ण" भी मिलादो और उतार लो। कढ़ाही से निकालकर काँचके बर्तनमें रखदो और ढक्कन लगादो।

इसकी मात्रा ४ माशेकी है। सवेरे-शाम दोनों समय चाटना चाहिये। इसके खानेसे अत्यन्त बढ़ा हुआ श्वास फौरन दब जाता है। तत्काल फल दिखाने वाली चीज़ है। परीक्षित है।

नोट—इस लेहको सवेरे-शाम चटाओ और कुछ सूखे आमलोंको एक तरफ से आग पर भूनलो। जब श्वासका ज़ोर हो, आमलोंको चूसो। इस उपायसे भयंकर श्वास-वेग भी दब जाता है। जब तक खटाई नहीं खाई जाती, श्वास ज़ोर नहीं करता। ये दोनों नुसखे परीक्षित हैं, पर हमारे नहीं एक और विद्वान् मित्र के।

अर्कादि बटी।

आकके फूल ६ और कालीमिर्च ६—इन दोनोंको पीसकर चने-

समान गोलियाँ बनालो। दिन-भरमें दो-तीन गोली खानेसे कफकी अधिकता वाला श्वास आराम हो जाता है। परीक्षित है, पर हमारा नहीं, एक और विद्वान् सज्जन का।

श्वासान्तक चूर्ण।

सफेद दक्खनी गोल मिर्च एक छटाँक लाकर रखलो। फिर १ मिट्टीके कुल्हड़ेको आगमें लाल-सुर्ख कर लो। जब लाल हो जाय, उसमें ऊपरकी सफेद मिर्च डालकर खूब हिलाओ। जब मिर्चें अच्छी तरह भुन जाँय, पीस लो। फिर मिर्चोंके चूर्णमें १ छटाँक पिसी हुई "मिश्री" भी मिला दो और कपड़ेमें छान कर रख दो। इसमेंसे एक-एक माशे चूर्ण दिनमें ४।५ बार खानेसे श्वासमें बहुत ही लाभ होता है। एक राजवैद्यजी का परीक्षित योग है।

श्वास नाशक शर्बत।

गूलरके पके हुए फल ३ सेर और गूलरकी छाल ३ सेर—लेकर कुचल लो और बारह सेर पानीमें ४८ घण्टे तक भिगो रखो। इसके बाद औटाओ; जब तीन सेर पानी रह जाय, उसमें बम्बईकी लाल दानेदार खजूरकी खाँड़ ३ सेर डालकर पकाते रहो। जब शर्बतकी सी चाशनी हो जाय, उतार कर छान लो। दिनमें ३ बार, दो-दो तोले, चाटनेसे श्वास दब जाता है।

श्वास नाशक चूर्ण।

भटकटैयाके पञ्चाँगको छायामें सुखा कर पीस-छान लो। इस चूर्णमेंसे ४ या ६ माशे चूर्ण लो। उसमें एक रत्ती "रस सिन्दूर" मिला दो और दोनोंको ६ माशे शहदमें मिला कर चाटो। इस तरह दोनों समय सेवन करनेसे श्वास और खाँसीमें बड़ा लाभ होता है। पराया परीक्षित है।

नोट—इसको शहदके बजाय सरसोंके तेलमें भी चाटते हैं।

दमेकी अकसीर दवा।

एक सेर बहेड़ेके छिलकोंको तीन सेर जलमें पकाओ, जब दो सेर पानी बाक़ी रह जाय, उतार कर छान लो। फिर उस काढ़ेको एक मिट्टीके बर्तनमें भर कर आगपर चढ़ाओ। शुद्ध तूतिया १ माशे, अड़ूसेका खार १॥ तोले, नागकेशर १॥ तोले और चिरचिरेका खार १॥ तोले—इन चारोंको एक कपड़ेमें बाँध कर पोटली बना लो। हाँडीपर एक आड़ी लकड़ी रख कर, उस लकड़ीमें पोटलीको इस तरह लटका दो, कि पोटली काढ़ेके भीतर हाँडीमें रहे। नीचेसे मन्दी-मन्दी आग लगने दो। जब सारा पानी जल जाय, नाम भी न रहे, पोटलीको निकाल कर अलग रख दो। हाँडीके पैंदेमें जो दवा जमी हुई मिले, उसे खुरच कर रख लो। इसमेंसे चार-चार रत्ती दवा, सवेरे-शाम, बताशेमें धर कर खाओ। यह दवा साँस रोगमें अकसीरका काम करती है। हकीम बलदेवप्रसादजीकी परीक्षित है।

श्वासका अपूर्व नुसख़ा।

रविवारके दिन, सवेरे ही, छोटी दुद्धी लाकर, उसमेंसे ६ माशे तोल लो और सफ़ेद जीरा ३ माशे ले लो। दोनोंको सिलपर पीस कर और पानीमें घोल कर पी लो। उस दिन, सिर्फ़ एक बार, दहीमें चूरा भिगो कर इच्छानुसार खाओ।

इसके बाद, सोमवारको दवा मत खाओ। मंगलको फिर इसी तरह दवा सेवन करो और दही चूरा खाओ।

फिर बुद्ध, बृहस्पति, शुक्र और शनिको दवा मत खाओ। फिर रविवारको उसी तरह दवा खाओ और दही चूरेका भोजन करो।

इस तरह ३ दिन मात्र दवा खानेसे पुरानेसे पुराना दमा निश्चय ही चला जाता है। किन्तु इस दवाको खाकर भाँग, तमाखू, गाँजा, चरस, शराव और अफीम आदि नशीली चीजें जन्म भरको छोड़ दो।

अगर इन्हें सेवन करोगे, तो फिर श्वास वैसाका वैसा हो जायगा। परीक्षित है।

नोट—दुद्धी कंकरीली धरतीमें पैदा होती है। उसके पत्ते बहुत छोटे-छोटे और लाली लिये होते हैं और उसमें से दूध निकलता है।

श्वासारि अवलेह।

कटेरीका स्वरस आध सेर, अडूसेका स्वरस आध सेर, मुनक्कों का काढ़ा आध सेर और मिश्री आध सेर—इन सबको मिला कर पकाओ। जब अवलेह के समान हो जाय, उतार कर नीचे रख लो और मुलेठीका चूर्ण १ तोले, असगंधका चूर्ण १ तोले, छोटी पीपरों का चूर्ण १ तोले, भारंगीका चूर्ण १ तोले, वंसलोचनका चूर्ण १ तोले और सूखे आमलोंका चूर्ण १ तोले और आध सेर शहद—ये सब मिला दो और साफ बर्तनमें रख दो।

इसमें से एक-एक तोले चूर्ण सवेरे, दोपहर और शाम को चाटो। इससे श्वास, खाँसी और क्षयज खाँसीका वेग फौरन ही शान्त होता है। पराया और हमारा दोनोंका परीक्षित है।

नोट—धतूरेके फूल लाकर छाया में सुखा लो और पीसकर रख लो। इसमें से थोड़ा-सा चूर्ण काग़ज़में रख कर बीड़ी-सी बनालो और दियासलाई दिखाकर सिगरेट-बीड़ीकी तरह पीओ। इससे श्वासका ज़ोर तत्काल दब जाता है। परीक्षित है।

कनकबीज योग।

काले धतूरेके शुद्ध बीज, हर दिन पाँच-पाँच बढ़ाकर १ महीने तक खानेसे श्वास रोग नाश हो जाता है। पहले दिन ५, दूसरे दिन १०, तीसरे दिन १५, बस इसी तरह बढ़ावे। यही "कनकबीज योग" है। हमने परीक्षा नहीं की है, पर हमें विश्वास है उत्तम होगा। किन्तु आजकलके लोग इसे इस तरह सेवन न कर सकेंगे, अतः पहले दिन ५ बीज खाने चाहियें, दूसरे दिन ६ बीज, तीसरे दिन सात—इस तरह तीस दिन तक एक-एक बीज बढ़ाकर खाना

चाहिये। तीस दिन बाद एक-एक घटाकर लेना चाहिये; यानी इकत्तीसवें दिन २६, ३२ वें दिन २८। इस तरह जब रोगी फिर एक बीज पर आ जायगा, दमा जाता रहेगा। यह पिछली विधि हमारे कई वैद्य-मित्रोंने परीक्षा कर देखी है।

लोहासव।

लोह चूर्ण ४ तोले, त्रिकुटा १२ तोले, त्रिफला १२ तोले, अजवायन ४ तोले, चीता ४ तोले, बायबिडंग ४ तोले, नागरमोथा ४ तोले, शहद ६४ तोले और पुराना गुड़ १०० तोले—इन सबको कूट-पीसकर एक मिट्टी के घड़ेमें भरो और ऊपरसे २० सेर पानी डाल दो। फिर मुँह बन्द करके ४० दिन तक जमीनमें गाड़े रहो। घड़ेके नीचे-ऊपर अगल-बगल घोड़ेकी लीद भर दो। ४१ वें दिन घड़ा निकाल कर अर्कको छान लो। सवेरे ही, इसमें से २ से ४ तोले तक अर्क पीनेसे श्वास, खाँसी, भगन्दर, संग्रहणी, पाण्डु, और सूजन नाश होकर अग्नि तेज होती है।

श्वास या दमेपर ग़रीबी नुसख़े।

(१) अदरखका स्वरस ६ माशे और शहद ६ माशे, दोनोंको मिलाकर पीनेसे श्वास, खाँसी और कफका नाश होता है। श्वासके दौरे के समय, अगर यही नुसख़ा दिया जाय तो बड़ा लाभ हो। परीक्षित है।

(२) पेठेकी जड़का स्वरस १ तोले अथवा पेठेकी जड़का चूर्ण या पेठेके पत्तोंका चूर्ण, गरम पानीके साथ, खानेसे श्वास और खाँसी शीघ्र ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) वाग्भट्ट और वृन्दने कहा है, १ तोले गुड़ और १ तोले सरसोंके तेलको खूब मथ-मिलाकर २१ या ६० दिन चाटने से श्वास रोग जड़से चला जाता है। कई बार परीक्षा की है।

(४) "इलाजुल गुर्बा" में लिखा है, अरीठेकी मींगी ६ माशे नित्य सवेरे ही १५ दिन तक खानेसे श्वास चला जाता है। परीक्षित है।

(५) बेलपत्रोंका स्वरस ६ माशे, अड़ूसेके पत्तोंका स्वरस ६ माशे और सरसोंका तेल ६ माशे—सबको मिलाकर ७ दिन तक पीने से घोर श्वास रोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(६) दशमूलके काढ़ेमें पोहकरमूलका चूर्ण मिला कर पीने से श्वास नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(७) शुद्ध आमलासार गन्धक ३ माशे और कालीमिर्च ३ माशे—इनको मिलाकर, एक तोले गायके घीमें एक-दिल कर लो और १५ दिन चाटो। इससे श्वास, खाँसी और यक्ष्मारोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८) कुलथी, काकड़ासिंगी, अड़ूसा और सोंठ इनको कुल २ तोले लेकर, ३२ तोले जलमें काढ़ा बनाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, मल-छान कर रख लो। फिर उसमें ४ माशे पोहकरमूलका चूर्ण मिलाकर पी लो। इसके सवेरे-शाम पीनेसे श्वास, खाँसी, हिचकी, अरुचि और पीनस रोग शीघ्र ही चले जाते हैं। उत्तम नुसख़ा है।

(९) बड़ी सीपीको जला कर राख कर लो। फिर उसे अदरखके रसमें खरल करके, चने-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खानेसे श्वास नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१०) आकका पत्ता एक और कालीमिर्च २५—इनको पीस कर उड़द-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे ही जवानको ६ गोली और बालकको १ गोली देनेसे श्वास नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(११) आगपर फुलाई हुई फिटकिरी २ तोले और मिश्री २ तोले—दोनोंको पीसकर रखलो। १ या २ माशे सवेरे ही रोज खाने से श्वास रोग चला जाता है। परीक्षित है।

(१२) पियाबाँसेकी जड़ छायामें सुखाकर महीन पीस लो। इसमेंसे ४ माशे हर दिन सवेरे ही खानेसे दमेका रोग चला जाता है।

(१३) कुलथी, सोंठ, कटेहली, अड़ूसा और पोहकरमूलको कुल २ तोले लेकर काढ़ा बनालो। इसके पीने से श्वास और हिचकी नाश हो जाते हैं।

(१४) परवलके पत्ते, सहँजना या सूखी मूली—इन तीनोंमें से किसी एकके काढ़ेके योगसे बनाया हुआ "यूष" हिचकी और श्वासको नाश करता है।

(१५) मदारकी जड़ ३ तोले, अजवायन २ तोले और गुड़ ५ तोले—सबको पीसकर, जंगली बेरके समान गोलियाँ बना लो। हर दिन सवेरे ही दो गोलियाँ खानेसे दमा या श्वास चला जाता है। परीक्षित है।

(१६) बारहसिंगेका सींग जला कर राख कर लो। इसमेंसे १ माशे राख ३ माशे शहदमें मिलाकर पहले दिन चाटो। दूसरे दिन २ माशे, तीसरे दिन ३ माशे, इस तरह १२ दिन तक एक-एक माशे बढ़ाते रहो। जब बारहवें दिन १२ माशे या १ तोला हो जावे, फिर न बढ़ाओ। बस, श्वास आराम हो जायगा। परीक्षित है।

(१७) एक जमालगोटा छील कर, उसकी मींगीको दीपक पर जलाओ। जब राख हो जाय, पीस कर ४ मात्रा कर लो। हर दिन एक "मात्रा" बँगला पानमें रख कर खाओ। इससे छाती और गले का कफ छूट कर दमा रोग आराम हो जाता है।

(१८) थूहरका मोटा डण्डा लाकर उसे एक तरफ़से पोला कर लो। फिर उसमें एक छटाँक-भर फिटकरी भर दो और मुँह बन्द करके कपरौटी कर दो। फिर कण्डोंकी आगमें डण्डेको रखकर जलाओ। आग शीतल होने पर, डण्डेसे फिटकरी निकाल लो। इसमेंसे २ रत्ती रोज पानमें धरकर खानेसे १५।२० दिनमें दमा चला जाता है। परीक्षित है।

(१९) छोटी इलायचीके बीज १ माशे और मालकांगनी १ माशे—दोनोंको बिना चबाये ही निगल जानेसे ११ दिनमें दमा जाता रहता है।

(२०) पीपर और पोहकरमूल शहदमें चाटनेसे श्वास रोग चला जाता है।

(२१) कैथका रस शहदमें मिलाकर चाटनेसे दमा जाता रहता है।

(२२) कैंथके रसमें आमले, पीपर और सेंधानोन मिला कर चाटनेसे श्वास रोग जाता रहता है।

(२३) गेरू, रसौत और छोटी पीपर शहदमें मिला कर चाटनेसे श्वास रोग जाता रहता है।

(२४) कचूर, पोहकरमूल और आमले "शहद" में मिलाकर चाटनेसे श्वास रोग जाता रहता है।

(२५) गाय, हाथी, घोड़ा, सूअर, ऊँट, गधा, मेंढ़ा और बकरा इन जानवरोंकी विष्ठामेंसे किसी एककी विष्ठाका रस निचोड़कर और उसमें "शहद" मिलाकर चाटनेसे श्वास रोग चला जाता है। जिसके गले और छातीमें कफ बहुत ही अधिक हो, उसको यह नुसख़ा उत्तम है।

(२६) पीपर, पीपरामूल, हरड़, चीता और बायबिडंग—इनको समान-समान लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर इसे

घीकी हाँडीके भीतर ल्हेसकर सुखा लो । सूखनेपर हाँडीमें माठा भर दो और एक महीने तक एक जगह रखा रहने दो । यह माठा अग्नि दीपक और श्वास-खाँसी नाशक है ।

(२७) कालीमिर्च और हल्दी समान-समान लेकर पीस-छान लो । इसकी मात्रा ३ माशे की है । एक-एक मात्रा ३ माशे शहद और ३ माशे मिश्रीमें मिला कर चाटनेसे सब तरहके श्वास और पेटका भयंकर अफारा—आराम हो जाते हैं ।

(२८) भारंगीको ना-बराबर शहद और घीमें चाटनेसे श्वास जाता रहता है ।

(२९) शहद मिलाकर जौ की धानी चबानेसे श्वास रोग आराम हो जाता है ।

(३०) नीमके बीज और कदमके बीज पीस कर और "शहद" में मिला कर चाटने और ऊपरसे चाँवलोंका भिगोया पानी पीनेसे श्वास रोग जाता रहता है ।

(३१) आकके नर्म-नर्म पत्तोंका रस निकाल कर, उस रसमें जौ भिगो कर सुखा लो और फिर सत्तू बनाओ । इस सत्तूको शहदके साथ खानेसे श्वास जाता रहता है ।

(३२) आकका नर्म-से-नर्म छोटा पत्ता नग १ पानमें रख कर खाओ । तीन दिन तक एक-एक पत्ता खाओ । बाद तीन दिनके हर दिन आधा-आधा पत्ता नित्य बढ़ाओ । इस तरह ४० दिन पत्ते खानेसे श्वास अवश्य आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

(३३) आकके पके हुए पीले पत्ते, जो अपने आप ज़मीनमें गिर गये हों, एक सेर ले आओ । एक तोले चूना और १ तोले सेंधा-नोन पानीके साथ पीस कर, उन पत्तोंके दोनों तरफ लीप दो और छायामें सुखा लो ।

फिर उन पत्तोंको एक हाँडीमें भर कर, हाँडीका मुख बन्द कर

दो। फिर कण्डोंकी आगमें हाँडीको रख कर ३ घण्टे तक पकाओ। पीछे शीतल होने पर हाँडीसे भस्मको निकाल लो।

इसमें से १ रत्ती भस्म पानमें रख कर नित्य खानेसे श्वास रोग चला जाता है। परीक्षित है।

(३४) अड़ूसेके बीज, नकछिकनी और बँगला पान—इनको बराबर-बराबर लेकर आगपर भून लो और रख लो। इनमें से चार रत्ती दवा बँगला पानमें रख कर, रोज़ सवेरे, खानेसे भयंकर श्वास रोग भी नष्ट हो जाता है। इस दवाके अजीब फ़ायदेको देख कर रोगी चकित हो उठता है। परीक्षित है।

(३५) "सुश्रुत" में लिखा है, गायके गोबर का रस या घोड़ेकी लीदका रस "शहद और पीपर" मिला कर चाटनेसे श्वास और खाँसी आराम हो जाते हैं।

(३६) आमले और छोटी कटेली समान-समान लेकर पीस लो। फिर उसमें आधी हींग मिला दो। इसको शहदके साथ चाटनेसे श्वास रोगी ३ दिनमें जबर्दस्ती आराम हो जाता है।

(३७) अलसी ३ माशे और इस्पन्द ३ माशे दोनोंको पीस कर और १ तोले शहदमें मिला कर, हर दिन चाटने से छाती और गले का कफ नाश होकर दमा आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३८) ३ तोले भुना हुआ सुहागा, ४ तोले शहदमें मिला कर रखदो। इसमें से ३ माशे दवा रातको सोते समय चाटने से १५ दिनमें श्वास जाता रहता है। परीक्षित है।

(३९) एलुआ और कालीमिर्चें बराबर-बराबर लेकर, अदरखके स्वरसमें घोट कर, उड़द-समान गोलियाँ बनालो। सवेरे ही नित्य १ या २ गोली खानेसे दमा दूर हो जाता है।

(४०) रेवन्दचीनी, एलुआ और भुना सुहागा—समान-समान लेकर, कसौंदीके रसमें घोट कर, चने-समान गोलियाँ बना कर

२७

छायामें सुखा लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खानेसे श्वास चला जाता है। परीक्षित है।

(४१) शुद्ध नीलाथोथा १ माशे और गुड़ १ माशे—दोनोंको मिला कर सात गोलियाँ बना लो। सात दिन तक बराबर एक गोली रोज़ खाने से २० बरस का पुराना दमा भी चला जाता है।

नोट—पहले तीन दिन उपद्रव होंगे, यानी दस्त और कय होंगे, जी घबरावेगा, और दाह होगा। जब बहुत ही बेचैनी हो, तब मूँग चाँवलकी खिचड़ी में आध पाव घी डाल कर रोगीको खिला दो। ३ दिन के बाद चौथे दिन दस्त, कय और बेचैनी न रहेगी; इसलिए पहले दिन ही घबराकर दवा मत छोड़ देना। ३ दिन दुःखदायी हैं; पर परिणाम में परम सुखदायी हैं।

(४२) कायफलकी छालके रसमें राई मिला कर खानेसे श्वास आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४३) कौंचके बीजों का चूर्ण सवेरे ही ना-बराबर घी और शहद में चाटने से श्वास आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४४) केलेके भीतरका रेशे वाला हिस्सा कुरेद कर, उसमें कुछ काली मिर्च रख दो। सवेरे ही उन्हें केलेसे निकाल कर मन्दी आग पर भूनो और खालो। इस उपायसे श्वास चला जाता है।

(४५) एक माशे जायफल और एक माशे लौंगके चूर्णमें ३ माशे शहद और १ रत्ती वंगभस्म मिला कर खानेसे श्वास चला जाता है। परीक्षित है।

(४६) बायबिडंग, सोंठ, काली मिर्च और छोटी पीपर पीस-छान कर रख लो। इस डेढ़ माशे चूर्णमें ४ माशे शहद और १ या २ रत्ती अभ्रक भस्म मिला कर खानेसे श्वास, खाँसी, शूल, आम, संग्रहणी, क्षय, कोढ़, प्रमेह, मन्दाग्नि और पेटके रोग नाश होकर वीर्य बढ़ता है। अनेक बारका परीक्षित है।

(४७) ३ माशे शहद और १॥ माशे पीपरके चूर्णमें एक या दो रत्ती अभ्रक भस्म मिला कर खानेसे श्वास, क्षतक्षय, कफक्षय, वात,

पित्त, कफ, प्रमेह, विषरोग, पाण्डु और भ्रम रोग नाश होते हैं। परीक्षित है।

(४८) केला, कुन्द और सिरस—इन तीनोंके फूलोंको छोटी पीपरोंके साथ पीस कर, चाँवलोंके पानीके साथ पीनेसे श्वास रोग नाश हो जाता है। यह नुसखा "सुश्रुत" और "भावप्रकाश" दोनों ही ग्रन्थोंमें है।

(४९) तमाखूके पत्तोंका स्वरस ६ माशे और गुड़ ६ माशे—इनको एकमें मिला कर, ३ दिन तक अलग रखा रहने दो; चौथे दिन से एक तोले दोनों समय खाओ; ५ दिनमें श्वास रोग अच्छा हो जायगा। परीक्षित है।

नोट—बुढ्ढे और कमज़ोर आदमियों को यह नुसखा न देना चाहिये; क्योंकि उन्हें इससे दस्त और क़य होने लगते हैं।

(५०) तुलसीके पत्तोंका स्वरस ४ माशे, पिसी हुई काली मिर्च एक माशे और घी ४ माशे—इन सबको मिलाकर नित्य खानेसे वात-कफके विकार श्वासादि नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(५१) सेंधानोन थोड़ासा लेकर महीन पीस-छान लो। फिर उसे गायके घीमें मिलाकर, बीच छातीसे कण्ठ तक मलो। इससे कफ हट जाता और श्वास रोग शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(५२) चूहेका पित्ता गुड़में लपेट कर निगल जानेसे ३ दिन में दमा या श्वास जड़से चला जाता है।

(५३) गुलाबी सज्जी आध पाव लेकर, छोटे-छोटे टुकड़े कर लो। फिर उन्हें आठ दिन तक "आकके दूध" में भिगो रखो; नवें दिन एक हाँडीमें भीगे हुए टुकड़े रखो और इतना आकका दूध भरदो, कि जिसमें सज्जीके टुकड़े डूब जाँय। फिर हाँडीका मुँह बन्द करके कपड़-मिट्टी करदो और आठ सेर जंगली कण्डोंके बीचमें रखकर फूँक दो। आग शीतल होने पर, हाँडीसे सज्जीको निकाल कर पीस लो

और रख दो। इसकी मात्रा २ से ४ माशे तक है। सवेरे-शाम एक-एक मात्रा घीके साथ खानेसे श्वास या दमा चला जाता है।

(५४) भुनी अलसी ३ तोले और कालीमिर्च १ तोले—दोनोंको पीसकर रखलो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण डेढ़ तोले "शहद" में मिला कर हर दिन सवेरे-शाम खानेसे श्वास रोग आराम हो जाता है तथा छाती और गलेका कफ दूर हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई मिर्चोंकी जगह "पोदीना" मिलाते हैं।

(५५) थोड़ासा काला नोन महीन पीसकर रखलो। पहले दिन २ माशे नमक रातको सोते समय फाँक लो। दूसरे दिन २॥ माशे और तीसरे दिन ३ माशे—इस तरह हर दिन आधा-आधा माशा नमक बढ़ाकर, रातको सोते समय खाओ। जब ६ माशे पर पहुँच जाओ, तब हर दिन ६ माशे रोज खाओ। अगर प्यास जियादा लगे, तो गरम पानी पीओ। इस नुसख़ेसे १ महीनेमें श्वास जड़से चला जाता है। परीक्षित है।

(५६) बनकेलेके पत्ते जलाकर राख करलो। इसकी मात्रा १ माशे की है। एक मात्रा राख, १ तोले शहदमें मिलाकर चाटने से हिचकी आराम होजाती है और कभी-कभी श्वासमें भी लाभ देखा गया है। परीक्षित है।

(५७) पिठवन, खिरेंटी और अड़ूसेका स्वरस पिलानेसे गर्भिणी स्त्रीका रक्तपित्त, सूजन, खाँसी, श्वास और ज्वर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(५८) कैथके स्वरसमें शहद और छोटी पीपरका चूर्ण मिला कर पीनेसे श्वास रोग जाता रहता है। परीक्षित है।

(५९) कसौंदीके पत्तोंका काढ़ा पीनेसे श्वास और हिचकी नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(६०) हरड़ और सोंठको समान-समान लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। यही कल्क है। ६ माशे कल्क खाकर, गरम जल पीनेसे श्वास और हिचकी नाश हो जाते हैं।

(६१) कूट और जवाखारको समान-समान लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर, कल्क या लुगदी कर लो। इस लुगदीको खाकर, गरम जल पीनेसे श्वास और हिचकी जाते रहते हैं।

(६२) कालीमिर्च और छोटी पीपरोंको समान-समान लेकर, पानीके साथ पीसकर, कल्क बना लो। इस कल्कको खाकर गरम पानी पीनेसे श्वास और हिचकी जाते रहते हैं।

नोट—नं० ६०, ६१ और ६२ तीनों नुसखे उत्तम हैं। अनेक बार अच्छा काम कर जाते हैं। मात्रा बलाबल अनुसार देनी चाहिये।

(६३) श्वास और हिचकी वाला जब-जब मारे प्यासके बेचैन हो जावे, उसे "दशमूलका काढ़ा" बारम्बार पिलाना चाहिये। वाग्भट्ट, वृन्द और अनेक दूसरे वैद्योंने इसे अच्छा लिखा है। युक्तिके साथ वारुणी मदिरा या शराब पिलाने अथवा देवदारुका काढ़ा पिलानेसे भी श्वास रोगीकी प्यास दब जाती है:—

दशमूलस्य वा क्वाथमथवा देवदारुणः।
पिबेद्वा वारुणी मंडं हिक्का श्वासी पिपासितः॥

(६४) भावमिश्रजी लिखते हैं—देवदारु, खिरेंटी और बालछड़को समान-समान लेकर, पानीके साथ पीस कर बत्ती बना लो। फिर उस बत्तीको घीमें सानकर, उसका धूआँ पीओ। इस तरहका धूआँ पीनेसे घोर श्वास भी शान्त हो जाता है।

(६५) "सुश्रुत"में लिखा है, शुद्ध मैनसिल, देवदारु, हल्दी, पत्रज, शुद्ध गूगल, लाख और लाल अरण्डकी जड़—समान-समान लेकर पानीके साथ पीस कर बत्ती बना लो। इस बत्तीका धूआँ पीनेसे श्वास रोग जाता रहता है।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है—वात-कफका ज़ोर हो तथा विवन्ध हो, तो वैद्य रोगीको धूमपान करावे:—वातश्लेष्म विवन्धोवा भिषक् धूमं प्रयोजयेत्।

(६६) वाग्भट्ट भी कहते हैं, छोटे-छोटे छेदोंमें रुके हुए या चिपके हुए मलोंको धूमपान कराकर या धूआँ पिला कर निकालना चाहिये:—

हल्दीके पत्ते, लाल अरण्डकी जड़, दाख, शुद्ध मैनसिल, देवदारु और बालछड़को पानीके साथ महीन पीस कर बत्ती बना लो। फिर इस बत्तीको घीमें चुपड़ कर, आग पर जलाओ और धूआँ पीओ। इस तरह धूआँ पीनेसे स्रोतों या छेदोंमें रुका हुआ कफ, पतला होकर, निकल जायगा और हवाके आने-जानेको राह मिल जायगी, अतः श्वास रोग जाता रहेगा।

(६७) मोम, राल और घीको मिला कर, आगमें डालो और धूआँ पीओ। अथवा चन्दनके बुरादेको आगमें डाल कर धूआँ पीओ। अथवा गायके सींगका चूरा आगमें डाल कर धूआँ पीओ। अथवा गूगलको आगमें डाल कर धूआँ पीओ। अथवा शुद्ध मैन-सिलको आगमें डाल कर धूआँ पीओ।

(६८) छोटी पीपर, बिना बीजके आमले और सोंठ—इनको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। इस चूर्णको "शहद और मिश्री" में मिला कर खानेसे श्वास और हिचकी नाश हो जाते हैं।

(६९) सोंठ और भारंगीको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको गरम पानीके साथ लेनेसे श्वास और हिचकी नाश हो जाते हैं।

(७०) सोंठ, मिश्री, भारंगी और काला नोन—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको गरम जलके साथ लेनेसे श्वास और हिचकी नाश हो जाते हैं।

(७१) काकड़ासिंगी, सोंठ, छोटी पीपर, कालीमिर्च, कचूर, कमल और पोहकरमूल-इनको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान

लो। मात्रा ३ माशेकी है। अनुपान गरम जल है। यह नुसख़ा खाँसी और श्वास पर उत्तम है। परीक्षित है।

(७२) भटकटैयाकी जड़ ६ माशे लेकर, उसके दो टुकड़े कर लो। एक टुकड़ेको दो माशे साँभर नमकके साथ चबा लो। इसके बाद दूसरा टुकड़ा भी चबा लो। इस दवासे वमन या कय होकर सारा कफ निकल जायगा और श्वास या दमा आराम हो जायगा। बहुत ही कमज़ोरको जो वमनसे घबराता हो, इसे सोच-समझ कर देना चाहिये। परीक्षित है।

(७३) दो माशे थूहरके दूधको थोड़ेसे आटेमें मिलाकर एक रोटी बना लो और उसे आग पर सेक लो।

जवान आदमीको इसमेंसे आधी टिकिया खिला दो। इसके खानेसे दस्त होंगे। जब सात दस्त होलें, रोगीको पाव भर उत्तम दही खिला दो। अगर दहीसे दस्त बन्द न हों, तो गायका उत्तम मक्खन २१ बार धोकर, छटाँक या आध पाव खिला दो; इसके बाद आधी रोटी फिर खिला दो और तीन दिन तक खूब नर्म और हलका भोजन दो। इस रोटीके खाने वालेको हवासे—बाहरी हवासे एक-दम बचाओ, अन्यथा उल्टी हानि होगी। इस उपायसे ७ दिनमें दमा चला जायगा। हमारा आज़माया नुसख़ा नहीं है, पर एक तजुर्बेकार हकीम इसे अपना आज़मूदा कहते हैं।

(७४) कायफल, सोंठ, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, भारङ्गी और छोटी पीपर—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। हरेक मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक शहद में मिलाकर चाटनेसे श्वास और कफज खाँसी आराम होते हैं। कफ नाश करनेमें यह नुसख़ा लाजवाब है। परीक्षित है।

(७५) कड़वा कूट दूने शहदमें मिलाकर चाटनेसे खाँसी और श्वास नाश हो जाते हैं।

(७६) बड़ी कटेरीकी जड़को कुचल कर दो तोले ले लो, फिर १ पाव पानीमें औटा लो। जब चौथाई पानी रह जाय, मल-छान कर पीलो। ग़रीबोंके श्वास नाशार्थ उत्तम योग है। अगर ६ माशे शहद भी मिला लिया जाय, तो और भी उत्तम हो।

(७७) बावची, हल्दी, छोटी पीपर, आमाहल्दी, कालीमिर्च, कालानोन, काला चीता और भुना सुहागा—प्रत्येक बीस-बीस माशे लो और सज्जी दश माशे लो—इनको पीस-छान कर रख लो। मात्रा ३० रत्ती या ४ माशे; अनुपान गरम जल। श्वास नाश करनेमें रामबाण है।

(७८) हरड़ और बहेड़ेके छिलके बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस-छान लो। सवेरे-शाम चार-चार माशे चूर्ण खानेसे श्वास रोग जाता रहता है।

(७९) इन्द्रायणकी जड़, पीपर और सज्जी बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। सवेरे-शाम, एक-एक माशे चूर्ण खानेसे श्वास रोग जाता रहता है।

(८०) तमाखूका गुल आगमें जला कर सफेद कर लो और पीस लो। उसमेंसे दो रत्ती रोज़ पानमें धर कर खानेसे श्वास चला जाता है, पर बादी और खट्टे पदार्थोंसे बचना ज़रूरी है।

(८१) तमाखूका गुल आगमें जला कर सफेद कर लो। फिर पानीमें महीन घोट कर पानीमें ही मिला दो और २४ घण्टे पड़ा रहने दो। दिनमें चार छै बार हिला अवश्य दो। दूसरे दिन कपड़ेमें छान कर पानी निकाल लो। इस पानीको आगपर औटाओ, जब सब पानी सूख कर नमक बन जाय, उसे रख लो। इसमेंसे दो रत्ती नित्य पानमें रख कर खाओ। इससे दमा नाश हो जाता है।

(८२) मदारकी आधी खिली कलियाँ ले आओ। हर कलीमें एक-एक कालीमिर्च भर दो। फिर सब कलियोंको एक कोरी हाँडी

में रख दो और ऊपरसे खारी नमककी तह बिछा दो। इसके बाद, हाँडीका मुख बन्द कर दो और हाँडीको तन्दूरमें रख दो। जब हाँडी लाल हो जाय, तन्दूरसे निकाल लो। ठण्डी होने पर, हाँडीका मुँह खोल कर भीतरसे दवाको निकाल लो और पीस कर रख लो। इसमें से चार रत्ती राख रोज़ सवेरे ही खानेसे श्वास रोग जाता रहता है। ग़रीबोंके लिये उत्तम नुसख़ा है।

(८३) विषखपरेकी जड़ १ माशे, पानमें रख कर २१ दिन खाने से श्वासमें लाभ होता है।

(८४) ईसबगोल एक तोले, सवेरे-शाम, चार महीने तक, फाँकने से सब तरहका असाध्य श्वास या दमा जड़से चला जाता है। परीक्षित है।

(८५) मकड़ीका जाला १ रत्ती लेकर १ माशे गुड़में मिला कर खाओ। यद्यपि यह दवा गरमी बहुत करती है, पर दमा नाश करनेमें रामबाण है। जिस दमेमें "कफ" बहुत हो, उसीमें देना ठीक होगा। परीक्षित है।

(८६) चिरचिरेका खार दो रत्ती पानमें रखकर खाने या एक माशे शहदमें मिलाकर चाटनेसे श्वास रोग निस्सन्देह चला जाता है और छाती पर जमा हुआ कफ शीघ्र ही छूट जाता है। परीक्षित है।

(८७) थूहरका खार दो रत्ती अथवा तमाखूका खार २ रत्ती अथवा आकका खार २ रत्ती पान या माशे भर शहदमें खानेसे श्वास नाश हो जाता है और गले तथा छाती का बलगम छूट जाता है।

नोट—चिरचिरेके, आकके या तमाखूके पत्ते अथवा उनका सर्व्वांग सुखा-कर आग लगा दो। जब राख हो जाय, समेट कर एक बर्तनमें रातको भिगो दो। सवेरे ही बर्तनमेंसे साफ जल नितार कर आगपर चढ़ा दो। जब पानी एक दम जल जाय, नाम भी न रहे, उतार लो। आपको उस बर्तनमें नमक या खार जमा

हुआ मिलेगा। उसे खुरच कर रख लो। इसी तरह आप हरेक चीज़का खार बना सकोगे।

(८८) समन्दर फल ५० और छोटी पीपर १०० दोनोंको किसी हाँडीमें रखकर, आग पर भस्म करलो। फिर शीतल होने पर निकाल कर रखदो। इसमें से एक माशे भस्म नित्य पानमें रखकर सवेरे-शाम खानेसे २१ दिनमें श्वास रोग चला जाता है। दो तीन बार परीक्षा की है।

(८९) मोरके नीले चाँदकी राख करलो। इसमेंसे एक रत्ती राख "शहद" में मिलाकर, दिनमें दो बार खानेसे श्वासमें जल्दी ही लाभ होता है।

(९०) करंजुवेकी गरी और छोटी पीपर—बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर उसे "अदरखके रस" में खरल करके काली-मिर्च समान गोलियाँ बनालो। दो तीन गोली नित्य सवेरे ही खानेसे श्वास रोग चला जाता है।

(९१) मदारकी बिना खिली कली दो माशे, छोटी पीपर एक माशे और लाहौरी नोन एक माशे—महीन पीसकर जंगली बेर समान गोलियाँ बनालो। सवेरे ही एक गोली नित्य खानेसे श्वास रोग निश्चय ही जाता रहता है।

(९२) हल्दी ४ माशे, राई ४ माशे, सज्जी ४ माशे और गुड़ १८ माशे—इनको कूट-पीसकर जंगली बेरके समान गोलियाँ बनालो। ४० दिन तक, सवेरे-शाम एक-एक गोली खानेसे श्वास रोग आराम हो जाता है।

(९३) एक मदारका पत्ता और २५ कालीमिर्च लेकर पीस लो और गोलमिर्च-समान गोलियाँ बना लो। जवान ७ गोली और बालक १ गोली नित्य खावे तो श्वास रोग जावे।

(९४) छोटी पीपर ४॥ माशे, कालीमिर्च ४॥ माशे, काकड़ासिंगी २। माशे, सफेद सज्जी १ माशे २ रत्ती और अफीम ४ रत्ती—इनको कूट-

पीसकर अदरखके रसमें खरल करो और जंगली बेर-समान गोलियाँ बनालो। सवेरे-शाम, एक-एक गोली खानेसे श्वास रोग जाता रहता है।

नोट—कहीं अदरख न मिले, तो २२ माशे सोंठ पीस कर मिला लेना और पानीमें खरल करके गोली बना लेना।

(६५) एलुआ, सफेद सज्जी, गोलमिर्च और हल्दी—समान समान लेकर, जंगली बेरके समान गोलियाँ बनालो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाकर गरम जल पीने से श्वास रोग जाता है।

(६६) अकरकरा, कालीमिर्च, अनारके छिलके, अजमोद, अड़ूसे के पत्ते, छोटी कटेरीकी जड़, बबूलकी छाल, सफेद सज्जी, लाहौरी नमक और साँभर नोन—सबको एक-एक माशे लो और शुद्ध अफीम २ माशे लो। सबको पीस-छानकर, अदरखके रसमें खरल करो और चने-समान गोलियाँ बनालो। एक-एक गोली मुँहमें रखकर चूसते रहनेसे कफकी खाँसी और श्वासमें बहुत फायदा होता है।

(६७) एलुआ, भुना सुहागा और मुरमक्की इनको कूट-छान कर, पानीके साथ चने-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम दो-दो गोली खानेसे श्वास या दमा जाता रहता है। बड़ी उत्तम दवा है।

(६८) एक कपड़ा पानीमें भिगोकर, उसमें १ तोले पीपर रख कर, उसे भूभलमें दाब दो और एक घण्टे बाद निकाल लो। फिर ऊपर की पीपल ४५ माशे, अकरकरा ४५ माशे, भुना सुहागा ३० माशे, कुलींजन ३० माशे और कालीमिर्च ३० माशे—सबको पीस-छान कर, घीग्वारके रसमें खरल करो और चने-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने से दमा जाता रहता है।

(६६) मुण्डी और कटेरीका रस समान-समान लेकर और उस रसमें थोड़ा-सा "शहद" मिलाकर पीनेसे श्वास और खाँसी रोग निश्चय ही आराम हो जाते हैं।

(१००) मुण्डी और अड़ूसेके पत्तोंका काढ़ा बनाकर और शहद मिला कर पीनेसे खाँसी और श्वास आराम हो जाते हैं।

(१०१) मुण्डीका रस १ पाव, अड़ूसेके पत्तोंका रस १ पाव, शुद्ध चीनी आध सेर और जल १ सेर—सबको एकत्र मिला कर पकाओ। जब पकते-पकते एक सेर पानी बाकी रह जाय, उतार कर छान लो और बोतलमें भर कर रख दो। इसमें से दो-दो तोले रस, सवेरे-शाम, सेवन करनेसे खाँसी, श्वास और फैंफड़ेके सब तरहके रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—मुण्डीके पञ्चांगको छायामें सुखाकर पीस-छान लो। फिर इसमें बराबर भाग मिश्री और घी मिला कर रख दो। इसमेंसे ६ माशे सवेरे और ६ माशे शामको गायके दूधके साथ नित्य नियम-पूर्वक सेवन करनेसे और दूध भात का भोजन करनेसे नेत्रोंकी दृष्टि खूब तेज़ हो जाती है, दाँत मज़बूत हो जाते हैं और बालोंका पकना दूर होकर बाल काले हो जाते हैं। मुण्डी रसायनके नियमित रूपसे शीतल जल, दूध, शहद या घीके साथ सेवन करनेसे रसायनके गुणों की वृद्धि होती और अनेक रोग नाश होते हैं।

(१०२) आमलासार गंधक शोधी हुई सात माशे और मिश्री १८ माशे इनको पीस कर "शहद" में मिलादो और रख दो। इसमें से दो माशे दवा पान पर रख कर खानेसे श्वास रोग जाता रहता है।

(१०३) करीलकी लकड़ी लाकर जला लो और राखको धर दो। इसमें से १ माशे राख नित्य खानेसे श्वास रोग जाता रहता है।

(१०४) अड़ूसा, कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, कालीमिर्च, कलौंजी, छोटी पीपर, भारंगी और कटेरीके बीज—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और अदरख के रसमें घोट कर गोलियाँ बना लो। इसकी मात्रा ४ माशे की है। श्वास और खाँसी पर उत्तम योग है।

(१०५) कसौंधी का हरा फल भून कर खानेसे दमा नाश हो जाता है।

(१०६) पुरानी खाँसीमें, विशेष कर क्षयकी खाँसीमें, ८।१० बूँद बड़का दूध नित्य खानेसे बड़ा लाभ होता है। चीनीमें मिलाकर खानेसे इसका स्वाद ख़राब नहीं होता और दस्तकी क़ब्जियत भी नहीं रहती।

बालकोंके श्वासकी चिकित्सा।

(१) धनिया और मिश्री लेकर, चाँवलोंके धोवनके साथ पीसो और फिर उसी पानीमें छान कर बालकको पिला दो। इससे बालकोंकी खाँसी और दमा जाता रहता है। परीक्षित है।

(२) काला जीरा मुँहमें खाकर उसकी पीक निकालो। फिर उसमें ज़रा-सी "हल्दी" मिलाकर बालकको पिला दो। इस उपायसे बालकका श्वास रोग जाता रहता है। परीक्षित है।

(३) अगर बालक दूध पीने वाला हो और उसको श्वास रोग हो, तो उसकी धाय या माँको नीचे लिखा नुसख़ा सेवन कराओ, इससे ज़रूर लाभ होगा। सैकड़ों बारका परीक्षित है।

गुलबनफ़शा ६ माशे, छिली मुलेठी ४ माशे, बीज निकाले उन्नाव ६ माशे, अलसी ४ माशे और मिश्री एक तोले—इन सबको कुचल कर एक पाव पानीमें, मिट्टीकी हाँडीमें, पकाओ। जब आधा पानी रह जाय, मल-छान कर माँको पिला दो। इसी तरह सवेरे-शाम दोनों समय पिलानेसे बालकका श्वास आराम हो जायगा।

अगर बालक दूध भी पीता हो और अन्न भी खाता हो, तो इसी काढ़ेमेंसे एक चम्मच उसे भी पिला दो।

अगर बालक ख़ाली अन्न खाता हो, माँका दूध न पीता हो, तो इसी काढ़ेकी मात्रा घटा कर बालकको पिलाओ। १२ बरसके बालकको सब दवाएँ आधी-आधी लो और पाँच सालसे नीचे वालेको चौथाई-चौथाई लो।

अगर बालकको सरदी ज़ियादा हो, तो माँको १ माशे छोटी पीपर २ माशे शहदमें मिलाकर चटा दो और ऊपरसे यही काढ़ा पिला दो। बालकको अवस्थानुसार कम "पीपर" चटाओ। याद

रखो, यह नुसख़ा कभी फेल नहीं होता । हमने, जैपुरमें, इससे सैकड़ों क्या हज़ारों बालकोंका श्वास रोग मिटाया है ।

(४) कालीमिर्च, केशर और लौंग समान-समान लेकर महीन पीस लो । फिर उस पिसे चूर्णको पानके रसमें पीस कर मूँगके समान गोलियाँ बना लो । १ या २ गोली माँके दूधमें घिस कर चटानेसे बालकका श्वास, खाँसी और पसलीका रोग नाश हो जाता है ।

नोट—ज़रा-सा कुटकीका चूर्ण शहदमें मिलाकर चटानेसे बालककी हिचकी और वान्ति—दूध डालना आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

श्वास रोगपर हिकमत।

श्वास रोग कैसा होता है ?

जिस तरह दौड़ने-भागनेसे मनुष्यको लगातार और जल्दी-जल्दी श्वास आता है, अगर उसी तरह आरामसे बैठे रहनेपर लगातार और जल्दी-जल्दी श्वास आवे, तो उसे "श्वास रोग" कहते हैं। यह रोग जवानोंके लिए बुरा है, और बूढ़ोंके लिए तो बहुत ही बुरा है। बूढ़ोंका यह रोग बहुधा आराम नहीं होता।

श्वास कितनी तरहसे लिया जाता है ?

श्वास दो तरहसे लिया जाता है:—(१) श्वास तो नींद और बेहोशीमें लिया जाता है। इसमें मनुष्यका कुछ वश नहीं चलता—जैसा श्वास आता है, वैसा ही आता है। इसे "स्वाभाविक श्वास" कहते हैं। (२) श्वास अपनी इच्छानुसार लिया जा सकता है। इस तरहके श्वास लेनेमें छाती के अवयवों और गलेसे मदद मिलती है। इच्छा करनेसे आदमी लम्बे, छोटे, बड़े, धीरे-धीरे और जल्दी-जल्दी श्वास ले सकता है। इसे "अपनी इच्छानुसार श्वास लेना" कहते हैं।

श्वास किस तरह लिया जाता है ?

जब बाहरकी हवा कंठनलीमें जाती है, तब फेंफड़ा अपने प्रमाणके अनुसार बढ़ता है, जिससे कि हवा फेंफड़ेमें ठहर सके। छाती फेंफड़ेकी मदद करती है; यानी श्वास लेते समय वह चौड़ी हो जाती है। श्वास लेनेका पूरा काम फेंफड़े का है, छातीका नहीं; छाती तो उसकी मददगार है।

श्वास लेनेका काम भीतरकी ओर पर्देसे और बाहरकी तरफ नरखरेसे शुरू होता है। जिस समय श्वास लिया जाता है, फेंफड़ा चौड़ा हो जाता है और जब श्वास बाहर निकल जाता है, वह अपने प्रमाण अनुसार तंग हो जाता है। क्योंकि फेंफड़ा छेददार और पोला है; अतः जब उसमें हवा भरती है तब वह मशककी तरह चौड़ा हो जाता है और जब निकलती है, तब वह तंग हो जाता है। यह यूनानी हकीमोंका मत है। डाक्टरीमें भी ठीक यही बात लिखी है।

खूब समझ लेना चाहिये कि, श्वास लेनेके यंत्र ये हैं:—

(१) श्वास-नली। (२) फेँफड़ोंके मुख।
(३) पर्दा और छाती। (४) वह अवयव जो इन अङ्गोंमें हैं।

श्वास और नाड़ीकी चाल स्वाभाविक है। श्वासकी गतिपर मनुष्योंका अधिकार है, पर नाड़ी पर अधिकार नहीं है। नाड़ीकी चालको तेज़ या मन्दी करना, मनुष्यके हाथकी बात नहीं; पर श्वासको मनुष्य, इच्छा करनेसे, कम और ज़ियादा तथा धीरे या जल्दी ले सकता है।

अगर श्वास अपनी असली हालतसे बदल जाय, तो समझो कि फेँफड़ों या छातीमें कोई खराबी हो गई है। फेँफड़ों और छातीमें जो खराबी होती है, वह चार तरह की होती है:—

(१) दोषयुक्त। (२) सूजन।
(३) गाँठ। (४) तफ़र्रुक इतिसाल।

दोषयुक्त प्रकृति होनेसे फेँफड़ोंमें ज़रूरतसे ज़ियादा गरमी, सरदी या खुश्की अथवा तरी बढ़ जाती है।

अगर मवाद पड़ता है, तो भी सर्द या गरम दोष इकट्ठे होते हैं; यानी बिना सरदी या गरमी बढ़नेके मवाद नहीं होता। सूजन भी गरमी या सरदीसे ही होती है।

फेँफड़ों और छातीमें गाँठ तभी होती है, जब दोष—पीप, खून या कफ—फेँफड़ोंके मुँह और छातीकी चौड़ाई या छेदोंमें इकट्ठे हो जाते हैं।

जब छाती या फेँफड़ोंमें घाव हो जाते हैं अथवा कोई रग टूट जाती है या फट जाती है अथवा बाहरसे भारी चोट लगती है तब घाव हो जाते हैं। जो खराबी मुँह, छाती और फेँफड़ोंमें होती है, वह बिना खाँसीके नहीं होती।

छाती और फेँफड़ोंमें दूसरे अंगोंके संयोगसे भी खराबी होती है। दूसरे अंगोंके संयोगसे जो खराबी होती है, वह या तो दिमाग़के सम्बन्धसे या हराम मगजके सम्बन्धसे या दिलके संयोगसे अथवा आमाशय, जिगर यकृत—लिवर या गर्भाशयके सम्बन्धसे होती है। इनके सिवा यह खराबी अजीर्णसे, मवाद भर जानेसे और सारे शरीरके संयोगसे भी होती है।

जो खराबी छाती और फेँफड़ोंमें दिमाग़के संयोगसे होती है, वह मृगी और सकतेके जैसी होती है।

जो खराबी दिलके संयोगसे होती है, वह दिलमें किसी तरहकी खराबी होने या सरदी गरमीके ज़रूरतसे ज़ियादा होनेसे होती है।

जो खराबी आमाशय या जिगर आदि दूसरे अंगोंके संयोगसे होती है, वह दुष्ट प्रकृति यानी यथेष्टसे अधिक सर्दी गरमी बढ़ जाने, इन अंगोंमें सूजन आजाने, अपने स्थानसे हट जाने, टूट जाने या उनमें घाव हो जानेसे होती है।

जो खराबी छाती और फेंफड़ोंमें सारे शरीरके संयोगसे होती है, वह बुखार की हालतमें होती है।

कभी-कभी छातीके अवयवोंके सुस्त हो जानेसे भी श्वासमें फ़र्क़ पड़ जाता है। यह रोग उनको होता है, जो लम्बी बीमारी भोग कर अच्छे हो गये हैं, पर शरीरमें पहला सा बल नहीं आया है।

दमे या श्वास रोगके भेद।

हिकमत वालोंने दमा या श्वास रोग तीन तरहका माना है:—

(१) रुबू। (२) जीकुल नफस। (३) बौहर।

रुबूका अर्थ दमा है। हकीम शेख़ रुबूका अर्थ "साँसका कठिन से आना" करते हैं। ऐसा साँस मिहनत करनेवालेके साँसके जैसा होता है। साँस जल्दी-जल्दी लगातार आता है। उसमें तंगी होती है और नहीं भी होती है। जीकुल नफस साँसके तंगीसे आने को कहते हैं। बौहर साँसके चढ़ने और फूलनेको कहते हैं।

"शरह अस्बाव" के लिखने वालेने इन तीनों तरहके श्वास रोगों को एक ही तरहका माना है, पर और हकीम इनमें फ़र्क़ समझते हैं। हिकमतमें साँसके कठिनसे आनेके चौदह भेद लिखे हैं:—

पहला भेद।

यह श्वास रोग जन्म-कालसे होता है। वजह यह है कि, छाती जन्मसे छोटी होती है, इसलिए साँस लेनेके अंग चौड़े नहीं हो सकते। इसका इलाज वैद्य-हकीम नहीं कर सकते।

दूसरा भेद।

यह श्वास रोग फेंफड़ोंमें गाढ़ा-गाढ़ा कफ आ जाने, फेंफड़ोंका मुँह कफसे भर जाने और उनमें भारीपन हो जानेसे होता है।

फेंफड़ोंमें कफ तीन तरहसे आता है:—

(१) फेंफड़े कफको भीतरी अंगोंसे खींच लेते हैं।

(२) सिरकी ओरसे कफ फेंफड़ोंपर उतर आता है।

(३) फेफड़ोंमें कफ पैदा हो जाता है।

अगर फेंफड़ोंमें कफ पैदा हो जाता है, तो रोगीकी छातीमें खरखराहट होती है, खाँसी आती है, उसमें से तरी और कफ निकलता है, श्वास तंगीसे आता है और रोगी कुत्तेकी तरह जीभको बाहर निकाल देता है। ख़ासकर चलनेके समय साँस भिचता है और रोगी जीभको बाहर निकाल देता है।

अगर इस रोगका गाढ़ा कफ नहीं निकल जाता और इसका जल्दी ही इलाज नहीं किया जाता, तो रोगीका दम घुट जाता है या उसे जलन्धर हो जाता है।

इस हालतमें मवादको नर्म करके निकालने वाली दवा देनी चाहिए; लेकिन ऐसी दवा न देनी चाहिये, जो गरम होनेके साथ खुश्की लावे, क्योंकि जो दवा ज़ियादा गरम होती है, वह मवादको गाढ़ा और खुश्क कर देती है। जब मवाद बहुत गाढ़ा हो जाता है, तब वह खखार या खाँसीमें नहीं निकलता। जब दवासे मवाद नर्म और पतला हो जाय, उसे कय और दस्तोंसे निकाल देना चाहिये।

रुबू-दमा उन रोगोंमें से है, जो मिर्गी, खिंचावट—बाइँटे और गठियाकी तरह एकदमसे बढ़ जाता है। अतः आरोग्यताके दिनोंमें उससे ग़ाफ़िल न रहना चाहिये। इस हालतमें पथ्य पर ध्यान देना चाहिये। कभी वमन और कभी दस्त कराते रहना चाहिये। कफ काटने वाली गरम माजून सदा खानी चाहिये। ऐसे मौकेपर "जराबन्द माजून" अच्छा काम देती है।

अगर दमेका मवाद सिरसे उतरता हो, तो नजला रोकनेका उपाय करना चाहिये। इसके बाद धीरे-धीरे फेंफड़ोंका मवाद साफ करना चाहिये। इस हालतमें दस्तोंका आना अच्छा है।

अगर दूसरे अंगोंसे फेंफड़ोंपर मवाद गिरता होगा, तो धीरे-धीरे प्रकट होगा। अगर फेंफड़ोंमें मवाद पैदा होता होगा, तो सर्द-तर होनेके चिन्ह प्रकट होंगे। इन दोनों हालतोंमें दस्तोंके बाद, वमन कराना अच्छा है। वमन कई बार करानी चाहिये, ताकि मवाद जड़से निकल जाय। इस मौक़ेपर मवादको कड़ा करके ठहराने वाली चीज़ जैसे,—अफीम, जंगली सेवकी जड़, भाँगके बीज और ईसबगोल आदि देना बुरा है। पर अगर मवाद, नजलेकी तरह, सिरसे गिरता हो; तो अफीम, ईसबगोल, भाँगके बीज आदिका देना अच्छा है, क्योंकि नजलेमें, नजला रोकने वाली चीजें देना ही अच्छा है।

दमावालेके लिये लाभदायक बातें।

(१) दमेवालेको खाना खानेके एक घण्टे बाद पानी पीना चाहिये। घण्टे-भरसे पहले हरगिज़ पानी न पीना चाहिये। पानी जितनी ही देरसे पिया जाय और जितना ही कम पिया जाय अच्छा है। पानी थोड़ा-थोड़ा पीना चाहिये। एकदम से लोटेके लोटे न झुकाने चाहिएँ। अगर पानीकी जगह "शहदका पानी" पिया जाय तो बहुत ही अच्छा हो।

(२) दमेवालेको खाना खाकर बहुत न सोना चाहिये। दिनमें सोना तो बहुत ही बुरा है, क्योंकि "कफ" बढ़ता है।

(३) अगर शराब पीनेकी आदत हो और परहेज़ न हो, तो थोड़ी-थोड़ी पतली रिहानी शराब पीना अच्छा है।

(४) छाती और छातीकी पसलियोंको हाथोंसे, खुरदरे कपड़ेसे—बिना तेलके—समानतासे मलना हितकर है। समन्दर झाग और पपरिया नोन मिला कर मलना बहुत अच्छा है। पहले-पहल छातीको बहुत नर्मीसे और धीरे-धीरे मलना चाहिये; हाँ, कुछ देर बाद ज़ोरसे मल सकते हैं।

(५) दमेवालेको मिहनत करना भी लाभदायक है; पर आरम्भमें थोड़ी-थोड़ी मिहनत करनी चाहिये। खाना सदा कुछ मिहनत करके खाना चाहिये।

(६) प्रकृतिको नर्म रखना चाहिये। बहुत करके सलोनी मछली भोजन करनेसे पहले खानी चाहिये। अथवा और सलोनी चीज़ोंसे प्रकृतिको नर्म करना चाहिये। जो पथ्य और दवाएँ पेशाब लानेवाली हों, उनसे बचना चाहिये।

मवादकी जगह जाननेकी तरकीबें।

(१) अगर छातीमें बोझ मालूम हो, तो मवादको फेंफड़ोंमें समझो।

(२) अगर छातीमें जलन और चुभन सी हो, तो मवादको अजलों और झिल्लियोंमें समझो।

(३) अगर मवाद आसानीसे निकलता हो, तो समझो कि मवाद फेंफड़ोंके मुँहमें है अथवा पास ही है।

(४) अगर मवाद या रतूबत कठिनतासे निकलती हो या बहुत खाँसी आकर निकलती हो, तो समझो कि मवाद फेंफड़ोंकी गहराई और उसके रोमाञ्चों में है।

(५) अगर गालोंपर लाली हो, तो समझो कि मवाद फेंफड़ोंमें है।

(६) अगर आदमीके करवट लेनेसे मवाद इधरसे उधर गिरता जान पड़े, तो मवादको छातीके छेदोंमें उतरा समझो। इस दशामें खाँसी बहुत कम आती है, परन्तु देरमें जाती है।

(७) अगर छाती चौड़ी हो, आवाज़ ज़ोरदार हो, श्वास बढ़ा हो और शीतल हवा से आराम मालूम हो, तो समझो कि प्रकृति गरम है।

(८) अगर छाती छोटी हो, आवाज़ धीमी हो, श्वास छोटा हो और सर्द-तर हवासे हानि हो तो समझो कि प्रकृति ठण्डी है। ऐसे मनुष्यकी छातीमें कफ बहुत होता है। उसे खाँसी और दमा बहुत होता है।

(९) अगर आवाज़ धीमी और बैठी हो, श्वास लेनेमें खरखरापन हो, बड़ी आवाज़ न निकल सके यद्यपि शरीरमें बल हो, उसकी प्रकृति तर समझो। ऐसे आदमीकी छातीमें तरी भरी रहती है, पलकें और आँखें सूजी रहती हैं तथा गालों का मांस नर्म और ढीला रहता है।

(१०) जिसकी आवाज़ कुलंगकी आवाज़की तरह झरझरी होती है, उसकी प्रकृति खुश्क है। उसकी छातीमें ज़रा भी तरी नहीं होती। खुश्की बढ़ जानेसे श्वास तंगीसे आता हैं।

चिकित्सा।

सबसे पहले दोषोंको नर्म करना ज़रूरी है, अतः हम नीचे दोषोंको नर्म करने वाले नुसख़े लिखते हैं:—

शर्बत जूफ़ा।

सौंफ १७॥ माशे, अजमोद १७॥ माशे, सूखा जूफ़ा २४॥ माशे, अंजीर २० दाने, मुनक्के बीज रहित ३० दाने, उन्नाव २० दाने, लिहसौड़े २० दाने, मेथी १४ माशे, खतमीके बीज ५। माशे, सौसनके बीज ५। माशे और हंसराज २४॥ माशे,—इनको दो सेर पानीमें, मिट्टीकी हाँड़ीमें औटाओ; जब एक सेर पानी बाक़ी रह जाय, उतार कर मल-छान लो। फिर इस काढ़ेमें "एक सेर बूरा और आध सेर गुलक़न्द" मिला दो और पकाओ। जब गाढ़ा हो जाय उतार लो और समयपर काममें लाओ।

गरम चटनी।

मुनक्के, पीले अंजीर, छिली मुलहटी, बाकलाके बीज, खशखाशके बीज, मीठे कद्दूके बीजोंकी मींगी, हंसराज, सौंफ, सूखा जूफ़ा, बादामकी मींगी, मेथी, खतमीके बीज और इरसा—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो और शहदमें मिला लो। यही गरम चटनी है।

लऊक़ या चटनी।

अंजीर, मेथी, सौंफ, सौसनकी जड़ और सूखा जूफ़ा—इनको कुल दो तोले लेकर, ३२ तोले पानीमें औटाओ; जब २० तोले पानी रह जाय, मल कर छान लो और २ तोले "शहद" मिलाकर फिर पकाओ; जब गाढ़ी चाशनी हो जाय, उसमें थोड़ी सी "जंगली प्याज़" भूनकर मिला दो और ज़रा सी "केशर" भी पीसकर मिला दो। यह चटनी चाटी जाती है।

काढ़ा।

अंजीर, बनफ़शा, उन्नाव, लिहसौड़े और गावज़ुबाँकी पत्ती—कुल तीन तोले लेकर ३२ तोले जलमें काढ़ा पकाओ। चौथाई पानी रहने पर मल-छान लो। फिर एक तोले मिश्री मिला कर पीओ।

नोट—जब इन दवाओंसे मवाद नर्म होजाय, वमन और दस्त करानेकी चेष्टा करो।

वमनकारक दवाएँ।

(१) मूलीके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पिलाओ।

(२) सफेद कुटकीके काढ़ेसे छातीके रोगोंमें वमन कराना बहुतही अच्छा है। अगर काढ़ेमें "मूलीका पानी" भी मिला दिया जाय, तब तो कहना ही क्या ?

मुँहमें रखनेको गरम गोलियाँ ।

गारीकनकी गोली ।

गारीकून ५॥ माशे, मुगरवेल ५॥ माशे, मुलहठी ३॥ माशे, तुर्वद ३५ माशे, बारजफयकरा ७ माशे, इन्द्रायनका गूदा ७ माशे और अंजरुत गोंद ७ माशे—इन सबको कूट-पीस कर छान लो । फिर "अलसीके काढ़े" से खरल करके गोलियाँ बना लो । जवानको मात्रा ४॥ से ७ माशे तक ।

कफ निकालने वाली गोलियाँ ।

मुलहठी, काली मिर्च और बूरा—बराबर-बराबर लेकर पानीके साथ पीसलो और बेर समान गोलियाँ बनालो । इनके सेवनसे जमा हुआ कफ निकल जाता है ।

सीनेकी गरमी और ज्वरके उपाय ।

गुलबनफ़शा ३॥ माशे, मुलहठी ३॥ माशे, गारीकून ६ रत्ती और कतीरा ३ रत्ती—इनको कूट-पीस-छानकर, पानीके साथ गोलियाँ बनालो ।

नोट—श्वास रोगमें गारीकून और अफतीयून (आकाशवेल) बड़ी लाभदायक हैं ।

बन्द श्वास खोलनेकी दवा ।

पपड़ी नोन १४ माशे और हालूनके बीज ७ माशे, इन दोनोंको महीन पीस कर १२ तोले १॥ माशे शहदके पानीमें रोगीको पिलादो । इससे उसी समय गला खुलकर श्वास आने लगेगा । गला घुटनेमें यह उपाय अच्छा है ।

धूनीकफके दमेकी ।

शुद्ध गन्धक और शुद्ध हरताल बराबर-बराबर लेकर महीन पीसलो और बकरेके गुर्देकी चरबीमें मिलाकर टिकिया बनालो । इसी टिकियाको आग पर डाल कर धूआँ पीओ; अथवा चिलममें धरकर तमाखूकी तरह पीओ इस धूनीसे कफके दमेमें अवश्य लाभ होगा ।

तीसरा भेद ।

दिलकी भाफके परमाणुओंसे जब छाती और फेंफड़े भर जाते हैं और वे भाफके परमाणु इन भागोंमें बन्द हो जाते हैं, तब इनकी बहुतायतसे हवाकी राहें तंग हो जाती हैं; उस हालतमें श्वासमें तंगी आ जाती है, नाड़ी बड़ी और लगातार चलती है, प्यास बहुत लगती है और शीतल जलसे सन्तोष नहीं होता ।

इस दशामें श्वास लगातार आता है, पागलपन, छातीमें जलन, हलक़ और जीभमें खुश्की, मुँहका स्वाद नमकीन और कड़वा ये लक्षण होते हैं। सिर्र बहुत होती है। रोगीको शीतल हवासे लाभ और गरमसे हानि होती है।

चिकित्सा ।

(१) बायें हाथकी बासलीककी फस्द खोलो।

(२) दिलकी गरमी कम करो।

(३) हाथ-पाँव मलना और शीतल जलमें रखना अच्छा है।

(४) फस्द खोलनेके बाद अगर हानि न हो, तो सेवका शर्बत अथवा चंदन या खुरफेके बीजोंका शीरा दो अथवा कद्दूका पानी बिहीदानेका लुआब या मीठे अनार का शर्बत पिलाओ। कपूर, चन्दन और गुलाबके फूल पीसकर छातीपर लेप करो अथवा कपूर, चन्दन और गुलाब-जलको मिलाकर सूँघो।

(५) ईसबगोलका लुआब, शर्बत गुलबनफ़शा और शर्बत नीलोफर मिलाकर पिलाओ। सेवका शर्बत, चन्दनका शर्बत या जौका पानी आदि शीतल और सन्तोषदायक पदार्थ सेवन कराओ।

चौथा भेद ।

फैंफड़ोंकी गरमी भी दमेका कारण होती है। इस दशामें भी शीतल दवाएँ खिलाओ और छातीपर शीतल लेप करो।

पाँचवाँ भेद ।

जब छातीके अवयव ढीले हो जाते हैं और खुल नहीं सकते, तब प्राकृतिक या स्वाभाविक गरमीसे कमजोरी आ जाती है। ऐसा होने से श्वास फूलता और रुक-रुक कर आता है तथा नाड़ीमें नर्मी आ जाती है।

चिकित्सा ।

(१) मेथी १०॥ माशे, बनफ़शा ७ माशे, सौंफ ३॥ माशे और मुनक्का ३० दाने,—इनको औटाकर छान लो। फिर उसमें सफेद कन्द या मिश्री डालकर

पीओ। मात्रा १५ तोले तक। यह "मेथीका काढ़ा" है। पर, इस पाँचवें भेदके श्वासमें, मेथीके काढ़ेमें कन्दकी जगह "शहद" मिलाकर पीना चाहिये।

(२) सौसनका तेल, नरगिसका तेल या बकायनका तेल छातीपर मलो।

(३) कलौंजीको महीन पीसकर, "शहद और सोयेके तेल"में मिलाकर छातीपर लेप करो।

छठा भेद।

जब फैंफड़ों में खुश्की पैदा हो जाती है, प्रधान तरी नष्ट हो जाने से फैंफड़े सुकड़ जाते हैं, तब श्वास रोग होता है। यह रोग बहुधा तपेदिक या क्षय रोग के अन्तमें होता है।

इस रोगमें प्यास लगती है, आवाज़ मन्दी हो जाती है, थूकमें कुछ भी नहीं निकलता और तर चीज़ोंसे दमेका ज़ोर कम हो जाता है।

चिकित्सा।

(१) फैंफड़ेमें तरी पहुँचानेके लिए जौका पानी, बकरीका ताज़ा दूध, औरतका दूध, लुआब, निचोड़े हुए पानी और तरी पहुँचानेवाली चटनी खिलाओ। छातीपर तरी पहुँचानेवाली मरहम या लेप लगाओ।

(२) गुलबनफ़शा, ख़तमी, ककड़ीके बीज और नीलोफर पानीमें औटाकर, बफारेकी विधिसे उसमें रोगीको बैठाओ।

सातवाँ भेद।

शीतल हवा नाकमें जानेसे, शीतल चीज़ें खानेसे और शीतल जल पीनेसे अथवा सर्दी पहुँचाने वाले और पदार्थों से फैंफड़ोंमें सरदी बढ़ जाती है, तब दमका रोग हो जाता है। यह रोग अक्सर बूढ़ों को होता है। आरंभ में तो कम होता है, पर अन्तमें बढ़ जाता है।

चिकित्सा।

(१) गरमी पहुँचानेके लिए पृष्ठ २३१ के अन्तमें लिखा हुआ "मेथीका काढ़ा" पिलाओ।

(२) छातीपर गरम तेल मलो।

(३) क़बूतर और चकोरका मांस तथा अधभुने अण्डेकी ज़र्दी खिलाओ।

आठवाँ भेद ।

श्वास आनेकी राहमें गाढ़ी हवा भर जाती है और हवा नाकमें रुकती है, तब श्वास रोग होता है ।

नरखरा हवाकी जगह है । अगर उसमें कुछ भी रह जाता या भर जाता है, तो श्वास भिच कर आता है । अगर ऐसा होता है, तो छातीमें भारीपन नहीं होता और खाँसीमें कफ नहीं आता । यह दमा बादी पदार्थोंसे होता है ।

चिकित्सा ।

(१) बादी तोड़ने और गाँठ खोलनेके लिए दूसरे भेदमें लिखे उपाय करो ।

(२) छाती पर तुलसीका तेल या हुब्बुलगारका तेल मलो ।

(३) छाती और पसलियों पर "सोया, बाबूना और दोना मरुवा" का लेप करो ।

(४) नोशदारु या संजीरनियाँ अथवा माजून अमरासिया सेवन कराओ ।

(५) जाबशीरकी गोलियाँ भी अच्छी हैं, पर पट्ठोंके लिए हानिकारक हैं ।

माजून अमरासिया ।

जंगली गाजरके बीज ३॥ माशे, अज़खर ३॥ माशे, पहाड़ी किरबिया ३॥ माशे, सेब ३॥ माशे, अजमोदके बीज ३॥ माशे, कालीमिर्च १॥। माशे, सफेद मिर्च १॥। माशे, कड़वी कुटकी १॥। माशे, मुर्र ५। माशे, साफी ५। माशे, हब्बुलगार २ दाने और तुरकी केशर ७ माशे—सबको महीन पीस-छानकर, झागदार शहदमें मिला कर रख दो । दो महीने मत छेड़ो; इसके बाद खाओ । मात्रा ७ माशे रोज़ ।

जाबशीर की गोली ।

जाबशीर १॥। माशे लेकर अर्क सौंफमें डालदो । फिर १॥। माशे इन्द्रायनका गूदा उसमें डालदो । इसे शहदके पानीके साथ खिलाओ । इस रोगमें जाबशीर बहुत मुफीद है, पर पट्ठोंको नुकसानमन्द है, इसलिए गरम और खुशबूदार तेल शरीर पर मलो । इस उपायसे जाबशीरकी भाफ पट्ठोंमें न जा सकेगी ।

नवाँ भेद ।

जब बहुतसा मवाद छातीके छेदोंमें गिरता है, तब रोगीको करवट लेनेसे मवाद इधर-उधर गिरता मालूम होता है । खाँसी बहुत

कम उठती है, पर जाती देरमें है। कभी-कभी यह दमा फेंफड़ोंकी सूजनमें बदल जाता है; क्योंकि फेंफड़ोंका मांस बहुत नर्म होता है। बहुधा फेंफड़ोंकी प्रकृति जरूरतसे ज़ियादा गरम, शीतल, बहुत तर या बहुत खुश्क हो जाती है।

अगर रोगीकी आवाज़ बलवान हो, श्वास बड़ा हो, शीतल हवासे आराम मालूम होता हो; तो समझो कि, प्रकृति गरम हो गई है—गरमी बढ़ गई है।

अगर छाती छोटी हो, आवाज धीमी हो, श्वास तंग हो और सर्द-तर हवासे हानि होती हो, तो समझो कि प्रकृति शीतल हो गई है—सर्दी बढ़ गई है। इस हालतमें, छातीमें कफ बहुत होता है और खाँसी तथा दमका जोर होता है।

नोट—इस श्वासका इलाज जलन्धरकी तरह करना चाहिये।

ग्यारहवाँ भेद।

जब फेंफड़ोंमें या उनके पासके अंग—पसली, तिल्ली और जिगर या यकृत वगैरःमें सूजन आ जाती है, तब दमा होता है।

चिकित्सा।

(१) अगर दमा जिगर या यकृतकी सूजनसे हो, तो पहले वासलीककी फस्द खोलो। फिर हरी वारतरंगका पानी, काकनजका नितरा हुआ पानी, लौकीका पानी, खीरेका पानी, सिकंजबीनमें मिलाकर दो। अगर जिगर बलवान हो, तो उस दवामें "रेवन्दचीनी"[१] मिला दो।

(२) अगर दमा तिल्लीकी सूजनसे हो, तो बायें हाथकी अनामिका और कनिष्ठका अंगुलियोंके बीचकी फस्द खोलो। गावजुबाँके अर्क़में जंगली प्याज़की सिकंजबीन मिलाकर पिलाओ।

तेरहवाँ भेद।

अगर आमाशयमें मवाद भर जाता है, तो दिलकी गतिका खुलना रुक जाता है और उससे दमा हो जाता है।

चिकित्सा।

(१) अयारजकी गोली खिलाओ। आमाशयको साफ करो।
(२) पाचनशक्तिको ठीक करो।

चौदहवाँ भेद।

गलेकी सूजनसे भी दमेका रोग हो जाता है। इसमें गलेकी सूजनका इलाज करो।

उष्णवातकी कभी भी फेल न होनेवाली दवा।

हिमसागर तैल।

उष्णवातसे होनेवाले रोगों पर "हिमसागर तैल" रामवाण है। हज़ारों बार का आज़मूदा है। जिस तरह हमारा "नारायण तैल" अस्सी प्रकारके वातरोगों पर अक्सीरका काम करता है, उसी तरह यह भी उष्णवातके रोगोंपर तीरे हदफकी तरह लगता है। शरीरमें दाह होना, हाथ-पैरोंके तलवे जलना, शरीरका सूखना, शरीरसे चिनगियाँ उड़ना, एवं लकवा और गठिया वगैरः पर कभी फेल नहीं होता। उष्णवातका इसे शत्रुही समझिये। मूल्य आध पावका २)

शिरशूलान्तक चूर्ण।

इस चूर्णको सिरके दर्द नाश करनेमें जादूही समझिये। कैसाही दर्द सिरमें हो, आप एक मात्रा खाकर ज़रासा शीतल जल पीलें, ठीक १५ मिनटमें दर्द हवा हो जायगा। हर गृहस्थके घरमें एक शीशी दवा रहनी चाहिये। आठ मात्राका दाम१)

अग्निमुख चूर्ण।

इस चूर्णके भोजनके बाद खानेसे भोजन पचकर रस अच्छी तरह खिंचता है, शुद्ध डकार आती हैं, भूख खुलकर लगती है और बुरा-भला खाया-पिया भी पच जाता है। अतः हर गृहस्थको एक शीशी घरमें हर समय रखनी चाहिये। दाम ।।) शीशी।

नारायण तैल।

इस तैलकी मालिशसे हर तरहका दर्द, पसलीका दर्द, गठिया, मोच आना, सूजन आना, लकवा मारना, एक तरफका अंग सूना हो जाना, लँगड़ापन, कुबड़ापन वगैरः समस्त वात रोग आराम होजाते हैं। समय पर यह एक वैद्यका काम देता है। अतः हर घरमें १ पाव तेल रहना चाहिये। दाम आध पावका १।।)

चौथा अध्याय

हिचकी रोगका वर्णन ।

निदान कारण ।

दाहकारक—छाती और कंठमें जलन करने वाले, भारी, अफारा करने वाले, रूखे और अभिष्यन्दी पदार्थ खानेसे, शीतल जल पीनेसे, शीतल अन्न खानेसे, शीतल जलमें नहानेसे, धूल और धूआँके मुँह और नाकमें जानेसे, गरमी और हवामें डोलनेसे, कसरत-कुश्ती करनेसे, बोझ उठानेसे, बहुत राह चलनेसे, मलमूत्रादिके वेग रोकनेसे और उपवास-व्रत करनेसे मनुष्योंको हिचकी, श्वास और खाँसी रोग होते हैं।

नोट—सुश्रुत में आम दोषसे, छाती वगैरःमें चोट लगनेसे, अति स्त्री-प्रसंग करनेसे, क्षय रोगकी पीड़ासे, विषम भोजन करनेसे, भोजन-पर-भोजन करने वगैरःसे भी हिचकी, श्वास और खाँसीकी उत्पत्ति लिखी है।

सामान्य लक्षण ।

"प्राण और उदान वायु" कुपित होकर, बारम्बार ऊपरकी तरफ जाते हैं, इससे हिक-हिक शब्दके साथ वायु निकलता रहता है।

हिचकीके भेद ।

"वायु" कफसे मिलकर पाँच तरहकी हिचकियाँ पैदा करता है:—

(१) अन्नजा, (२) यमला,

(३) क्षुद्रा, (४) गंभीरा,
(५) महती।

पूर्वरूप।

हिचकी रोग होनेसे पहले—कण्ठ और हृदय भारी रहते हैं, बादी से मुँहका स्वाद कसैला रहता है, कूखमें अफारा रहता या पेटमें गुड़गुड़ शब्द होता है।

अन्नजा हिचकी के लक्षण।

अनाप-शनाप खाने-पीनेसे, "वायु" अकस्मात् कुपित होकर, ऊपर की तरफ जाकर, अन्नजा नामकी हिचकी पैदा करता है।

नोट—जल्दी-जल्दी बहुत ही ज़ियादा खाने-पीनेसे, आमाशयका वायु हठात् कुपित हो जाता है और ऊपर की राहसे निकलता है। उसके निकलनेसे हिग् हिग् आवाज़ होती है, उसे ही "हिचकी" कहते हैं। क्योंकि यह हिचकी अन्न के ज़ियादा खानेसे होती है, अतः इसे अन्नजा यानी अन्न से पैदा हुई हिचकी कहते हैं। इस हिचकीकी दवा-दारु नहीं करनी पड़ती। यह चन्द मिनटमें आप ही शान्त हो जाती है।

यमला हिचकीके लक्षण।

जो हिचकी सिर और गर्दनको कँपाती हुई दो-दो बार निकलती है अथवा रुक-रुक कर दो-दो हिचकियाँ आती हैं और उनके आने से सिर और गर्दन काँपते हैं, उन्हें "यमला" कहते हैं।

नोट—यमला शब्दका अर्थ दो है, इसीसे इसे "यमला" कहते हैं, क्योंकि एक बारमें दो हिचकियाँ आती हैं। यमला हिचकी कष्टसाध्य होती है, पर कभी-कभी असाध्य भी हो जाती है। इसके साथ प्रदाह, दाह, प्यास और मूर्च्छाका होना घातक है।

क्षुद्रा हिचकीके लक्षण।

जो हिचकी कंठ और हृदयके सन्धिस्थानसे पैदा होती तथा मन्दे वेग और देरसे निकलती है, उसे "क्षुद्रा" कहते हैं।

नोट—क्षुद्रा हिचकी देर-देरमें और धीरे-धीरे उठती है। यह सुखसाध्य होती है। कहते हैं, यह जत्रु-मूल अर्थात् काँख और हृदयकी सन्धिसे उठती है।

गंभीरा हिचकीके लक्षण।

जो हिचकी नाभिके पाससे उठती है, घोर गंभीर शब्द करती है और जिसके साथ प्यास, श्वास, पसलीका दर्द और ज्वर आदि नाना उपद्रव होते हैं, उसे "गंभीरा" कहते हैं।

नोट—यह हिचकी रोगोंके अन्तमें प्रायः उपद्रव रूपसे होती है। बहुत करके अन्तिम कालमें पैदा होती और मनुष्यको मार डालती है। यह असाध्य समझी जाती है।

महती हिचकीके लक्षण।

जो हिचकी बस्ति—पेड़ू, हृदय और मस्तक आदि प्रधान मर्म-स्थानोंमें पीड़ा करती हुई, शरीरके सब अंगोंको कँपाती हुई, लगातार चलती रहती है, उसे "महती" या "महाहिक्का" कहते हैं।

नोट—इस हिचकीमें पेड़ू, हृदय और मस्तक आदि मर्म फटतेसे जान पड़ते हैं और इस हिचकीका तार नहीं टूटता। यह हिचकी भी प्रायः रोगके उपद्रवके तौरपर, अन्तकालमें पैदा होती और मनुष्यको मार डालती है।

असाध्य लक्षण।

गंभीरा और महाहिक्का पैदा होनेसे रोगीकी मृत्युमें सन्देह करना वृथा है, यानी अवश्य मृत्यु होती है।

इनके सिवा और हिचकियोंमें भी रोगीका शरीर फैल जाय, तन जाय, नज़र ऊपर की तरफ ज़ियादा रहे, नेत्र खड्डोंमें घुस जायँ, देह क्षीण हो जाय और खाँसी चलती हो—तो रोगीके बचनेकी उम्मीद नहीं।

जिस हिचकीसे रोगीकी देह तन जाय, दृष्टि ऊँची हो जाय, मोह या बेहोशी हो, रोगी क्षीण हो जाय, भोजनसे अरुचि हो और छींक ज़ियादा आवें—उस हिचकी वाला रोगी आरोग्य लाभ नहीं करे।

जिस रोगीके वातादि दोष अत्यन्त सञ्चित हों, जिसका अन्न छूट गया हो, जो दुबला हो गया हो, जिसकी देह नाना प्रकारकी व्याधियोंसे क्षीण हो रही हो,

जो बूढ़ा हो और जो बहुत ही ज़ियादा मैथुन करनेवाला हो—ऐसे आदमीके कोई एक हिचकी पैदा होकर प्राण नाश करती है।

अगर यमला हिचकीके साथ प्रलाप, दाह, प्यास और बेहोशी हो, तो यह भी प्राणनाश करती है।

जिस रोगीका बल क्षीण न होकर मन प्रसन्न हो, जिसकी धातुएँ स्थिर हों और इन्द्रियोंमें भरपूर ताक़त हो—वह यमला हिचकीवाला आराम हो सकता है। इन लक्षणोंसे विपरीत लक्षणोंवाला आराम हो नहीं सकता।

हिचकीकी भयंकरता।

यों तो हैज़ा और सन्निपात ज्वर आदि अनेक रोग प्राणनाशक हैं, पर श्वास और हिचकी रोग जैसी जल्दी मनुष्यके प्राण नाश करते हैं, वैसी जल्दी और रोग प्राण संहार नहीं करते। अतः हिचकी और श्वास रोगमें ग़फ़लत हरगिज़ न करनी चाहिये।

हिचकी-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) जो औषधि या अन्नपान "कफ और वायु" को हरनेवाले, गरम और वायुको अनुलोमन करनेवाले हों—वे सब श्वास और हिचकीमें हित हैं।

(२) हिचकी और श्वास-रोगीके शरीरमें पहले तेलकी मालिश करनी चाहिये। इसके बाद स्वदेन क्रिया यानी पसीने निकालनेके उपाय करने चाहियें तथा वमन और विरेचन कराना चाहिये। लेकिन अगर हिचकी और श्वास रोगी कमज़ोर हों, तो वमन विरेचन न कराकर रोगनाशक औषधि दे देनी चाहिये। "सुश्रुत" में लिखा है :—

विरेचनं पथ्यतमं ससैंधवं,
घृतं सुखोष्णं च सितोपलायुतम्।

हिचकी रोगमें सैंधा नोन मिला हुआ विरेचन या जुलाब अत्यन्त पथ्य है। निवाया घी मिश्री मिलाकर पीना भी हितकारी है।

और भी कहा है:—

सर्पिः कोष्णं क्षीरमिक्षो रसो वा,
नातिक्षीणे स्रंसनं छर्दनं च॥

हिचकी रोगमें निवाया घी या ईखका रस हितकारक है। अगर हिचकी रोगी अति क्षीण या कमज़ोर न हो, तो उसे दस्त और क़य कराने चाहियें; यानी बलवान रोगीको वमन विरेचन कराने चाहियें, कमज़ोरको नहीं।

हिचकीमें पथ्यापथ्य।

पथ्य।

पसीना देना, कय कराना, नस्य देना, धूआँ पिलाना, जुलाब देना, दिनमें सुलाना, शीतल पानीके छींटे मारना, यकायक डराना-धमकाना, भुलाना, गुस्सा दिलाना और खुश करनेवाली बात कहना, प्राणायाम कराना, जली हुई गरम मिट्टी सुँघाना, कुशाकी कूंची या धारा से जल छोड़ना, नाभिके ऊपर दबाना, चिरागपर जलाई हुई हल्दीकी गाँठसे दागना, पैरोंसे ऊपर दो अंगुलपर अथवा नाभिसे ऊपर दो अंगुलपर दाग देना—ये सब काम हिचकी रोगीको पथ्य या हितकर हैं

पुरानी कुलथी, पुराने गेहूँ, पुराने साँठी चाँवल, जौ, पका कैथा, लहसन, परवल, नरम मूली, पोहकरमूल, काली तुलसी, शराब, खस का जल, गरम जल, बिजौरा नीबू, शहद, गोमूत्र तथा और सब वात-कफ नाशक अन्नपान हिचकी वाले को पथ्य हैं।

बहुत करके जिन आहार विहारोंसे वायुका अनुलोम हो, वायु का नाश हो वे अथवा उष्णवीर्य क्रियाएँ हिचकी और श्वासमें पथ्य हैं। हिचकी रोगमें पेटपर और श्वास रोगमें छातीपर तेल मल कर पसीना निकालना और कय कराना पथ्य है, परन्तु कमजोर रोगीको वमन कराना नुक़सानमन्द है। अगर वायुका उपद्रव ज़ियादा हो, तो इमलीका भिगोया पानी पीना, नीबू निचोड़कर मिश्रीका शर्बत

पीना और नदी या तालमें स्नान करना पथ्य है; पर अगर कफ बढ़ा हुआ हो, तो ये सब हानिकारक हैं, इसलिये दोषका विचार करके ये पदार्थ देने चाहियें।

आगे "रक्तपित्त" रोगमें रात और दिनके समय जो खानेके पदार्थ पथ्य लिखे हैं, वही सब इस रोगमें भी पथ्य हैं। हिचकी और श्वास वालेको रातको बहुत ही हल्का भोजन देना चाहिये।

हिचकी वालेको गरम घी मिला हुआ पुराने चावलोंका गरमागर्म भात बहुत ही उपकारी है। अनेक वार ऐसे भातसे ही हिचकी नाश हो जाते देखी है।

अपथ्य ।

अधोवायु, मल-मूत्र, डकार और खाँसी आदिके वेग रोकना, धूल में रहना, धूपमें बैठना या घूमना, मिहनत करना, हवामें रहना, विलम्ब या देरमें हज़म होने वाले पदार्थ खाना, दाहकारी या जलन करनेवाली चीज़ें खाना, चौला, उड़द, पिट्ठीके पदाथ, तिलके पदार्थ खाना, भेड़का दूध पीना, अनूप देश या वहुत पानीवाले देशोंके पशु-पक्षियोंका मांस खाना, दाँतुन करना, गुदामें पिचकारी लगाना, मछली, सरसों, खटाई, तूम्बीका फल, कन्दोंके साग, तेलमें छौंकी हुई चौलाईका साग, भारी और शीतल खाने-पीनेके पदार्थ हिचकी रोगमें अपथ्य या हानिकारक हैं।

भारी और देरमें पचने वाले पदार्थ खाना, ज्यादा खाना, रातमें जागना, चिन्ता फिक्र या क्रोध करना, रंज करना, लाल मिर्च, अमचूर और दही आदि भी अपथ्य हैं।

——::※::——

हिचकी नाशक नुसख़े।

(१) बिजौरे नीबूके दो तोले रसमें ६ माशे शहद और ३ माशे काला नोन मिला कर पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(२) मूंग भस्म, शंख भस्म, हरड़, बहेड़ा, आमला, पीपर और गेरू—इन दवाओंका चूर्ण ना-बराबर घी और शहदमें मिला कर चाटनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(३) रेणुका और पीपरके काढ़ेमें "हींग" डाल कर पीनेसे हिचकी निस्सन्देह शान्त हो जाती है। यह धन्वन्तरिका वचन है।

(४) एक पाव बकरीके दूधमें दो तोले सोंठ और एक सेर पानी डाल कर औटाने और दूध मात्र रहने पर छान कर पीनेसे हिचकी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—"सुश्रुत" में लिखा है, यह दूध "मिश्री" मिलाकर खूब पेट भर कर पीना चाहिये।

(५) सेंधा नोन और खीलोंका सत्तू मिला कर खाने और ऊपरसे खट्टा रस पीनेसे हिचकी नाश हो जाती है।

(६) सोंठ, पीपर और आमलेका चूर्ण शहदमें मिला कर चाटनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(७) काँसकी जड़का चूर्ण शहदमें मिला कर चाटनेसे भयंकर हिचकी नाश हो जाती है।

(८) मोरके पंखकी दो रत्ती राख ६ माशे शहदमें मिला कर चाटनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(६) बिजौरे नीबूके २ तोले रसमें ३ माशे सेंधा नोन मिलाकर चाटनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(१०) ग्वारपाठेके रसमें सोंठका चूर्ण मिलाकर पीनेसे तत्काल हिचकी बन्द हो जाती है।

(११) पोहकरमूल, जवाखार और कालीमिर्चका चूर्ण गरम पानीके साथ खानेसे अत्यन्त वढ़ी हुई हिचकी भी आराम हो जाती है।

(१२) बड़ी इलायचीका चूर्ण और चीनी एक में मिलाकर सेवन करनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(१३) केलेकी जड़के रसमें चीनी मिलाकर पीने और नास लेनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(१४) राई महीन पीसकर पानीमें मिला दो। जब राई नीचे बैठ जाय, ऊपरका पानी बारम्बार रोगीको पिलाओ। इससे भी हिचकी आराम हो जाती है।

(१५) गोलमिर्चका चूर्ण और चीनी शहदके साथ चाटनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(१६) मोरके पंखके चँदोवेकी दो रत्ती भस्म ना-बराबर घी और शहदमें चाटनेसे हिचकी बन्द हो जाती है।

(१७) सज्जीखार और नीबूका रस शहदमें मिलाकर चाटनेसे शीघ्र ही हिचकी बन्द हो जाती है।

(१८) हरड़का चूर्ण गरम जलके साथ पीनेसे हिचकी नाश हो जाती है।

(१६) घीमें जवाखार और शहद मिलाकर पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(२०) कैथके १ तोले स्वरसमें शहद और पीपरका चूर्ण मिलाकर पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(२१) बेरकी गुठलीकी मींगी, रसौत और धान की खील—इन को पीसकर और शहद में मिलाकर चाटनेसे हिचकी बन्द हो जाती है।

(२२) पाटलाके फल और फूल "शहद" में मिलाकर चाटनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(२३) गेरू और कुटकी पीसकर और शहदमें मिलाकर चाटनेसे हिचकी नाश हो जाती है।

(२४) खजूरकी मींगी और पीपर "शहद" में मिलाकर चाटनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(२५) कचूर, मूसली, भारंगी, शिवलिंगी, नेत्रवाला और पोहकरमूलका चूर्ण बनाकर, चूर्णके वजनसे अठगुनी चीनी मिला दो। इस चूर्णसे हिचकी और श्वास अवश्य नाश हो जाते हैं।

(२६) पीपर, देवदारु और सोंठ—इनका चूर्ण गरम पानीके साथ फाँकनेसे हिचकी और श्वास आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२७) पीपर, आमले और सोंठ—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णके बराबर "शहद और मिश्री" मिलाकर बारम्बार चाटनेसे हिचकी नाश हो जाती है। यह चूर्ण श्वास पर भी अच्छा है। परीक्षित है।

नोट—वैद्य जीवनमें लिखा है:—

विश्वाशिवाकणाचूर्णःससितः समधुः स्मृतः।
नस्यन्त्वद्विश्वगुडयोर्हिक्काधिक्कारकः॥

सोंठ, पीपर और आमलेका चूर्ण शहद और मिश्री मिला हुआ इस तरह हिचकीका तिरस्कार करता है, जिस तरह सोंठ और गुड़ मिली हुई नस्य हिचकी को तुच्छ समझती है। मतलब यह है, अगर सोंठ, पीपर और आमलेके चूर्णमें शहद और मिश्री मिलाकर चटावें और पिसी हुई सोंठमें गुड़ मिलाकर सुँघावें तो हिचकी रोग खड़ा न रहे। वास्तव में, ये दोनों नुसखे रामबाण हैं। हिचकीमें इन दोनोंका चमत्कार देखना चाहिये।

(२८) मोर-पंखकी दो रत्ती राखमें एक माशे पीपरका चूर्ण और ६ माशे शहद मिला कर चाटनेसे सब तरहकी हिचकी, घोर श्वास और अत्युग्र वमन आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२९) सुगन्ध तृण, आमले और सोंठका चूर्ण "मिश्री और शहद" मिला कर बारम्बार चाटनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(३०) बिजौरे नीबूका रस २ तोले, सेंधा नोन ३ माशे और मुलेठीका चूर्ण २ माशे—इन सबको मिला कर पीने से सब तरहकी हिचकी आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(३१) साँभर नोन, सेंधानोन और काला नोन,—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण फाँकनेसे हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(३२) बहेड़ेका पिसा-छना चार माशे चूर्ण एक तोले शहदमें मिला कर चाटनेसे असाध्य श्वास और हिचकी भी आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३३) मुलेठीका ४ माशे चूर्ण ६ माशे शहदमें मिला कर चाटनेसे हिचकी नाश हो जाती है।

(३४) छोटी पीपरोंका ५ माशे चूर्ण ६ माशे शहदमें मिला कर चाटनेसे हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(३५) बकरीके आध सेर खूब औटे हुए दूध में ६ माशे सोंठ का चूर्ण मिला कर पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(३६) काले धतूरेकी जड़, पत्ते, फल और फूल—इनको खूब कुचल कर और चिलममें तमाखूकी तरह रखकर, ऊपरसे बिना धूएँ की आग रखकर, धूआँ पीनेसे हिचकी और श्वास आराम हो जाते हैं।

(३७) सेंधे नोनको पानीमें पीस कर सूंघनेसे पाँचों तरहकी हिचकी आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(३८) पीपलकी लाखका काढ़ा बना कर, ४।५ बूँद नाकमें टपकानेसे सब तरहकी हिचकियाँ आराम हो जाती हैं।

(३९) पुराने चाँवलोंके गरम भातमें "आध पाव गरमागर्म घी" मिला कर खानेसे हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(४०) आध पाव गरम घी पी लेनेसे हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(४१) गरमागर्म गायका दूध पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(४२) दो माशे हरे पोदीनेमें दो माशे चीनी मिला कर चबानेसे हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(४३) गायका लूनी घी ३ तोले और मिश्री १ तोले मिला कर खानेसे हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(४४) कय करने या छींक लेनेसे हिचकी आराम हो जाती है। अगर भोजन करनेके बाद हिचकी उठे, तब तो कय कर देना बहुत ही मुफीद है।

(४५) सौंफ नौ माशे, कासनी नौ माशे और इक्कीस कालीमिर्च—इनको पीस कूट कर खानेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(४६) नारियल की गरी २ रत्ती और मिश्री २ रत्ती मिलाकर खिलानेसे बच्चोंकी हिचकी आराम हो जाती है।

(४७) अरीठोंकी माला पिरोकर बालकके गलेमें लटका देनेसे बालकोंकी हिचकी आराम हो जाती है।

(४८) तीन माशे कलौंजी चार माशे मक्खनमें मिला कर खानेसे हिचकी आराम हो जाती है। एक हकीम साहब इसे अपना आज़मूदा नुसख़ा कहते हैं।

(४९) झाड़ू का जीरा औटाकर पीने से हिचकी नाश हो जाती है।

(५०) बबूलके सूखे या हरे काँटे दो तोले लेकर आध सेर पानी

में औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, मल-छानकर और "शहद" मिलाकर पीओ। इस काढ़ेसे हिचकी रुक जाती है।

(५१) सिकंजबीन पानीमें घोलकर पीनेसे बुख़ारकी हिचकी आराम हो जाती है। इस नुसख़ेसे कफका मल या तो निकल जाता या पच जाता है।

(५२) कमलके बीज, पीसकर पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(५३) दूध पिलाने वाली माँ या धायके कपड़ेसे एक टुकड़ा कपड़ेका फाड़कर और पानीमें भिगोकर बालकके माथेपर रखनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(५४) सफ़ेद जीरा सिरकेमें औटाकर पीनेसे प्यास और हिचकी आराम हो जाती हैं।

(५५) जमालगोटा चिलममें रखकर धूआँ पीनेसे हिचकी बन्द हो जाती है।

(५६) चनेकी या अरहरकी भूसी चिलममें रखकर पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(५७) श्वास रोकने या प्राणायाम करनेसे, एक दम डरानेसे, धमकानेसे, हँसीकी बात करनेसे, भयंकर बात सुनानेसे, अनेक तरहके वात-कफनाशक उपाय करनेसे, हाथ-पाँव बाँधनेसे, अकस्मात् क्रोध, भय और हर्ष पैदा करनेसे, अनजानमें मुँहपर पानीके छींटे मारनेसे, छींक लाने और हिलानेसे हिचकी बन्द हो जाती है।

हिचकी नाशक नस्य वगैरः।

(१) मुलेठी और शहद अथवा पीपर और मिश्री अथवा सोंठ और गुड़—इनमेंसे किसी एकके सूँघनेसे हिचकी नाश हो जाती है।

(२) मैनसिल और गायके सींगका धूआँ पीनेसे हिचकी नष्ट हो जाती है।

(३) कूट अथवा राल अथवा कुशा इनमेंसे किसी एकका धूआँ पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(४) हींग और उड़द पीसकर, बिना धूएँके अंगारेपर डालकर धूआँ पीनेसे पाँचों तरहकी हिचकियाँ निश्चय ही आराम हो जाती हैं।

(५) बिना धूएँकी आगपर हल्दी और उड़दका चूर्ण डालकर धूआँ पीनेसे महा भयंकर हिचकी भी आराम हो जाती है।

(६) पीपलका चूर्ण और चीनी मिलाकर नास लेनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(७) मक्खीका गू स्त्रीके दूधमें घिसकर सूँघनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(८) लाल चन्दन स्त्रीके दूधमें घिसकर सूँघनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(९) हींग, उड़द और गोलमिर्चका चूर्ण बिना धूएँकी आगपर रखकर नाकसे धूआँ पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(१०) गरम घीमें सेंधानोन मिलाकर सूँघने अथवा गरम जल में सेंधानोन घोलकर सूँघनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(११) हिचकी उठनेकी जगह—पेट और कोख आदिको घी या तेल लगाकर सेकनेसे हिचकी नाश हो जाती है।

(१२) भेड़ या बकरीका मूत्र सूँघनेसे हिचकी बन्द हो जाती है।

(१३) लहसनकी जड़ और प्याजकी जड़ इनको स्त्रीके दूधमें पीसकर नास लेनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(१४) गाजरकी जड़ औरतके दूधमें पीसकर सूँघनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(१५) मक्खीका गू आल या महावरके रसमें पीसकर सूँघनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(१६) कालीमिर्च आगपर डाल-डालकर नाकमें धूआँ चढ़ानेसे

हिचकी आराम हो जाती है। अगर इससे लाभ न हो, तो कालीमिर्च और अजवायन दोनोंको आगपर डालो और धूआँ नाकमें चढ़ाओ। अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है।

(१७) अनारकी कली, तुलसीके पत्ते और दूबको बराबर-बराबर लेकर पीस लो और कपड़ेमें रखकर ३।४ बूँद नाकमें टपकाओ। अवश्य हिचकी बन्द हो जायगी। परीक्षित है।

(१८) काले उड़द चिलममें रखकर, तमाखूकी तरह धूआँ पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१९) मूंज हाथसे मलकर चिलममें रखकर धूआँ पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(२०) नारियलकी दाढ़ीकी राख पानीमें घोल दो। जब राख नीचे बैठ जाय, उस पानीको पीओ। हिचकीमें लाभ होगा।

(२१) आमके सूखे पत्ते चिलममें रखकर तमाखूकी तरह पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

हिचकीपर बढ़िया नुसखे।

चन्द्रसूर रस।

कुछ हालोंके बीज अठगुने पानीमें डाल कर पकाओ। जब वे पकते-पकते गाढ़े और नरम हो जायँ, तब एक कपड़ेमें छान लो। इस पानीमें से चार-चार तोले पानी बारम्बार पीनेसे अत्यन्त जोरसे उठी हुई हिचकी भी शान्त हो जाती है। इसको "चन्द्रसूर रस" कहते हैं।

पिप्पल्यादि लौह।

छोटी पीपर, आमले, मुनक्के, बेरकी गुठलीकी गिरी, मुलेठी, चीनी, बायबिडंग और कूट—इन आठोंको एक-एक तोले लेकर कूट-पीसकर

छान लो। फिर इस चूर्णमें आठ तोले "लोह भस्म" मिला कर, पानीके साथ खरल करो और पाँच-पाँच रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

यह हिचकीकी महौषधि है; पर दोष विचार कर, उचित अनुपानके साथ देनेसे वमन और घोर खाँसीको भी आराम करती है। परीक्षित है।

हिंस्राद्य घृत।

चव्य, हरड़, पीपर, कुटकी, गंधतृण, पलाश, चीतेकी छाल, कचूर, काला नोन, भुइँ आमला, सेंधा नोन, वेलगिरी, तालीशपत्र, जीवन्ती और बच—हरेक दो-दो तोले और हींग ६ माशे लेकर, सिलपर पानीके साथ पीस कर लुगदी बना लो।

अब गायका घी ४ सेर, गायका दूध ८ सेर, पानी १६ सेर और ऊपरकी लुगदी मिलाकर घी पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस घीकी मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है। इस घीके पीनेसे हिचकी, श्वास, सूजन, वादी बवासीर, ग्रहणी, हृदयकी पीड़ा और पसलियोंका दर्द आराम हो जाता है।

——::※::——

पाँचवाँ अध्याय

रक्तपित्त-वर्णन ।

रक्तपित्तके सामान्य लक्षण ।

रक्तपित्त रोग होनेसे मुँह, आँख, नाक, कान, गुदा, लिंग, योनि और शरीरके रोमोंसे खून बहा करता है ।

निदान कारण ।

अधिक धूपमें फिरने, मिहनत करने, शोक या रंज करने, बहुत राह चलने, अत्यन्त स्त्री-प्रसंग करने, तीक्ष्ण, नमकीन, खारी, खट्टे, गरम और कटु पदार्थ जियादा खाने वगैरः वगैरः कारणोंसे जला हुआ पित्त खूनको जलाता है, तब वह खून नीचेकी या ऊपरकी अथवा दोनों राहोंसे निकलने लगता है । नाक, कान, नेत्र और मुख ऊपरके और गुदा, लिंग, योनि नीचेके मार्ग हैं । जब खून बहुत ही कुपित होता है, तब समस्त रोमकूपोंसे निकलता है ।

"सुश्रुत" में लिखा है, अधिक धूपमें फिरने आदि कारणोंसे रस बिगड़ कर पित्तको कुपित करता है। कुपित हुआ पित्त खूनको दूषित करता है। दूषित खून ऊपरके या नीचे के रास्तोंसे गिरने लगता है । अगर खून आमाशयमें जाता है, तो ऊपरकी राहोंसे बहता है। अगर पक्वाशयमें जाता है तो नीचेकी राहोंसे बहता है। अगर दोनों स्थानोंमें दूषित होता है, तो दोनों राहोंसे निकलता है । कोई-कोई कहते हैं, कि यकृत और प्लीहासे रुधिर बहता है ।

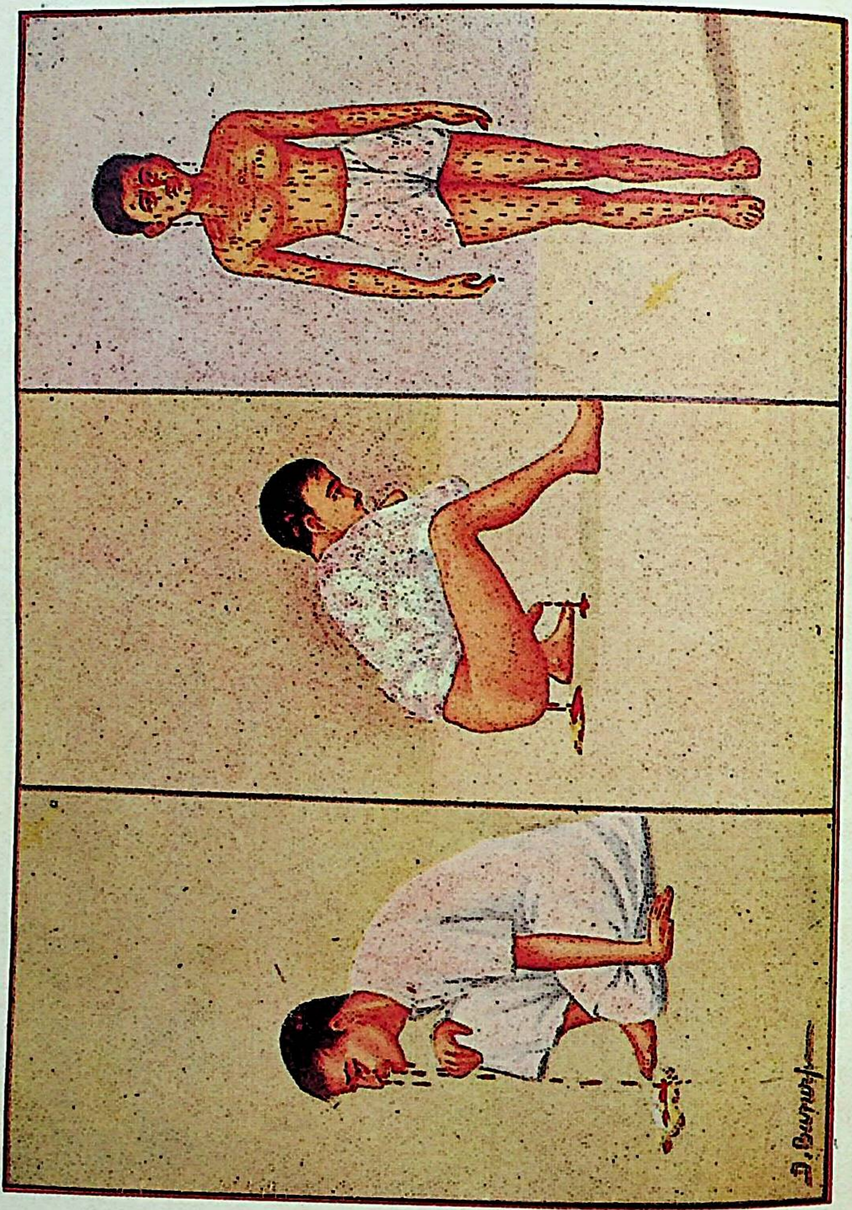
खुलासा यह है, कि धूपमें फिरने, लाल मिर्च आदि गरम पदार्थ खाने, जवाखार आदि क्षार जियादा सेवन करने और आगके सामने बैठने वगैरः कारणोंसे "रस" दूषित होकर "पित्त" को दूषित करता है। दूषित पित्त रुधिर या खूनको दूषित करता है, तब दूषित खून, खून बहाने वाली नसोंमें आकर, विपरीत राहसे चलकर, यकृतसे आमाशय या पक्वाशयकी तरफ जाता है। इस दूषित खूनमें मिल कर पित्त भी लाल हो जाता है। अगर खून आमाशयमें जाता है, तो ऊपरका रक्तपित्त होता है; यानी मुँह, नाक, कान और नेत्रोंसे खून बहता है। अगर वह पक्वाशयमें जाता है, तो गुदा, लिंग या योनि—नीचेके रास्तोंसे खून बहता है।

कोई कहते हैं, कफसे संसृष्ट रक्तपित्त आमाशयमें जाकर उर्द्ध्व-गामी होता है और वायुसे अनुगत हुआ पक्वाशयमें जाकर अधो-गामी होता है। कफ और वायु दोनोंसे संसृष्ट दोनों राहोंसे बहता है। आमाशयमें जाने वालेका मददगार "कफ" होता है, इसलिये उसे "कफज रक्तपित्त" कहते हैं। पकाशयमें जाने वालेका मददगार "वायु" होता है, इसलिये उसे "वातज रक्तपित्त" कहते हैं। कफज रक्तपित्त मुँह, नाक, कान और नेत्रोंसे बहता है और यह साध्य होता है। वातज रक्तपित्त गुदा, लिंग, या योनिसे बहता है और यह कष्टसाध्य होता है। कफ और वात दोनोंके संसर्गसे होने वाला रक्त-पित्त ऊपरके और नीचेके दोनों रास्तोंसे बहता है।

पूर्वरूप ।

शरीरमें शिथिलता, शीतल पदार्थोंकी इच्छा, कंठमें धूआँ-सा घुटना, वमन होना और साँसमें लोहेकी-सी गन्ध आना—ये सब रक्तपित्तके पूर्वरूप हैं।

नोट—रोग पैदा होनेपर, वातादि दोषोंके आधिक्य-अनुसार अलग-अलग लक्षण प्रकट होते हैं।



ऊर्ध्वग रक्तपित्त रोगी। अधोगरक्तपित्त रोगी। अत्यन्त कुपित रक्तपित्त रोगी।

नोट—किसी भी रोगीके सभी अंगोंसे एक साथ खून नहीं गिरता। अगर ऐसा हो तो रोगी फौरन मर जावे। हमने कई चित्र बनानेके खर्चसे बचनेके लिए, विद्यार्थीके समझने भरको, चित्रमें कई अंगोंसे एक साथ खून गिरना दिखा दिया है।

वातज रक्तपित्तके लक्षण ।

अगर रक्तपित्तमें वायुकी ज़ियादती होती है, तो खून काला या लाल, झागदार, पतला और रूखा निकलता है। इस अवस्थामें गुदा, योनि या लिंगसे खून बहता है ।

कफज रक्तपित्तके लक्षण ।

अगर रक्तपित्तमें कफकी अधिकता होती है, तो खून गाढ़ा, पाण्डु वर्ण, कुछ चिकना और पिच्छल होता है। इस अवस्था में खून मुँह, आँख, नाक और कानोंसे बहता है ।

पित्तज रक्तपित्तके लक्षण ।

अगर रक्तपित्तमें पित्त ज़ियादा होता है, तो खून काढ़ेकी तरह काला, गोमूत्र, मोरकी पूँछ, चन्द्रमा या अंगारेके जैसा अथवा धूआँ और अञ्जनके समान नीला या काला होता है ।

संसर्गसे मार्ग भेद ।

कफके संसर्गसे रक्तपित्त—मुख, नाक, कान और नेत्र—ऊपरके मार्गोंसे बहता है। वातके संसर्गसे—गुदा, लिंग या योनि—नीचेके रास्तोंसे बहता है। कफ और वात दोनोंके संसर्गसे ऊपरकी और नीचेकी दोनों राहोंसे बहता है। तीनों दोषोंके संसर्गसे होने वाले में तीनों दोषोंके लक्षण पाये जाते हैं ।

रक्तपित्तके उपद्रव ।

कमज़ोरी, श्वास, खाँसी, ज्वर, वमन, मद या नशा-सा रहना, शरीरका पीला पड़ना, दाह, मूर्च्छा, भोजनके बाद जलन होना, बेचैनी, हृदयमें दर्द, प्यास, गला बैठना, सिरमें गरमी, थूकमें पीपसी आना या बदबूदार पानी-सा आना, भोजनसे वैर, अन्न न पचना और विश्राम न होना—ये रक्तपित्तके उपसर्ग या उपद्रव हैं ।

असाध्य लक्षण।

अगर रक्तपित्तका खून मांसके धोवन जैसा हो, काढ़ेके समान हो, कीचके जलके समान हो अथवा उसमें मेद, राध और खून मिले हों, कलेजेके समान हो, जामुनके पके हुए फलके समान हो, नीला हो, मुर्देकी सी दुर्गन्ध वाला हो, इन्द्रधनुषके रंगोंके समान हो और साथ ही ऊपर लिखे उपद्रव भी हों तो वह असाध्य है।

जो रक्तपित्त रोगी आकाश आदि देखने योग्य और घट पट आदि अदृश्य पदार्थोंको लाल देखता है, वह मर जाता है।

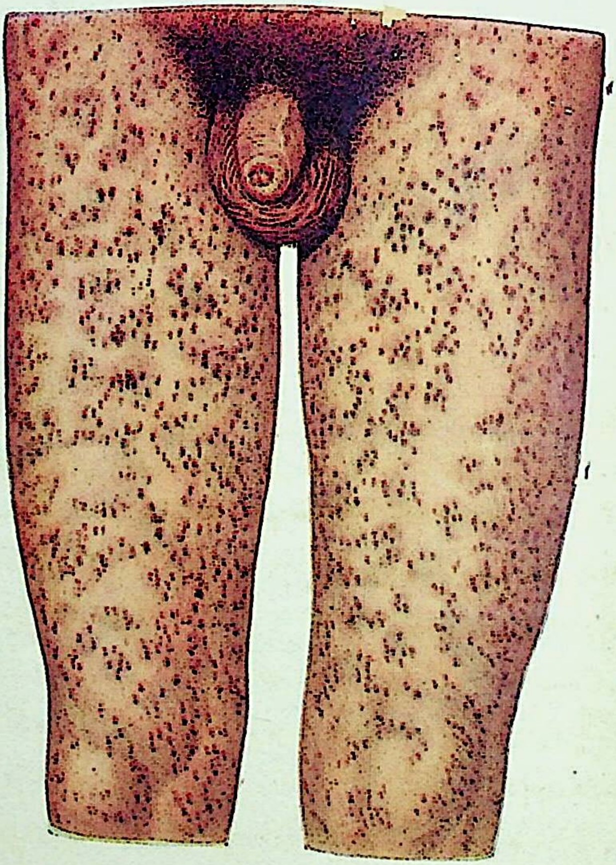
जो रक्तपित्त रोगी बारम्बार खूनकी कय करता है, जिसकी आँखें लाल हो जाती हैं, जिसकी डकारोंके साथ खून आता है, वह मर जाता है।

रक्तपित्त-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) अगर रक्तपित्त-रोगी अन्न खाता हो और बलवान हो, तो शुरूमें ही, उसके वेगसे गिरते हुए दूषित खूनको बन्द करना उचित नहीं है। क्योंकि रोका हुआ खून विसर्प, विद्रधि, प्लीहा, हृदय-रोग, पाण्डु रोग, संग्रहणी, गोला, क्षय, गलग्रह, पूतिनस्य, मूर्च्छा, अरुचि, कोढ़, बवासीर, विवर्णता और भगन्दर, आदि अनेक रोग पैदा करता है।*

अगर रक्तपित्त-रोगी दुर्बल हो और भोजन न करता हो तथा खून बहुत गिरता हो, तो उसके दूषित रक्तको बन्द कर देना ही उचित है।

* अगर रोका हुआ खून छोटी-छोटी शिराओं द्वारा चमड़ेकी तरफ़ जाता है, तो पाण्डु रोग करता है; अगर ग्रहणीकी तरफ़ जाता है तो ग्रहणी रोग करता है। अगर पेटमें कहीं रुका रहता है, तो रक्तगुल्म करता है। मरदोंको रक्तगुल्म नहीं होता, पर इस तरह हो जाता है।



रक्तपित्त रोगी का चित्र।

इस रोगको अँग्रेज़ीमें स्करवी (Scurvy) कहते हैं। इसमें पित्तके कारण से रक्त दूषित होता है। विकृत रक्त शरीरके नौ द्वारोंसे गिर सकता है। जब रक्त-वमन होती हैं, तब इसे हिमेटेमिसिस (Haematemesis) कहते हैं। अगर खाँसीमें खून गिरता है तो हिमोपटेसिस (Haemoptesis) कहते हैं। जब नाक से खून गिरता है ऐपिसटैक्सिस (Epistaxis) कहते हैं। इसमें आँखों और कानोंसे भी खून गिर सकता है। जब होठों और मसूढ़ोंसे खून गिरता है तब इसे स्पञ्जीगम (Spongygum) कहते हैं। जब गुदासे खून गिरता है तब मैलिना (Malina) कहते हैं। इसी तरह मूत्रमार्ग वगैरः से खून गिरनेवाले के अलग-अलग नाम हैं।

अगर कोई वैद्य ऊपरके नियमपर ध्यान रखकर, कमज़ोर रोगीके खून को भी बन्द न करेगा तो परिणाम भयंकर होगा। वाग्भट्टने कहा है:—

अश्नतो बलिनोऽशुद्धं न धार्य्यं तद्धि रोगकृत्।
धारयेदन्यथा शीघ्रमग्निवच्छीघ्रकारि तत्॥

भोजन करनेवाले बलवान रक्तपित्त-रोगीके दूषित रक्तको रोकना अच्छा नहीं है, क्योंकि इस दशामें खून बन्द करनेसे रोग हो जाते हैं; परन्तु कमज़ोर और खाना न खानेवाले रोगीका दूषित रक्त रोकना उचित है। अगर ऐसे रोगीका खून बन्द नहीं किया जाता, तो वह रोगी तत्काल मर जाता है।

कहिये पाठक! चिकित्सा-कर्म कैसा कठिन और कैसी बुद्धिमानी का काम है!

(२) रक्तपित्त रोगमें भी वैद्यको वमन-विरेचन यानी क़य और दस्त कराने होते हैं, पर यह काम भी अन्धाधुन्ध नहीं करना चाहिये। केवल बलवान और जवान रोगीको क़य या दस्त करानेकी शास्त्रमें आज्ञा है; बूढ़े, बालक और कमज़ोरको नहीं। बूढ़े, बालक, कमज़ोर और शोष रोगीको तो रोग शान्त करने वाली दवा दे देनी चाहिये। रक्तपित्तमें चाहे जिसे वमन और चाहे जिसे विरेचन करा देना भी हानिकर है। लिंग, गुदा और योनिसे खून गिरने वाले नीचेके रक्तपित्त में "वमन" और मुख, नाक आदि ऊपरके अंगोंसे खून गिरने वाले— ऊपरके रक्तपित्तमें जुलाब देना चाहिये। "सुश्रुत" में लिखा है:—

अधः प्रवृत्तं वमनैरुर्द्ध्वमार्गं विरेचनैः।
जयेदन्यतरं चापि क्षीणस्य शमनैरसृक्॥

नीचेके अंगोंसे खून गिरने वाले बलवान रोगीका रक्तपित्त वमन या क़य कराकर शान्त करना चाहिये और ऊपरके मुखादि अंगोंसे खून गिरने वाले बलवान रोगीका रक्तपित्त विरेचन या जुलाब देकर शान्त करना चाहिये अथवा और उपायोंसे आराम करना चाहिये।

लेकिन अगर रक्तपित्त रोगी कमज़ोर या दुर्बल हो, तो उसे वमन-विरेचन—कय और दस्त करानेवाली दवा न देनी चाहिये। ऐसे रोगी का रक्तपित्त चाहे ऊपरका हो चाहे नीचेका उसे रोग शमन करने-वाली दवा दे देनी चाहिये। वाग्भट्टजी कहते हैं:—

सन्तर्पणोत्थं बलिनो बहुदोषस्य साधयेत्।
उर्ध्वभागं विरेकेण वमनेन त्वधोगतम्॥

सन्तर्पणसे पैदा हुआ, बलवान और बहुत दोषवाले मनुष्यका ऊपरका रक्तपित्त जुलाब देकर आराम करना चाहिये और नीचेका रक्तपित्त कय कराकर आराम करना चाहिये। खुलासा यह है:—

(१) बलवान भोजन करनेवालेको वमन विरेचन कराओ।
(२) ऊपरके रक्तपित्तमें विरेचन या जुलाब दो।
(३) नीचेके रक्तपित्तमें वमनकारक दवा दो।
(४) बलमांस-क्षीण कमज़ोर रोगीको वमन विरेचन मना है।
(५) बालक, बूढ़े और शोष रोगसे पीड़ित रक्तपित्त रोगीको भी वमन-विरेचन मना है।
(६) कमज़ोर रोगीको वमन-विरेचन न कराकर, रोग शमनकारी दवाएँ दे देनी चाहियें।

(३) लिख आये हैं कि, ऊपरके रक्तपित्तमें बलवान रोगीको जुलाब देना चाहिये और नीचेके रक्तपित्तमें वमन करानी चाहियें। इसमें इस बातका ध्यान रखना चाहिये, कि पहले तर्पण कराकर तब जुलाब दिया जाय और दोषानुसार पेया पिलाकर वमन कराई जायँ। नीचेके नुसख़े इन कामोंके लिये उत्तम हैं:—

(१) दस्त कराने हों, तो अमलताश और आमलोंका काढ़ा "मिश्री और शहद" मिलाकर पिलाना चाहिये। अथवा हरड़का काढ़ा "मिश्री और शहद" मिलाकर पिलाना चाहिये।

(२) वमन करानेके लिये—नागरमोथा, इन्द्रजौ, मुलेठी और मैनफलका काढ़ा, शीतल होनेपर, "शहद और मिश्री" मिलाकर पिलाना चाहिये।

(३) सरिवन, पिठवन, वृहती, कंटकारी और गोखरू—इनके काढ़ेके साथ

पकायी हुई पेया नीचेके रक्तपित्त वालेको परम हितकारी है। इससे रक्तपित्तमें विशेष लाभ होता है।

(४) जिसको ऊपरका रक्तपित्त हो तथा बल, मांस और अग्नि ये क्षीण न हुए हों, उसे पहले लंघन कराने चाहियें। अगर बल, मांस और अग्नि क्षीण हो गये हों, रोगी कमजोर हो और खाता-पीता न हो, तो लंघन न कराकर तृप्तिकारक आहारादि देने चाहियें। अगर भोजन देना हो, तो घी, शहद और धान की खीलोंका मन्थ बना कर देना चाहिये। अथवा खजूर, दाख, मुलेठी, और फालसेका काढ़ा चीनी मिलाकर और शीतल करके पिलाना चाहिये।

"सुश्रुत" में लिखा है—अगर रोगी क्षीण न हुआ हो—बलवान, पुष्ट और दीप्त अग्नि वाला हो और रक्तपित्त जोरसे हो, तो उसे पहले लंघन कराने चाहियें। उचित लंघनोंके बाद, थोड़े चाँवलोंकी पेया पिलानी चाहिये; तर्पण कराना चाहिये; पाचन वस्तु या अवलेह अथवा दवाओंसे पकाये घी देने चाहिएँ।

वाग्भट्ट जी कहते हैं,—यथास्वंमन्थपेयादिः प्रयोज्यो रक्षितावलम्; अर्थात् वमन-विरेचनसे शुद्ध हुए मनुष्यको, वलकी रक्षाके लिए, ऊपर के रक्तपित्तमें मन्थादि और नीचेके रक्तपित्तमें पेया आदि देने चाहियें।

ऊपरके रक्तपित्तमें सोंठ रहित "षडंग पानी" पीने वालेको कड़वे, कसैले रस और उपवास ये हित हैं। अगर लंघन न कराने हों, तो तर्पण पदार्थ—जैसे घी, शहद और खीलोंका मन्थ आदि देने चाहियें। नीचेके रक्तपित्तमें पहले पेया देनी हित है। ऊपरके रक्तपित्तमें जिस तरह कड़वे, कसैले रस हित हैं, उसी तरह नीचे वालेमें वृंहण और मीठे रस हित हैं।

(५) अगर रक्तपित्त रोगके साथ ज्वर भी हो, तो रक्तपित्त और ज्वर दोनोंको नाश करनेवाली दवा देनी चाहिये। अगर श्वास, खाँसी और स्वर भेद आदि उपद्रव हों, तो राजयक्ष्माकी तरह इलाज करना चाहिये। हम नीचे चन्द परीक्षित नुसखे लिखते हैं:—

(१) निशोथ, श्यामा-कालीसर, त्रिफला और पीपर—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो । फिर चूर्णसे दूनी चीनी और शहद मिलाकर मोदक बना लो । इन मोदकोंके खानेसे त्रिदोषज ऊपरका रक्तपित्त और ज्वर दोनों आराम हो जाते हैं ।

(२) सुगन्धवाला, कमल, धनिया, लालचन्दन, मुलेठी, गिलोय, अड़ूसा और खस—इनके काढ़ेमें मिश्री और शहद मिलाकर पीनेसे ज्वर, दाह और प्यास सहित रक्तपित्त नाश हो जाता है ।

(३) चन्दन, इन्द्रजौ, पाढ़, कुटकी, धमासा, गिलोय, अड़ूसा, लोध और पीपर इनके काढ़ेमें शहद मिलाकर पीनेसे कफ-मिला खून गिरना, प्यास, खाँसी और ज्वर नाश हो जाते हैं ।

(४) अड़सेके स्वरसमें तालीसपत्रका चूर्ण और शहद मिला कर पीनेसे कफपित्त, तमक श्वास, खाँसी, स्वरभंग और रक्तपित्त—यह नाश हो जाते हैं ।

(५) शतावर, त्रिफला, रास्ना, कुंभेर और फालसे—इनका काढ़ा पीनेसे रक्तपित्त और शूल नष्ट हो जाते हैं ।

(६) हरड़का चूर्ण शहदके साथ चाटनेसे रक्तपित्त, शूल और अतिसार नष्ट हो जाते हैं ।

(७) कहते हैं, घीके साथ दही खानेसे रक्तपित्त आदि रोग शान्त हो जाते हैं ।

नोट—घी और दही मिलकर रक्तपित्त को शान्त करते हैं, अकेला दही तो रक्तपित्त, वातरक्त, रुधिर की खराबी और कोढ़ आदि रोगोंमें हानिकारक है । हाँ, दहीमें अगर आमलोंका रस या आमलोंका चूर्ण मिला दिया जावे, तो रक्त और रक्तपित्त कुपित नहीं होते । आमवात, कफवात और शीतवातमें भी दही नुक़सान करता है । कफ और पित्तकी अधिकतामें दही सदा ही हानिकर है ।

(६) अगर रक्तपित्त रोगीके साँसमें तत्ते लोहेकी सी और डकारोंमें धूएँकी सी गन्ध आती हो, तो चार माशे इलायचीका चूर्ण और आठ माशे बूरा मिलाकर खाना चाहिये ।

(७) अगर कफ रहित और दीप्त अग्नि वाले मनुष्यका रक्तपित्त अनेक तरहके काढ़े पिलानेसे भी आराम न होता हो, और रोगमें "वायु" की अधिकताके लक्षण पाये जाते हों, नीचेका रक्तपित्त हो, तो उसे बकरी या गायका दूध पँचगुने पानीमें औटा कर, मिश्री और शहद डालकर पीना चाहिये ।

गोखरू और शतावर डालकर पकाया हुआ दूध—पीड़ा समेत पेशाबकी राहसे जानेवाले खूनको बन्द करता है। सरिवन, पिठवन, मुगवन और माषपर्णीके साथ पक । हुआ दूध मूत्रमार्गसे जानेवाले रक्तपित्तमें लाभदायक है। मोचरसके साथ पकाया हुआ दूध गुदा से जानेवाले रक्तको बन्द करता है। बड़के अंकुरोंके साथ पकाया हुआ दूध भी गुदा-मार्गके रक्तपित्तको नाश करता है। सोंठ, कमल और नेत्रवालाके साथ पकाया हुआ दूध भी गुदा-मार्गके रक्तपित्त में हितकारी है।

नोट—एक या दो तोले दवा, १६ तोले बकरीका दूध और सेर भर पानी—इनको मिलाकर दूध पकाना चाहिये। जब पानी जलकर दूध मात्र रह जाय, छानकर पीना चाहिये।

(८) रक्तपित्त रोगमें "पित्त" के अधिक निकल जानेसे प्रायः अग्नि नाश हो जाती है, उस समय मुखमें विरसता और अन्नमें अरुचि होती है। अगर अग्नि नष्ट हो गई हो और अरुचि हो, तो सोंठ और इन्द्रजौका चूर्ण "चाँवलोंके धोवन" के साथ पीना चाहिये। जब यह पच जाय, तब नौनिया, माठा और अनारके द्वारा पकाई हुई पेया पीनी चाहिये। इस उपायसे अग्नि जग उठती है।

(९) अगर कफके रक्तपित्तमें खूनकी गाँठें पड़ गई हों, तो जवाखारको नाबराबर घी और शहदमें मिलाकर चाटना चाहिये।

(१०) रक्तपित्त रोगीको रक्तपित्त पैदा करनेवाले आहार-विहार त्याग देने चाहियें, क्योंकि उनके बिना त्यागे रोगके आराम होनेकी आशा करना फ़िजूल है। इसीसे वाग्भट्टजी कहते हैं :—

यत्किञ्चिद्रक्तपित्तस्य निदानं तच्च वर्जयेत्।

(११) नीचेके या बादीके रक्तपित्त रोगमें "रक्तातिसार, रक्तार्श और रक्तप्रदर नाशक नुसख़े" भी काम देते हैं, पर ज़रा विचार और बुद्धिकी ज़रूरत है।

(१२) "अड़ूसा" रक्तपित्तकी परमौषधि है, वैद्यको यह बात सदा

याद रखनी चाहिये। अड़ूसेका काढ़ा या स्वरस अथवा वासाघृत निश्चय ही रक्तपित्त वालोंको आराम करते हैं।

(१३) नारंगीके फूलोंका भभके-द्वारा खींचा हुआ अर्क़ या काढ़ा रक्तपित्त और हृदय रोगमें हितकारी है।

नोट—नारंगी परमोपकारी फल है। इसके फलका रस कपड़ेमें निचोड़ कर पीनेसे गरम, तेज़ और उत्तेजक दवाओंके खानेसे खराब हुई अग्नि, पित्त बिगड़ना और दाह आदि रोग नाश होते और मनमें शान्ति आती है।

नारङ्गीके रसमें मिश्री और ज़रासी छोटी इलायची पीस कर मिला लो और पी लो। इससे प्यास, जी मिचलाना, कय होना, अन्नकी इच्छा न होना, पेटमें जलन होना और पित्तका कोप आदि सारी शिकायतें तत्काल आराम हो जाती हैं। भोजन करके इसके पीनेसे अपूर्व्व आनन्द आता है और भोजन हज़म होकर भूख लगती है। अमीरोंके सेवन करने योग्य चीज़ है; पर याद रखो, नारङ्गीका रस ही ज़ियादा मुफीद होता है। उसकी फाँकोंमें आस-पास जो सफेदसे ताँतु रहते हैं, वह बड़े खराब होते हैं। वे बड़ी कठिनसे पचते और बहुधा आम मरोड़ीके दस्त और खून-आमके दस्त आदि पैदा करते हैं, क्योंकि वे दाँतोंकी तरह आँतोंमें भी इलझ जाते हैं। इन ताँतुओं समेत फाँकें गटक जानेसे पेटमें अनेक रोग हो जाते हैं। इसलिये ही हमने रस निकाल कर पीनेकी राय दी हैं। प्लेगके मौसममें, नारङ्गीका रस पीने वालेको प्लेग नहीं होता। नारङ्गीके रसमें थोड़ासा सेंधानोन और गोल मिर्च मिला कर पीनेसे अजीर्ण आदि कई रोग नाश हो जाते हैं।

रक्तपित्त रोगमें पथ्यापथ्य।

पथ्य।

नीचेके यानी लिङ्ग, योनि और गुदा द्वारा जानेवाले रक्तपित्तमें रोगीको वमन करानी चाहिये; जबकि ऊपरके नाक आदिसे जाने वाले रक्तपित्तमें जुलाब देकर दस्त कराने चाहियें। दोनों तरहके रक्तपिमेंत्तों लंघन कराने चाहिएँ।

पुराने चाँवल, साँठी चाँवल, कोदों, सामाँ, जौ, मूंग, मसूर, चना, अरहर, मौंठ और खीलोंका सत्तू—ये सब अन्न पथ्य हैं।

गाय और बकरीका घी-दूध, भैंसका घी, कटहर, चिरौंजी, केलेकी गहर, जल-चौलाई, परवल, बेंतकी कोंपल, अदरख, पुराना पेठा, ताड़फल, ताड़फलके बीज, ताड़ी-रस, अड़ूसा, कुन्दरू, अनार, खजूर, आमले, नारियलकी गिरी, कसेरू, सिंघाड़े, कैथ, कमलकन्द, फालसे, सफेद तूम्बी, तरबूज़, दाख, मिश्री, शहद और ईख—ये सब पदार्थ पथ्य हैं।

चिंगट या वर्मि मछली, ख़रगोश, पिंडुकिया, हिरन, काला हिरन, लवा, सेह, कबूतर, बतख़, बटेर, बगुला, मेंढ़ा, दुम्बा और सफेद तीतर—इन सब जीवोंके मांस पथ्य हैं।

शीतल जल, झरनेका पानी, जल छिड़कना, जलमें ग़ोता लगाना, सौ बारका धोया घी, तेलकी मालिश, शीतल चीजोंका उबटन, शीतल हवा, चन्दन लगाना, चाँदनी रात, विचित्र-विचित्र कहानी-क़िस्से, मनोहर बात-चीतें, फव्वारे वाला मकान, केलेके भीतरके कोमल पत्तों या कमलके पत्तोंकी शैया, रेशमी कपड़े, सुखदायक फुलवाड़ी या बाग़, प्रियंगू और चन्दनादिका लेप किये हुए स्त्रियोंसे आलिंगन करना, कमल खिल रहे हों ऐसा तालाब, बरफकी फुहार, सुन्दर शीतल पहाड़ी झरने, सुन्दर गाना, शीतल रेत, वैडूर्यमणि, हीरे, पन्ने और मोतियोंका पहनना—ये सब रक्तपित्त रोगमें पथ्य हैं।

ऊपरके रक्तपित्तमें घी, शहद और चाँवलोंकी खीलोंका भोजन बनाकर देना पथ्य है। सरिवन, पिठवन, दोनों कटेरी और गोखरू—"लघु पंचमूल" की इन दवाओंके काढ़ेके साथ पकाई हुई पेया रक्त-पित्तमें पथ्य है।

जब बहुत खून गिरना बन्द हो जाय, अन्न पचानेकी ताक़त हो जाय, तब दिनमें पुराने चाँवलोंका भात, मूंगकी दाल, मसूरकी

दाल, चनेकी दाल, परवल, करेले और पके कुम्हड़ेका साग, बकरी का दूध, खजूर, अनार, सिंघाड़े, किशमिश, आमले, मिश्री, नारियल की गिरी, मीठे तेल या घीमें पकाई हुई साग तरकारी या अन्य पदार्थ—ये सब पथ्य हैं।

रातके समय—जौ, गेहूँकी रोटी, परवल, करेले और पके कुम्हड़ेका साग, बेसनके पदार्थ, घी और कम मीठेसे बने हुए पदार्थ—देना पथ्य है।

जल।

पानीको औटाकर शीतल कर लेना चाहिये और वही रोगीको देना चाहिये। पानी औटानेकी तरकीबें "चिकित्सा-चन्द्रोदय" दूसरे भागमें देखनी चाहियें।

अपथ्य।

कसरत-कुश्ती-मिहनत, पैदल राह चलना, धूपमें घूमना, आगके सामने बैठना, क्रूर कर्म करना, मलमूत्र आदि वेगोंको रोकना, हाथी घोड़े पर चढ़ना, पसीने निकालना, फस्द खोलना, धूआँ पीना या हुक्का चिलम अथवा सिगरेट पीना, मैथुन करना और क्रोध करना—ये सब अपथ्य हैं।

कुल्थी, गुड़, बैंगन, तिल, उड़द, सरसों, दही, दूध, कुएँका पानी, पान, शराब, लहसन, सेम, विरुद्ध भोजन एवं चरपरे, खट्टे, नमकीन और जलन वाले पदार्थ—ये सब अपथ्य हैं।

देरमें हजम होने वाले और रूखे पदार्थ, दही, मछली, अधिक दस्तावर चीजें, सरसोंका तेल, लाल मिर्च, जियादा नमक, आलू, सेम, उड़दकी दाल और पान प्रभृतिसे बहुत बचना चाहिये। ये हानिकारक हैं।

दाँतुन करना, धूपमें बैठना, ओसमें बैठना या सोना, रातको जागना, गाना, जोरसे बोलना और नहाना भी हानिकारक हैं।

नोट १—ऊपर जलमें गोता लगाना अच्छा लिख आये हैं और यहाँ नहाना मना किया है, इसमें विचार बुद्धिकी ज़रूरत है । बहुत कमज़ोर और बिगड़े हुए रोगी नहानेसे मरेंगे—परन्तु बलवान और उपद्रव-रहित, जिनको नहानेसे लाभ होगा, आराम होंगे । जैसे, जिसकी नाकसे खून आता हो, पर और कोई तकलीफ़ न हो, वह नहाने या सिर पर पानी डालनेसे आराम होगा । कमज़ोर रोगी नहाना ही चाहे, नहाये बिना कल न पड़े, तो गरम जलको ठण्डा कर लो और उसीसे स्नान करा दो; पर बुखार आदि हों तो स्नान मत कराना ।

नोट २—एक जगह शास्त्रमें लिखा है—गवामजायाश्च पयो घृतं च घृतं महिष्याः पनसं प्रियालम् ; अर्थात् गाय और बकरीका दूध घी और भैंसका घी, कटहल और चिरौंजी प्रभृति पथ्य हैं । दूसरी जगह अपथ्य पदार्थोंमें लिखा है—सर्षपदधि क्षीराणि कौपं पयः ये अपथ्य हैं; अर्थात्, सरसों, दही, दूध और कूएँका जल ये अपथ्य हैं । हम नहीं समझ सके यह क्यों लिखा है, क्योंकि गाय और बकरी दोनों ही के दूध रक्तपित्तको नाश करते हैं । गायके दूधके सम्बन्धमें लिखा है—जीर्णज्वरं मूत्रकृच्छ्रं रक्तपित्तं च नाशयेत अर्थात् गायका दूध जीर्णज्वर, मूत्रकृच्छ्र—पेशाबके कष्टसे होने और रक्तपित्तको नाश करता है । बकरीके दूधके सम्बन्धमें वैद्यक शास्त्रमें लिखा है—बकरीका दूध कसैला, मीठा, शीतल, ग्राही और हल्का होता है । वह रक्तपित्त, अतिसार, क्षय, खाँसी और ज्वरको नाश करता है । हिकमतमें लिखा है, बकरीका दूध गरमीके रोगोंमें बहुत मुफीद है; गरम मिज़ाज वालोंको ताक़त बख़्शता है; मुँहसे खून आने, खाँसी, सिल—उरःक्षत और फेंफड़ोंके ज़ख़्मोंमें लाभदायक है ।

हमारी रायमें गाय और बकरी दोनोंके ही दूध रक्तपित्तमें पथ्य हैं । इन दोनोंमें भी बकरीका दूध सब प्रकृतिवालोंके लिए उत्तम है । गाय और बकरी के दूधके सिवाय और जीवोंके दूध अपथ्य हो सकते हैं ।

रक्तपित्त नाशक ग़रीबी नुसख़े ।

(१) दूबका रस, अनारके फूलोंका रस, गोबर या घोड़ेकी लीदका रस—चींनी मिलाकर पीनेसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

(२) अड़ूसेके पत्तोंका रस, गूलरके फलोंका रस और लाख का भिगोया पानी—इनको मिलाकर पीनेसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

(३) एक माशे या सवा माशे फिटकरीका महीन चूर्ण दूधमें मिलाकर पीनेसे खून गिरना तत्काल बन्द हो जाता है।

(४) लालचन्दन, बेलगिरी, अतीस, कुड़ेकी छाल और बबूलका गोंद,—ये सब मिलाकर दो तोले लो। बकरीका दूध १६ तोले और पानी एक सेर ले लो; फिर सबको मिलाकर औटाओ, जब दूध मात्र रह जाय, छान कर रोगीको पिलाओ। इस दवासे गुदा, योनि और लिङ्गसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

(५) शतावर और गोखरूकी जड़ कुल दो तोले, बकरीका दूध १६ तोले और पानी एक सेर मिला कर औटाओ। दूध मात्र रहनेपर छान कर रोगीको पिला दो। इससे योनिसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

नोट—योनिसे खून गिरनेमें "प्रदर रोगकी दवा" देनेसे खून बन्द हो जाता है।

(६) पिठवन, मुगवन और माषानि कुल २ तोले, बकरीका दूध १६ तोले और जल एक सेर लेकर औटाओ और दूध मात्र रहनेपर छान कर पिलाओ। इससे भी योनिसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

(७) आमले घीमें भूँजकर और काँजीमें पीसकर मस्तकपर लगानेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है । परीक्षित है ।

नोट—अगर काँजी न हो, तो बिना काँजीमें पीसे ही लगा दीजिये ।

(८) चीनी-मिले हुए दूधकी नास लेनेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(९) अनारके फूलोंका रस नाकमें चढ़ाने या नास लेनेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(१०) प्याज़का स्वरस सूँघनेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(११) गोबरका रस सूँघनेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(१२) महावरका पानी सूँघनेसे या नास लेनेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(१३) आमकी गुठलीके रसकी नास लेनेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(१४) हरड़-भिगोये पानीकी नास लेनेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है ।

नोट—अगर कानोंसे खून गिरता हो, तो इनमेंसे ही कोई दवा कानमें डालनी चाहिये ।

(१५) जलमें मिश्री मिलाकर नाकसे पीनेसे नाकसे बहुत खून का गिरना भी बन्द हो जाता है ।

(१६) दूध और घीमें मिश्री मिलाकर पीनेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(१७) ईखके रसमें मिश्री मिलाकर पीनेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(१८) अगर खूनकी गाँठें गिरती हों, तो बहुत थोड़ी कबूतरकी बीट, "शहद" में मिलाकर चटाओ।

(१९) १०८ बारके धोये हुए मक्खनमें अन्दाज़का "कपूर" मिलाकर, सिरपर लगानेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२०) छै माशे गोभीके पत्ते पानीमें पीसकर खानेसे खूनकी कय होना या थूकमें खून आना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२१) दो रत्ती शुद्ध अफीम खानेसे थूकमें खून आना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२२) कचनारके पत्तोंका ६ माशे स्वरस पीनेसे मुँहसे खून आना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२३) गायका ताजा लूनी घी नाकमें टपकानेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२४) शीतल जल सिरपर डालने और शीतल ही जलके गरगरे-कुल्ले करनेसे नकसीर बन्द हो जाती है।

(२५) ईसबगोल सिरकेमें भिगोकर माथेपर लगानेसे नकसीर आराम हो जाती है।

(२६) माजूफलका कपड़छन किया हुआ चूर्ण नाकमें फूँकनेसे नकसीर आराम हो जाती है।

(२७) चक्कीकी गर्द नाकमें फूँकनेसे नकसीर आराम हो जाती है।

(२८) उड़दका आटा नरम गूँदकर, तालूपर रखनेसे नकसीर बन्द हो जाती है।

(२९) बेरकी पत्तियाँ पानीमें पीसकर सिरपर मलनेसे नकसीर बन्द हो जाती है।

(३०) छोटी कटेरी पानीमें पीस कर तालूपर लगाने और उसकी जड़का पानी नाकमें निचोड़नेसे नकसीर बन्द हो जाती है।

(३१) केलेके पेड़का रस सुड़कनेसे नकसीर बन्द हो जाती है।

(३२) आमले भिगोकर और टिकिया बनाकर तालूपर बाँधनेसे नकसीर बन्द हो जाती है।

(३३) गायका सूखा गोबर नाकमें फूँकने और ताज़ा गोबर सिरपर रखनेसे नकसीर बन्द हो जाती है।

(३४) रसौतकी राख नाकमें फूँकनेसे नकसीर बन्द हो जाती है।

(३५) घोंघा, गायका सींग और बकरीका सींग जलाकर और छानकर नाकमें फूँकनेसे नकसीर आराम हो जाती है।

(३६) गधेकी लीदका रस नाकमें टपकानेसे नकसीर बन्द हो जाती है।

(३७) नीमके पत्ते और अजवायन पीसकर सिरपर लगानेसे नकसीर बन्द हो जाती है।

(३८) कलमी शोरा "सिरके" में पीसकर माथेपर मलनेसे नकसीर बन्द हो जाती है।

(३९) गधेकी लीद जलाकर, उसकी राख नाकमें फूँकनेसे नकसीर बन्द हो जाती है।

(४०) जंगली कंडेकी राख नाकमें फूँकनेसे नकसीर आराम हो जाती है।

(४१) गूलरकी छाल पानीमें पीसकर तालूपर बाँधनेसे नकसीर बन्द हो जाती है।

(४२) जौका आटा, मुलतानी मिट्टी, धनिया, ईसबगोल, आमले और गेरू—बराबर-बराबर पानीके साथ पीसकर माथेपर लगानेसे नकसीर बन्द हो जाती है।

(४३) ढाकके फूलोंका अष्टमांश काढ़ा बनाकर और शहद मिलाकर पीनेसे नाकसे और योनिसे खून आना बन्द हो जाता है।

(४४) कहरुवेको पीसकर नाकमें सूँघनेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है। कहरुवेको पानीमें पकाकर सिरके ऊपर लेप करनेसे भी नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है और दिमाग़से फैंफड़े में आने वाले दोष रुक जाते हैं।

नोट—कहरुवेको शीतल जल या शीतल शर्बतके साथ सेवन करनेसे खून की कय, खूनके दस्त, मस्सोंसे खून गिरना, रक्तप्रदर, यकृत या मूत्र-मार्गसे निकलने वाला खून, कामला, मूत्रकृच्छ्र, मूत्रकी जलन, आमाशय और मूत्र-पिण्डकी कमज़ोरी ये सब रोग नाश हो जाते हैं।

कहरुवेको दूसरी उचित औषधिके साथ सेवन करनेसे मुँहसे खून गिरना, जो फैंफड़े या छातीकी किसी रगके फट जानेसे गिरता है, बन्द हो जाता है। इस की मात्रा २ से ४ माशे तक है।

(४५) किशमिश, लाल चन्दन, लोध और प्रियंगू इन सबका चूर्ण—अड़ूसेके पत्तोंके रस और शहदके साथ पीनेसे नाक, मुँह, गुदा, योनि या लिंगसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

नोट—गुदासे गिरता हुआ खून बन्द करनेको "रक्तातिसार या रक्तार्श" की दवा देनी चाहिये। इसी तरह लिंगसे गिरते हुए खूनको बन्द करनेके लिए "पित्तज प्रमेह नाशक" दवा देनी चाहिये और योनिसे गिरते हुए खूनमें "प्रदर नाशक औषधि" देनी चाहिये।

(४६) मिट्टी, दूब और आमले—इनको महीन पीसकर सिरपर लेप करनेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(४७) नारियलका पानी पीनेसे रक्तपित्त या खून गिरना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(४८) मिश्री डालकर बकरीका दूध पीनेसे रक्तपित्त या खून गिरना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४९) अड़ूसेके पत्तों का रस ६ माशे, शहद ६ माशे और मिश्री

६ माशे पीनेसे रक्तपित्त या खून गिरना आराम हो जाता है। परीक्षित है। लाख रुपयेका नुसखा है। खाँसी और यक्ष्मापर भी अक्सीर है। कहा है:—

मध्वाटरूषकरसैर्यदि तुल्यभागौ कृत्वानरः पिबति पुण्यतरः प्रभाते।
तद्रक्तपित्तमतिदारुणमप्यवश्यमाशुप्रशाम्यति जलैरिववह्निपुञ्जः॥

जो कोई शहद और अड़ूसेके पत्तोंके रसको बराबर-बराबर मिलाकर सवेरे ही चाटता है, उसका दारुण रक्तपित्त भी निश्चय ही शीघ्रतासे उसी तरह शान्त हो जाता है; जिस तरह कि जलसे आग शान्त हो जाती है।

(५०) अड़ूसेके पत्तोंको कूटकर रस निचोड़ लो। फिर उसमें "शहद और मिश्री" मिलाकर सवेरे ही पीओ। इससे दारुण रक्तपित्त या खून गिरना भी आराम हो जाता है। खूब परीक्षित है।

(५१) अड़ूसेके काढ़ेमें शहद और मिश्री मिलाकर पीनेसे रक्तपित्त फौरन ही आराम हो जाता है।

(५२) अड़ूसेके निर्यूहमें फूलप्रियंगू, मिट्टी, अञ्जन, लोध और शहद मिलाकर पीनेसे रक्तपित्त नाश हो जाता है।

(५३) अड़ूसेके काढ़ेमें—कमल, मिट्टी, फूलप्रियंगू, लोध, अंजन और कमल-केशरका चूर्ण तथा मिश्री और शहद मिलाकर पीनेसे ज़बर्दस्त रक्तपित्त भी नाश हो जाता है।

(५४) अड़ूसेके पत्तोंके स्वरसमें "तालीसपत्रका चूर्ण और शहद" मिलाकर पीनेसे तमक श्वास और रक्तपित्त रोग नष्ट हो जाते हैं।

(५५) अड़ूसेके पत्ते, दाख और हरड़के काढ़ेमें "मिश्री और शहद" डालकर पीनेसे खाँसी, श्वास और रक्तपित्त रोग नाश हो जाते हैं।

(५६) शतावर, त्रिफला, रास्ना, कुम्भेर और फालसे—इनका काढ़ा पीनेसे रक्तपित्त और शूल तत्काल नाश हो जाते हैं।

(५७) चन्दन, इन्द्रजौ, पाढ़, कुटकी, धमासा, गिलोय, अड़ूसे के पत्ते, लोध और पीपर इनके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे कफ-मिले खूनका गिरना, प्यास लगना, खाँसी चलना और ज्वर ये सब नाश हो जाते हैं।

(५८) निशोथ, त्रिफला, कालीसर, पीपर, मिश्री और शहद—इन को बराबर-बराबर लेकर पीस लो और मिलाकर लड्डू बना लो। ये लड्डू त्रिदोषज उर्द्धगत रक्तपित्त और ज्वरको नष्ट करते हैं।

(५९) अड़ूसेके स्वरसमें फूल प्रियंगू, सोरठकी मिट्टी, लोध, निशोथका चूर्ण और शहद मिलाकर पीनेसे मुँह, गुदा, लिंग और योनिसे खून निकलना बन्द हो जाता है। जो खून किसी दवासे बन्द न हो, वह इस योगराजसे बन्द हो जाता है।

(६०) ६ माशे हरड़के बकलोंका चूर्ण ६ माशे शहदके साथ सेवन करनेसे रक्तपित्त, शूल और अतिसार नष्ट हो जाते हैं। यह चूर्ण दीपन, पाचन और कफ नाशक है। खूब परीक्षित है।

(६१) ईखके गन्नेकी गाँठ, नीलकमलका कन्द, सफेद कमल की केशर, मोचरस, मुलेठी, पद्माख, बड़के अंकुर, दाख और खजूर बराबर-बराबर कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनाओ। इसमें 'शहद और मिश्री" डाल कर पीओ। इससे प्रमेह और रक्तपित्त नाश हो जाते हैं।

(६२) खैर, फूलप्रियंगू, कचनार और सेमल इनके फूलोंको पीसकर और शहदमें मिलाकर खानेसे रक्तपित्त नष्ट हो जाता है।

(६३) हरड़को अड़ूसेके पत्तोंके रसमें सात दिन तक खरल करके "शहद" के साथ खानेसे रक्तपित्त नष्ट हो जाता है।

नोट—हरड़ोंको हर दिन अड़ूसेके रसमें खरल करो और रातको सुखा दो। सवेरे ही, फिर ताज़ा रसमें खरल करो और सुखा दो। इस तरह सात दिन करो।

(६४) ऊपरकी तरकीबसे पीपरोंको सात दिन तक अड़ूसेके

रसमें खरल करके, "शहद" के साथ खानेसे रक्तपित्त नाश हो जाता है।

(६५) दूधमें लाखका चूर्ण और शहद मिलाकर पीवे। ज्यों ही वह पचे कि, दूधके साथ भोजन करे और शराब पीवे। इस उपायसे घावसे निकलने वाला खून फौरन बन्द हो जाता है।

(६६) फूलप्रियंगू और अर्जुनकी छाल पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। इस कल्कके सेवन करनेसे खूनका गिरना तत्काल बन्द हो जाता है।

(६७) मुलेठी, त्रिफला और अर्जुन वृक्षकी छाल पानीके साथ सिल पर पीसकर रातको लोहेके बर्तन में रख दो। फिर सवेरे ही इसमें "घी" मिलाकर पीओ। इसके ऊपर शीतल अनुपान पीने और भूख लगने पर मिश्री-मिला बकरीका दूध पीनेसे रक्तपित्त नाश हो जाता है।

(६८) जियादा खून निकलने पर शहदके साथ "खून" पीना चाहिए। अथवा मांस और पित्त सहित बकरेका यकृत या कलेजा खाना चाहिए। अथवा कबूतरका मांस घीमें भूनकर, मिश्री मिला कर, शीतल करके, शहदके साथ खाना चाहिये—इनमेंसे किसी भी उपायसे रक्तपित्त आराम हो जाता है।

नोट—अगर खून बहुत ही गिरे और बन्द न हो, तो बकरेका खून १ तोले और शहद १ तोले मिलाकर पीओ। परीक्षित है।

(६९) अनारके फूलोंका रस, दूबका रस, आलका रस और हरड़का रस—इन सबको समान-समान मिलाकर नास देनेसे त्रिदोषज और अत्यन्त दारुण नाकसे खून गिरना भी बन्द हो जाता है।

(७०) दूब, हरड़, अनारके फूल, लाख और आमले,—इन सबके स्वरस निकालकर और मिलाकर, तीन दिन तक, नास देनेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

(७१) अगर कफ रहित दीप्त अग्निवाले मनुष्यका रक्तपित्त अनेक तरहके काढ़े पिलानेसे भी आराम न हो, और उसमें "वायुकी अधिकता" हो, तो रोगीको "दूध" बनाकर पिलाना चाहिए। बकरी या गायका दूध १६ तोले लेकर, उसे एक सेर पानीमें मिलाकर औटाना चाहिये; दूध मात्र रहने पर उतार लेना चाहिये और शीतल होने पर उसमें "शहद और मिश्री" मिलाकर पिला देना चाहिये। इससे अवश्य लाभ होगा।

(७२) दाख और फूल प्रियंगू कुल मिलाकर २ तोले, बकरीका दूध १६ तोले और पानी एक सेर—इनको मिलाकर औटाओ। दूध मात्र रह जाने पर, छानकर रोगीको पिलादो। इस दूधसे रक्त-पित्त नाश हो जाता है।

(७३) गोखरू और शतावर कुल २ तोले, दूध १६ तोले और पानी एक सेर लेकर ऊपरकी तरकीबसे दूध औटाकर पीनेसे रक्तपित्त आराम हो जाता है।

(७४) खिरेंटी और मुलेठी कुल २ तोले, दूध १६ तोले और पानी १ सेर लेकर, ऊपरकी तरकीबसे दूध बनाकर पीनेसे रक्तपित्त आराम हो जाता है।

(७५) अड़ूसेके पत्तोंका हिम बनाकर और उसमें "शहद" मिला कर पीनेसे रक्तपित्त, खाँसी, ज्वर और क्षय रोग नष्ट हो जाते हैं।

(७६) अड़ूसेके पत्ते पीसकर, पुटपाक-विधिसे पकाकर और रसमें "शहद" मिलाकर पीनेसे रक्तपित्त, खाँसी, ज्वर और क्षय रोग आराम हो जाते हैं।

नोट—रक्तपित्त और खाँसी आराम करनेमें "अड़ूसा" रामबाण है। कहा है:—

वासायां विद्यमानायामाशायां जीवितस्य च।
रक्तपित्ती क्षयी कासी किमर्थमवसीदति ?॥

अड़ूसेके मौजूद रहने पर, जीवनकी आशा करने वाले रक्तपित्त, क्षय और खाँसीके रोगी क्यों दुखी होते हैं ?

"वैद्यजीवन" में इस अडूसेपर एक बहुत ही मनोरञ्जक श्लोक लिखा है, उसे भी हम पाठकोंके मनोरञ्जनार्थ नीचे देते हैं:—

भिन्दन्ति के कुञ्जरकर्णपालिं किमव्ययं वक्ति रते नवौढ़ा।
संबोधनं नुः किमु रक्तपित्तं निहन्ति वामोरु वद त्वमेव॥

हाथियोंके गंडस्थलोंको कौन चीरते हैं? नयी ब्याही हुई दुलहन रतिकालमें कौनसा अव्यय कहती है? नृ शब्दका सम्बोधन-विभक्तिमें कौनसा रूप बनता है? रक्तपित्तको कौनसी औषधि नष्ट करती है? हे सुन्दर जाँघों वाली स्त्री! इन चारों सवालोंका जवाब तूही दे। स्त्री जवाबमें कहती है—सिंहाननः। इसमें चारों प्रश्नों का उत्तर हो गया। कैसे?

हाथियोंके गण्डस्थलोंको विदारण करते हैं—सिंहाः अर्थात् सिंह। नयी दुलहन मैथुनके समय पहले "न" कहती है। "नृ" का सम्बोधन-विभक्तिमें "नः" रूप होता है। रक्तपित्तको सिंहानन यानी अडूसे का काढ़ा नाश करता है। एक सिंहाननः से चारों प्रश्नोंका उत्तर हो गया। पाठक! कविकी चतुराई देखिये।

नोट—अडूसेके पत्तोंका स्वरस ६ माशे, शहद ६ माशे और छोटी पीपर १ माशे—तीनोंको मिलाकर चाटनेसे ३ दिनमें खाँसी आराम हो जाती है। पहली ही मात्रामें आधी खाँसी चली जाती है। जब किसी दवासे खाँसी, श्वास और मुँहसे खून आना बन्द न हो, आप हमारे कहनेसे ३ दिन मात्र इस नुसखे को देकर अपूर्व चमत्कार देखिये। परीक्षित है।

(७७) मुनक्का और हरड़के काढ़ेमें "मिश्री और शहद" मिला कर पीनेसे श्वास, खाँसी और रक्तपित्त तीनों नाश हो जाते हैं। अचूक नुसख़ा है। परीक्षित है।

(७८) अडूसेके पत्ते, दाख और हरड़—इनको काढ़ेमें "शहद और मिश्री" मिलाकर पीनेसे रक्तपित्त, श्वास और खाँसी आदि कठिन रोग आराम हो जाते हैं। अचूक नुसख़ा है। परीक्षित है।

(७९) इलायचीके बीज ६ माशे, तेजपात ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, छोटी पीपर २ तोले, मिश्री ४ तोले, मुलहठी ४ तोले, पिंडखजूर ४ तोले और मुनक्का ४ तोले—इन सबको कूट-पीसकर बेर-बराबर

गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके सेवन करनेसे रक्तपित्त और उरःक्षत रोग नाश होते और बल बढ़ता तथा रुचि होती है। ये "एलादि बटी" रामबाण हैं। अनेक बारकी परीक्षित हैं।

(८०) ६ माशे कोहके फलका रस, ६ माशे शहदमें मिलाकर चाटनेसे रक्तपित्त नाश होता और अग्नि दीप्त होती है।

(८१) चार माशे पीपरोंका चूर्ण, ६ माशे शहदमें मिलाकर चाटनेसे रक्तपित्त नाश हो जाता है।

(८२) गूलरके फल अथवा खजूर अथवा दाख अथवा फालसे—इन चारोंमेंसे किसी एकको चार माशे लेकर और ६ माशे "शहद" में मिलाकर खानेसे रक्तपित्त नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(८३) पीपरके पेड़की लाख ३ माशे, शहद ६ माशे और घी ३ माशे—इन तीनोंको मिलाकर चाटनेसे वमन, रक्तपित्त और छाती का दर्द ये तीनों पहली मात्रामें ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८४) तोरई, लौकी, पालक, कुलफा, और मसूरकी तरकारी खानेसे रक्तपित्त आराम हो जाता है।

(८५) सरफोंकेका काढ़ा बनाकर, उसमेंसे १ या २ माशे बालकको पिलानेसे बालकका रक्तपित्त आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(८६) एक चने-भर रसौत खिलानेसे बालकोंका रक्तपित्त और खूनके उपद्रव नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८७) शुद्ध सीपी, धनिया, शुद्ध मूँगा, मुलेठी, सोना-गेरू और मिश्री—बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस-छान लो। इसमेंसे तीन-तीन माशे चूर्ण, सवेरे-शाम या जरूरतके समय, खाकर ऊपरसे अडूसेका स्वरस ५ तोले या कच्चा दूध पीनेसे मुँह या लिंगसे खून गिरना, मुँहसे लोहेकी सी गन्ध आना वगैरः आराम होते हैं। यह भी रक्तपित्तकी उत्तम और परीक्षित दवा है।

(८८) धायके फूल, अड़ूसा और मिश्री मिलाकर खानेसे रक्तपित्त या खूनका गिरना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(८९) लाल चन्दन, जटामासी, लोध, खस, कमलके फूलकी केशर, नागकेशर, बेलगिरी, नागरमोथा, मिश्री, ह्रीबेर, सोनापाठा, कुड़ेकी छाल, कमल, सौंठ, अतीस, धायके फूल, रसौत, आमकी गुठलीकी गरी, जामुनकी गुठलीकी गरी, मोचरस, नील कमल, मंजीठ, छोटी इलायची और अनारका छिलका—इन चौबीस दवाओं को एक-एक तोले लेकर पीस छान-लो।

इस चूर्णकी मात्रा ३ या ४ माशेकी है। एक-एक मात्रा "शहद" में मिलाकर चाटने और ऊपरसे "चाँवलोंका पानी" पीनेसे रक्तपित्त, खूनी बवासीर, ज्वर, मूर्च्छा, मद, प्यास, अतिसार, वमन, स्त्रियोंका रजोधर्म समय पर बन्द न होना आदि रोग नाश हो जाते हैं और गिरता हुआ गर्भ ठहर जाता है। परीक्षित है।

(९०) जवासेकी जड़, धनिया, कासनी, मुनक्के, अड़ूसेके पत्ते और टेसूके फूल—प्रत्येक तीन-तीन माशे लेकर एक सेर पानीमें औटाओ; जब चौथाई पानी रह जाय, मलकर छान लो।

फिर इस काढ़ेमें पावभर "मिश्री" मिलाकर चाशनी करलो। इस चाशनीमें सेबका गूदा आध पाव और सफेद कुम्हड़ेका गूदा आध पाव मिला दो और पकाओ। जब चाटने लायक हो जाय, उसमें बंसलोचन १ तोले, गुलाबके फूल २ तोले, छोटी इलायचीके बीज १ तोले और क़वाबचीनी ३ माशे पीसकर मिला दो और रख दो।

इसमें से १ या २ तोले अवलेह सवेरे ही चाटने और ऊपरसे धारोष्ण दूध या ताजा पानी पीनेसे रक्तपित्त, खाँसीके साथ खून आना, श्वास, खाँसी, तपेदिक, पसलीका दर्द—ये सब आराम हो जाते हैं। रक्तपित्त पर बड़ा ही उत्तम नुसखा है। परीक्षित है।

(६१) एक या दो रत्ती अभ्रक भस्म, छोटी इलायची और मिश्री अथवा छोटी हरड़ और गुड़के साथ सेवन करनेसे रक्तपित्त आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

(६२) हल्दीके चूर्णके साथ एक या दो रत्ती "बंगभस्म" खानेसे रक्तपित्त नाश हो जाता है ।

(६३) बकरीके दूधमें केशर उबाल कर खाने और ऊपरसे दूध-भातका भोजन करनेसे रक्तपित्त आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

(६४) धनिया, किशमिश और बेदानेका काढ़ा रक्तपित्तको नाश करता है । परीक्षित है ।

(६५) सत्यानाशीके पत्तोंका रस गायके दूधमें मिलाकर पीनेसे ६ महीनेमें रक्तपित्त रोग जड़से चला जाता है । परीक्षित है ।

(६६) गुलकन्द-सेवती अथवा सेवतीके फूल खानेसे रक्तपित्त और रक्तविकार नाश हो जाते हैं । परीक्षित है

(६७) कपूर भौंडीको जड़ १ तोले शीतल जलमें घिसकर, नित्य दोनों समय, ६ महीने तक, पीनेसे रक्तपित्त नाश हो जाता है ।

(६८) कड़वे नीमके पत्तोंका रस अथवा नीमके पत्तोंका गाय के दूधमें पीसा हुआ रस, ३ महीने तक पीनेसे रक्तपित्त और भयंकर कोढ़ नाश हो जाते हैं । रोगीको पथ्य पालन करना चाहिये । नित्य नीमके पत्तोंके उबाले हुए पानीसे स्नान करना चाहिये और नीमके वृक्षके नीचे सोना चाहिये । परीक्षित है ।

(६९) शतावर १ तोले, दशमूल ६ माशे, छोटी पीपर २ दाने और मुनक्के ५ दाने—इनको जौकुट करके, आध सेर दूध और आध सेर पानीमें औटाओ; जब दूध मात्र रह जाय, छान कर दो तीन दफेमें पिलादो । इस दूधसे खाँसी या कफमें खून आना, सिर-दर्द, कमज़ोरी, ज्वर बना रहना, श्वास, पसलीका दर्द—ये सब आराम हो जाते हैं । परीक्षित है ।

(१००) दूध और बड़की कोंपलोंमें शहद मिलाकर चाटनेसे रक्तपित्त आराम हो जाता है ।

(१०१) सफेद कमलके अंकुरोंमें शहद मीलाकर चाटनेसे रक्तपित्त शान्त हो जाता है ।

(१०२) गन्नेका रस निकालकर एक मिट्टीकी हाँडीमें डाल दो और फिर बराबरका जल मिला दो । कुछ कमल भी उसमें डाल दो और रातको छतपर रख दो । सवेरे ही छानकर और "शहद" मिलाकर पीनेसे रक्तपित्त आराम हो जाता है ।

(१०३) ककड़ीकी जड़ सिलपर पीसकर और उसमें "शहद" मिलाकर, चाँवलोंके धोवनके साथ खानेसे रक्तपित्त आराम हो जाता है ।

(१०४) मुलेठीको सिलपर पानीके साथ पीसकर और "शहद" मिलाकर पीनेसे रक्तपित्त आराम हो जाता है ।

(१०५) करंजुएके बीज पानीके साथ सिलपर पीसकर, लुगदी बना लो । फिर उस लुगदीमें "मिश्री और शहद" मिलाकर खानेसे रक्तपित्त आराम हो जाता है ।

(१०६) दूधमें बराबरका पानी मिलाकर और लस्सी बनाकर पीनेसे रक्तपित्त आराम हो जाता है ।

(१०७) बथुएके बीजोंका चूर्ण "शहद" मिलाकर चाटनेसे रक्तपित्त आराम हो जाता है ।

(१०८) मुनक्का, खस, पद्माख और मिश्री—इनको रातके समय पानीमें भिगो दो । सवेरे ही मल-छानकर और "शहद" मिलाकर पीलो । इस हिमसे रक्तपित्त आराम हो जाता है ।

(१०९) बंसलोचन और मिश्री "शहद" में मिलाकर चाटनेसे रक्तपित्त आराम हो जाता है ।

(११०) कमलकी राख "शहद" मिलाकर चाटनेसे रक्तपित्त आराम हो जाता है ।

(१११) बिजौरे नीबूकी जड़ और उसके फूल पीसकर चाँवलोंके पानीके साथ पीनेसे रक्तपित्त आराम हो जाता है। अगर नाकसे खून गिरता हो, तो इसी पानीको नाकमें टपकाना चाहिये ।

(११२) अधोगत या नीचेके रक्तपित्तमें बड़के दूधकी ४।५ बूँदें, दिनमें तीन चार बार, छटाँक-भर पानी या चीनीमें मिलाकर खानेसे अवश्य आराम हो जाता है ।

रक्तपित्त नाशक अमीरी नुसख़े ।

ह्रीवेरादि क्वाथ ।

सुगन्धवाला, नील कमल, खसकी जड़, अड़ूसा, गिलोय, मुलेठी, नागरमोथा, लाल चन्दन और पुराना धनिया—इन सबको कुल दो तोले लेकर और काढ़ा बनाकर, शीतल होने पर "शहद और मिश्री" मिलाकर पीनेसे ऊपरका और नीचेका, दोनों तरहका रक्तपित्त मय प्यास, दाह और ज्वरके नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

प्रियंग्वादि क्वाथ ।

अड़ूसेके काढ़ेमें—प्रियंगू-फूल, लोध, रसौत और कमीलेका चूर्ण मिलाकर सेवन करनेसे प्रबल रक्तपित्त भी नाश हो जाता है। परीक्षित है ।

नोट—केवल अड़ूसेके पत्तोंके रसमें "मिश्री और शहद" मिलाकर पीनेसे भयंकर रक्तपित्त भी नाश हो जाता है ।

अटरूषकादि क्वाथ।

अड़ूसेकी जड़की छाल, किशमिश और हरड़—इनके काढ़ेमें "शहद और मिश्री" मिलाकर पीनेसे श्वास, खाँसी और रक्तपित्त आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

धान्यकादि हिम।

पुराना धनिया, आमले, अड़ूसा, किशमिश और पित्तपापड़ा—इनको कुल दो तोले लेकर और कुचलकर, रातको, पानीमें भिगो दो और सवेरे ही मल-छानकर पी लो। यही हिम है। इससे रक्तपित्त, ज्वर और सूजन ये नाश हो जाते हैं।

एलादि गुटिका।

छोटी इलायची १ तोले, तेजपात १ तोले, दालचीनी १ तोले, छोटी पीपर ४ तोले, मुलेठी ४ तोले, चीनी ४ तोले, पिंडखजूर ४ तोले और दाख ४ तोले—इन सबको पीस-छानकर और "शहद" में मिला कर तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। बलाबल अनुसार एक या दो गोलीकी मात्रा देनेसे उरःक्षत, खाँसी, वमन, ज्वर, हिचकी, कफमें खून आना और प्यास आदि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

शतावरी घृत।

शतावरकी सिलपर पिसी लुगदी ८ तोले, दूध ३२ तोले, गायका घी ३२ तोले और मिश्री ८ तोले—सबको कढ़ाईमें डालकर मन्दाग्नि से पकाओ; जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसकी मात्रा ६ माशेसे दो तोले तक है। बलाबल अनुसार इस घीके सेवन करनेसे रक्तपित्त, अम्लपित्त, क्षय और श्वास रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—हमने अड़ूसेके पत्तोंका स्वरस ६ माशे, मिश्री ६ माशे और शहद ६ माशे—सवेरे-शाम चटाकर और भोजनके समय यह शतावरी घृत खिलाकर तथा मुखमें "एलादि बटी" रखाकर कितने ही रक्तपित्त रोगी आराम किये हैं। १०० में ६० को लाभ हुआ है।

खण्डकाद्य लौह ।

शतावर, गिलोय, अड़ूसेकी जड़की छाल, गोरख-मुण्डी, खिरेंटी, मूखली, खैरकाष्ठ, त्रिफला, भारंगी और पोहकरमूल—प्रत्येक दवा बीस-बीस तोले लेकर जौकुट कर लो और ६४ सेर पानीमें डालकर पकाओ; जब आठ सेर पानी रह जाय, उसे छान लो।

इस काढ़ेमें मैनसिलसे फूँका हुआ कान्त लौह ४८ तोले, चीनी ६४ तोले और घी ६४ तोले मिलाकर ताँबेके बर्तनमें फिर पकाओ, जब काढ़ा हो जाय, नीचे उतार लो और शीतल होनेपर ३२ तोले "शहद" मिला दो।

फिर बंसलोचन, शुद्ध शिलाजीत, काकड़ासिंगी, छोटी पीपर, बायबिडंग, सोंठ, सफेद जीरा, त्रिफला, धनिया, तेजपात, काला जीरा, काली मिर्च और नागकेशर—इनको चार-चार तोले लेकर पीस-कूट कर छान लो और ऊपरके शहद-मिले शीरेमें मिला दो और हाथोंसे खूब मथो। एक दिल हो जानेपर घीके चिकने या काँचके साफ बासनमें रख दो। इसीका नाम "खंडकाद्य अवलेह" है।

इसकी मात्रा १॥ माशेसे ३ माशे तक है। इसको चाटकर ऊपर से गायका दूध पीना चाहिये। इस लौहपर मांस रस—शोरबा, दूध, भारी और पुष्टिकर अन्नपान एवं चिकने पदार्थ खाने चाहियें।

इसके सेवन करनेसे रक्तपित्त, क्षय, खाँसी, पसलीका दर्द, वात-रक्त, प्रमेह, शीतपित्त, वमन, ग्लानि, सूजन, पाण्डुरोग, कोढ़, तिल्ली, उदर रोग, अफारा, मूत्र बहना और अम्ल—ये सब रोग नाश होते हैं। यह "खंडकाद्य लौह" नेत्रोंको हितकारी, पुष्टिकारक, मैथुनशक्ति

बढ़ानेवाला, मंगलरूप, आरोग्यदायक, पुत्र पैदा करने वाला, कामाग्नि बढ़ाने वाला और शरीरमें हल्कापन करने वाला है।

इसके खाने वाला नारियलका पानी, चौपतियाका साग, बथुआ, सूखी मूली, जीवन्तीका साग, परवल, कटेरीके फल, बैंगन, पके आम, खजूर और मीठे अनार, अनूपदेशी जीवोंका मांस और जिनके नाम का पहला अक्षर "क" हो, उन सबको त्याग दे यानी इनसे परहेज़ रखे। इसके खानेवालेको बकरेका मांस, कबूतरका मांस, तीतरका मांस, ख़रगोश और कृष्णसार हिरन आदि जीवोंका मांस हितकर है। परीक्षित है।

खण्डकूष्माण्डक।

उत्तम पेठेका स्वरस पाँच सेर, गायका दूध ५ सेर और अमलों का महीन चूर्ण ३२ तोले,—इन सबको मिलाकर, धीरे-धीरे मन्दाग्नि से पकाओ। जब तक पिंड न बँधे पकाते रहो। ज्योंही पिंड बँधने लगे, इसमें ३२ तोले साफ सफेद बूरा डाल दो और उतार लो। यही "खण्डकूष्माण्डक" है।

इसके दो तोले नित्य खानेसे रक्तपित्त, अम्लपित्त, दाह, प्यास और कामला रोग नष्ट हो जाते हैं।

खण्डकूष्माण्ड अवलेह।

उत्तम पुराना, बड़ा और मोटा पेठा लाकर छील और काट लो। फिर उसके भीतरसे उसके बीज और बीजोंकी जगह निकाल कर फेंक दो। अब इसमें से पाँच सेर पेठेका गूदा लेकर, दस सेर पानीमें पकाओ, जब आधा पानी रह जाय, उतार कर ठण्डा करो।

फिर इस पानीमेंसे पेठेके टुकड़े निकाल कर एक रेज़ीके मोटे कपड़ेमें रख रख कर दबाओ और उसी बर्तनमें पानी निचोड़ लो।

इस पानीको रख दो, क्योंकि यही पानी आगे काम आवेगा। निचोड़े हुए पेठेके टुकड़ोंको थोड़ी देर तक धूपमें सुखा लो।

अब एक ताम्बेके बासनमें ६४ तोले घी डाल कर, चूल्हेपर रखो। और आग दो; जब घी कलमलाने लगे, उसमें धूपमें सुखाये हुए पेठे के टुकड़े डाल कर भूनो। जब वे लाल-सुर्ख़ हो जायँ, उसी आगपर रखे हुए बासनमें पेठेका निचोड़ा हुआ पानी और ५ सेर मिश्री डाल दो और धीरे-धीरे पकाओ। जब अवलेहकी सी चाशनी हो जाय, नीचे उतार लो। फिर कुछ गरम रहते-रहते उसमें—आठ तोले पीपर, आठ तोले सोंठ, आठ तोले सफेद जीरा, दो तोले धनिया, दो तोले तेजपात, दो तोले छोटी इलायची, दो तोले कालीमिर्च और दो तोले दालचीनी—इन सबका पिसा-छना चूर्ण मिला दो और एक दम शीतल हो जानेपर ३२ तोले शहद मिला दो और किसी साफ बर्तनमें रख दो। यही "खण्डकूष्माण्ड अवलेह" है।

इसकी मात्रा एकसे दो तोले तक है; तो भी बल और अग्निका विचार करके मात्रा स्थिर करनी चाहिये। अनुपान—बकरीका दूध है।

इसके सेवन करनेसे रक्तपित्त, पित्तज्वर, प्यास, दाह, प्रदर, दुबलापन, वमन, खाँसी, श्वास, हृदयरोग, स्वरभेद, क्षत, क्षय और अन्त्रवृद्धि रोग नष्ट होते हैं। यह बलवर्द्धक और पुष्टिकारक है। परीक्षित है।

वासाकूष्माण्ड खण्ड।

अड़ूसेकी जड़की छाल २५६ तोले लेकर जौकुट कर लो और ६४ सेर पानीमें औटाओ; जब १६ सेर पानी रह जाय, उतार कर काढ़ा छान लो।

उत्तम पेठा लाकर छील-काट लो। उसके बीज और बीजोंकी जगहको निकाल फेंको। अब ५ सेर पेठेके टुकड़ोंको दस सेर पानी

में डालकर औटाओ; जब आधा पानी रह जाय, उतार लो और पेठे के टुकड़ोंको रेजीके कपड़ेमें रखकर पानी निचोड़ लो। इन निचोड़े हुए पेठेके टुकड़ोंको कुछ देर धूप में सुखालो।

अब अढ़ाई सेर पेठेके टुकड़े लेकर ६४ तोले घीमें भूनकर लाल कर लो। फिर ऊपरका १६ सेर काढ़ा, पेठेके घीमें भुने हुए टुकड़े २॥ सेर, पेठे का स्वरस २५६ तोले और चीनी पाँच सेर इन सबको मिलाकर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब मसाला पकते-पकते अवलेहके समान गाढ़ा हो जाय, नीचे उतार लो और गरम रहते-रहते उसमें वंसलोचन, आमले, नागरमोथा, भारंगी, तेजपात, छोटी इलायची और दालचीनी प्रत्येक एक-एक तोले; भूरिछरीला, सोंठ, धनिया और कालीमिर्च प्रत्येक चार-चार तोले और छोटी पीपर १६ तोले इन सबका चूर्ण मिलादो। जब शीतल हो जाय, उसमें ३२ तोले शहद भी मिलादो। इसीका नाम "वासाकूष्माण्ड" है।

इसकी मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है। इसके सेवन करनेसे खाँसी, श्वास, क्षय, हिचकी, रक्तपित्त, हलीमक, हृदयरोग, अम्लपित्त और पीनस रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

वासाघृत।

अड़ूसेकी जड़की छाल, पत्ते और शाखा कुल ८ सेर लेकर ६४ सेर जलमें पकाओ। जब १६ सेर पानी रह जाय, काढ़ा छानकर धर लो। अड़ूसेके फूल १६ तोले लेकर सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

अब गायका घी चार सेर, काढ़ा १६ सेर और लुगदी—इन तीनों को लोहेकी कढ़ाहीमें मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ और लकड़ीकी कँलछीसे खूब घोटो। घी मात्र रहने पर उतार कर छान लो।

इस घीमें घीसे चौथाई शहद मिलाकर पीनेसे रक्तपित्त रोग आराम हो जाता है। घीकी मात्रा ६ माशेसे दो तोले तक है।

बलाबल देखकर मात्रा नियत करनी चाहिये। यह रक्तपित्तकी सर्वोत्तम औषधि है। परीक्षित है।

नोट—बङ्गसेनने चौगुने जलमें काढ़ा बनानेकी राय दी है। पर हम अठगुने जलमें ही पकाते हैं।

सप्तप्रस्थ घृत।

शतावर, बाला, दाख, भुईं कुम्हड़ा, ऊख और आमले—प्रत्येक का स्वरस या काढ़ा चार-चार सेर तैयार कर लो।

फिर चार सेर घी और ऊपरके काढ़ोंको मिलाकर पकाओ। जब घी मात्र रह जाय छान लो। फिर जितना घी हो, उसकी चौथाई "चीनी" उसमें मिला दो।

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है। इसके सेवन करने से रक्तपित्त, उरःक्षत, क्षय और पित्तशूल आदि रोग नष्ट होते हैं। यह घी बल, वीर्य और ओजवर्द्धक है। परीक्षित है।

वृहद्वासा घृत।

गायका घी ४ सेर; अड़ूसेकी जड़, पत्तों और शाखोंका स्वरस १६ सेर; गायका दूध ४ सेर तैयार रखो। अगर अड़ूसेका स्वरस न निकले तो चौगुने या अठगुने जलमें काढ़ा बनालो।

अड़ूसेके पत्ते, चिरायता, कुड़ेकी छाल, नागरमोथा, मुलेठी, चन्दन, खसकी जड़, महुआ, अनन्तमूल, सारिवा, कमल, पद्माख, त्रायमाण, कुमुदिनी, मूर्वा और मोतियेके पत्ते—इनको एक-एक छटाँक लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर, कल्क या लुगदी बनालो।

अब घी, काढ़ा, दूध और लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है। इसमें मिश्री और

शहद घीसे चौथाई मिलाकर पीनेसे दारुण रक्तपित्त, पैत्तिक गोला, वातगुल्म, स्वरभेद, हलीमक और रक्तपित्तसे होनेवाले अन्य रोग शीघ्र ही नाश हो जाते हैं।

दूर्वाद्य घृत।

दूब, कमल, कमलकी केशर, मंजीठ, एलुआ, आमले, लोध, खस, नागरमोथा, चन्दन और पद्माख—एक-एक तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीस लो।

दाख, मुलेठी, कुम्भेर और सफेद चन्दन एक-एक तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो।

पुराने चाँवलोंका भिगोया हुआ पानी ६४ तोले, बकरीका दूध २५६ तोले, घी ६४ तोले और ऊपरकी दोनों लुगदी—इन सबको मिलाकर औटाओ; जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो और रख दो।

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे दो तोले तक है। इसके पीनेसे वमनके साथ खून आना बन्द हो जाता है। नास लेनेसे नाकसे खून गिरना बन्द हो जाता है। कानोंमें डालनेसे कानोंसे खून गिरना बन्द हो जाता है। आँखोंमें डालनेसे आँखोंसे खून गिरना बन्द हो जाता है। गुदामें इसकी पिचकारी देनेसे लिङ्ग और गुदासे खून गिरना बन्द हो जाता है और शरीरमें इसकी मालिश करनेसे रोमकूपों या रोमोंके छेदोंसे खून आना बन्द हो जाता है। गिरते हुए खूनको बन्द करनेकी यह सबसे अच्छी दवा है। वैद्योंको यह घी घरमें रखना चाहिये। बड़ा काम देता है। परीक्षित है।

महादूर्वाद्य घृत।

दूब, नीलकमल, कमल, मंजीठ, एलुआ, रास्ना, नागरमोथा, खस, चन्दन, मुलेठी, पद्माख, लोध, कूट, लाल चन्दन, हल्दी, दारुहल्दी,

काकोली, क्षीरकाकोली, सारिवा और अनन्तमूल—इन बीस दवा-ओंको एक-एक तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो।

फिर गायका घी ६४ तोले, बकरीका दूध २५६ तोले, चाँवलोंका धोवन २५६ तोले, दूबका स्वरस २५६ तोले और ऊपरकी लुगदी—सबको मिलाकर घी पकाओ; जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो।

इस घीके पीनेसे खूनकी कय होना आराम होता है। इस घीको नाक, कान, आँख वगैरःमें दूर्वाद्य घृतकी तरह इस्तेमाल करनेसे सब जगहोंसे खून गिरना बन्द हो जाता है। यह घी समस्त पित्तविकार, स्फोटक, त्रिदोष, कृमिदोष और विसर्प रोगमें काम देता है।

शुंगाद्य घृत।

बड़, गूलर और पीपलके पेड़के अंकुर एक सेर लेकर सोलह सेर जलमें पकाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, इसमें एक सेर घी डाल कर पकाओ। जब घी मात्र रह जाय छान लो। यही "शुंगाद्य घृत" है। यह अग्निवेश मुनिका कहा हुआ है।

इस घीमें आधा भाग मिश्री और चौथाई शहद मिलाकर सेवन करनेसे ऊपरका और नीचेका—दोनों तरहका रक्तपित्त आराम हो जाता है।

महाशतावरी घृत।

शतावरका रस १२८ तोले, गायका दूध १२८ तोले और घी ६४ तोले तैयार रखो।

जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, दाख, मुलेठी, मुगवन, मषवन, विदारीकन्द और लालचन्दन—इनको एक-एक तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीस लो।

अब शतावरका रस, दूध, घी और लुगदीको मिलाकर घी पका लो। जब घी पक जाय, छान लो। फिर उसमें घीसे चौथाई मिश्री और शहद मिला दो।

इस घीके खानेसे पित्तरोग, वातरक्त, शुक्रकी क्षीणता, अङ्गोंकी जलन, सिरकी जलन, पित्तज्वर, योनिशूल, दाह और पित्तका मूत्र-कृच्छ्र—ये सब आराम होते हैं।

दूर्वाद्य तैल।

दूब, मुलेठी, मँजीठ, दाख, ईखका रस, चन्दन, दोनों तरहकी सारिवा और हल्दी इनमेंसे प्रत्येकको दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो।

अब यह लुगदी, ६४ तोले तेल और २५६ तोले पानीको मिलाकर तेल पका लो। इस तेलकी मालिश करनेसे रक्तपित्त और वातका नाश होता, बल बढ़ता और शरीर चन्द्रमाके समान हो जाता है।

कामदेव घृत।

असगन्ध ४०० तोले, गोखरू २०० तोले; शतावर, विदारीकन्द, शालपर्णि, खिरैंटी, गिलोय, पीपरके वृक्षके अंकुर, कमलगट्टा, पुनर्नवा, कुम्भेरके फल और उड़द—प्रत्येक चालीस-चालीस तोले—इन सबको जौकुट करके ६४ सेर जलमें औटाओ; जब सोलह सेर पानी रह जाय, मलकर छान लो।

दाख, पद्माख, कूट, पीपर, लालचन्दन, तेजपात, नागकेशर, कौंचके बीज, नील कमल, दोनों सारिवा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मुगवन और मषवन,—प्रत्येक एक-एक तोले और मिश्री ८ तोले—सबको पीसकर लुगदी बना लो।

ईखका रस २५६ तोले, दूध २५६ तोले, घी ६४ तोले, १६ सेर काढ़ा और ऊपरकी लुगदी—सबको मिलाकर पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही "कामदेव घृत" है।

यह घी राजाओंके सेवन करने योग्य है। इसके पीने-खानेसे रक्त-पित्त, क्षत, क्षीण, कामला, वातरक्त, हलीमक, पाण्डुरोग, विवर्णता, स्वरभंग, मूत्रकृच्छ्र और पसलियोंका दर्द आदि रोग नाश हो जाते हैं। यह घी बलवर्द्धक, वीर्यकारक, रसायन—बुढ़ापा नाश करने वाला, ओज और तेज बढ़ाने वाला, स्वरको सुन्दर करने वाला, आयु बढ़ाने वाला, प्राणोंकी रक्षा करने वाला, सूखे और दुर्बल इन्द्रिय वालोंको पुष्ट करने वाला, और सारे रोगोंसे पीछा छुड़ाने वाला है।

छठा अध्याय

अम्लपित्त-वर्णन

अम्लपित्तके निदान-कारण ।

दूध-मछली प्रभृति संयोग-विरुद्ध भोजन, दूषित अन्न, खट्टे रस, दाहकारक पदार्थ तथा पित्तको कुपित करने वाले खाने-पीनेके और-और पदार्थोंसे—वर्षादि ऋतुओंके अम्लपाकी जलों और वैसी ही औषधियोंसे पहलेका सञ्चित हुआ पित्त, विदग्ध होकर, अम्लपित्त रोग पैदा करता है ।

नोट—इस रोगमें पित्त विशेष रूपसे कुपित होता है; इसीलिये पित्त कोप-कारक पदार्थ लिखकर भी, खट्टे रस और दाहकारक पदार्थ अलग-अलग फिर लिखे हैं । शराब और माठा आदि पीनेके तथा उड़द प्रभृति खानेके पदार्थ पित्त को कुपित करते हैं ।

अम्लपित्तके लक्षण ।

अम्लपित्त रोग होनेसे नीचे लिखे हुए लक्षण देखनेमें आते हैं:—

(१) कड़वी और खट्टी डकार आती हैं ।

(२) हृदय (छाती) और गलेमें जलन होती है ।

(३) अन्न नहीं पचता ।

(४) उबकाइयाँ आती हैं यानी जी मिचलाता है ।

(५) देहमें भारीपन, अत्यन्त अरुचि और ग्लानि ये लक्षण भी होते हैं ।

अम्लपित्तके दो भेद ।

अम्लपित्त दो तरहका होता है:—

(१) ऊर्द्धग = ऊर्द्ध गामी = ऊँची गतिवाला ।

(२) अधोग = अधोगामी = नीची गतिवाला ।

नोट—ऊर्द्ध ग अम्लपित्त होने से मुँहकी राहसे वमन होकर दूषित मल निकलते हैं और अधोग अम्लपित्त होनेसे गुदाकी राहसे दूषित मल निकलते हैं। मतलब यह है, कि ऊपर वालेमें वमन होती हैं और नीचे वालेमें अतिसार—दस्त होते हैं। जो वैद्य ठीक निदान नहीं करते, धोखा खाते हैं—ऊपरके अम्ल-पित्तको वमन रोग और नीचे वालेको अतिसार समझ लेते हैं।

ऊर्द्ध ग अम्लपित्तके लक्षण ।

ऊपरका अम्लपित्त होनेसे हरे, नीले, पीले, काले, ज़रा लाल-लाल, अत्यन्त निर्मल, मछलीके धोवनके समान, अत्यन्त चिकने, लिबलिबे, कफ़-मिले, खारे, तीखे और कड़वे रस वाले पित्त वमनमें गिरते हैं।

अधोग अम्लपित्तके लक्षण ।

नीचेका अम्लपित्त गुदा-मार्गसे बहता है। इसमें प्यास, दाह—जलन, मूर्च्छा, भ्रम, मोह, उबकाई, मन्दाग्नि, कोठ—चकत्ते, रोमाञ्च, पसीने और शरीरमें पीलापन प्रभृति विकार होते हैं।

नोट—नीचेके अम्लपित्त वालेको चारों ओर सब्ज़ी ही सब्ज़ी मालूम होती है; यानी विपरीत ज्ञान होता है।

अम्लपित्तकी विशेष अवस्था ।

(अम्लपित्तके उपद्रव)

भोजन किये हुए पदार्थोंके विदग्ध होनेके पीछे अथवा बिना भोजन किये ही कभी-कभी खट्टी और कड़वी वमन होती हैं; कड़वी और खट्टी डकारें आती हैं; कंठ, हृदय और कोखमें जलन होती है; सिरमें दर्द होता है; हाथ पाँवमें दाह होता है; सन्ताप होता है—देह

गरम रहती है; भयंकर अरुचि होती है; कफ-पित्त जनित ज्वर होता है; शरीरमें खुजली, चकत्ते और फुन्सियाँ होती हैं तथा अन्नका विदग्ध पाक एवं ग्लानि आदि रोग-समूह होते हैं। ये सब अम्लपित्तके उपद्रव या विशेष अवस्थाके लक्षण हैं।

खुलासा—हाथ-पाँवमें जलन, शरीरका गरम रहना, अत्यन्त अरुचि, ज्वर, चकत्ते, खाज और कोठ ये मुख्य उपद्रव होते हैं।

अम्लपित्तमें दोषोंका संसर्ग ।

दोष-भेदसे अम्लपित्त तीन तरहका होता है:—

(१) वातसंयुक्त, (२) वातकफसंयुक्त, (३) कफसंयुक्त।

वैद्यको दोषोंके चिन्होंसे जानना चाहिये, कि अम्लपित्त वात सम्बन्धी है या वातकफ-सम्बन्धी अथवा कफ-सम्बन्धी; क्योंकि ऊर्द्ध्वमार्गी अम्लपित्त होनेसे वमन होती हैं और वैद्य भ्रमसे "वमन रोग" समझ लेता है। अगर अम्लपित्त अधोगामी होता है, तो वैद्य उसे "अतिसार" समझ लेता है। इसलिये खूब विचार कर निदान करना चाहिये, ताकि सन्देह न रहे।

दोष-भेदोंसे लक्षण भेद ।

वातज अम्लपित्त होनेसे—कम्प, प्रलाप—बकवाद, मूर्च्छा, मद, शरीरमें झनझनाहट, ग्लानि, अन्धकार देखना, विभ्रम, मोह और रोमाञ्च होना—ये लक्षण होते हैं।

कफज अम्लपित्त होनेसे—कफ थूकना, शरीरमें भारीपन, जड़ता, अरुचि, शीत, ग्लानि, वमन, मुख और छातीमें कफका ल्हिसा रहना, जठराग्निके बलका नाश, खुजली और अधिक नींद आना—ये लक्षण होते हैं।

वातकफज अम्लपित्त होनेसे—कड़वे और चरपरे रसकी डकार, छाती, कोख और गलेमें जलन; भ्रम, मूर्च्छा, अरुचि, वमि—क़य,

आलस्य, शिरमें दर्द, मुखसे जल गिरना और मुँहका मीठा स्वाद—ये लक्षण होते हैं ।

साध्यासाध्य विचार ।

जिस अम्लपित्तको पैदा हुए थोड़े दिन हुए हों, वह दवा करनेसे साध्य होता है । बहुत दिनोंका अम्लपित्त याप्य होता है । अयोग्य आहार विहार करनेवालोंका तो थोड़े दिनोंका भी अम्लपित्त कष्ट-साध्य होता है ।

कफपित्तके लक्षण ।

अँधेरी आना, मूर्च्छा, अरुचि, वमन, आलस्य, सिरमें दर्द, लार गिरना और मुँहका मीठापन—ये कफपित्तके लक्षण हैं ।

अम्लपित्त-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें ।

(१) अम्लपित्तकी पहली अवस्थामें इलाज न करनेसे अम्लपित्त असाध्य हो जाता है, इसलिये रोग उठते ही इलाज करना चाहिये ।

(२) जो मनुष्य नित्य आमलोंके रसके साथ भोजन करता है, उसके अम्लपित्त, वमन, दाह, अरुचि, मोह, खालित्य, प्रमेह और सब तरहके वीर्य-विकार नाश हो जाते हैं तथा मैथुन-शक्ति बेतहाशा बढ़ जाती है ।

(३) अम्लपित्त रोगमें कय और दस्त होते हैं । ऊपर वालेमें वमन और नीचे वालेमें दस्त होते हैं । वैद्य भ्रमसे वमन होते देखकर "वमन रोग" और दस्त होते देखकर "अतिसार" समझ लेता है । इसलिये दोषोंके लक्षण मिलाकर ठीक निदान कर लेना चाहिये, तब इलाज करना चाहिये ।

(४) अत्यन्त जलन होने या कोष्टबद्ध रहने अथवा कफकी अधिकता होनेसे वमन-विरेचन आदि उपयुक्त शुद्ध क्रिया नितान्त उपयोगी है।

जिस रोगीको ऐसा मालूम हो मानो मेरा शरीर जला जाता है, उसे संशोधन अवश्य देना चाहिये; क्योंकि विना संशोधनके लाभ हो नहीं सकता।

ऊर्द्धगामी अम्लपित्तको वमन कराकर और अधोगामीको विरे-चन देकर नाश करना चाहिये।

कफज अम्लपित्त हो, तो परवलके पत्ते, नीमके पत्ते और मैन-फल समान-समान आठ-आठ माशे लेकर, डेढ़ पाव जलमें काढ़ा बनाओ और चौथाई पानी रहने पर काढ़ेको छानकर शीतल कर लो। फिर उसमें १॥ माशे सेंधानोन और ३ माशे शहद मिलाकर पिला दो। इससे कय होकर अम्लपित्त शान्त हो जायगा। अगर दस्त कराने हों, तो शहद और आमलोंके रसमें ३ माशे निशोथका चूर्ण मिलाकर पिला दो।

(५) रोगीको "तिक्त रस प्रधान" भोजन देना चाहिये। जौ और गेहूँके पदार्थ तथा मिश्री मिलाकर सत्तू खिलाना चाहिये। अगर इन के खानेसे भी खट्टी डकारें आवें, तो गरम जल पिलाकर वमन करा देनी चाहिये।

अथवा।

जौ और गेहूँके यूषादि, जिनमें मिर्च आदि तीक्ष्ण चीजें न पड़ी हों, रोगीको खिलाने-पिलाने चाहियें; अथवा खीलोंका सत्तू, मिश्री और शहद मिलाकर, देना चाहिये; लेकिन दोषोंका विचार करके। अगर अम्लपित्त वमन और विरेचन या कय और दस्त करानेसे शान्त न हो, तो शीतल उपचार करके यानी शीतल लेप आदि लगाकर युक्तिपूर्वक रक्तमोक्षण कराना चाहिये अर्थात् फस्द खोलनी चाहिये।

बहुत दिनोंके अम्लपित्तमें, दोष और अग्निके बलाबलका विचार करके, पहले अच्छी तरहसे वमन और विरेचनसे रोगीको शुद्ध करना चाहिये और अच्छी तरहसे स्निग्ध करके अनुवासन और आस्थापन ब्रस्ति देनी चाहिये।

वैद्यको चाहिये कि दुर्गन्ध करंजके अंकुर घीमें भूनकर भोजन में खानेको दे और गरम जल पिलाकर वमन करावे।

अम्लपित्त रोगमें कम्प, प्रलाप, मूर्च्छा, दाह, प्यास, रक्तपित्त, वातका प्रकोप और प्यास हो, तो शोधन कर्म करना चाहिये।

अम्लपित्त रोग चाहे नया हो चाहे पुराना, वमन सबमें करानी चाहिये। कहा है :—

अचिरोत्थे चिरोत्थे वा वमनं तत्र कारयेत्।

(६) अम्लपित्तमें वातकफका संसर्ग भी होता है, अतः औषधि और पथ्य खूब विचार कर देने चाहियें।

(७) सोंठ और परवलका काढ़ा अम्लपित्त रोगमें पाचक और दीपन होता है। वह कफपित्त, वमन, खुजली, दाह, ज्वर और विस्फोटकको नाश करता है।

(८) अधोगत या नीचेके अम्लपित्तमें "पित्तज ग्रहणी" के समान इलाज करना चाहिये। रोगीका बलाबल विचार कर पाचन और दीपन औषधि देनी चाहिये।

(९) रक्तपित्त रोगमें और पैत्तिक शूलमें जो चिकित्सा लिखी है, वह अम्लपित्तमें भी विशेष कर करनी चाहिये।

(१०) अम्लपित्त रोगमें दूध, गुड़, घी और अवलेह ये प्रयोग करने चाहियें और कफपित्तनाशक विधि करनी चाहिये।

(११) कूष्माण्ड गुड़, आमलकी खण्ड एवं गुड़, दूध और पीपरोंके द्वारा पकाया हुआ घी भी अम्लपित्त रोगमें देना चाहिये।

पीपरके कल्क और पीपरके काढ़ेके साथ पकाया हुआ "घी" शहद मिलाकर खानेसे अम्लपित्त नष्ट हो जाता है।

अम्लपित्त रोगमें पथ्यापथ्य।

पथ्य।

ऊपर के अम्लपित्तमें पहले वमन और नीचेकेमें दस्त कराने चाहियें। नये और पुराने दोनों ही अम्लपित्तोंमें वमन कराना जरूरी है।

अम्लपित्त रोगमें पुराने शालि चाँवल, पुराने जौ, पुराने गेहूँ और पुराने मूँग हितकारी हैं। जंगली जानवरोंका मांसरस या शोरवा, चीनी, शहद, सत्तू, ककोड़ा, करेला, परवल, पुराना पेठा, केलेका फूल, वथुआ, कैथ, अनार, आमले, कसेरू, दाख, छोटी मछलियोंका रस, नारियलका पानी, सैंधानोन, जौकी लपसी, दूध-साबू, दूध-बारली, धानकी खील, पेठेका मुरब्बा, आमलेका मुरब्बा, नारियलकी गरीकी बरफी, पक्का पपीता, शहद-मिली जौकी लपसी और बेलफल आदि साधारण तौरसे पथ्य हैं।

इस रोगमें समस्त कड़वे रस, कफपित्त नाशक खाने-पीनेके पदार्थ और गरम करके शीतल किया हुआ पानी ये सब पथ्य हैं।

वातज अम्लपित्तमें चीनी और शहदके साथ "धानकी खीलोंका चूर्ण" विशेष हितकर है।

रोगका ज़ोर होनेकी हालतमें।

जब रोगका जोर हो, दिनमें रोगीको दूध-साबू या दूध-बारली दें; रातको धानकी खीलें दें। अगर जी मिचलाता हो, दाह या जलन

जोरसे हो तथा प्यास बहुत हो, तो शहद मिलाकर जौकी लपसी देनी चाहिये।

रोग घटने या आराम होनेकी दशामें।

दिनके समय, पुराने चाँवलोंका भात, मागुर या सिंगी मछलीका रस, सूरण, परवल, बैंगन, पुराना कुम्हड़ा, करेला और केलेके फूल आदिकी तरकारी तथा फलोंमें आमले, कसेरू तथा पका पपीता, नारियल या बेल के फल वगैरह दे सकते हो। गरम दूध और कच्चे नारियलका पानी भी पथ्य है। तरकारी जितनी कम खाई जाय उतना अच्छा। तरकारियोंमें सेंधानोन डालना चाहिये, पर नमकका कम खाना ही अच्छा है। अगर केवल पुराने चाँवलोंका भात खाया जाय तो सबसे अच्छा।

रातके समय, जौकी लपसी, दूध-बारली, दूध-साबू, दूध और धानकी खील खाना अच्छा है।

जलपानके लिए पेठेका मुरब्बा, आमलोंका मुरब्बा और नारियलकी गरीकी बरफी—इनमेंसे कोई दे सकते हैं।

अम्लपित्त और शूल रोगमें भोजनके साथ पानी न पीकर दो घण्टे बाद पीना हितकारी है।

अपथ्य।

नया अनाज, पित्तकोपकारक खाने-पीनेके पदार्थ, स्वभावसे विरुद्ध पदार्थ, सब तरहकी दाल—ख़ास कर उड़द और कुल्थीकी दाल, तिल, तेल, बकरी या भेड़का दूध, खटाई, नमक (जियादा नोन), दही, लाल मिर्च, बड़ी मछली; मीठा खट्टा और चरपरा रस; भारी अन्न और तेज़ शराब ये सब अनिष्टकारक हैं।

मलमूत्र और वमन आदिके वेग रोकना, बहुत खाना, धूपमें फिरना, मिहनत करना, मैथुन करना, शोक या क्रोध करना, रातमें

जागना, दिनमें सोना और बहुत दाल साग खाना ये सब हानिकारक हैं ।

अम्लपित्त नाशक नुसख़े ।

(१) छोटी या बड़ी हरड़के ६ माशे चूर्णमें ६ माशे शहद या गुड़ अथवा दाख मिलाकर खानेसे ३ दिनमें अम्लपित्त नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

(२) सन्ध्या समय, बिजौरे नीबूका दो तोले रस पीनेसे अम्ल-पित्त चला जाता है । परीक्षित है ।

(३) बिना तुषोंके जौ, अड़ूसा, और आमला इनका काढ़ा बनाकर, उसमें दालचीनी, तेजपात, इलायची और शहद मिलाकर पीनेसे अम्लपित्तके कारणसे होने वाली वमन तत्काल नाश हो जाती है । परीक्षित है ।

(४) गिलोय, नीमके पत्ते और कड़वे परवलके पत्ते—इनको एकत्र पीसकर और शहद मिलाकर पीनेसे अनेक रूपवाला महा-दारुण अम्लपित्त उसी तरह नाश हो जाता है, जिस तरह वज्रसे वृक्ष नाश हो जाते हैं ।

(५) आमलोंके रसके साथ नित्य भोजन करनेसे अम्लपित्त, वमन, अरुचि, दाह, मोह, प्रमेह और वीर्य-विकार नष्ट हो जाते हैं ।

(६) जौ, परवलके पत्ते और पीपरके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे अम्लपित्त नाश हो जाता है ।

(७) गिलोय, खैरकी लकड़ी, मुलेठी और दारुहल्दीके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे अम्लपित्त आराम हो जाता है ।

(८) गिलोय, नीमकी छाल, परवलके पत्ते और त्रिफला—इनके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे घोर दाहयुक्त अम्लपित्त और अनेक तरहके रक्तपित्त नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(९) अड़ूसा, गिलोय और कण्टकारीके काढ़ेमें शहद मिलाकर पीनेसे अम्लपित्तकी वमन नाश हो जाती है। यह काढ़ा श्वास, खाँसी और ज्वरको भी नाश करता है।

नोट—ऊपरके नुसख़ोंसे अम्लपित्तकी वमन और अम्लपित्त रोग शान्त हो जाता है।

(१०) त्रिफला, नागरमोथा, दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, अजवायन, त्रिकुटा, धनिया, सौंफ, सोवा और लौंग प्रत्येकका चूर्ण दो-दो तोले; निशोथका चूर्ण आठ तोले; सनायका चूर्ण ८ तोले; बड़ी हरड़का चूर्ण बत्तीस तोले और चीनी १२८ तोले—यथाविधि पका लो। मात्रा ६ माशे। अनुपान—गरम दूध। इसके सेवनसे भी अम्लपित्त रोगोंकी दस्तकब्जकी शिकायत रफा होती है। इसका नाम "हरीतकी खण्ड" है। शूल रोगमें भी यह दी जाती है।

नोट—अगर अम्लपित्त वालेको पतले दस्त लगते हों—अतिसार हो, तो "चिकित्सा-चन्द्रोदय तीसरे भाग" से कोई अतिसार नाशक दवा दीजिये।

(११) अड़ूसा, गिलोय, पित्तपापड़ा, नीमकी छाल, चिरायता, भाँगरा, हरड़, बहेड़े, आमले और कड़वे परवल—इनका काढ़ा "शहद" मिलाकर पीनेसे अम्लपित्त रोग नाश हो जाता है।

(१२) पाढ़, पटोलपत्र, इन्द्रजौ, धनिया, आमले, अड़ूसा, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, पीपर, हरड़, खाँड़, कमल और शहद—इनका अवलेह बना लो। इसको "शिवपालपिण्डी" कहते हैं। इससे अम्लपित्त, अरुचि, ज्वर, दाह और शोष रोग नाश होते हैं।

(१३) धानकी राख ६ माशे, दोनों समय, जलके साथ सेवन करनेसे अम्लपित्त आराम हो जाता है।

(१४) धनिया और सोंठका कल्क, रातके समय, पाचनके लिए, अम्लपित्त वालेको देना चाहिये। इन दोनोंका काढ़ा पीनेसे भी अम्लपित्त शान्त हो जाता है।

(१५) नीमके पत्ते और आमलोंका काढ़ा पीनेसे भी अम्लपित्त रोग नाश हो जाता है।

(१६) नारियलकी गरीकी राख ६ माशे, नित्य सवेरे, सेवन करनेसे अम्लपित्त आराम होता और पाचन-शक्ति बढ़ती है। परीक्षित है।

(१७) परवल, सोंठ, गिलोय, कुटकी, नीम और अड़ूसा—इन सबके पत्तोंका काढ़ा पीनेसे विसर्प रोगसे हुआ अम्लपित्त, मण्डल, चकत्ते और दाद नाश हो जाते हैं।

(१८) नित्य १ तोले चूनेका नितरा हुआ पानी पीनेसे अम्लपित्त और बदहजमी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(१९) परवल, कुटकी और त्रिफला—इनके काढ़ेमें "मिश्री" मिलाकर पीनेसे अम्लपित्त नाश होता है। परीक्षित है।

(२०) गिलोय, चीता, परवल और नीमके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे अम्लपित्त आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२१) दाख, हरड़, पीपर, धनिया, जवासा और मिश्री—इनके चूर्णको "शहद" में मिलाकर चाटनेसे अम्लपित्त नाश हो जाता है। परीक्षित है।

श्लेष्मपित्त नाशक नुसख़े।

(१) काकड़ासिंगी ६ माशे और परवल ६ माशे—दोनोंको पाव-भर पानीमें औटाओ; जब एक छटाँक पानी रह जाय, उतार

कर छान लो। इसके पीनेसे श्लेष्मपित्त नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) छोटी पीपर ३ माशे, हरड़ ३ माशे और चीनी ३ माशे—इनको मिलाकर नित्य खानेसे ५।६ दिनमें श्लेष्मपित्त नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(३) हरड़, पीपर, दाख, चीनी, धनिया और जवासा—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे तीन या चार माशे चूर्ण "शहद" में मिलाकर चाटनेसे श्लेष्मपित्त नाश हो जाता है।

(४) कड़वे परवलके पत्ते, इन्द्रजौ, धनिया, पीपर और आमले—इनको कुल २ तोले लेकर काढ़ा पका लो; शीतल होनेपर "शहद" मिलाकर पीओ। इससे कफपित्त नाश हो जाता है।

(५) अदरख और परवलके पत्तोंका काढ़ा पीनेसे अग्नि दीपन होती, पाचन होता तथा वमन, खुजली, चकत्ते, फोड़े और दाह ये सब नाश हो जाते हैं।

अम्लपित्त नाशक उत्तमोत्तम योग।

रसायन योग।

त्रिफला, त्रिकुटा, वायबिडङ्ग, चीता और नागरमोथा—ये सब चार-चार तोले लो; शुद्ध गन्धक दो तोले और शुद्ध पारा एक तोले लो। पहले गन्धक और पारेको खरल करो; जब निश्चन्द्र कज्जली हो जाय, उसमें त्रिफला वगैरः सब दवाओंके पिसे-छने चूर्ण को मिला दो। इसकी मात्रा ३ माशेसे आधे तोले तक है। बलाबल का विचार करके मात्रा देनी चाहिये। एक-एक मात्रा "नाबराबर घी

और शहद" के साथ सेवन करने या चाटने और ऊपरसे शीतल जल या गायका धारोष्ण दूध पीनेसे मन्दाग्नि, अम्लपित्त, परिणाम शूल, कामला और पाण्डु रोग आराम हो जाते हैं। यह "रसायन योग" बहुत उत्तम है।

नारिकेल खण्ड।

अच्छी तरह पिसी हुई नारियलकी गरी ८ तोले, और मिश्री १६ तोले लेकर, पहले गरीको चार तोले घीमें भून लो। फिर सबको नारियलके पानीमें खूब मथो और मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ; जब शीतल हो जाय, इसमें मोथा, धनिया, पीपर, तज, तेजपात और इलायची चार-चार माशे पीस-छान कर मिला दो और खूब शीतल हो जाने पर, उसमें १६ तोले शहद भी मिला दो और उत्तम चिकने बर्तनमें रखदो। इससे श्वास, खाँसी, परिणामशूल और अति दारुण अम्लपित्त रोग नाश हो जाते हैं तथा पुंसत्व, शुक्रवीर्य और बलकी वृद्धि होती है एवं कंठकी जलन मिटती है।

जीरकादि घृत।

चार तोले सफेद ज़ीरा और चार तोले धनिया—इनको पानीके साथ सिलपर पीसकर और बत्तीस तोले घीमें मिलाकर पकाओ। इसमेंसे ६ माशेसे दो तोले तक घी सेवन करनेसे भयङ्कर अम्लपित्त भी आराम हो जाता है।

खण्डकूष्माण्डकावलेह।

उत्तम पेठेका रस ४०० तोले, गायका दूध ४०० तोले, आमलोंका चूर्ण ३२ तोले, खाँड ३२ तोले और गायका घी ८ तोले—इन सबको मिलाकर तब तक पकाओ, जब तक कि गोली न बँधे। फिर उतार-कर अच्छे बर्तनमें रखदो। इस "खण्डकूष्माण्डकावलेह" के दो तोले या चार तोले नित्य सेवन करनेसे अम्लपित्त रोग नाश हो जाता है।

दूसरा नारिकेल खण्ड।

नारियलकी गरी १६ तोले और मिश्री ३२ तोले, इनको नारियलके पानी या गायके दूधमें पकाओ। जब पकते-पकते गाढ़ी हो जाय, उसमें धनिया, पीपर, नागरमोथा, दालचीनी, तेजपात, इलायची और नागकेशर प्रत्येक चीज़का चूर्ण पिसा-छना तीन-तीन माशे मिला दो। बस यही "नारिकेलखण्ड" है। इसमेंसे हर दिन दो-दो या चार-चार तोले खानेसे पुरुषत्व, निद्रा और बलकी प्राप्ति होती है तथा अम्लपित्त, परिणामशूल, क्षय और रक्तपित्त रोग आराम हो जाते हैं।

नोट—नारियलकी गरीको पहले चार तोले गायके घीमें भून लेना ज़रूरी है। इसके बाद उसे नारियलके पानी या दूधमें मिलाकर पका लेना चाहिये। नारियल का पानी न मिले तो गायका दूध काममें ले सकते हो।

बृहन्नारिकेल खण्ड।

नारियलकी गरी ६४ तोले सिलपर पिसी हुई तथा छिलके और बीजोंसे रहित पेठेके टुकड़े १२८ तोले—इनको १६ तोले गायके घीमें भूनो। फिर इसमें २५६ तोले गायका दूध और १२८ तोले साफ सफेद चीनी मिला दो और मन्दी-मन्दी आगसे धीरे-धीरे पकाओ। जब अच्छी तरहसे पक जाय, चूल्हेसे उतारकर शीतल कर लो। फिर उसमें छोटी इलायची, धनिया, आमले, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, सुगन्धवाला, खस, चन्दन, दाख, सिंघाड़े, कसेरू, तज, तेजपात और भीमसेनी कपूर—इन सबका पिसा-छना चूर्ण दो-दो तोले मिला दो। यही "बृहन्नारिकेल खण्ड" है। इसको नये मिट्टीके बासनमें रख दो। इसमेंसे चार-चार तोले या अग्नि-बल-अनुसार कम-ज़ियादा सवेरे ही खानेसे अम्लपित्त, ज्वर, रक्त-पित्त, प्यास, दाह, पाण्डुरोग, कामला, क्षय और परिणाम शूल—इन सबका तत्काल नाश हो जाता है। इससे शरीरका रंग साफ़

होता और धातु पुष्ट होती है। यह पुंसत्व, नींद और बल बढ़ाता है तथा कामी लोगोंके लिए परम हितकारी है।

पिप्पली घृत।

गायका घी ४ सेर, पीपरोंका काढ़ा ८ सेर और पीपरोंका कल्क (सिल पर पिसी लुगदी) एक सेर—सबको मिलाकर औटाओ; जब घी मात्र रह जाय, छान कर रख लो। इसमें से छै-छै माशे घी खानेसे अम्लपित्त नाश हो जाता है।

वृहत् पिप्पली खण्ड।

पीपरोंका चूर्ण पाव भर, घी आध सेर, चीनी एक सेर, शतावरका रस आध सेर, आमलोंका रस एक सेर और गायका दूध चार सेर इनको मिलाकर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब गाढ़ा होने पर आवे, इसमें दालचीनी, तेजपात, इलायची, हरड़, कालाजीरा, धनिया, नागरमोथा, बंसलोचन और आमले प्रत्येक दवाका चूर्ण एक-एक तोले; जीरा, मीठा कूट, सोंठ और नागकेशरका चूर्ण छै-छै माशे मिला दो और खूब चलाकर चूल्हेसे उतार लो। शीतल होने पर, इसमें जायफलका चूर्ण ६ तोले, कालीमिर्चका चूर्ण ६ तोले और शहद ६ तोले मिला दो। बस "वृहत् पिप्पली खण्ड" तैयार हो गया। इसमेंसे ६ माशे दवा गरम दूधके साथ खानेसे अम्लपित्त, वमन वेग, वमि, अरुचि, मन्दाग्नि और क्षय रोग आराम होते हैं।

शुण्ठी खण्ड।

सोंठका चूर्ण पाव भर, चीनी एक सेर, घी आध सेर और दूध ४ सेर—इनको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ; जब गाढ़ा होने पर आवे, इसमें आमले, धनिया, नागरमोथा, सफेद जीरा, पीपर, बंस-

लोचन, दालचीनी, तेजपात, इलायची, कालाजीरा और हरड़ प्रत्येकका चूर्ण पिसा-छना नौ-नौ माशे; कालीमिर्चका चूर्ण ४॥ माशे और नागकेशरका चूर्ण ४॥ माशे मिला दो और नीचे उतार लो। जब शीतल हो जाय, इसमें ८ तोले "शहद" मिला दो। इसकी भी मात्रा ६ माशेकी है। अनुपान—गरम दूध है। इसके सेवन करनेसे अम्लपित्त, शूल और वमन रोग नाश हो जाते हैं।

अम्लपित्तान्तक लौह।

रससिन्दूर, ताम्बा भस्म और लोहाभस्म हरेक छै-छै माशे तथा हरड़का चूर्ण १॥ तोले मिलाकर रख लो। इसकी मात्रा १ माशेकी है। अनुपान—शहद है। इससे अम्लपित्त नाश हो जाता है।

सिता मण्डूर।

शुद्ध मण्डूरका चूर्ण ४ तोले, मिश्री २० तोले, पुराना घी ३२ तोले और गायका दूध ६४ तोले—इन सबको मिलाकर पकाओ; जब गोली बँधने लगे, इसमें त्रिकुटा, मुलेठी, इलायची, जवासा, बायबिडंग, त्रिफला, मीठा कूट और लौंगका पिसा-छना चूर्ण दो-दो तोले मिला दो और खूब चला कर उतार लो। शीतल होने पर, आठ तोले "शहद" मिला दो। इसमेंसे ६ माशे दवा, भोजनसे पहले, दूधके साथ, खानेसे अम्लपित्त शूल, वमि, आनाह और प्रमेह रोग आराम हो जाते हैं।

श्रीबिल्व तैल।

बेलगिरी तीन सेर आधा पाव लेकर सोलह सेर पानीमें औटाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, छान कर रख लो।

आमले, लाख, हरड़, नागरमोथा, लाल चन्दन, सुगन्धवाला, सरलकाष्ठ, देवदारु, मँजीठ, सफेद चन्दन, कूट, इलायची, तगर-

पांडुका, जटामासी, शैलज, तेजपात, प्रियंगूफूल, अनन्तमूल, बच, शतावर, असगन्ध, सोवा और पुनर्नवा—इन सबको एक-एक तोले लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो और लुगदी बना लो।

अब तिलीका तेल १ सेर; आमलोंका रस १ सेर, दूध २ सेर तथा बेलके पकाये हुए काढ़े और लुगदीको एक कढ़ाहीमें डालकर पका लो; जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस तेलकी मालिश करनेसे अम्लपित्त, शूल, हाथ पैरोंकी जलन और सूतिका रोग नाश हो जाते हैं।

पानीय भक्त बटी।

त्रिकुटा, त्रिफला, नागरमोथा, निशोथ, और चीतेकी जड़ एक-एक तोले और बायबिडंग दो तोले लेकर पीस-छान लो।

शुद्ध पारा और शुद्ध गंधक तीन-तीन माशे लेकर और खूब खरल करके निश्चन्द्र कज्जली बना लो।

अब लोहभस्म दो तोले, अभ्रक भस्म दो तोले, पारे गन्धककी कज्जली तथा त्रिकुटा वगैरःका पिसा-छना चूर्ण सबको खरलमें डालकर, ऊपरसे "त्रिफलेका काढ़ा" डाल-डाल कर खूब खरल करो। खरल हो चुकने पर, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको सवेरे-शाम, काँजीके साथ, खानेसे शूल, श्वास, खाँसी और ग्रहणी रोग नाश हो जाते हैं।

लीलाविलास रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, ताम्बा भस्म और लोहा भस्म—प्रत्येक—छै-छै माशे ले लो। पहले पारे और गन्धकको खूब खरल करके, बाकी चीजें उनकी कज्जलीमें मिला दो। फिर इसे तीन दिन तक "आमलोंके रस" के साथ खरल करो और तीन दिन तक "बहेड़ोंके काढ़े" के साथ खरल करो और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ

बना लो। अनुपान—आमलोंका रस या दूध। इससे शूल, वमन, अम्लपित्त और छातीकी जलन नाश हो जाती है।

अविपत्तिकर चूर्ण।

त्रिकुटा, त्रिफला, नागरमोथा, बायविडंगके बीज, इलायची और तेजपातका चूर्ण एक-एक तोले; लौंगका चूर्ण ६ तोले, निशोथका चूर्ण २४ तोले और पिसी हुई मिश्री ३६ तोले—सबको मिलाकर एक बासनमें रख दो। यही "अविपत्तिकर चूर्ण" है।

इसकी मात्रा ३ से ८ माशे तक है। भोजनसे पहले एक-एक मात्रा खाकर, ऊपरसे शीतल जल या नारियलका पानी पीना चाहिये। इस पर यथेष्ट आहार करना चाहिये या दूधके साथ भात खाना चाहिये। इससे अम्लपित्त, शूल, बवासीर, बीस तरहके प्रमेह, मूत्राघात और पथरी रोग नाश हो जाते हैं। इसे अगस्त्य मुनिने कहा था।

नोट—इसके बनानेका यह नियम है कि त्रिकुटासे तेजपात तककी छै चीजें समान-समान भाग, लौंग इन छहोंके बराबर, निशोथ इन सबसे दूनी और मिश्री सारे चूर्णके बराबर ली जाती है।

रसामृत चूर्ण।

त्रिकुटा, त्रिफला, नागरमोथा, बायबिडंग और चीता—प्रत्येक दवा चार-चार तोले लो; शुद्ध गन्धक दो तोले और शुद्ध पारा एक तोले लो। पहले पारे और गन्धकको खरल करके कज्जली कर लो। फिर त्रिकुटा आदिको पीस छानकर कज्जलीमें मिला दो और घोटकर रख दो। इसकी मात्रा १॥ माशेसे ४ माशे तक है। इसको नाबराबर "घी और शहद"में मिलाकर चाटना चाहिये और ऊपरसे गायका दूध या शीतल जल पीना चाहिये। इससे अम्लपित्त, परिणाम शूल, मन्दाग्नि, कामला और पाण्डुरोग नाश हो जाते हैं।

शतावरी घृत ।

शतावरकी जड़का स्वरस १२८ तोले, दूध १२८ तोले और गायका घी ३२ तोले—इनको मिलाकर पकाओ और घी मात्र रहने पर छान कर रख लो। इसकी मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक है। इस घीसे वातपित्त जनित अम्लपित्त, रक्तपित्त, प्यास, मूर्च्छा श्वास और सन्ताप ये सब नष्ट हो जाते हैं।

नोट—अम्लपित्त रोगमें तिक्तक घृत, षट्पल घृत और पंचतिक्त घृत सेवन करनेसें भी लाभ होता है।

द्राक्षाद्य घृत ।

दाख, गिलोय, कुड़ेकी छाल, परवलके पत्ते, खसकी जड़, आमले, नागरमोथा, लालचन्दन, त्रायमाण, पद्मकाष्ठ, चिरायता और धनिया—इन सबको पाँच-पाँच तोले लेकर, पानीके साथ सिल पर पीस लो। अगर यह लुगदी १ सेर हो जाय, तो गायका घी ४ सेर, पानी १६ सेर और लुगदी सबको मिलाकर पकाओ। घी मात्र रहने पर उतार कर छान लो। इसकी मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक है। इसके सेवन करनेसे अम्लपित्त, मन्दाग्नि, ग्रहणी और खाँसी वगैरः रोग नाश हो जाते हैं।

द्राक्षादि गुटिका ।

दाख बीज निकाले हुए ५ तोले, हरड़ ५ तोले और मिश्री १० तोले—इनको पीस-कूट कर दो-दो तोलेकी गोलियाँ बना लो। हर दिन एक-एक गोली खानेसे अम्लपित्त रोग, हृदय और कंठकी जलन, प्यास, मूर्च्छा, भ्रम, मन्दाग्नि और आमवात रोग नष्ट हो जाते हैं।

पिप्पल्यादि अवलेह ।

पीपरका चूर्ण ८ तोले, घी १६ तोले, चीनी ६४ तोले, शतावर ३२ तोले, हरड़का काढ़ा ६४ तोले और दूध ६४ तोले—इन सबको

मिलाकर पकाओ; जब पकते-पकते अवलेहके समान हो जाय, तब इसमें दालचीनी, इलायची, तेजपात, हरड़, जीरा, धनिया, नागरमोथा, आमले और बंसलोचन इनमेंसे हरेकका चूर्ण एक-एक तोले, काले जीरेका चूर्ण ६ माशे, सोंठका चूर्ण ६ माशे, नागकेशरका चूर्ण ६ माशे, जायफलका चूर्ण ६ माशे, कालीमिर्चका चूर्ण ६ माशे और शुद्ध कपूरका चूर्ण ६ माशे मिला दो और उतार कर शीतल करो। जब शीतल हो जाय, इसमें १२ तोले "शहद" भी मिला दो और साफ चिकने बासनमें रख दो। इसे हर दिन सवेरे ३ से ६ माशे तक अथवा अग्निबलानुसार चाटनेसे अम्लपित्त, उबकाई, वमन, प्यास, अरुचि और जलन ये सब नाश हो जाते हैं।

सातवाँ अध्याय

स्वरभेद-वर्णन।

—०:❀:०—

स्वरभेदके निदान कारण।

स्वरभेद रोग या आवाज़ पड़जानेका रोग नीचे लिखे हुए कारणोंसे होता है:—

(१) बहुत ज़ोरसे बोलने या चिल्लाकर बोलनेसे।
(२) स्वर पाठ करने या ऊँची आवाज़से पढ़नेसे।
(३) गलेमें लकड़ी वग़ैरःकी चोट लगनेसे।
(४) विष आदि पदार्थ खानेसे।

स्वरभेदकी सम्प्राप्ति।

उपरोक्त कारणोंसे वात, पित्त और कफ कुपित होते हैं, फिर वे स्वरवाही—स्वर बहानेवाले स्रोतोंमें ठहरकर, स्वरका नाश कर देते हैं।

स्वरभेदकी क़िस्में।

स्वरभेद रोग छै तरहका होता है:—

(१) वातज, (२) पित्तज,

(३) कफज, (४) सन्निपातज,
(५) क्षयज, (६) मेदज।

वातज स्वरभेदके लक्षण।

अगर वायुसे स्वरभंग रोग होता है—आवाज़ बिगड़ जाती है, तो रोगीके नेत्र, मुँह, मूत्र और मल—पाखाना—ये काले हो जाते हैं; रोगी टूटा हुआ शब्द बोलता है अथवा गधेकी तरह कठोर आवाज़ निकालता है।

पित्तज स्वरभेदके लक्षण।

पित्तज स्वरभेद होनेसे रोगीके नेत्र, मुख, मल, और मूत्र पीले हो जाते हैं। बोलनेके समय उसके गलेमें दाह या जलन होती है।

कफज स्वरभेदके लक्षण।

कफज स्वरभेद होनेसे कंठ कफसे रुका रहता है, रोगी मन्दा-मन्दा और थोड़ा-थोड़ा बोलता है। रातकी अपेक्षा दिनमें अधिक बोलता है।

सन्निपातज स्वरभेदके लक्षण।

सन्निपातज या तीनों दोषोंका स्वरभेद होनेसे तीनों दोषोंके लक्षण पाये जाते हैं। यह स्वरभेद असाध्य है, बशर्त्ते कि रोगीकी बात समझ में न आवे।

क्षयज स्वरभेदके लक्षण।

क्षयज स्वरभेद होनेसे रोगीके मुँहसे धूआँ-सा निकलता है, वाणी क्षय हो जाती है—यथार्थ स्वर नहीं निकलता—जैसी आवाज निकलनी चाहिये वैसी आवाज़ नहीं निकलती। जब "ओज" के क्षय होनेसे, बोलनेकी सामर्थ्य नहीं रहती, तब यह—क्षयज स्वरभेद—असाध्य हो जाता है। अगर ओजका क्षय या नाश नहीं होता, तो

साध्य रहता है। मतलब यह है, कि बिल्कुल आवाज़ न निकलनेसे रोग असाध्य हो जाता है।

मेदज स्वरभेदके लक्षण।

मेदज स्वरभेद होनेसे, मेद या कफसे गला लिपा रहता है। मेदसे स्वर-मार्ग रुक जानेकी वजहसे प्यास बहुत लगती है। रोगी गलेके भीतर बोलता और बहुत ही धीरे-धीरे बोलता है। रोगीकी आवाज़ मालूम नहीं होती और बड़ी देरमें निकलती है।

नोट—"सुश्रुत"में होठ, गले और तालूका लिपा रहना या चिकना रहना लिखा है।

असाध्य लक्षण।

क्षीण पुरुषका, बूढ़ेका, दुर्बलका, बहुत दिनका, जन्मके साथ पैदा हुआ, मेदवाले या मोटे आदमीका और सन्निपातज स्वरभेद असाध्य होता है।

चिकित्सकके याद रखने योग्य बातें।

(१) "सुश्रुत उत्तर तन्त्र"—अध्याय ५३ में लिखा है:—स्वरभेद रोगीको स्नेहन क्रिया करके, वमन, विरेचन और वस्ति कर्मसे दुरुस्त करना चाहिये; यानी इन क्रियाओंसे दोष दूर करने चाहियें।

(२) इसके बाद नस्य, अवपीड़न, मुखधावन, धूमपान और अनेक तरहके कवल और अवलेह आदिसे रोगीकी चिकित्सा करनी चाहिये।

(३) जो चिकित्सा-विधि श्वास और खाँसीमें लिखी है, वह इस रोगमें भी चल सकती है, यह "सुश्रुत" का मत है। मतलब यह है, कि श्वास और खाँसीके अनेक नुसख़े इस रोगको भी नाश करते हैं। लिखा है:—

कासेश्वासे च हिक्कायां क्षये प्रोक्तानियानि तु ।
घृतानि तानि योज्यानि भिषग्भिः स्वरसंक्षये ॥

खाँसी, श्वास, हिचकी और क्षय रोगमें जो "घी" लिखे हैं, उन्हें वैद्योंको स्वरभेद रोगमें भी काममें लाना चाहिये ।

स्वरभेदकी विशेष चिकित्सा ।

वातज स्वरभेदकी चिकित्सा ।

(१) नमक मिलाकर तेल पीना चाहिये ।

(२) पुराने चाँवल गुड़के शीरेके साथ पकाकर और "घी" डालकर खाने चाहियें और कुछ देर बाद गरम जल पीना चाहिये ।

नोट—गन्नेके रस या गुड़के छाने हुए शीरेके साथ चाँवल पकाकर, रात को, सोनेसे पहले खाने चाहियें और घण्टे भर बाद गरम जल पीना चाहिये । गुड़के मीठे चाँवल पकाकर खाने और गरम जल पीनेसे ३।४ दिनमें स्वरभेद रोग चला जाता है । परीक्षित है ।

(३) भोजनके ऊपर कसौंधी, बड़ी कटेरी और भाँगरेके रसके साथ पकाया हुआ घी पीना चाहिये ।

(४) नीले फूलके कुरण्टके रसके साथ पकाया हुआ घी पीना चाहिये ।

(५) देवदारु, अजमोद, चीतेकी छाल और आमलोंके साथ पकाया हुआ घी पीना चाहिये ।

(६) देवदारु और चीतेकी छालके साथ पकाया हुआ बकरीका घी "शहद" मिलाकर पीना चाहिये ।

पित्तज स्वरभेद्की चिकित्सा।

(१) घी पीकर, ऊपरसे दूध पीना चाहिये।

(२) मुलेठीकी खीर "घी" मिलाकर खानी चाहिये।

(३) काकोली आदिका चूर्ण ना-बराबर "घी और शहद" मिलाकर चाटना चाहिये।

(४) शतावरका चूर्ण ना-बराबर "घी और शहद" मिलाकर चाटना चाहिये।

(५) खिरेंटीका चूर्ण ना-बराबर "घी और शहद" मिलाकर चाटना चाहिये।

(६) केवल ना-बराबर घी और शहद मिलाकर पीना चाहिये।

नोट—इस रोगमें जुलाब देना और मधुर पदार्थोंके साथ पकाया हुआ घी पिलाना सर्वश्रेष्ठ है।

कफज स्वरभेद्की चिकित्सा।

(१) सोंठ, मिर्च, छोटी पीपर और पीपरामूलको महीन पीस-छान लो। मात्रा १ से ३ माशे तक। चूर्ण फाँककर "गोमूत्र" पीना चाहिये। इस नुसख़ेसे कफज और मेदज दोनों स्वरभेद आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२) खार और शहदका कवल मुखमें रखना चाहिये। इस कवलके मुँहमें रखने और फिरानेसे तालू, जीभ और मसूड़ोंमें लगा हुआ कफ निकल जाता और स्वर ठीक हो जाता है।

(३) सोंठ, मिर्च और छोटी पीपरोंका महीन चूर्ण "शहद और तेल" में मिलाकर चाटना चाहिये। अगर इसमें "त्रिफला" भी मिला दिया जाय, तब तो कहना ही क्या? परीक्षित है।

(४) भोजन करनेके पीछे कालीमिर्च और पीपर प्रभृति खाने चाहियें।

मेदज स्वरभेदकी चिकित्सा।

इस रोगमें "कफज स्वरभेद" में लिखे हुए नुसख़े काममें लाने चाहियें।

सन्निपातज और क्षयज स्वरभेदकी चिकित्सा।

जब ऐसे रोगीका इलाज हाथमें लो, तब कह दो, कि हम दवा करते हैं; रोग आराम हो भी जाय और न भी हो, क्योंकि ऐसे रोगी बहुत कम आराम होते हैं।

समस्त स्वरभेद नाशक नुसख़े।

(१) अजवायन, हल्दी, चीतेकी छाल, जवाखार और आमले—इनको समान-समान लेकर पीस लो। मात्रा १ से ३ माशे तक। इस चूर्णकी १ मात्रा "नाबराबर घी और शहद" में मिलाकर चाटनेसे भयङ्कर स्वरभंग रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२) चव्य, अम्लवेत, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, इमली, तालीसपत्र, सफेद जीरा, बंसलोचन और चीतेकी छाल—इनको समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। इसके बाद इस चूर्णको पुराने "गुड़" में मिला लो। शेषमें "दालचीनी, इलायचीके बीज और तेजपात" भी पीस-छानकर मिला दो। इस चूर्णके सेवन करनेसे स्वरभेद, पीनस, कफ और अरुचि वगैरः रोग नाश हो जाते हैं। यह नुसखा चक्रदत्तका है।

नोट—चव्यादि अगर तोले-तोले भर लो, तो दालचीनी और इलायचीके बीजादि भी तोले-तोले भर लो। यह बड़ा अच्छा चूर्ण है। नाम है "चव्यादि चूर्ण"

(३) एक माशे कत्था "सरसोंके तेलमें भिगोकर" मुँहमें रखनेसे स्वरभेद आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४) छोटी पीपर और छोटी हरड़—पीस-छानकर मुखमें रखनेसे स्वरभेद आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) सोंठ और हरड़ बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे जरा-जरासा चूर्ण, थोड़ी-थोड़ी देरमें, मुँहमें रखनेसे स्वरभेद रोग आराम हो जाता है।

(६) बहेड़ेका छिलका, सेंधानोन और छोटी पीपर—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण, छटाँक-भर माठेमें घोलकर, १५।२० दिन सेवन करनेसे स्वर-भेद रोग जाता रहता है। परीक्षित है।

(७) सूखे आमलोंके छिलके लेकर महीन पीस-छान लो। इसमें से ६ माशे चूर्ण गायके दूधके साथ फाँकनेसे आठ दिनमें स्वरभेद रोग जाता रहता है। परीक्षित है।

(८) बड़बेरीके दो तोले पत्तोंको सिलपर पीसलो। फिर उस लुगदीको घीमें भूँजकर अन्दाजका "सेंधा नमक" मिला लो और नित्य खाओ। इससे खाँसी और स्वरभेद रोग चले जाते हैं। परीक्षित है।

(९) ६ माशे छोटी हरड़ोंका चूर्ण, गायके दूधके साथ, खानेसे ८ दिनमें स्वरभेद रोग आराम हो जाता है।

(१०) ब्राह्मी, दूधिया बच, छोटी हरड़, अड़ूसेके पत्ते और छोटी पीपर—इनको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। मात्रा २ से ४ माशे तक। एक-एक मात्रा "शहद" में मिलाकर चाटनेसे स्वरभंग रोग जाता रहता है। इसका नाम "सारस्वत चूर्ण" है। खूब परीक्षित है।

(११) सफेद काकमाचीके पत्ते, सफेद चिरमिटीके सूखे पत्ते, दूधिया बच और कूट—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर इसमें कुल चूर्णके बराबर "पीपरोंका चूर्ण" पिसा-छना हुआ मिला दो और "शहद" में सानकर चिकनी-सुपारीके बराबर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको मुँहमें रखने और रस चूसनेसे स्वरभंग रोग जाता रहता है। परीक्षित है।

नोट—गलेमें सूजन हो तो कड़वी तोरई चिलममें रखकर तमाखूकी तरह पीनेसे लार टपकती और गला खुल जाता है।

(१२) मिश्री और सोंठ बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको "शहद" में मिलाकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके चूसनेसे बैठा हुआ गला खुलकर कोयलका-सा हो जाता है। परीक्षित है।

(१३) कालीमिर्च, कुलींजन, बड़ी इलायचीके बीज और मुलेठी—इनको समान-समान लेकर पीस छान लो। फिर "बँगला पानोंके रस" में घोटकर बेर-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके, सवेरे-शाम, "शहद"के साथ खानेसे स्वरभेद रोग, गला बठना, हकलाना और साफ न बोलना आदि रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१४) मूलीके बीज चार माशे महीन पीस-छान कर, गरम पानीके साथ फाँकनेसे स्वरभेद आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१५) कवाबचीनी या शीतल मिर्च मुँहमें रखनेसे स्वरभेद आराम हो जाता है।

(१६) कुलींजन मुँहमें रखने और उसका रस पीनेसे स्वरभेद नाश होकर गला खुल जाता है। परीक्षित है।

(१७) गुड़के शर्बतमें चाँवल पकाकर, रातको, सोनेसे पहले, धापकर खाने और घन्टे भर बाद दो चम्मच "गरम पानी" पीनेसे स्वरभेद रोग ४।५ दिनमें आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—यह नुसखा "मुजर्ब्बात अकबरी" का है। हमारे यहाँ पके हुए चाँवलोंमें "घी" मिलाना अधिक लिखा है।

(१८) बायबिडंग, सैंधानोन, हींग, शुद्ध गूगल, शुद्ध मैनसिल और दूधिया बच—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसकी मात्रा २ से ४ माशे तक है। इसके सेवन करनेसे पीनस या जुकामसे हुआ स्वरभेद रोग आराम हो जाता है।

(१९) त्रिफला, त्रिकुटा और जवाखार बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ से ६ माशे तक चूर्ण खानेसे श्वास और खाँसी आदिके कारणसे बिगड़ा हुआ गला ठीक हो जाता है।

(२०) ज़रासा चिराग़का गुल १ पानमें रखकर खानेसे या सिन्दूर खानेसे बिगड़ा हुआ स्वर या बिगड़ी हुई आवाज़ ठीक हो जाती है। यह नुसख़ा "मुजर्ब्बात अकबरी" का है।

(२१) गन्ना भून कर और छीलकर चूसनेसे स्वरभेद रोग जाता रहता है।

(२२) कुलींजन, अकरकरा, बच, ब्राह्मी, मीठा कूट और कालीमिर्च—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। मात्रा १ से ३ माशे तक। हरेक मात्रा "शहद"में मिलाकर, सवेरे-शाम, चाटनेसे स्वरभेद रोग यानी गला बैठना—और तरहकी आवाज़ निकलना आदि आराम होकर याद रखनेकी ताक़त बढ़ती है। परीक्षित है।

(२३) काली अगर, देवदारु और हल्दी—इनको आठ-आठ माशे लेकर, ३५ तोले जलमें काढ़ा बनालो। आठ तोले पानी रहने पर मल-छानकर पीलो। इस काढ़ेसे स्वरभेद रोग जाता रहता है। इसे "अगर्वादि क्वाथ" कहते हैं। परीक्षित है।

(२४) अगर नज़ला कंठकी तरफ गिरनेसे आवाज़ बैठी हो, तो थोड़ीसी "अफीम" खानी चाहिये। साथ ही "ख़शख़ाशके पोस्ते और

अजवायन" बराबर-बराबर लेकर काढ़ा बनाना चाहिये । इस काढ़ेके गरगरे करनेसे और भी जल्दी आराम होता है । परीक्षित है ।

(२५) अगर कफकी जियादतीसे गला बैठा हो, तो ३ बरसकी पुरानी "गोंदीकी जड़" ज़मीनमेंसे खोदकर मुँहमें रखो और "इंस्पन्द के काढ़े" के गरगरे—कुल्ले—करो । इससे आवाज़ खुल जाती है ।

(२६) अदरखकी गाँठमें सूराख करके, उसके भीतर "थोड़ासा नमक और ज़रासी हींग" महीन पीसकर रख दो । फिर अदरखका मुँह अदरखके टुकड़ेसे ही बन्द करके, उस पर आटे या मिट्टीको लपेट दो और उसे भूभलमें पकाओ । जब अदरख पक जाय और पकनेकी गन्ध आने लगे, उसे निकाल लो और छील-छील कर खाओ । इससे गला खुल जायगा ।

(२७) थोड़ीसी हींग गरम जलके साथ कंठके नीचे उतारनेसे गला खुल जाता है ।

(२८) हरड़के बीजोंकी मींगी, पीपल और लाहौरी नोन—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और "शहद"में मिलाकर गोलियाँ बना लो । मात्रा १ तोलेकी है । १५ दिन खानेसे गला साफ हो जाता है ।

(२९) मालकाँगनी, वच, खुरासानी अजवायन, कुलींजन और छोटी पीपर—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और "शहदमें" मिला लो । इसमेंसे बीस-बीस माशे, सवेरे-शाम, खानेसे, कफज स्वरभेद या कफके कारणसे बैठा हुआ गला ठीक हो जाता है ।

(३०) मुण्डीकी जड़के चबाने अथवा मुण्डीके पत्तोंको पानमें रख कर खानेसे स्वरभंग रोगमें शीघ्र ही लाभ होता है ।

नोट—तोता मैना आदि पक्षियोंको उनके खानेके साथ "मुण्डीके पत्तोंका चूर्ण" खिलानेसे उनका स्वर अति उच्च हो जाता है । "मुण्डीकी जड़"को पीस-छान कर छाछके साथ खानेसे और "मुण्डीके पत्तों"को पानीके साथ पीसकर अर्शके अंकुरों या बवासीरके मस्सों पर लगानेसे मस्से जड़से नाश हो जाते हैं ।

स्वरभङ्ग रोगपर उत्तमोत्तम योग।

स्वरभङ्गादि बटी।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध मीठा विष, भुना हुआ सुहागा, कालीमिर्च, चव्य और चीतेकी छाल—सबको बराबर-बराबर ले लो।

पहले पारे और गन्धकको ५।६ घण्टे तक खरल करो; जब चमक न रहे, उसमें विष आदिको पीस-छान कर डाल दो और अदरखका रस दे-देकर खूब घोटो और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे बलाबल अनुसार एक-एक या कम-बेश गोली सवेरे-शाम खाने और ऊपरसे पानी पीनेसे स्वरभेद, श्वास और खाँसी आदि रोग अवश्य नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

कंटकारी घृत।

रास्ना, खिरेंटी, गोखरू, सोंठ, कालीमिर्च और छोटी पीपर—समान-समान लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। जितना यह कल्क या लुगदी हो, उससे चौगुना "घी" ले लो और घीसे चौगुना "कटेरीका स्वरस" ले लो। सबको क़लईदार कढ़ाहीमें डाल, मंदाग्निसे पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही "कंटकारी घृत" है। इस घीकी मात्रा ६ माशेसे ४ तोले तक है। इसके पीनेसे स्वरभेद रोग और पाँचों प्रकारकी खाँसी जाती रहती है।

नोट—अगर गीली कटेरी न मिले तो सूखी कटेरी लाकर, अठगुने पानीमें पका लो। जब चौथाई जल रह जाय, मलकर छान लो। यही स्वरस काममें

लाओ । जैसे,—१ सेर कटेरीको ८ सेर पानीमें पकाओ, जब चौथाई यानी दो सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो । अगर १ सेर स्वरस दरकार हो, तो आध सेर कटेरी लो और काढ़ा पकाओ । कहा हैः—

शुष्कद्रव्यमुपादाय स्वरसानामसंभवे ।
वारिण्यष्टगुणे साध्यं ग्राह्यं पादावशेषितम् ॥

भृङ्गराजादि घृत ।

भाँगरा, गिलोय, अजमोद, अड़ूसा, दशमूल और कसौंधी—इनको बराबर-बराबर लेकर काढ़ा बना लो । इस काढ़ेके साथ "घी" पका लो । इस घीकी मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है । हर मात्रामें "पीपरोंका चूर्ण" मिलाकर, शहदके साथ चाटनेसे स्वरभेद और खाँसी रोग जाते रहते हैं ।

नोट—गायका घी चार सेर ले लो । दवाएँ चार सेर लेकर, ६४ सेर पानीमें पकाओ; जब चौथाई यानी १६ सेर पानी रह जाय उतारकर छान लो । पीछे घी और काढ़ेको आगपर चढ़ाकर पकालो । जब घी मात्र रह जाय, उतार लो और छानकर रख दो । अगर काढ़े और घीमें पकते समय ही "पीपरोंका चार सेर कल्क" भी मिला दो तो और भी अच्छा । जब घी पक जाय, छानकर शीतल कर लो और फिर चार सेर "शहद" भी मिलादो । इस तरह करनेसे आपको रोज़-रोज़ "पीपरोंका चूर्ण" और "शहद" मिलाने की खटखट न रहेगी । हम इसी तरह करते हैं । साफ यों समझिये कि घी ४ सेर, दवाओंका काढ़ा १६ सेर, पीपरकी पिसी लुगदी ४ सेर और शहद ४ सेर—इन चारोंके तैयार करनेसे यह घी बनता है और "शहद" घीके पककर चूल्हेसे नीचे उतारने और शीतल होने पर मिलाया जाता है ।

त्र्यम्बकाभ्रक ।

अभ्रक भस्म १०० आँचकी ८ तोले लेकर खरलमें डालो । फिर उसमें "कंटकारीका स्वरस या काढ़ा" आठ तोले डालो और घोटो । जब सूख जाय, "गोखरूका ८ तोले काढ़ा या स्वरस" डालकर घोटो । जब सूख जाय, उसमें "घीग्वारका ८ तोले स्वरस" डालो और घोटो ।

जब वह भी सूख जाय, तब आठ तोले "पीपरामूलका रस या काढ़ा" डालकर घोटो। ठीक इसी तरह "भांगरे, अड़ूसे, बेरके पत्ते, आमले, हल्दी और गिलोयके आठ-आठ तोले स्वरस या काढ़े" डाल-डालकर घोटो। शेषमें एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाओ।

इस अभ्रकसे स्वरभंग, गला बैठना, बोला न जाना, श्वास, खाँसी और हिचकी आदि रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

त्रिबंग भस्म।

५ तोले शुद्ध चाँदी, ५ तोले शुद्ध राँगा और ५ तोले शुद्ध शीशा—इनको गलाकर, इनमें १५ तोले "हिंगलूसे निकाला हुआ पारा" मिला दो और "नीबूका रस" डाल-डालकर खरल करो। शेषमें, पिट्ठीको धो डालो। फिर इस पिट्ठीमें १५ तोले "शुद्ध गंधक" डालकर कज्जली कर लो; यानी सबको खूब घोटो। फिर इस कज्जलीको नलिका डमरु यंत्रमें रखकर, पहले मन्दी, फिर मध्यम और फिर तेज आग दो दिन तक लगातार दो। जब नालीसे धूआँ निकलना बन्द हो जाय, आग बन्द कर दो।

जब यंत्र शीतल हो जायगा, आपको नालीके चारों तरफ "तालसिन्दूर" और पैंदेमें "त्रिवंग भस्म" मिलेगी।

"त्रिवंग भस्म" और "तालसिन्दूर"को मिलाकर घोट लो और सेवन करो अथवा खाली त्रिवंग भस्म ही सेवन करो। मात्रा १ से ४ रत्ती तक।

अड़ूसेका काढ़ा बनाकर शीतल करलो। फिर उसमें ६ माशे "शहद" मिला दो। त्रिवंगकी १ मात्रा खाकर, ऊपरसे इस काढ़ेको पीलो। इस तरह दोनों समय "त्रिवंग" सेवन करनेसे श्वास, खाँसी,

स्वरभेद, क्षय, रक्तपित्त, प्रमेह और कोढ़ आदि रोग नाश हो जाते हैं।

हमने इस "त्रिबंग भस्म" को श्वास, खाँसी और इनके साथ हुए स्वरभेद पर आज़माया है। श्वास रोग पर तो यह रामबाण ही है।

नोट—त्रिबंग सेवन करानेसे पहले, अगर रोगी बलवान हो, तो मुलेठी और मैनफलके काढ़ेसे वमन करा देनी चाहिये। वमन करा देनेसे, दूषित कफ निकल जायगा और श्वासादिमें जल्दी लाभ होगा।

मुलेठी २ तोले और मैनफल ५ तोले को सेर भर पानीमें औटाओ; जब आधा काढ़ा रह जाय, मल-छान कर पिला दो। इससे कय हो जायँगी, पर कय करानेका काम अनुभवी वैद्यका है। यह सब हमने "चिकित्सा-चन्द्रोदय" दूसरे भागमें लिखा है।

निदिग्धिकावलेह।

कटेरी ५ सेर, पीपरामूल २॥ सेर, चीतेकी छाल १। सेर और दशमूलकी दशों दवाएँ १। सेर लेकर, पच्चीस सेर अढ़ाई पाव पानीमें औटाओ; जब तीन सेर तीन छटाँक पानी रह जाय, मल-छानकर रख लो।

फिर इस काढ़ेमें १॥।≈ पुराना गुड़ डालकर औटाओ, जब शीरेका जैसा हो जाय, इसमें पीपरोंका चूर्ण १२८ तोले और त्रिजातक (दालचीनी, तेजपात और इलायची) का पिसा-छना चूर्ण ३२ तोले और कालीमिर्चोंका चूर्ण ४ तोले मिला दो और उतार लो। जब शीतल हो जाय, १६ तोले "शहद" भी मिला दो।

इस अवलेहको जठराग्निके बलानुसार सेवन करनेसे स्वरभेद, प्रतिश्याय, जुकाम, खाँसी, श्वास, मन्दाग्नि, गलेके रोग, मल रुकनेसे पेटका अफारा, गाँठ, अर्बुद (फोड़ा या रसौली) और मूत्रकृच्छ्र रोग नाश हो जाते हैं।

मृगनाभ्यादि अवलेह।

कस्तूरी, छोटी इलायची, लौंग और बंसलोचन—इनको समान-

समान लेकर पीस-छान लो। इसको नाबराबर घी और शहदमें चाटनेसे स्वरभेद और जीभकी जड़ता नाश हो जाती है। मात्रा १ से २ रत्ती तक। २ माशे घी और १ माशे शहदमें १ रत्ती दवा मिलाकर चाटनी चाहिये। परीक्षित है।

सारस्वत या ब्राह्मी घृत।

ब्राह्मीकी जड़ और पत्तोंका रस चार सेर और गायका ताज़ा घी १ सेर रख लो।

हल्दी, मालतीके फूल, कूट, तेवड़ीकी जड़ और बड़ी हरड़के छिलके दो-दो तोले लेकर, पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी कर लो।

फिर ब्राह्मीका रस, घी और लुगदीको क़लईदार बासनमें डालकर, मन्दाग्निसे पका लो। जब रस जलकर घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे २। तोले तक है। सवेरे-शाम इसके पीनेसे स्वरभेद, कोढ़, गोला और प्रमेह आदि रोग नाश हो जाते हैं। स्वरभेद रोगपर यह घी सबसे अच्छा है। परीक्षित है।

ब्राह्म्यादि अवलेह।

ब्राह्मी, दूधिया बच, हरड़, अड़ूसा और पीपर—इन्हें बराबर-बराबर लेकर पीस लो। इसकी मात्रा १ से ४ माशे तक है। इसको "नाबराबर घी और शहद" में मिलाकर चाटनेसे सात दिनमें आदमी किन्नरकी तरह गाने लगता है।

आठवाँ अध्याय

अरोचक रोग-वर्णन।

—o:※:o—

अरुचिकी व्याख्या।

साधारण लोग खानेपर मन न चलने या खानेकी रुचि न होनेको "अरुचि" कहते हैं। वृद्ध भोजने लिखा है:—

भूख हो, पर मुँहमें दिया हुआ ग्रास अच्छा न लगे, उसे "अरुचि" कहते हैं।

भोजनकी याद करने, भोजनकी बात सुनने, भोजनको देखने और उसकी गन्ध आनेसे मनुष्यको द्वेष होता है, तब "भक्तद्वेष" कहते हैं।

क्रोधसे, भयसे, पीड़ासे और प्रेमके अनुरोधसे जब अन्नपर श्रद्धा नहीं रहती, तब "भक्ताच्छन्द" कहते हैं।

नोट—वृद्धि भोजने भक्तद्वेष और भक्ताच्छन्दको अरुचिसे अलग लिखा है, पर चरक और सुश्रुतने इन दोनोंको "अरुचि" के अन्तर्गत ही माना है। इनकी समझमें ये अरुचिके ही भेद हैं।

अरोचकके निदान-कारण।

अरोचक क्यों होता है और अरोचक किसे कहते हैं? वातादिक दोषोंके कोपसे, शोकसे, भयसे, पीड़ासे, लोभसे, क्रोधसे, मन बिगाड़ने वाले भोजन और रूपसे, मनमें सन्ताप उत्पन्न करने वाली

गन्धसे और अति मोहसे अन्नादिपर जो अरुचि होती है, उसे "अरोचक" कहते हैं।

अरोचकको क़िस्में।

अरोचक रोग पाँच तरहका होता है:—

(१) वातज। (२) पित्तज।
(३) कफज। (४) सन्निपातज।
(५) आगन्तुक।

वातज अरुचिके लक्षण।

अगर मुँहका जायका कसैला हो, दाँत आम गये हों—खट्टे हो गये हों तथा हृदयमें शूलकी-सी वेदना होती हो, तो "वातज अरुचि" समझो।

पित्तज अरुचिके लक्षण।

अगर मुँहका स्वाद चरचरा, खट्टा, विरस और बदबूदार हो, मुँहमें नमक-सा घुला जान पड़े, प्यास बहुत लगती हो, जलन बहुत होती हो और अग्नि सेवनके समान सन्ताप होता हो, तो "पित्तज अरुचि" समझो।

कफज अरुचिके लक्षण।

अगर मुँहका स्वाद मीठा, चिकना, लिबलिबा रहता हो, उसमें भारीपन, शीतलता और बदबू हो तथा कफ-मिला थूक गिरता हो, तो कफकी अरुचि समझो।

त्रिदोषज अरुचिके लक्षण।

अगर मुँहमें मीठे, खट्टे, खारी और कषैले प्रभृति कितने ही प्रकारके रसोंके स्वाद आते हों तथा हृदयमें शूल, प्यास, जलन, और कफ गिरना ये लक्षण भी हों, तो "त्रिदोषज अरुचि" समझो।

आगन्तुक अरुचिके लक्षण ।

शोकसे, भयसे, अत्यन्त लोभसे, क्रोधसे, अप्रिय भोजनसे, अप्रिय रूप देखनेसे और अप्रिय गन्ध सूँघनेसे जो अरुचि होती है, उसमें मुँहका ज़ायका स्वाभाविक रहता है—कुछ विकृति या फेरफार नहीं होता। हाँ, मनकी व्याकुलता, मोह, बेहोशी अथवा रसज्ञान-विषयक मोह और जड़ता ये लक्षण होते हैं।

नोट—वाग्भट्टजी कहते हैं:—"शोकक्रोधादिषु यथामलम्" अर्थात् शोक, क्रोध वगैरःसे हुई अरुचिमें दोषोंके अनुसार मुखका स्वाद हो जाता है।

अरुचि नाशक नुसख़े ।

नोट—वातज अरोचकमें बस्तिकर्म श्रेष्ठ है; पित्तजमें विरेचन या जुलाब देना श्रेष्ठ है, कफजमें वमन या कय कराना हितकारी है और मन बिगड़नेसे हुए अरोचकमें मनको प्रसन्न करना या आनन्ददायी पदार्थोंका प्रयोग करना उत्तम है।

लवणार्द्रक योग ।

(१) भोजनके पहले, सदैव, सैंधानोन लगाकर अदरख खाना पथ्य है। इससे भोजनपर रुचि होती, अग्नि तेज़ होती और जीभ तथा कंठ शुद्ध होते हैं। इसके खाने वालेके पास अरुचि भूलकर भी नहीं आती है।

शृङ्गवेर रस योग ।

(२) शहद और अदरखका रस पीनेसे अरुचि, श्वास, खाँसी,

प्रतिश्याय—ज़ुकाम और कफ़का नाश होता है। ६ माशे शहद और ६ माशे अदरखको मिलाकर पीना साधारण मात्रा है।

इमलीका पना।

पकी हुई मीठी इमलीके बीज वग़ैरः निकाल कर साफ़ करलो। फिर अन्दाज़से सफ़ेद चीनी और इमलीको शीतल पानीमें घोल लो। जब खूब घुल जाय, साफ़ कपड़ेमें छान लो। फिर इसमें अन्दाज़से इलायची, लौंग, कपूर और कालीमिर्च पीसकर मिला दो। यही "अम्लीका पानक" या इमलीका पना है। इस पनेको मुँहमें भर-भर कर गरगरे या कुल्ले करनेसे सब तरहकी अरुचि नाश होती और पित्त शान्त होता है।

नोट १—छोटी इलायची, लौंग और कालीमिर्च अन्दाज़से इतनी लेनी चाहिएँ जो ज़ियादा भी न हों और एकदम कम भी न हों। कपूर बहुत ही थोड़ा लेना चाहिये, नहीं तो सारा पना कड़वा और बदज़ायके हो जायगा।

२—कोई-कोई इमली और गुड़को पानीमें घोलकर छान लेते हैं, फिर उसमें तज, इलायची और कालीमिर्च मिला देते हैं। यह पना भी अच्छा बनता है। याद रखकर इमलीका पना लकड़ी, काठ, मिट्टी या काँचके बर्तनमें बनाना चाहिये; पीतल, ताम्बे आदिके बर्तनमें नहीं।

अरुचि नाशक माठा।

गायके उत्तम दहीमें भुनी हुई राई, भुना हुआ जीरा, भुनी हुई सोंठ और सैंधानमक मिलाकर कपड़ेमें छान लो। फिर इसमें उतना ही पानी मिला दो, जितनेमें यह ठीक बन जाय। इस माठेके खानेसे तत्काल अरुचि नाश होकर रुचि होती और जठराग्नि तेज होती है।

भीमसेनी शिखरिणी।

अच्छी तरहसे दूधको औटा लो और भैंसके दहीको कपड़ेमें बाँधकर पानी-रहित करलो। फिर इनको मिलाकर मथो और मोटे

कपड़ेमें छान लो। शेषमें इसमें इलायची, लौंग, भीमसेनी कपूर और कालीमिर्चें चतुराईसे डाल दो। बस, शिखरन तैयार हो जायगी। इसके खानेसे अवश्य रुचि होती है।

नोट—कपूर १ गोल मिर्च भर या २।३ चाँवल भरसे अधिक मत डालना।

दाड़िमादि चूर्ण।

खट्टे अनारके दाने ८ तोले, चीनी १२ तोले, दालचीनी ४ माशे, तेजपात ४ माशे और छोटी इलायचीके बीज ४ माशे—सबको पीस-कूट कर चूर्ण बनालो। इसके थोड़ा-थोड़ा खानेसे अरुचि नष्ट होती, अग्नि तेज़ होती एवं पीनस, ज्वर और खाँसी ये रोग नष्ट हो जाते हैं। बोलचालमें इसे "अनारदानेका चूर्ण" कहते हैं।

अनारदानेका चूर्ण।

अनारदानेका चूर्ण ८ तोले, पिसी मिश्री ३२ तोले, सोंठका पिसा-छना चूर्ण ४ तोले, कालीमिर्चोंका चूर्ण ४ तोले, छोटी पीपरोंका चूर्ण ४ तोले, दालचीनीका चूर्ण ४ तोले, तेजपातका चूर्ण ४ तोले और छोटी इलायचीका चूर्ण ४ तोले—इन सबको एकत्र मिलाकर फिर छान लो। इसके सेवन करनेसे अरोचक और पीनस नाश होकर जठराग्नि बढ़ती है। यह चूर्ण हृदयको हितकारी है। परीक्षित है।

लवंगादि चूर्ण।

लौंग, कंकोल, कालीमिर्चें, खस, सफेद चन्दन, तगर, नीले कमलके बीज, कालाज़ीरा, सुगन्धवाला, अगर, तज, नागकेशर, पीपर, सोंठ, छोटी इलायची, भीमसेनी कपूर, जायफल और नीला वंसलोचन—इन अठारह दवाओंको बराबर-बराबर लेकर पीस कूट

लो। फिर इस चूर्णके वज़नसे आधी "मिश्री" पीसकर मिला दो और कपड़ेमें छानकर रख दो।

इस चूर्णकी मात्रा १ से ३ माशे तक है। इसके सेवन करनेसे अरुचि नाश होकर रुचि होती है, तृप्ति होती है, अग्नि तेज़ होती है, बलकी वृद्धि होती है, मैथुन-शक्ति बढ़ती है एवं तीनों दोष शान्त होते हैं। इनके सिवाय छातीकी जकड़न, तमक श्वास, गलग्रह, खाँसी, हिचकी, अरुचि, क्षय रोग, पीनस, संग्रहणी, अतिसार, उरःक्षत और सब तरहके प्रमेह नाश होते हैं।

खाण्डव चूर्ण।

तालीसपत्र, चव्य, कालीमिर्च, सोंठ और सेंधानोन एक-एक तोले; छोटी पीपर, चीतेकी छाल, सफेद ज़ीरा, तज, इमली, पीपरा-मूल और धनिया दो-दो तोले; बेरका गूदा, अम्लवेत, इलायची, नागरमोथा और अजवायन तीन-तीन तोले और अनारकी छाल ४ तोले,—इन सब दवाओंको पीसकर कपड़ेमें छान लो। फिर यह चूर्ण जितना हो, उससे आधी "मिश्री" पीसकर मिला दो। इसकी मात्रा १ से ३ माशे तक है।

इस चूर्णके सेवन करनेसे मन्दाग्नि, खाँसी, अरुचि, शूल, गोला, बवासीर, कंठरोग, पेटके रोग, छातीका दर्द, तिल्ली, पाण्डुरोग, ज्वर, वमन, शोष, अतिसार, अफारा, जीभके रोग, ग्रहणी और मलबन्ध रोग नाश होते हैं।

हमारा अनुभूत कलहंस।

सहँजनेके बीज नग १८, कालीमिर्च नग १०, पीपर नग २०, अदरख ८ तोले, गुड़ ८ तोले, काँजी ८ सेर, और मनिहारी नोन या कालानोन ८ तोले—इनको मिलाकर रईसे मथ लो। फिर इसमें दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात और नागकेशर दो-दो तोले

पीसकर मिला दो। बस, "कलहंस" तैयार हो गया। इसके सेवन करनेसे अरुचि तो नष्ट होती ही है, पर स्वरभंग रोग भी आराम हो जाता है। यह योग "चक्रदत्त" में लिखा है।

यवानीषांडव।

अजवायन, इमली, सोंठ, अम्लवेत, अनार, खट्टे बेरोंका गूदा, दो-दो तोले; धनिया, कालानोन, कालाजीरा, तेजपात और दालचीनी एक-एक तोले; पीपर नग २००, कालीमिर्च नग ४०० और चीनी ३२ तोले—इन सबको पीस-छानकर चूर्ण बना लो। मात्रा ३ से ६ माशे तक। इसके सेवन करनेसे अरोचक, हृदयकी पीड़ा, पसलीका दर्द, अफारा, खाँसी, श्वास और बवासीर आदि रोग नाश हो जाते हैं। इस नुसख़ेकी चक्रदत्त और वृन्दने खूब तारीफ़ की है।

हिंग्वष्टक चूर्ण।

सोंठ, अजमोद, कालीमिर्च, सेंधानोन, छोटी पीपर, कालाजीरा और सफेद जीरा—ये सब एक-एक तोले लेकर पीस-कूटकर कपड़ेमें छान लो। फिर २ माशे हींग घीमें भूँजकर मिला दो और शीशीमें रख दो। मात्रा १ से ३ माशे तक।

यह चूर्ण खूब मशहूर है। इसको दाल या सागमें मिलाकर खानेसे भूख बढ़ती और भोजनपर रुचि होती है, पेटकी हवा खुलती और बदहज़मी होने नहीं पाती।

अगर इसकी १ मात्रा थालीमें परोसी हुई दालमें मिलाकर और ज़रासा "घी" डालकर खाई जाती है, तो पेटके वात रोगोंको नाश करती, अग्निको तेज़ करती और खूब भूख लगाती है। परीक्षित है।

जम्बीरद्राव।

पहले सफेद जीरा भुना हुआ ६ तोले, स्याह जीरा ३ तोले,

अजवायन १ तोले, कालीमिर्च २ तोले, छोटी पीपर २ तोले, धनिया ४ तोले, तज ६ माशे, तेजपात १ तोले, बड़ी इलायचीके बीज २ तोले, जवाखार २ तोले, सोंठ २ तोले, सैंधानोन १० तोले और हीरा हींग घीमें भुनी हुई १ तोले—इन सबको पीस-कूट कर कपड़ेमें छान लो और रख लो।

काग़ज़ी नीबुओंका रस एक सेर लेकर छान लो और क़लईदार कढ़ाहीमें चढ़ा दो; नीचेसे मन्दी-मन्दी आग लगने दो। जब एक भाग यानी पाव-भर रस जल जाय, उसमें ऊपरका छना हुआ चूर्ण मिला दो। जब गाढ़ा होनेपर आवे, उतारकर साफ़ बोतलमें भर दो। इसकी मात्रा १ से ६ माशे तक है। एक मात्रा दवा भोजनके बाद नित्य खानेसे खूब भूख लगती, अरुचि नाश होती और पेटका दर्द आराम होता है। बड़ी ही उत्तम चीज है। हर गृहस्थको घरमें रखनी चाहिये। यह पीनेमें भी अत्यन्त रोचक और सुस्वाद है। इसके सेवन करनेसे शूल, अम्लशूल, बस्तिशूल—पेड़ूका दर्द, तिल्ली, रक्तगुल्म, अजीर्ण, हैज़ा, पेटके रोग और मन्दाग्नि ये सब रोग नाश होते हैं। एक मात्रा खाते ही दर्द हवा हो जाता है, शुद्ध डकारें आतीं और कच्चा भोजन शीघ्र ही पच जाता है।

अरुचि गजकेशरी अवलेह।

सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, अजवायन, अजमोद, दालचीनी, लौंग और अकरकरा—इन सबको पीस-कूटकर कपड़ेमें छान लो।

सैंधानोन ११ तोले, कालानोन ११ तोले और मिश्री ११ तोलें—इनको पीसकर छान लो।

सफेद जीरा भुना हुआ १ तोले, काला जीरा भुना हुआ १ तोले और घीमें भूँजी हुई हीरा हींग १ तोले पीसकर तैयार रखो।

अदरखके पतले-पतले टुकड़े ११ तोले, किशमिश साफ़ की हुई ११ तोले और छुहारे गुठली निकाले हुए ११ तोले तैयार रखो।

इन सब चीज़ोंको एक चौड़े मुँहकी काँचकी शीशी या अमृत-बानमें भर दो। ऊपरसे कपड़ेमें छना हुआ नीबुओंका रस इतना भर दो, कि सब चीज़ें डूब जायँ। फिर शीशीका मुँह बन्द करके रख दो और ११ दिन तक मत छेड़ो।

बारह दिन बाद, इसमेंसे थोड़ी-थोड़ी चटनी भोजनके समय और भोजनके बाद खाया करो। गज़बकी उमदा चटनी है। हम इसे स्वयं खाते हैं। यह अरुचि नाश करने और भूख लगानेमें एक नम्बरकी चीज़ है। परीक्षित है।

चन्द परीक्षित साधारण नुसख़े।

(१) पकी हुई मीठी इमली आधी छटाँक लेकर छटाँक-भर पानीमें मसलकर छान लो। फिर उसमें २ माशे कालानोन, ४ माशे पोदीना और १॥ माशे कालीमिर्च मिलाकर पी जाओ। इस नुसख़ेसे अरुचि फौरन जाती रहती है। परीक्षित है।

(२) शहद ६ माशे, पके अनारका रस ६ माशे और काला नमक १ माशे—इनको मिलाकर पीनेसे अरुचि शीघ्र ही जाती है। परीक्षित है। कहा है:—

विट्चूर्णं मधुसंयुक्तो रसो दाड़िमसम्भयः।
असाध्यामपि सहन्यादरुचिं वक्तृधारितः॥

मनिहारी नमकके चूर्णमें शहद और अनारदानेका रस मिलाकर ख़ानेसे असाध्य अरुचि भी नाश हो जाती है।

(३) खट्टा अनारदाना ८ तोले, मिश्री १२ तोले, दालचीनी ४ तोले, छोटी इलायची ४ तोले और तेजपात ४ तोले—इनका चूर्ण खानेसे अरुचि नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(४) कलौंजी, जीरा, कालीमिर्च मुनक्का, खट्टा अनारदाना, संचरनोन, गुड़ और शहद—इनको पीसकर गोलियाँ बना लो। बेर-समान गोली मुखमें रखनेसे अरुचि नाश हो जाती है।

अरुचिमें पथ्यापथ्य।

पथ्य।

बस्तिकर्म—गुदामें पिचकारी लगाना, बलाबल अनुसार विरेचन लेना, वमन करना, धूमपान करना, मुँहमें दवाओंका कवल रखना और नीम आदिकी दाँतुन करना—ये सब पथ्य हैं।

नोट—वातज अरुचिमें बस्तिकर्म, पित्तजमें जुलाब, कफजमें वमन और आगन्तुकमें मनको प्रसन्न रखनेवाली मामूली चिकित्सा करनी चाहिये।

जो पदार्थ रोगीको अच्छे लगें, जिन पर उसका मन चले वेही अरुचि वालेको देने चाहियें, पर वे पचनेमें हल्के और वातादि दोष-त्रयमें उपकारी होने चाहियें।

भोजन करते-करते बीच-बीचमें पुरानी इमली और गुड़ पानीमें घोलकर, उसमें दालचीनी, बड़ी इलायची और गोलमिर्चका चूर्ण मिलाकर पना बनाना चाहिये। फिर उसे मुँहमें भरकर कुल्ले करने चाहियें। अथवा अनारके रसमें शहद और कालानोन मिलाकर कुल्ले करने चाहियें। ये सब अरुचि नाशक और पथ्य हैं।

दिनके भोजनके समय, सबसे पहले सेंधानोन-लगी अदरख खानी चाहिये।

अरुचि रोगमें स्नान द्वारा शरीरको साफ रखना भी हितकारी है। अगर ज्वर आदि उपद्रव न हों, तो रोगी बहती हुई नदी या सुन्दर तालाबमें भी स्नान कर सकता है।

बाग़-बग़ीचों या सुन्दर स्थानोंमें घूमना, गाना-बजाना सुनना और जिन कामोंसे मन प्रसन्न हो, वे सब काम करना अरुचि रोगमें हित हैं। कपड़े लत्ते साफ रखना भी लाभदायक है।

गेहूँ, मूँग, अरहर, शाली चाँवल, साँठी चाँवल, लाल घीया, बेंतकी कोंपल, नयी नर्म मूली, बैंगन, सहँजना, केला, अनार, परवल, सेंधानमक, दूध, घी, ताड़के नर्म और कच्चे फल, लहसन, ज़मीकन्द, दाख, आम, खसका जल, काँजी, शराब, शिखरन, दही, छाछ, अदरख, खजूर, चिरोंजी, पका कैथा, बेर, मिश्री, हरड़, अजवायन, कालीमिर्च, हींग और स्वादिष्ट खट्टे-चरपरे रस,—ये सब पथ्य हैं।

मांस खानेवालोंके लिए सूअर, बकरा, खरगोश, हिरन, चेंग और रोहू मछली आदिका मांस पथ्य है।

अपथ्य।

खाँसी, डकार, भूख और आँसू रोकना, हृदय-विरुद्ध भोजन-पान, खून निकलवाना, क्रोध, लोभ, भय और शोच-फ़िक्र करना, बदबूदार पदार्थोंकी गन्ध और कुरूप पदार्थोंका देखना—ये सब अपथ्य हैं। बहुत करके जिन पदार्थोंके देखने, खाने या और तरह सेवन करनेसे मन बिगड़े, वे सब अरुचि रोगीको अपथ्य हैं।

नवाँ अध्याय

छर्दि रोगका वर्णन।

छर्दि रोगके सामान्य लक्षण।

जिस रोगमें शरीर टूटता, पीड़ा होती और खाये-पिये पदार्थ मुँहमें होकर बाहर निकल पड़ते हैं, उसे "छर्दि रोग" कहते हैं। खुलासा यों समझिये कि, जब खाई-पीयी चीज़ मुँहसे निकलती है, तब छर्दि, वमन, कय, वान्ति, उल्टी या रद्द होना कहते हैं।

वमन रोगके निदान-कारण।

नीचे लिखे हुए कारणोंसे वमन या कय होनेकी बीमारी होती है:—

(१) अत्यन्त पतले और चिकने भोजन करनेसे,
(२) अच्छे न लगनेवाले और खारी भोजनसे,
(३) बहुत जियादा खा लेनेसे,
(४) नुक़सानमन्द या प्रकृति-विरुद्ध भोजन करनेसे,
(५) आमसे यानी अच्छी तरह न पके हुए अन्नरससे,
(६) भय या डरसे,
(७) उद्वेगसे,

(८) अजीर्णसे यानी खाये हुए पदार्थोंके पेटमें जैसेके तैसे रक्खे रहने और न पकनेसे,

(९) कृमि-दोषसे यानी पेटमें कीड़े पड़नेसे,

(१०) गर्भ रहनेसे,

(११) बहुत ही जल्दी-जल्दी खाने-पीनेसे,

(१२) ग्लानि पैदा करने वाले पदार्थोंके देखने, छूने, खाने अथवा वैसे पदार्थोंकी बात सुननेसे,

(१३) पेटमें जगह न रहने पर भी, जबर्दस्ती खानेसे,

(१४) अत्यन्त भयंकर कारणोंसे, छर्दि रोग या वमन रोग होता है। कहा है:—

अतिद्रवैःस्निग्धतरैरहृद्यैरसात्म्यजातैरपि भोजनैश्च।
कृमिश्रमोद्वेगभयादजीर्णादत्यामदोषाच्चबमेत्तृषार्त्तः॥

अत्यन्त पतले, अत्यन्त चिकने, हृदयको अहितकारी और प्रकृति-विरुद्ध भोजनसे तथा कृमि रोग, मिहनत, उद्वेग, भय, अजीर्ण और पेटमें बहुत जियादा आम—कच्चे अन्नरसके जमा हो जानेसे "वमन रोग" होता है। वमन या कय करनेवालेको "प्यास" बहुत लगती है।

वमनकी सम्प्राप्ति।

अत्यन्त पतले और अत्यन्त चिकने पदार्थ खाने वगैरः कारणोंसे वात, पित्त, कफ अलग-अलग और तीनों दोष एक साथ कुपित हो जाते हैं। कुपित होकर ये दोष खायी पीयी हुई चीजको उछाल कर मुँहके बाहर निकालते हैं। इसीको "छर्दि" या "वमन" कहते हैं। इस रोगमें ये सब काम "उदान वायु" कराती है और यह रोग "आमाशयका रोग" है।

वमनकी क़िस्में।

वमन रोग पाँच तरहका होता है:—

(१) वातज, (२) पित्तज,
(३) कफज, (४) त्रिदोषज;
(५) आगन्तुक।

वातज छर्दिके लक्षण।

वातज छर्दिमें नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं:—

(१) छाती और पसलियोंमें पीड़ा।

(२) मुँह सूखना।

(३) सिर और नाभिमें दर्द।

(४) खाँसी उठना।

(५) स्वरभङ्ग या गला बैठ जाना।

(६) पेटमें सूई चुभनेकी सी वेदना होना।

(७) ज़ोरकी आवाज़ोंके साथ डकार आना।

(८) झागदार, टूटीसी, काली, पतली, कसैली और थोड़ी कय बड़े कष्ट और बड़े वेगसे होना।

खुलासा यह है, कि वातज वमनमें रोगीके हृदय और पसवाड़ोंमें शूल चलते हैं, आवाज़ बैठ जाती है, खाँसी आती है और रोगी जल्दी-जल्दी कय करता है, पर उसे कय करनेमें बड़ी तकलीफ होती है।

नोट—हिकमतमें लिखा है, आमाशयमें बादी पैदा होनेसे खट्टी-खट्टी कय होती हैं, प्यास नहीं लगती, आमाशयमें गुड़गुड़ाहट और पेटपर अफारा होता है। कयसे ज़मीन फद-फदा उठती है और उसपर मक्खियाँ नहीं बैठतीं।

पित्तज छर्दिके लक्षण।

पित्तकी वमनमें नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं:—

(१) मूर्च्छा या बेहोशी।

(२) प्यास।

(३) मुँह सूखना।

(४) सिर, तालू और आँखोंमें सन्ताप या गरमी।

(५) आँखोंके सामने अँधेरी आना।

(६) भ्रम होना, भौंर या चक्कर आना।

(७) पीली, बहुत गरम, हरी, कड़वी, धूएँ और जलनके साथ वमन या कय होना।

खुलासा यह है, कि पित्तज वमन होनेसे प्यास, भ्रम, मोह और गला सूखना ये लक्षण होते हैं। पीले रंगकी कय होती है और कय करते समय गलेमें अत्यन्त दाह या जलन होती है।

नोट—हिकमतमें लिखा है, अगर आमाशयमें पित्तके पैदा होनेसे वमन होती है, तो पित्तकी अधिकता, प्यास, आमाशयमें विशेष गरमी और कफमें कड़वापन आदि लक्षण होते हैं।

कफज छर्दिके लक्षण।

कफकी वमन होनेसे नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं:—

(१) तन्द्रा।

(२) मुँहमें मीठापन।

(३) कफ गिरना।

(४) तृप्ति होना।

(५) नींद आना।

(६) अरुचि।

(७) भारीपन।

(८) रोमाञ्च खड़े होना।

(९) चिकनी, गाढ़ी, मीठी, सफेद वमन होती है और रोगीको वमन करनेमें कम तकलीफ होती है।

खुलासा यह है कि कफज वमनमें लार टपकती है, अरुचि और भारीपन होता है तथा रोगी चिकनी, गाढ़ी और मीठी वमन करता है।

नोट—हिकमतमें लिखा है, आमाशयमें कफके पैदा होनेसे अगर वमन होती है, तो अफारा और गुड़गुड़ाहट आदि होते हैं, प्यास लगती है, पर पित्तज वमन-कीसी प्यास नहीं लगती। अगर कफ खारी होता है तो वमन खारी होती है; अगर कफ मीठा होता है तो वमन मीठी होती है; परन्तु इन दोनों ही हालतोंमें प्यास नहीं लगती। कफमें खट्टापन पचावकी कमीसे होता है।

त्रिदोषज छर्दिके लक्षण।

अगर वात, पित्त और कफ इन तीनों दोषोंके कारणसे वमन होती है, तो नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं:—

(१) शूल चलना।

(२) अन्न का अच्छी तरह परिपाक न होना।

(३) अरुचि।

(४) दाह या जलन।

(५) प्यास।

(६) श्वास।

(७) अत्यन्त मोह या बेहोशी।

(८) खारी, खट्टी, नीले रंगकी, गाढ़ी, गरम और खून-मिली या खूनकी कय होना।

खुलासा यह है कि, त्रिदोषज वमन होनेसे श्वास, मोह, अरुचि, दाह और प्यास ये लक्षण होते हैं तथा रोगी गाढ़ी, गरम और लाल रंगकी वमन करता है।

आगन्तुक वमनके लक्षण।

(१) अहित भोजन करनेसे, (२) कृमि रोगसे, (३) आम या

कच्चे रससे, (४) ग्लानिकारक पदार्थ देखनेसे, और (५) गर्भ रहनेसे पाँच तरहकी आगन्तुज वमन होती हैं। आगन्तुज वमन पहले कहे हुए लक्षणोंसे यथा दोषानुसार जाननी चाहियें।

मल, राध, खून, रहँट, खखार आदि ग्लानिकारक चीज़ोंके देखनेसे, बुरी गन्धसे, ख़राब चीज़के स्वादसे, स्त्रीके गर्भ रहनेसे, आमसे, कम-ज़ियादा खानेसे अथवा कृमि रोगसे जो वमन होती है, वह "आगन्तुज" पाँचवीं छर्दि होती है। उसमें पहले कहे हुए लक्षणोंमें से जिस दोषके लक्षण ज़ियादा मिलें, उसी दोषको प्रबल समझो।

नोट—कृमिकी छर्दिमें शूल चलते और सूखी उबकियाँ अधिक आती हैं।

वमनके पूर्व्वरूप।

हृल्लास या उबकी आना, वायुका रुकना और मुँहसे खारी लार टपकना—ये वमनके "पूर्व्वरूप" हैं, अर्थात् वमन रोग होनेसे पहले ये लक्षण होते हैं। खुलासा यह, कि सूखी उबकियाँ आती हैं, लार गिरती है, मुँह खारी हो जाता है तथा अन्नपानीमें अरुचि हो जाती है।

वमनके उपद्रव।

वमन रोगमें नीचे लिखे हुए उपद्रव होते हैं:—

(१) खाँसी। (२) ज्वर।
(३) प्यास। (४) हिचकी।
(५) घबराहट। (६) छातीमें दर्द, और
(७) अन्धकारसा दिखाई देना।

कहा है:—

तृष्णा श्वासो ज्वरो हिक्काकासो वैस्वर्यमेवच।
तमको हृद्गदश्चेति ज्ञेयाच्छर्देरुपद्रवाः॥

प्यास, श्वास, हिचकी, खाँसी, स्वरभंग, तमक श्वास और हृद्रोग ये वमनके उपद्रव हैं।

असाध्य वमनके लक्षण।

जिस समय "वायु"—पुरीष, पसीना, पेशाब और जल बहानेवाली नालियोंकी राह रोक कर ऊपर आता है, तब मल मूत्रादिको कोठेसे बाहर निकाल कर वमन कराता है। उस वमनमें मल-मूत्रकीसी बदबू आती है और रंग भी मल-मूत्रके जैसा हो जाता है; प्यास, श्वास, खाँसी और शूल—ये होते हैं। यह वमन बारम्बार होती है और बड़े जोरसे होती है। इस वमन वाला थोड़ी देरमें ही मर जाता है। कोई कहते हैं, यह सन्निपातकी वमन होती है और कोई कहते हैं, कि यह प्रबल छर्दि होती है। कुछ भी हो, ऐसी वमन असाध्य होती है।

साध्यासाध्य लक्षण।

अति दुर्बल मनुष्यको बारम्बार होनेवाली खाँसी, श्वास, ज्वर, हिचकी आदि उपद्रव-सहित, खून और राध मिली हुई तथा मोरके चँदोवेकी जैसी वमन "असाध्य" होती है।

जिस वमनमें खाँसी और श्वास आदि उपद्रव न हों, उसे "साध्य" समझ कर इलाज करना चाहिये।

वमनकी चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) सब तरहकी वमन आमाशयके उत्क्लेश या आमाशयके बिगड़नेसे होती हैं; अतः वातज वमनको छोड़कर, और वमनोंमें

लंघन कराना सबसे अच्छा है। कफज और पित्तज वमनमें पहले लंघन कराने चाहिएँ अथवा जुलाब देना चाहिये।

"तिब्बे अकबरी"में लिखा है, अगर पित्तज वमन होती हों, तो मवाद निकालनेके लिए, प्रकृतिका विचार करके, लंघन कराओ या नरम हुकनेका प्रयोग करो। अगर मवाद आमाशयकी गहराईकी तरफ झुका हो, तो दस्त कराना और हुकनेका प्रयोग करना अच्छा है। पर यदि मवाद आमाशयमें ही हो, तो उसके निकालनेमें वमन सबसे अच्छा काम करती है। अगर मवाद आमाशयके मुँहकी ओर झुका हो, तब तो वमन कराना सर्वोत्तम उपाय है।

वमनके लिए सिकंजबीन और गरम जल पिलाना चाहिये। अगर दस्त कराने हों तो हरड़के काढ़े और सकमूनियाँके साथ यारज फयकरा खिलानी चाहिये। अगर कुछ मवाद बाक़ी रह जाय और उसे निकालना उचित न हो, तो शर्बत सेब, शर्बत बिही अथवा शर्बत अनार अर्क़ पोदीनेके साथ देना चाहिए अथवा कच्चे अंगूरों का शर्बत और रीवासका शर्बत गुलाबजलमें मिलाकर देना चाहिये। सेबके रस, चन्दन और कपूरका लेप करना चाहिये।

आयुर्वेदमें लिखा है, पित्तकी वमनमें दाख, विदारीकन्द और ईखके रसमें निशोथ देनी चाहिये, जिससे विरेचन-द्वारा पित्त शान्त हो जाय। खयाल रखकर, कफाशयसे पैदा हुए और अत्यन्त बढ़े हुए पित्तको, दाख और जीवक प्रभृति स्वाद पदार्थोंके द्वारा, ऊपरकी राहसे दूर करना चाहिये। वमन आदिसे शुद्ध होनेपर रोगीको मधु, मिश्री और खीलोंके साथ मन्थ पिलाना चाहिये; अथवा मूँगोंके रसमें चाँवलोंका भात देना चाहिये।

अगर कफाशयमें कफके बढ़नेसे कय होती हों और मवाद आमाशयके मुखकी ओर झुका हो, तो सोयेका काढ़ा और शहदकी

सिकंजबीन पीकर वमन करनी चाहियें। अगर इस दवासे लाभ न हो और मवाद पत्तोंमें घुस रहा हो, तो उसमें मूलीके बीज, राई, नमक और शहद ये चारों मिला देने चाहियें।

अगर मवाद आमाशयकी गहराईमें हो, तो विरेचक—दस्तावर दवा देनी चाहिये। इसके लिये एलुवेकी गोली, मस्तगीकी गोली अथवा यारज फयकरा देनी चाहिये। दस्त हो जानेके बाद, "शर्बत अनार" पोदीना मिलाकर तथा लौंग, अगर और गुलाबके फूलोंसे सुगन्धित करके पिलाना चाहिये। इससे आमाशयमें ताक़त आयेगी।

आयुर्वेदमें लिखा है, कफकी वमनमें, कफाशय और आमाशयके शोधनके लिये "गरम जलमें सेंधानोन" घोलकर पिला देना चाहिये अथवा सेंधेनोन और मैनफलके द्वारा वमन करानी चाहिये।

हिकमतमें लिखा है, बादीकी वमनमें कफनाशक दवा देनी चाहिये और मवादको थोड़े तेज़ हुकनेसे नीचे उतारना चाहिये।

अगर आमाशयकी ताक़तसे ज़ियादा खाने; विशेष खारी, खट्टे, नमकीन और चरपरे भोजन करने अथवा भारी भोजनके ऊपर हल्के और नर्म भोजन करनेसे वमन रोग हुआ हो, तो वमन आदिसे जिस तरह बने उसे आमाशयसे निकाल देना चाहिये। पीछे आमाशयको बलवान करने वाली चीज़ देनी चाहिये।

हकीम गीलानी साहब कहते हैं, इस निकम्मे भोजनको बारम्बार गरम पानी पीकर वमनके द्वारा निकाल देना चाहिये, सिरपर तेल टपकाना चाहिये, पेट और पसलीपर गरम कपड़ेसे सेक करना चाहिये, हाथ-पाँवोंपर जैतूनका तैल मलना चाहिये और उनपर गरम पानीके तरड़े देने चाहियें। रोगीको खूब नींद लेकर सो जानेका हुक्म दे देना चाहिये। अगर वमन बहुत ज़ियादा होती हों, तो दिनभर खानेको न देना चाहिये।

अगर आमाशयमें दोषोंके बढ़ने और उसके कमज़ोर होनेसे, भोजन उसमें जाते ही उल्टा आवे, वहाँ न रुके, जी मिचलावे या क़य हो, तो नीबूके शर्बतके साथ मस्तगी चबाने चाहियें।

अगर मवाद सारे शरीरसे निचुड़कर आमाशयपर गिरता होगा, तो ज्वरके साथ वमन होंगी। इस तरहकी वमन ज्वरके साथ पैदा होतीं और उसके साथ ही चली जाती हैं। इस दशामें ज्वरका विशेष ध्यान रखकर, सारे शरीरका मवाद निकालना चाहिये।

अगर आमाशयमें कीड़े होनेसे वमन रोग हुआ हो, तो कृमि रोगकी तरह इलाज करना चाहिये।

आयुर्वेदमें लिखा है, बीभत्स पदार्थोंके देखने वग़ैरः या घृणा होनेसे अगर क़य होती हो, तो अति रोचक और अभीष्ट फलोंसे उसकी शान्ति करनी चाहिये। असात्म्यतासे पैदा हुई वमनको लंघन और वमन आदिसे शान्त करना चाहिये। इसी तरह कृमि, हृद्रोग और मलसे पैदा हुई वमनकी विधि-पूर्वक चिकित्सा करनी चाहिये। "भावप्रकाश" में लिखा है, बीभत्स पदार्थोंके देखनेसे हुई वमनको प्रिय पदार्थोंसे, गर्भसे हुई वमनको प्रिय फलोंसे, आमदोषसे हुई वमनको लंघनोंसे और अहित पदार्थोंसे पैदा हुई वमनको हित पदार्थोंसे जीतना चाहिये।

बहुत समयसे पैदा हुई छर्दिकी बीमारीमें वायु नाशक प्रयोग करने चाहियें; क्योंकि छर्दिके कारणसे धातु क्षय होता है और वायु उत्कट रूपसे बढ़ता है; अतएव इस तरहके रोगमें बृंहण और स्तम्भक दवाएँ देनी चाहियें, जो वायुको जीतकर अनुकूल स्थानमें पहुँचावें।

वमन रोगकी विशेष चिकित्सा ।

वातज वमन नाशक नुसखे ।

(१) दही डालकर दूधको फाड़लो । फिर उसमें जो पानी सा हो जाय, उसे छानकर निकाल लो । उस फटे दूधके पानीके पीनेसे वातज वमन शान्त हो जाती है ।

(२) घी और सैंधेनोनके साथ मूँगोंका यूष-रस अथवा आमलोंका यूष-रस पीनेसे वातज वमन शान्त हो जाती है । परीक्षित है ।

(३) घीको सैंधेनोनके साथ पीनेसे वातज वमन शान्त हो जाती है । परीक्षित है ।

(४) पञ्चमूलके साथ बनाई हुई यवागू खिचड़ी "शहद" मिलाकर पीनेसे वातज वमनको शान्त करती है ।

(५) बराबर-बराबर दूध और पानी मिला कर पीनेसे वातज वमन शान्त हो जाती है ।

पित्तज वमन नाशक नुसखे ।

(६) गिलोय, हरड़, बहेड़ा, आमला, नीम और पटोल पत्र—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनालो और छान लो । शीतल होने पर ३ माशे "शहद" मिलाकर पीलो । इस काढ़ेसे पित्तज वमन आराम हो जाती है ।

नोट—इस काढ़े से पित्त-प्रधान त्रिदोषज कष्टसाध्य वमनका नाश हो जाता है और अम्लपित्तकी वमन भी शान्त हो जाती है। बड़ा ही अच्छा नुसखा है। परीक्षित है।

(७) बड़ी हरड़के छिलके पीस-छानकर चूर्ण बना लो। फिर चार या छै माशे चूर्णमें ६ माशे "शहद" मिलाकर चाटो। इस नुसख़ेमें यह खूबी देखी गई है कि, दस्त होकर अथवा आमाशयका दोष नीचे जाकर वमन शान्त हो जाती है। इस नुसख़ेसे अनेक प्रकारकी वमन और ख़ासकर पित्तज वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(८) चन्दनका काढ़ा बनाकर छान लो। फिर उसमें शहद और मिश्री मिलाकर पीलो। इससे पित्तज वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(९) मक्खीका २ रत्ती गू ३ माशे शहदमें मिलाकर चाटनेसे पित्तज वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१०) खीलोंका सत्तू ना-बराबर घी और शहद मिलाकर पीनेसे पित्तज वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(११) उड़द, मूंग, मसूर या जौकी यवागूमें "शहद" मिलाकर खानेसे पित्तज वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१२) आमलोंका रस, चन्दन और शहद मिलाकर पीनेसे पित्तज वमन शान्त हो जाती है।

नोट—चन्दनका रस २ तोले और आमलोंका रस २ तोले लेकर, उनमें ६ माशे "शहद" मिला लो।

(१३) ईंट या लोहेकी चीज़को आगमें लाल करके पानीमें बुझाने और फिर वही पानी पीनेसे प्यास शान्त हो जाती है। वमनमें जब प्यासका जोर हो, यही उपाय करना चाहिये। परीक्षित है।

(१४) दो तोले पित्तपापड़ेके काढ़ेमें १ तोले "शहद" मिलाकर पीनेसे ज्वरयुक्त वमन शान्त हो जाती है।

नोट—नागरमोथेका काढ़ा भी वमनको आराम करता है।

(१५) हरड़, कालीमिर्च, सोंठ, पीपर, धनिया और सफेद जीरा—इनका चूर्ण "शहद"में मिलाकर चाटनेसे पित्तकी वमन और तीनों दोषोंसे हुई वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१६) इमली मुँहमें रखनेसे पित्तकी वमन नाश हो जाती है।

(१७) बड़े मुनक्के, खट्टे अनारदाने सात-सात माशे और काला जीरा १ माशे—पीसकर रख लो। इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा खानेसे पित्तकी वमन शान्त हो जाती है।

(१८) पीपरकी सूखी छाल जलाकर, पानीमें उसकी एक तोले राख मिला दो। जब पानी नितर जाय, छानकर थोड़ा-थोड़ा पीओ। इससे पित्तकी वमन शान्त हो जाती है।

(१९) मीठे अनारका रस बराबरकी चीनीमें पकाकर चाटनेसे पित्तकी वमन शान्त हो जाती है।

(१९क) फालसेका शर्बत पित्तकी वमन और उबकीको आराम करता और पक्वाशयमें ताक़त लाता है। गरमी, पित्त और खूनके उपद्रवोंको भी शान्त करता है।

नोट—काले फालसोंको पानी और गुलाब-जलमें मसल लो। फिर छानकर, रससे दूनी मिश्रीमें शर्बत पका लो। यही फालसेका शर्बत है।

कफज वमन नाशक नुसखे।

(२०) बायबिडङ्ग, सोंठ, त्रिफला और तगर समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "शहद"में मिलाकर चाटनेसे कफज वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(२१) बायबिडङ्ग, केवटी मोथा और सोंठको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "शहद"में मिलाकर चाटनेसे कफज वमन आराम हो जाती है।

(२२) जामनके रसमें मुलहठीका चूर्ण मिलाकर चाटनेसे कफकी वमन आराम हो जाती है।

(२३) नागरमोथा और काकड़ासिंगीका चूर्ण "शहद"में चाटनेसे कफकी वमन शान्त हो जाती है।

(२४) दुरालभाको "शहद"के साथ चाटनेसे कफकी वमन शान्त हो जाती है।

(२५) हरड़, कालीमिर्च और छोटी पीपर—इनके चूर्णको शहदमें मिलाकर चाटनेसे कफज वमन शान्त हो जाती है।

(२६) थोड़ासा घी गरम करो। फिर उसमें दो बताशे डालकर निकाल लो। शीतल होने पर, एक-एक बताशा आध-आध घण्टेमें खा लो। इस नुसख़ेसे विशेषकर कफकी वमन आराम हो जाती है।

(२७) बड़की जटा जलाकर राख कर लो। इसमेंसे थोड़ी-थोड़ी राख खानेसे कय आराम हो जाती है।

(२८) चार माशे बालछड़ पानीमें पीसकर सेवन करनेसे कफकी वमन शान्त हो जाती है।

(२९) मसूरका सत्तू, शहद और अनारदानेका चूर्ण मिलाकर खानेसे—वात, पित्त और कफ इन तीनों दोषोंसे पैदा हुई वमन और प्यास शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

वमन रोगकी सामान्य चिकित्सा।

(१) पीपरकी छालको जलाकर राख करलो, फिर उसे उसी समय पानीमें भिगो दो। इस पानीको नितार और छानकर दो-दो तोले पीनेसे अत्यन्त कष्टसाध्य वमन और प्यास दोनों ही शान्त हो जाती हैं। खूब परीक्षित है।

(२) चाँवलोंके पानीमें, मरोड़फलीका ६ माशे चूर्ण और शहद मिलाकर पीनेसे त्रिदोषज वमन भी शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—मरोड़फलीको पीस-छान लो। फिर चाँवलोंके धोवनमें ६ माशे चूर्ण और शहद मिलाकर पीलो।

(३) गिलोयके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे वमन रोग आराम हो जाता है। अथवा रातको १ तोले गिलोय कुचलकर भिगो दो। सवेरे मलकर छान लो और ६ माशे "शहद" मिलाकर पीलो। यही 'हिम' है। इसके पीनेसे त्रिदोषज और कष्टसे आराम होनेवाली पाँच तरहकी वमन आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(४) बेलगिरीके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे त्रिदोषज वमन रोग शान्त हो जाता है।

(५) जामुनके पत्ते और आमके पत्ते—दो तोले लेकर काढ़ा बना लो और छानकर शीतल कर लो। इस काढ़ेमें "शहद" और "खीलोंका चूर्ण" मिलाकर सेवन करनेसे छर्दि या वमन, अतिसार और घोर प्यास ये सब शान्त हो जाते हैं। यह काढ़ा मशहूर है।

(६) बेरकी गुठली, आमलोंकी गुठली, छोटी पीपर और मक्खी का गू—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छांन लो। इस चूर्णको "मिश्री और शहद" मिलाकर चाटनेसे वमन रोग तत्काल आराम होता है। इस नुसख़ेसे कीड़ोंके कारणसे हुई, हृद्रोगसे तथा शूल और उबकी सहित वमन शान्त हो जाती हैं। परीक्षित है।

(७) आमले, धानकी खील और चीनी कुल चार तोले लेकर पीस-छान लो। फिर उसमें चार तोले "शहद" और सोलह तोले "पानी" मिलाकर कपड़ेमें छान लो। इसके कई बारमें थोड़ा-थोड़ा पीनेसे त्रिदोषज वमन शान्त हो जाती है।

(८) इलायची, लौंग, नागकेशर, बेरका गूदा, धानकी खीलें, फूल प्रियंगू, नागरमोथा, सफेद चन्दन और पीपर—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णमें "शहद और मिश्री" मिलाकर चाटनेसे वात, पित्त और कफसे पैदा हुई वमन आराम हो जाती है। इसका नाम "एलादि चूर्ण" है। यह खूब परीक्षित है। कभी भी फेल नहीं होता।

(९) सूखी हुई मौलसरीकी छालको जलाकर पानीमें बुझा दो। इस पानीके पीनेसे मुश्किलसे आराम होनेवाली वमन भी तत्काल आराम हो जाती है।

(१०) आमकी गुठलीकी मींगी और बेलगिरी दोनोंको समान-समान एक-एक तोले लेकर सेर-भर पानीमें औटा लो; जब आधा पानी रह जाय छान लो। फिर इसमें १ तोले "मिश्री" और १ तोले "शहद" मिलाकर पीलो। इस काढ़ेके पीनेसे वमन और अतिसार इस तरह नाश हो जाते हैं, जिस तरह अग्निमें आहुति नाश हो जाती है। खूब परीक्षित है।

(११) मूर्वा, धनिया, नागरमोथा, मुलेठी और रसौत—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको शहदमें मिलाकर

चाटनेसे वह वमन आराम हो जाती है, जिसमें डकारें बहुत आती हैं।

(१२) कालानोन, सफेद ज़ीरा, मिश्री और कालीमिर्च—इनको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। इस चूर्णको शहदमें मिलाकर चाटनेसे वमन तत्काल आराम हो जाती है; इसमें ज़रा भी शक नहीं। यह स्वयं हमने अपने ऊपर आज़माया है। परीक्षित है।

(१३) बरफका पानी पीने या बरफका टुकड़ा मुँहमें रखनेसे वमन आराम हो जाती है।

(१४) कच्चे नारियलका पानी भी वमनको फौरन आराम करता है।

(१५) जली हुई रोटीको पानीमें भिगो दो और उस पानीको पीओ। इस पानीसे वमन बन्द हो जाती है।

(१६) बड़ी इलायचीका काढ़ा पीनेसे वमन शान्त हो जाती है।

(१७) मूर्वाकी जड़का काढ़ा चाँवलके धोवनके साथ पीनेसे वमन रोग आराम हो जाता है।

(१८) मुलेठी और लालचन्दन दूधमें पीसकर पीनेसे रक्तवमन या लाल वमन आराम हो जाती है।

(१९) आमलोंका रस १ तोले और कैथका रस १ तोले मिला लो। फिर इसमें १ माशे पीपरका चूर्ण और १ माशे कालीमिर्चका चूर्ण तथा ४ माशे शहद मिला दो और पी लो। इससे कष्टसाध्य वमन भी आराम हो जाती है।

(२०) तिलचिटेकी बीट तीन-चार दाने थोड़े-से पानीमें मिलाकर पीनेसे बड़ी कठिनसे आराम होने वाली वमन भी आराम हो जाती है।

(२१) पद्मकाष्ट, गिलोय, नीमकी छाल, धनिया और सफेद

चन्दनका बुरादा लेकर, पानीके साथ सिलपर पीस लो । इन्हीं सब चीजोंका काढ़ा भी पका लो । फिर यह लुगदी, लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना काढ़ा—सबको कढ़ाहीमें रखकर पका लो; घी मात्र रहनेपर उतार लो और छानकर रख लो । इसका नाम "पद्म-काद्य घृत" है । इसके खानेसे वमन, अरुचि, प्यास और दाह आदि नाश हो जाते हैं ।

(२२) सफ़ेद ज़ीरा, धनिया, पीपर, छोटी इलायची, त्रिकुटा, शहद और रससिन्दूर—सबको बराबर-बराबर लेकर खरल करो । इसमेंसे ३ रत्ती चूर्ण खानेसे वमन रोग जाता रहता है । इसका नाम "रसेन्द्र" है ।

(२३) शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोहभस्म, मुलेठी, सफेद चन्दन, आमले, छोटी इलायची, लौंग, भुना सुहागा, छोटी पीपर और जटामासी—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो । इस चूर्णमें सात दिन तक "ईखके रस" की भावना दो और फिर सात दिन तक "सरिवनके रस" की भावना दो । शेषमें, ३ घण्टे तक, इसे "बकरीके दूध" में खरल करो । इसका नाम "वृषध्वज रस" है । इसकी रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो । इन गोलियोंको "सरिवनके काढ़े" के साथ खानेसे वमन रोग आराम हो जाता है ।

(२४) थोड़ा-सा गेरू लेकर आगमें तपाकर लाल करो; फिर उसे पानीमें बुझा दो । इस तरह तीन बार तपा-तपाकर पानीमें बुझा दो । इस पानीके पीनेसे वमन आराम हो जाती है ।

(२५) रीठेकी कुछ मींगी दो घण्टे तक पानीमें भिगो रखो । जब वे नर्म हो जावें, थोड़ी-थोड़ी चबाओ । इससे मितली या जी मिचलाना आराम हो जाता है । इसका रस गलेमें पहुँचा नहीं, कि वमन आराम हुई नहीं । खूब परीक्षित है ।

(२६) मिट्टीका पुराना चिराग़ आगमें जलाओ । जब उसकी

आग बुझ जाय, उसे पानीमें ठण्डा कर दो। उस पानीमेंसे थोड़ा-थोड़ा पानी पीनेसे वमन और उवकी फौरन नाश हो जाती हैं। आश्चर्यदायक नुसख़ा है।

(२७) झड़-बेरीके बीजोंकी गिरी ४ माशे, तुलसीकी पत्ती ४ माशे, मिश्री ४ माशे और कालीमिर्च २ माशे—इनको कूट-पीसकर छान लो और पानीके साथ खरल करके बेर-समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली खानेसे पुरानी वमनकी बीमारी भी आराम हो जाती है।

(२८) थोड़ासा "मक्खीका गू" गुड़में मिलाकर खानेसे कितनी ही ज़ियादा वमन होती हों बंद हो जायँगी।

(२९) लाल चाँवल साँठीके पानीमें भिगो दो। इसमेंसे आधपाव पानी पीनेसे शराब पीनेसे होने वाली वमन आराम हो जाती है।

(३०) बादामका रस पानीमें मिलाकर पीनेसे वमन रोगमें अपूर्व चमत्कार दीखता है।

(३१) टाट जलाकर उसकी राखको पानीमें मिलादो। जब राख पानीमें बैठ जावे, पानी नितार छान कर पीओ। इस पानीसे वमन फ़ौरन आराम हो जाती है।

(३२) हरा पोदीना आध सेर लेकर डेढ़ सेर पानीमें औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, छानकर एक सेर चीनीमें पकाओ और ४ माशे "मस्तगी" पीसकर मिला दो। शर्बत-जैसी चाशनी होने पर उतार लो। इस दवासे जी मिचलाना, कय होना और हिचकी रोग आराम हो जाते हैं।

(३३) कालीमिर्च ५ तोले, पीपर २ तोले, अनारदाना ४ तोले और जवाखार ६ माशे—इनको कूट-पीसकर "गुड़"में सान लो और

जङ्गली बेर-समान गोलियाँ बना लो। मात्रा ४ माशेकी है। ये गोलियाँ सवेरे-शाम या कयके समय खानेसे वमन नाश करके भूख लगातीं और खाना हज़म करती हैं।

(३४) पीदीनेकी चालीस पत्तियाँ, ५ कालीमिर्च, दो माशे क़ालानोन, ४ छोटी इलायची भूँजी हुई और ३ माशे कच्ची या पकी इमली—इन सबको पीसकर चटनी बना लो। इस चटनीके चाटनेसे सब तरहकी वमन और अरुचि नाश हो जाती है। यह नुसखा कभी फेल नहीं होता। खूब परीक्षित है।

(३५) इमलीका चियाँ चने-बराबर मुँहमें रखकर चबानेसे वमन और ज्वरकी वमन अवश्य नाश हो जाती हैं। खूब परीक्षित है।

(३६) हल्दी जलाकर पानीमें बुझा दो और उस पानीको पीओ; वमन नाश हो जायगी।

(३७) बिजौरे नीबूका रस ६ माशे, शहद १ माशे और पीपर १ माशे—इनको मिला कर चाटनेसे वमन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(३८) करंजकी कोंपलें पीस लो। फिर उस लुगदीमें अन्दाज़से "इमली या नीबूका रस और सैंधानोन" मिलाकर खाओ। इससे वमन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(३९) केलेके कन्दका स्वरस ६ माशे और शहद ६ माशे मिला-कर पीनेसे वमन रोग नाश हो जाता है। खूब परीक्षित है।

(४०) करंजके बीज लाकर भून लो। फिर एक बीजकी मींगी निकाल कर, उसके तीन भाग करलो। एक भाग चाबनेसे घोर वमन बन्द हो जाती है। पर जब तक पूरा आराम न हो, बीजकी मींगी बारम्बार चाबनी चाहिएँ। खूब परीक्षित है।

(४१) सफेद चन्दन १ तोले, आमलोंका रस ४ तोले और शहद १ तोले मिलाकर खानेसे वमन और उबकी नाश हो जाती हैं। पराया परीक्षित है—हमारा नहीं।

(४२) धानकी खीलें, लौंग, इलायची और कमलके बीज—इनको खूब महीन पीस-छानकर चूर्ण बना लो। इसमें से ३ माशे चूर्ण "शहद या चीनी" मिलाकर खानेसे वमन रोग जाता रहता है।

(४३) गर्भवतीको उबकी आती हों या कै होती हों, तो पिसा-छना धनिया ३ माशे और मिश्री १ तोले—मिलाकर खिलाओ और ऊपरसे चाँवलोंका धोवन पिला दो। खूब परीक्षित है।

(४४) ३ माशे कुटकीका चूर्ण ६ माशे शहदमें मिलाकर खानेसे हिचकी और वान्ति बन्द हो जाती हैं। खूब परीक्षित है।

(४५) शारिवाकी जड़ें पानीमें औटाकर बीचका रेशा निकाल दो। फिर इसमें जरासी "हींग" मिलाकर पीस लो और "घी" मिलाकर सवेरे ही खालो। एक ही मात्रामें वान्ति—कय बन्द हो जायगी। खूब परीक्षित है।

नोट—शारिवाको गौरीसर, गौरिया साउ, या कालीसर कहते हैं। अँगरेजीमें Indian sarsaparilla कहते हैं। यह खून साफ करनेमें अव्वल दर्जेकी दवा है।

(४६) काकमाचीकी जड़ और हींग मिलाकर पीनेसे वमन आराम हो जाती है। खूब परीक्षित है।

(४७) राई २ तोले और कपूर ६ माशे—इन दोनोंको महीन पीसकर, पानीमें फिर पीस लो। छातीपर "घी" लगाकर ऊपरसे इस लेपको लगा दो; इस लेपके लगानेसे कय बन्द हो जाती हैं। पर इसे पाँच मिनटसे जियादा न रखना चाहिये अथवा जलन होते-होते ही उतार देना चाहिये। हैजेकी कय बन्द करनेमें भी इससे बड़ा काम निकलता है। आजकल राईके पलस्तर भी बने-बनाये आते हैं। डाक्टर लोग उन्हें लगाते हैं। बात एक ही है। खूब परीक्षित है।

(४८) कड़वे नीमके पत्ते पीस छानकर पीनेसे वमन, कोढ़, पित्त और कफ शान्त हो जाते हैं।

(४६) तन्तरीक-तिन्तड़ीक, डासरिया और स्याह जीरा—दोनों को पानीमें पीसकर और "मिश्री" मिलाकर चाटनेसे वमन नाश हो जाती है।

वमन रोगमें पथ्यापथ्य।

पथ्य।

वमन रोगमें पहले उत्क्लेश होता है; यानी जी मिचलाता है, अन्न बाहर नहीं निकलता, मुँहमें पानी भर-भर आता है, थूक गिरता है और हृदयमें अत्यन्त वेदना होती है। इस हालतमें, वमन रोगीको खानेके लिये कुछ भी न देना चाहिये, उपवास या लङ्घन कराने चाहियें।

जब वमन होना और जी मिचलाना बन्द हो जाय, तब वमन-रोगीको जल्दी पचनेवाले और वायुको अनुलोमन करनेवाले रुचिकर पदार्थ देने चाहियें।

अगर वमनका वेग जारी रहते समय ही खानेको देनेकी जरूरत होजाय, तो भुने हुए मूँगोंके काढ़ेके साथ, धानकी खीलोंका चूर्ण "शहद और चीनी" मिलाकर देना चाहिये। इस पथ्यसे वमन, ज्वर, दाह—जलन और प्यास ये सब उपद्रव शान्त हो जाते हैं।

जब वमन-रोग बिल्कुल जाता रहे, उसके उपद्रव ज्वर आदि भी न रहें; तब रोगीको जिन-जिन पदार्थोंके खानेकी आदत हो, वही क्रम-क्रमसे देने चाहियें। सब तरहसे निरोग होने पर हीं, रोगीको स्नान करनेकी इजाज़त देनी चाहिये।

इस रोगमें—साफ़ स्वच्छ रहनेकी जगह, साफ ही खाने-पीनेके पदार्थ, इत्र आदि सुगन्धित पदार्थ और दिलको खुश रखना,—ये सब पथ्य हैं।

प्राचीन ग्रन्थोंमें लिखा है, इस रोगमें जुलाब लेना, वमन करना, लंघन या उपवास करना, दिलको खुश करनेवाले खानेके पदार्थ खाना, भोजन करनेके बाद मुँहमें शीतल जल भरना, दिल-खुश और हितकारी चीज़ें देखना, सुन्दर सुखद गाना या बातें सुनना, मनको प्रसन्न करनेवाले रस चखना, खुशबूदार पदार्थ सूँघना और चित्त-प्रसन्न करनेवाली चीज़ें छूना, तथा नाभिस्थल, त्रिकस्थान—पीठका बाँसा, दोनों पसवाड़े और पीठमें लोहे आदिको तपाकर दागना—ये सब पथ्य या हितकर हैं।

नोट—लिख चुके हैं कि सभी तरहके वमन रोगमें उत्क्लेश होता है, इसलिये इस रोगमें लंघन कराने चाहियें अथवा कफ और पित्त नाशक संशोधन—वमन-विरेचन देना चाहिये। लेकिन वातज वमन रोगमें ऐसा इलाज न करना चाहिये। बीभत्स पदार्थोंके देखनेसे पैदा हुई वमनको अत्यन्त प्रिय पदार्थोंका उपयोग करके जीतना चाहिये। गर्भके कारणसे होनेवाले वमन रोगमें प्यारे-प्यारे फल देने चाहियें। आम या कच्चे रससे पैदा हुई वमनको लंघनोंसे जीतना चाहिये। अहित पदार्थोंसे पैदा हुई वमनको हितकारी पदार्थोंसे जीतना चाहिये। कृमियोंसे पैदा हुई वमनको कृमि रोगकी चिकित्सासे नाश करना चाहिये। मतलब यह है, जहाँ जैसी ज़रूरत हो वहाँ वैसा ही काम करना चाहिये, सब धान बाईस पसेरी वाली बात नहीं करनी चाहिये।

पुराने साँठी चाँवल, लाल चाँवल, मूंग, मटर, गेहूँ, जौ, शहद, मदिरा, बेंतकी कोंपल, धनिया, नारियलकी गरी, जंभीरी नीबू, आमला, आम, बेर, दाख, पका हुआ कैथा, हरड़, अनार, जायफल, नेत्रवाला, नीम, अड़ूसा, शक्कर, सौंफ, शतावर, नागकेशर, कस्तूरी, चन्दन, चाँदनी, मनोहर इत्र आदिका लेप, उत्तम पान फल फूल आदि पदार्थ भी वमन रोगीको पथ्य हैं।

अपथ्य।

नस्य कर्म, गुदामें पिचकारी लगाना, पसीने निकालना, स्नेह-

पान करना यानी तेल आदि चिकने पदार्थ पीना, फस्द खोलना, दाँतुन करना, कढ़ी आदि पतले पदार्थ खाना, भयंकर पदार्थ देखना या देखना चाहना, डरना, गर्म चीज़ खाना-पीना, चिकने पदार्थ, असात्म्य पदार्थ, अप्रिय और हृदय-विरुद्ध पदार्थ वमन रोगमें अपथ्य हैं।

सेम, कुंदरु, घीया या गलका तोरई, सरसों, कसरत और अंजन आदि भी अपथ्य हैं, तथा जिन पदार्थोंसे घृणा हो वह भी अपथ्य हैं।

दसवाँ अध्याय

तृष्णा रोगका वर्णन ।

(प्यास)

तृष्णा रोगीके लक्षण ।

जो मनुष्य बारम्बार पानी पीता है, पर पानी पीनेसे उसकी प्यास नहीं बुझती, इसलिये फिर पानीपर पानी माँगता है, ऐसे आदमीको "तृष्णा रोग" या "प्यास रोग" का रोगी कहते हैं ।

कहा है—

असकृद्यः पिबेत्तोयं तृप्तिं नैवाधिगच्छति ।
पुनः पुनः कांक्षति त तृष्णार्दितमथादिशेत् ॥

भावार्थ वही है, जो ऊपर लिखा है ।

तृष्णा रोगके निदान ।

तृष्णा रोग या बहुत ज़ियादा प्यास लगनेका रोग नीचे लिखे कारणोंके होता है:—

(१) क्रोधसे, (२) शोकसे,
(३) मिहनतसे, (४) शराब पीनेसे,
(५) धातुक्षयसे, (६) धूपसे,
(७) आगकी तपतसे, (८) लंघन या उपवाससे,

(९) भयसे, (१०) अजीर्णसे,

(११) हथियारसे घाव होने या चोट लगनेसे,

(१२) रूखे, सूखे, खट्टे और गरम पित्त बढ़ाने वाले पदार्थों के खानेसे।

नोट—हारीतने दो दलवाले, कुल्थी आदि अन्न खानेसे और ज्वरसे तृष्णा रोग होना अधिक लिखा है।

तृष्णाकी सम्प्राप्ति।

"सुश्रुत" में लिखा है,—क्रोध, शोक आदि कारणोंसे "पित्त और वायु" अत्यन्त बढ़ जाते हैं। जब ये बढ़ जाते हैं, तब ये जल बहानेवाले स्रोतोंको दूषित कर देते हैं। जब वे स्रोत दूषित हो जाते हैं, तब मनुष्यको प्रबल प्यास लगती है।

"भावप्रकाश" में लिखा है, अपने स्थानमें ठहरा हुआ पित्त—अपने बढ़ाने वाले, तीखे, खट्टे, गरम आदि पदार्थोंसे कुपित होता है। उधर अपने स्थानमें संचित हुई वायु—भयसे, मिहनतसे, बलक्षयसे और लंघन या उपवास आदिसे—कुपित होती है। इस तरह पित्त और वायु कुपित होकर ऊपर आते हैं और तालूको दूषित करके, तृषा या प्यास पैदा करते हैं। मतलब यह, केवल तालूके दूषित होनेसे प्यास उत्पन्न होती है।

नोट—तालु यहाँ उपलक्षण मात्र है। तालु कहनेसे हृदयमें जो प्यास लगनेकी जगह है, जिसे क्लोमस्थान कहते हैं; उसे भी समझना चाहिये। क्योंकि चरकाचार्य कहते हैंः—

रसवाहिनीश्च धमनीर्जिह्वाहृदयगलतालुक्लोमसंशोषान्।
नृणां देहेषु कुरुतस्तृष्णामतिबलां पित्तानिलौ॥

पित्त और पवन—रस बहानेवाली नाड़ी, जीभ, गला, तालू और प्यास लगनेके स्थानको सूखा करके—तृषा या प्यास पैदा करते हैं।

तृष्णा रोगकी संख्या ।

प्रायः सभी आचार्योंने सात तरहकी तृष्णा लिखी हैं:—

(१) वातज, (२) पित्तज,
(३) कफज, (४) क्षतज,
(५) क्षयज, (६) आमकी,
(७) भोजनकी ।

नोट—हारीतने पाँच प्रकारकी तो यही लिखी हैं । छठी अजीर्णसे, सातवीं रूखे पदार्थ खानेसे और आठवीं ज्वरसे लिखी है । छठी और सातवींमें तो कोई भेद नहीं हैं; केवल आठवीं अधिक लिखी है ।

पूर्वरूप ।

तृष्णा या प्यास रोग होनेसे पहले—तालू, होंठ, कंठ और मुँह सूखते हैं तथा दाह, सन्ताप, मोह, भ्रम और प्रलाप-बकवाद तृष्णा रोगके "पूर्वरूप" हैं । ये ही सब लक्षण तृष्णा रोग होनेसे पहले दीखते हैं और तृष्णा रोगके पैदा हो जाने पर भी ये ही नज़र आते हैं । फ़र्क इतना ही है कि, पूर्वरूपके समय इनमें ज़ोर कम होता है, पर तृष्णा रोगके पैदा हो जाने पर इनमें ज़ोर ज़ियादा हो जाता है; अर्थात् उस समय ये विशेषतासे होते हैं । तृष्णाके पूर्वरूप और रूपमें ज़रासा भेद है, इसीसे सुश्रुतके सिवा और किसीने तृष्णाके पूर्वरूप नहीं लिखे ।

वातज तृष्णाके लक्षण ।

वायुकी प्यासमें मुँह उतर जाता है, कनपटियों और मस्तकमें पीड़ा होती है, रस और जल बहाने वाली धमनियाँ रुक जाती हैं और मुँहका स्वाद जाता रहता है । बादीकी प्यास शीतल जल पीनेसे उल्टी बढ़ती है ।

खुलासा—मुँहका सूखना, सिर और कनपटियोंमें दर्द होना तथा शीतल जल पीनेसे प्यास बढ़ना—ये तीन वातज तृषाके मुख्य लक्षण हैं ।

नोट १—किसी-किसीने यह भी कहा है कि, वातज तृषा रोगमें नींद भी नहीं आती। शीतल जल पीनेसे प्यास बढ़ती है, यह अनुपशयका लक्षण है। इस एक लक्षणसे ही वातज तृषाकी पक्की पहचान हो सकती है। हारीत मुनि कहते हैं, वातज तृषा रोगीका शरीर दुबला, चेहरा कालासा और मुँह बेस्वाद हो जाता है और कँप-कँपी आती है।

२—क्षतज या घाव होने या चोट लगनेसे होनेवाली, अन्नके कारणों से होनेवाली और शराब पीनेसे होनेवाली प्यासकी ज़ियादतीके रोगको दृढ़बल आचार्यने वातज तृषाके अन्तर्गत माना है। इसीसे जब और आचार्यों ने सात प्रकारका तृषा रोग लिखा है, तब दृढ़बलने पाँच प्रकारका ही लिखा है, क्योंकि उन्होंने क्षतज और अन्नजा तृषाको वातजमें ही शामिल कर दिया है। वजह यह है कि चोट आदि लगने और भोजन करनेसे वातका कोप होता है।

पित्तज तृषाके लक्षण।

पित्तज तृषारोग होनेसे मूर्च्छा—बेहोशी, अन्नमें अरुचि, प्रलाप या बकवाद, दाह या जलन, आँखोंमें सुर्खी, लगातार मुँह सूखना, शीतल जल पीनेकी इच्छा, मुँहका कड़वा रहना और कंठसे धूआँसा निकलना—ये लक्षण देखे जाते हैं।

खुलासा—पित्तज तृषामें प्रलाप, बेहोशी, भ्रम, मुँह सूखना, जलन और मुँहका कड़वा रहना—ये मुख्य लक्षण हैं।

नोट—यों तो सभी प्रकारकी तृषाओं में पित्तका प्रकोप रहता है, पर पित्तज में अधिक रहता है। सभी प्रकारकी तृषाओं में पित्तका कोप रहनेकी वजहसे ही सुश्रुतने कहा है कि, सभी तरहकी तृषाओंमें पित्त नाशक चिकित्सा करनी चाहिये, क्योंकि बिना पित्तकी शान्तिके प्यास शान्त हो नहीं सकती। चिकित्सकोंको, प्यास रोगका इलाज करते समय, इस सिद्धान्तको न भूलना चाहिये।

कफज तृषाके लक्षण।

"सुश्रुत"में लिखा है, भाफ या पसीनोंके रुकने या भीतरी भाफके रुकने और जठराग्निके कफसे ढक जानेसे कफज तृषा रोग होता है।

कफज तृषा होनेसे नींद आना, शरीर भारी रहना, मुँहका मीठा-मीठा रहना और रोगीका दुबला या सूखा सा हो जाना—ये लक्षण देखे जाते हैं।

खुलासा—जब कफ अपने कारणोंसे कुपित होता है, तब वह जठराग्निको ढक लेता है। उस समय जठराग्निकी गरमी रुककर, अधोगत जलवाही स्रोतों या नाड़ियोंको सुखाकर प्यास रोग पैदा कर देती है।

नोट—अकेले कफके कोपसे प्यासका रोग हो नहीं सकता, क्योंकि प्यास लगाना "वात पित्त" का काम है। यही कारण है, जो चरकने "कफज तृषा" नहीं कही; सुश्रुतने कफज तृषा कही है। पर चिकित्सामें भेद होनेकें कारणसे हारीतने भी पित्त-सहित कफकी प्यास मानी है। हारीतने कहा है, जब ऐसी या कफज प्यास लगती है, तब नींद बहुत आती है; मुँह कालासा हो जाता है, कफ गिरता है, गरम पदार्थों पर मन चलता है और शरीर कड़ा, काला और शीतल हो जाता है।

त्रिदोषज तृषाके लक्षण।

हारीत मुनिने कहा है, जब आँखोंमें शूल चलें, कय आवें, दाह हो, भ्रम हो, सिरमें दर्द हो, कँप-कँपीसी आवें, शरीर शीतल हो तब "त्रिदोषज प्यास रोग" समझो। त्रिदोषज प्यासके लक्षण अकेले हारीतने ही लिखे हैं।

क्षतज तृषाके लक्षण।

जब हथियार आदिके लगनेसे मनुष्यके शरीरमें घाव हो जाते हैं, तब उनसे खून बहता और वेदना होती है। खूनके बहने और पीड़ासे प्यास लगती है। उस प्यासको "क्षतज" या "घावोंसे पैदा हुई" तृषा कहते हैं।

सुश्रुतने लिखा है,—"तयाभिभूतस्य निशादिनानि गच्छन्ति दुःखं पिबतोऽपि तोयम्"। क्षतज या घावोंसे लगनेवाली प्यासमें रोगी रात-दिन पानी पीता है, तो भी उसे सुख नहीं मिलता—आठ पहर चौंसठ घड़ी दुख-ही-दुखमें कटते हैं। हारीतने इतना अधिक

लिखा है—"क्षतक्षयेषु या तृष्णा तस्यां नान्नाभिनन्दनम्"। क्षत-क्षयकी प्यास वालेकी अन्नमें रुचि नहीं रहती—उसे भोजन अच्छा नहीं लगता।

नोट—सभी आचार्योंने क्षतज तृषाको चौथी तृषा लिखा है, पर दृढ़बलने इसे वातज तृषामें शामिल कर लिया है।

क्षयज तृषाके लक्षण।

क्षयज तृषा पाँचवीं है। यह रसादिक धातुओंके क्षय या नाश से होती है। इस प्यासवाले रोगी रात-दिन पानी पीनेपर भी सुखी नहीं होते। कोई-कोई इसे सन्निपातकी प्यास मानते हैं।

नोट—रस क्षयके जो लक्षण हैं, वे इस प्यास रोगमें पाये जाते हैं। रस क्षयके क्या लक्षण हैं? सुश्रुतमें लिखा है—रसक्षयेहृत्पीड़ाकम्पशोषबधिरतातृष्णा चेति; अर्थात् रसके क्षय होनेसे हृदयमें पीड़ा, कँप-कँपी, शोष, बहरापन और प्यास ये लक्षण होते हैं। इस प्यास रोगमें मुँहसे पानी लगाये रहनेपर भी शान्ति नहीं मिलती।

आमज तृषाके लक्षण।

आमकी या अजीर्णकी तृषामें वात, पित्त और कफ—तीन दोषोंके लक्षण होते हैं। इस प्यासमें हृदयमें शूल चलते, मुँहसे लार गिरती और ग्लानि होती है।

सुश्रुतमें लिखा है; आम * बाक़ी रहनेसे जो प्यास रोग होता है, उसमें रस क्षयकी प्यासके सब लक्षण होते हैं।

हारीत कहते हैं, अजीर्णकी प्यासमें शोष होता है, जँभाइयाँ आती हैं, सिरमें दर्द होता है और पेट भारी रहता है। दृढ़बलने कफकी प्यास इसी आमज तृषाके अन्तर्गत मानी है।

---

* आम—कच्चे अन्नरसको कहते हैं। अजीर्ण—पेटमें अन्नको जैसेका तैसा रक्खे रहनेको कहते हैं।

अन्नजा तृषा।

अन्नजा तृषा उसे कहते हैं जो अन्नसे होती है। इसीको भुक्तोद्भव तृषा या खाना खानेसे हुई प्यास भी कहते हैं। चिकना, खट्टा, खारी, कड़वा, कसैला, जियादा और भारी या देरमें पचने वाला अन्न खानेसे शीघ्र ही तृषा रोग होता है। ऐसे तृषा रोगको "अन्नजा तृषा" कहते हैं। इसमें बारम्बार जल्दी-जल्दी जल पीनेकी इच्छा होती है।

नोट—कोई वैद्य भोजन करते समय जो प्यास लगती है उसीको "अन्नजा" कहते हैं; किन्तु वास्तवमें यह प्राकृतिक तृषा प्राकृत बुभुक्षाकी तरह है, रोगज नहीं।

तृषाके उपद्रव।

दीन स्वर, ग्लानि, मुँह और हृदयकी दीनता, गले और तालुका सूखना—ये तृष्णाके उपद्रव हैं। जिस प्यास रोगमें ये उपद्रव होते हैं, वह कष्टसाध्य होता है; यानी बड़ी कठिनाइयोंसे आराम होता है। ऐसी उपद्रव वाली प्यास धातुओंको भी सुखाती है। "वैद्य-विनोद" में तृषाके सात उपद्रव लिखे हैं:—

तृष्णायोपद्रवाः सप्त श्वासकासक्षयज्वराः।
बहिर्निर्गतजिह्वत्वं मोहोवाधिर्य्यमेवच॥

श्वास, खाँसी, क्षय, ज्वर, जीभका बाहर निकलना, मोह और बहरापन,—तृषाके ये सात उपद्रव हैं।

उपद्रवयुक्त तृषाका अरिष्ट।

हारीत कहते हैं,—बुख़ारके ज़ोरसे प्यास लगती है तथा अति-सार और शूलसे भी प्यास लगती है।

ज्वर, प्रमेह, क्षय, खाँसी, श्वास और अतिसार वगैरः रोगोंसे पीड़ित रोगियोंको, रोगसे कमज़ोर और दुबले आदमीको और वमन या कय करने वालेको जो घोरातिघोर प्यास लगती है, वह

आदमीके मारनेको ही लगती है। जिस प्यासमें मुँह सूखना आदि उपद्रव होते हैं, वह भी मारक होती है।

असाध्य तृषाके लक्षण ।

वातज, पित्तज प्रभृति सब तरहकी अत्यन्त बढ़ी हुई प्यास, रोगसे कमजोर हुएकी प्यास, वमन या कयसे पैदा हुई प्यास और भयंकर उपद्रवों वाली प्यास असाध्य होती है। ऐसी प्यासों वाले प्रायः मर जाते हैं। हारीत कहते हैं:—

तृष्णातिसार वमन दाह मूर्च्छाभ्रम शोषोद्भवा।
तोयेन न याति तृप्तिमसाध्यां तां विजानीहि॥

अतिसार, वमन, दाह, मूर्च्छा, भ्रम, और शोष या क्षय रोगसे पैदा हुई प्यास अगर पानी पीनेसे शान्त न हो—न बुझे तो असाध्य समझो।

तृषारोग-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) अकेली अन्नजा या खाना खानेसे पैदा हुई प्यास ही वमन करानेसे शान्त नहीं होती; क्षयज प्यासको छोड़कर और सभी तरह की प्यास वमन करा देनेसे शान्त हो जाती हैं। "सुश्रुत" में कहा है— क्षयजके सिवा, सभी तरहकी प्यासोंको वमन कराकर शान्त करो।

अगर प्यासके बढ़नेसे, पानी पीते-पीते पेट फूल जावे तो वैद्य पीपरोंका काढ़ा बनाकर रोगीको पिलावे और कय करा देवे। कहा है—तृष्णाप्रवृद्धौ मतिमान् वामयेत कणाम्बुना। छोटी पीपरोंका काढ़ा कंठ तक पिलाकर वमन कराना सर्वोत्तम उपाय है। कोई-कोई पीपरका चूर्ण खिलाकर पानी पिला देते हैं और कोई पानीमें पीपरों का चूर्ण घोलकर पिला देते हैं।

"वृन्दवैद्य" कहते हैं, शीतल जलमें शहद घोलकर, प्यासेको कंठ

तक पिला दो और कय करा दो। इससे फौरन प्यास शान्त हो जाती है। यह उपाय भी उत्तम है।

नीमकी छाल या नीमके पत्ते या नीमके फूलोंका काढ़ा बना कर रोगीको पिला देने और कय करा देने से कफज तृषा शान्त हो जाती है।

(२) अगर प्यासके मारे रोगीका पेट फूल गया हो, तो नीचे लिखे उपाय करो :—

(१) पीपरोंके काढ़ेसे वमन करा दो।

(२) अनारदाना, आमला और बिजौरा नीबूको समान-समान लेकर, सिलपर पीस लो और रोगीकी जीभपर इस मसालेका लेप कर दो। इस उपायसे लार बहेगी।

(३) रस-वीर्यमें शीतल और प्यास मिटानेवाली दवा रोगीको खिलाओ।

(४) अगर मुँहका जायका ठीक न हो—बेस्वाद हो, तो खट्टी चीजें और आमलोंका चूर्ण खिलाकर कुल्ले कराओ।

(३) बुद्धिमानको उपद्रव-सहित तृष्णाकी चिकित्सा न करनी चाहिये; यानी जिस तृषामें श्वास, खाँसी, क्षय, ज्वर, जीभ निकलना, बेहोशी और बहरापन हो, उसका इलाज न करना चाहिये, क्योंकि ऐसी प्यास वाला रोगी आराम नहीं होता।

(४) सब तरहकी तृषाओंमें पित्त नाशक क्रिया करनी चाहिये; क्योंकि बिना पित्तके शान्त हुए तृषा शान्त नहीं होती।

(५) अगर तत्काल प्यास रोग पैदा हो जाय, तो जो रोग प्यास को पैदा करने वाला हो, उसे शान्त करो। प्यास पैदा करने वाले रोगके शान्त होते ही प्यास भी शान्त हो जायगी।

(६) वातज तृषा हो, तो वातनाशक अन्न पान दो और सोने, चाँदी, लोहे या ईंट मिट्टी द्वारा बुझाया हुआ पानी पिलाओ। बिना

बुझाया, कच्चा और शीतल पानी वातज तृषाको बढ़ाता है; पर बुझाया हुआ पानी प्यासको शान्त करता है। इस प्यासमें शीतल बृंहण रस देना अथवा गुड़-मिला दही या गिलोयका स्वरस पिलाना हित है।

(७) पित्तज तृषा रोग वालेको मीठे, शीतल, कड़वे और पतले पदार्थ सेवन कराना हित है। कड़वे नीमके पत्ते, परवलके पत्ते और अड़ूसेके पत्ते बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। फिर इस चूर्णकी एक मात्रा—कोई ६ माशेकी खूराक—खिलाकर, शीतल जल खूब पिला दो और फिर वमन या कय करादो। वमन होते ही, पित्त-विकार दूर होकर, प्यास शान्त हो जायगी। पित्तज प्यासमें वमन करानेके लिए यह नुसख़ा बहुतही उत्तम और सुपरीक्षित है। इसके बाद, अगर कुछ ख़रख़शा बाक़ी हो, तो कड़वे नीमकी छाल, धनिया सोंठ और मिश्रीका काढ़ा पिलाओ। इस काढ़ेसे निश्चय ही पित्त शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(८) कफज तृषा वालेको कड़वे, पतले, कटु और गरम पदार्थ सेवन कराओ। नीमकी छाल या पत्तोंका काढ़ा गरमा-गरम पिलाकर वमन या कय करा दो। कफज तृषा पर यह काढ़ा उत्तम और परीक्षित है। इसके बाद जीरा, अदरख, सोंठ और संचर नमक—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और इस चूर्णको तीन-तीन माशे फँकाकर, थोड़ा-थोड़ा पानी पिलाओ। यह नुसख़ा परीक्षित है। जीरा, ताज़ा अदरख और कालेनोनका काढ़ा बना लो और आधा पानी रहनेपर रोगीको पिलाओ। यह भी उत्तम और सुपरीक्षित योग है।

(९) क्षतज तृषामें, रोगीको बकरेका मांसरस पिलाओ। घावको आराम करने, खून बन्द करने और पीड़ा शान्त करनेके उपाय करो। घावकी पीड़ा कम होनेसे ही क्षतज तृषा शान्त हो जाती है। इस प्यासमें हिरनका खून पिलाना भी हितकारी है।

(१०) क्षयज तृषामें, बकरेका मांस-रस, मुलहटीका काढ़ा, दूध-मिला पानी, शहद-मिला पानी; दूध-पानी और शहद मिले हुए, अथवा दूध-घी या शर्बत आदि पिलानेसे लाभ होता है। क्षयज प्यास-वालेको वमन कराना मना है, इस बातको न भूलना चाहिये।

(११) आमज और भारी भोजनसे पैदा हुई प्यास दीपन पदार्थों या दीपन काढ़े वग़ैरः से आराम होती है। भारी भोजनकी प्यास वालेको वमन कराना बहुत लाभदायक है। "बच और बेलगिरीका काढ़ा" आमकी प्यासमें उत्तम और सुपरीक्षित है। भारी अन्नकी प्यासवालेको पानी गरम पिलाना चाहिये।

(१२) रूखे, सूखे, दुबले, कमजोर और डरे हुए की प्यास "दूध" से शान्त हो जाती है। ऐसे प्यास-रोगियोंको "दूध" रामबाण है। वाग्भट्टकी रायमें बकरेका मांसरस भी अच्छा है।

(१३) चिकना अन्न खानेसे अगर प्यास रोग हो जाय, तो गुड़ोदक या गुड़का शर्बत पिलाना हित है।

(१४) भोजन करनेके पीछे पैदा हुई प्यासमें भी गुड़ोदक या गुड़-घोला पानी लाभदायक है।

(१५) शराब पीनेसे अगर तत्काल प्यास बढ़ जाय, तो आधा पानी मिलाकर फिर शराब पिलाओ। पीनेके लिए शीतल पानी दो। क्योंकि मद्यपान, स्त्रीप्रसंग, दाह, मूर्च्छा, वमन, रक्तपित्त और मदात्ययकी प्यासमें शास्त्रमें "शीतल जल" पिलानेकी ही आज्ञा है।

(१६) मिहनत करनेसे अगर प्यास रोग हो जावे, तो मांस रस या गुड़का शर्बत अथवा मन्थ देना चाहिये। वाग्भट्टने मिश्री-मिली शराबकी भी राय दी है।

(१७) अगर भोजनके अवरोधसे प्यास बढ़ जाय, तो प्यासेको गरम यवागू या शीतल मन्थ देना चाहिये।

(१८) स्नेहपान करने या चिकनी चीज़ ज़ियादा खाने और उनके जीर्ण न होने या न पचनेसे प्यास बढ़ जावे तो गरम जल पिलाओ। अगर रोगीकी अग्नि अत्यन्त तेज़ हो, तो स्वभावानुसार शीतल जल दो।

(१९) गरमीकी प्यासमें, शीतल जलमें चीनी घोल कर और कपड़ेमें छानकर शर्बत पिलाओ।

(२०) ज्वरको छोड़कर सब तरहकी प्यासोंमें, साधारणतया, नीचे लिखे हुए उपाय करोः—

१—शीतल लेप करो।

२—स्नान कराओ।

३—शरीर पर शीतल जलके छींटे मारो।

४—गुलाब जल छिड़को।

५—रोगीको शीतल मकानमें रक्खो।

६—ख़सके पंखेकी हवा करो।

७—घी, दूध, मांस-रस या मीठे शीतल अवलेह सेवन कराओ।

८—रोगी और रोगका विचार करके वमन-विरेचन कराओ।

(२१) धूपसे पैदा हुई प्यासमें जौ, बेर और नेत्रवालेका सत्तू मिश्री मिलाकर मन्थके रूपमें पिलाओ। तिलोंको पानीके साथ सिल पर पीस कर और काँजी मिलाकर सारे शरीर पर पोतो या लेप करो।

(२२) अगर शीतल जलमें स्नान करनेसे प्यास पैदा हो जाय, तो शराब और पानी पिलाओ अथवा गुड़का शर्बत पिलाओ।

(२३) ऊर्ध्ववातके कारणसे पैदा हुई प्यासमें क्षय और खाँसी की दवाओंसे पकाया हुआ दूध या बकरेका मांस-रस दो।

(२४) रोगके उपसर्गसे पैदा हुई प्यासमें धनियेका पानी पिलाना हित है। मिश्री और शहद मिलाकर काँजी पिलाना भी हित है।

नोट—रातको दो तोले धनिया पाव भर पानीमें भिगो दो। सवेरे ही मल-छानकर, उसमें एक या दो तोले मिश्री मिलाकर, वही पानी थोड़ा-थोड़ा पिलाओ। इससे प्यास शान्त हो जाती है। खूब परीक्षित है।

(२५) अगर प्यास-रोग पुराना हो, तो लाल चाँवलोंका भात पकाकर शीतल कर लो। फिर उसमें "शहद" मिलाकर खाओ। इससे बहुत समयकी प्यास आराम हो जाती है।

(२६) किसी हालतमें भी रोगीको पानी पिलाना बन्द न करना चाहिये। शास्त्रमें हर हालतमें कमो-बेश पानी पिलानेकी आज्ञा है। अन्न बिना प्राणी कुछ समय तक जी सकता है, पर जल बिना तो क्षण भरमें ही देह त्याग देता है।

कहा है:—

तृषितो मोहमायाति मोहात्प्राणान्विमुञ्चति।
तस्मात्सर्वास्ववस्थासु न क्वचिद्वारि वारयेत्॥
तृषापूर्वमपक्षीणो न लभेत जलं यदि।
मरणं दीर्घरोगं वा प्राप्नु यात्त्वरितं नरः॥

प्यासेको बेहोशी हो जाती है, बेहोशीसे प्राण छुट जाते हैं, इसलिये सब अवस्थाओंमें पानी पिलाना चाहिये। पानी किसी हालतमें भी न रोकना चाहिये।

प्यासेको अगर पहले जल न मिले, तो वह मर जाता है या उसे कोई बड़ा रोग हो जाता है।

"सुश्रुत उत्तरतंत्र" में लिखा है, प्यासके बहुत रोकनेसे जल-सम्बन्धी धातु क्षीण हो जाते हैं और शरीरकी गरमी बढ़ जाती है। उस समय मनुष्यके बाहर और भीतर दाह पैदा हो जाता है, सारा शरीर जलने लगता है, चेतना या बुद्धि मन्दी हो जाती है; गला, तालु और होंठ, सूखने लगते हैं और रोगी काँपने लगता है। इस

हालतमें इच्छापूर्वक थोड़ा-थोड़ा पानी पिलाना चाहिये अथवा मिश्री मिला दूध या ईखका रस पिलाना चाहिये। दाह पैदा हो जाने पर, गरमी शान्त करनी चाहिये और जलीय धातुएँ बढ़ानी चाहियें।

तृषा रोगकी विशेष चिकित्सा।

वातज तृषा नाशक नुसख़े।

(१) सोने, चाँदी, लोहे या ईंट अथवा मिट्टीके ढेलेको आगमें खूब लाल करके पानीमें बुझा दो। इस पानीसे वातज तृषा शान्त हो जाती है।

(२) गुर्च या गिलोयका स्वरस निकाल कर तोले-तोले या छै-छै माशे कई बार पिलाओ। इस नुसख़ेसे वातज प्यास अवश्य शान्त हो जाती है।

(३) गुड़ मिलाकर दही खिलानेसे भी वातज प्यास आराम हो जाती है।

पित्तज तृषा नाशक नुसख़े।

(१) कड़वे नीमके पत्ते, परवलके पत्ते और अड़ूसेके पत्ते—बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। इसमेंसे ३ से ६ माशे तक चूर्ण खिलाकर शीतल जल पिला दो और कय करा दो। कय होनेसे पित्त-विकार शान्त हो जायँगे। सुपरीक्षित है।

(२) कड़वे नीमकी छाल, धनिया, सोंठ और मिश्री—कुल दो तोले लेकर, डेढ़ पाव पानीमें पकाओ। जब आधा जल रह जाय, मल-छान कर रोगीको पिलाओ। इस काढ़ेसे पित्त शान्त होकर प्यास मिट जायगी। सुपरीक्षित है।

(३) कैथका गूदा निकाल कर उसमें बराबरकी चीनी या मिश्री मिला दो और रोगीको खिला दो अथवा कैथके पत्तोंको सिल पर पीस कर, कपड़ेमें रस निचोड़ लो और उसे गायके दूधमें मिलाकर रोगीको पिला दो। इन दोनोंमेंसे कोई एक उपाय करनेसे प्रबलसे प्रबल पित्त शान्त हो जायगा। सुपरीक्षित है।

(४) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, नेत्रवाला, धनिया, खस, और लाल चन्दन—इनमेंसे प्रत्येक चार-चार माशे लेकर, एकमें मिला कर डेढ़ या दो सेर जलमें औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, छान लो। इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा पानी पिलानेसे पित्तज प्यास शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(५) गंभारीफल, मिश्री, लाल चन्दन, खस, पद्मकाष्ठ, दाख और मुलेठी—इन सबको दो तोले लेकर कुचल लो। शामके समय आध पाव खौलते हुए गरम जलमें इनको डालकर भिगो दो। दूसरे दिन सवेरे ही मल-छानकर रोगीको पिला दो। इससे भी पित्तज प्यास शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(६) गूलरके पके हुए फलोंका स्वरस या काढ़ा पीनेसे पित्तज प्यास शान्त हो जाती है।

(७) अन्नके पचने पर "चाँवलोंका धोवन" पीनेसे पित्तज प्यास शान्त हो जाती है। सुपरीक्षित है।

(८) धनिया, खस, काश्मरी, दाख, महुआ और चन्दन—इनको चार-चार माशे लेकर, डेढ़ पाव जलमें काढ़ा बना लो। आधा रहने

पर मल-छान लो और १ तोले मिश्री मिलाकर रोगीको पिला दो। परीक्षित है।

(९) बड़की कोंपल, पठानी लोध, चन्दन, अनारदाना और मिश्री—इनको पानीके साथ पीसकर और छानकर पीनेसे पित्तज प्यास शान्त हो जाती है।

(१०) कूट, नील कमल, धानकी खील और बड़की कोंपल—इनको महीन पीस-छानकर और "चीनी" मिलाकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके मुँहमें रखकर चूसनेसे पित्तकी प्यास जाती रहती है।

(११) दाख और नील क़मल पीसकर खानेसे पित्तज प्यास मिट जाती है।

(१२) ईखका रस पीने या गंडेली चूसनेसे पित्तज प्यास जाती रहती है।

(१३) जली हुई मिट्टी, लोहा या बालूको आगमें तपाकर पानीमें बुझा दो। इस पानीके पीनेसे पित्तज प्यास जाती रहती है।

(१४) शर्बत चन्दन पानीमें मिलाकर पीनेसे पित्तज प्यास शान्त हो जाती है। अगर शर्बत न हो, तो सफेद चन्दनका चूर्ण ६ माशे सिल पर पीसकर पानीमें छान लो और अन्दाजकी चीनी मिलाकर पीओ।

कफज तृषा नाशक नुसख़े।

(१) नीमकी छाल या पत्तोंका काढ़ा गरमागरम पीकर कय करनेसे कफज तृषा नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(२) जीरा, अदरख और कालानोन—तीनों आठ-आठ माशे लेकर दो सेर पानीमें औटाओ। जब आधा पानी रहे, मल छानकर थोड़ा-थोड़ा पी लो। इस काढ़ेसे कफज तृषा शान्त हो जाती है।

(३) बिजौरा नीबू, कैथ, अनार, लोध और बेरोंका गूदा—इनको समान-समान लेकर सिलपर पीसो और मस्तकपर लेप करो। इससे दाह, शोष और प्यास रोग अवश्य नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) बेलकी छाल, अरहरके पत्ते, धायके फूल, पीपरामूल, चव्य, चीता, सोंठ और कुशमूल—इनको कुल मिलाकर दो तोले ले लो। फिर दो सेर जलमें औटाओ और आधा पानी रहनेपर छानकर थोड़ा-थोड़ा पीओ। इससे कफज तृषा नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(५) इमलीको पानीमें भिगो दो। फिर उसके कुल्ले करो। इससे मुखका सूखना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(६) बड़की जटा, महुआ, चाँवलकी खील, कूट और कमल-गट्टेकी गरी—इनको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। चूर्णको "शहद" में सानकर जंगली बेर समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके चूसनेसे प्यास शान्त हो जाती है।

(७) शीतल जलमें खीलोंका मंड बनाकर और उसमें गुड़ तथा "शहद" मिलाकर पीनेसे कफज तृषा शान्त हो जाती है।

(८) जीरा, अदरख, सोंठ और संचर नोनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको पानीके साथ खानेसे कफज तृषा शान्त हो जाती है।

(९) खुशबूदार और जायकेदार शराब पीनेसे कफज तृषा तत्काल आराम हो जाती है।

(१०) जामुनकी कोंपल, आमकी कोंपल, चाँवलोंकी खील,

चन्दन और धायके फूल—सबको समान-समान लेकर पीस लो। फिर अडूसेके पत्तोंके रसमें चूर्णको पीसकर चाटो। इससे कफकी प्यास, दाह और मूर्च्छा आदि नाश हो जाते हैं।

(११) अरहरकी दालके यूषमें धानकी खील और चीनी मिलाकर पीनेसे कफज प्यास शान्त हो जाती है।

(१२) दूधमें कालीमिर्च मिलाकर पीनेसे कफज प्यास जाती रहती है।

(१३) बड़बेरीके पत्तोंका स्वरस पीनेसे कफज प्यास आराम हो जाती है।

तृषा या प्यासकी
सामान्य चिकित्सा।

(१) भीगे कपड़ेपर सोने और भीगा कपड़ा ओढ़नेसे प्यास और घोर दाह शान्त हो जाते हैं।

(२) ईखके रस और दूधको मिला लो। फिर उसमें दाख, मुलेठी, शहद और कमलकी जड़ डालकर नाकसे पीओ। इससे दारुण प्यास भी शान्त हो जाती है।

(३) शहदको मुँहमें भरकर १ घण्टा रखने और कुल्ले करनेसे घोर प्यास शान्त हो जाती है। सुपरीक्षित है।

(४) बिजौरे नीबूके १ तोले रसको १ माशे घी और १ माशे सेंधेनोनमें मिलाकर पीस लो और सिरपर लगा दो। इससे जीभ, तालू, कंठ और प्यास लगनेका स्थान सूखता हो, तो फौरन आराम मिलता है। सुपरीक्षित है।

(५) अनार, बेर, लोध, कैथ और बिजौरा नीबू—इनको महीन पीस कर माथेपर लेप करनेसे प्यास और जलन मिट जाती है।

(६) सवेरे ही दो तोले धनिया हाँडीमें औटाने और छान कर तथा "चीनी" मिलाकर पीनेसे प्यास और दाह शान्त एवं स्रोत शुद्ध हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७) आमले, कमलकी जड़, कूट, धानकी खील और बड़के अंकुर—समान-समान लेकर पीस लो। फिर "शहद" में मिलाकर बेर-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके मुँहमें रखनेसे महा उग्र प्यास और दारुण शोष शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(८) बहुधा प्यास गरमीसे लगती है; इसलिये सादी सिकंज-बीन पिलाने अथवा ईसबगोलका लुआब शर्बत नीलोफरमें मिलाकर पिलाने या नीबू और चीनीका शर्बत पिलानेसे प्यास शान्त हो जाती है। यह यूनानी नुसखा है।

(९) पीपर-वृक्षकी छाल जलाकर पानीमें डाल दो। जब पानी नितर जाय, छान कर दूसरी हाँडीमें रखलो। इस पानीके दो-दो तोले पीनेसे घोर प्यास और वमन शान्त हो जाती हैं। अनेक बारका परीक्षित नुसखा है।

(१०) अक्सर बच्चोंको गरमियोंमें तौंस या प्यासका रोग हो जाता है। दो तोले कमलगट्टे—हरी पत्ती निकालकर—जौ-कुट करके, बालकके पीनेके आध सेर पानीमें डाल दो। फिर वही पानी उसे बारम्बार पिलाओ। आराम हो जायगा। सुपरीक्षित है।

(११) अगर आदमीको तौंस लगती हो, तो जंगली कण्डोंकी राख एक काँसीके बासनमें डालकर, ऊपरसे जल भर दो और उस बासनको प्यासेकी नाभिपर रख दो। इसके रखते ही ज़लन मिट जायगी। परीक्षित है।

(१२) आमले और सफेद कत्था पीसकर या टुकड़े ही मुँहमें रखकर चूसनेसे प्यास नाश हो जाती है। आमला १ भाग और कत्था आधा भाग मिलाकर, पानीके साथ पीसकर गोलियाँ बना लेनी चाहियें। इन गोलियोंके मुँहमें रखनेसे प्यास मिट जाती है।

(१३) बड़के अंकुर, पठानी लोध, अनारदाना, मुलेठी, मिश्री और शहद—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस लो और ३-३ माशेकी गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली मुँहमें रख कर, ऊपरसे चाँवलोंका धोवन पीनेसे घोर प्यास नाश हो जाती है। सुपरीक्षित है।

(१४) खीलोंको पानीमें भिगोकर मसल लो। फिर उस पानीमें "शहद और सफेद कटेरीका स्वरस" डालकर पीलो। इससे घोर प्यास शान्त हो जायगी।

नोट—अगर सफेद कटेरी न मिले, तो दाख और खजूर मिलाकर पीओ।

(१५) नीलोफर, कूट, धानकी खील, बड़की कोंपल और शहद—इनमेंसे नीलोफरादि चारों दवाओंको पीसकर "शहद" में सान लो और बेर-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके मुँहमें रखकर चूसनेसे घोर प्यास जाती रहती है।

(१६) अनार, बेर, चूका, बिजौरा नीबू और अम्लवेत—इनके रसोंमें पिसा-छना "हरड़का चूर्ण" मिलाकर तालू पर लेप करो। इससे मुँह सूखना और प्यास शान्त हो जाती है।

(१७) बिजौरे नीबूकी केशर चाँवलोंके पानीमें पीस कर पीनेसे तालू सूखना और ज्वर सहित प्यास नाश हो जाती है।

(१८) गरम किये हुए शहदका तालू पर लेप करनेसे मुँहका सूखना नाश हो जाता है।

(१९) शहद और चीनी मिलाकर तालू पर लेप करनेसे प्यास शान्त हो जाती है।

(२०) कमलकन्दको पानीमें पीसकर तालू पर लेप करनेसे प्यास नाश हो जाती है।

(२१) जामुनके पत्ते और आमके पत्ते पीसकर तालूपर लेप करनेसे प्यास मिट जाती है।

(२२) काग़ज़ी नीबू, बिजौरा नीबू और अचारका नीबू—इनको प्यास वालेके सामने खानेसे रोगीकी जीभ तर हो जाती है, देखनेसे ही उसकी जीभसे पानी छूटने लगता है। स्वयं रोगीके खानेको ये चीज़ें न देनी चाहियें।

(२३) लाल शालि चाँवलोंका भात "दही और मिश्री" मिलाकर खानेसे प्यास रोग आराम हो जाता है। बड़ी उत्तम दवा है। इस पर खट्टे, नमकीन और चरपरे पदार्थ न खाने चाहियें।

(२४) शोष, प्यास, वमन, मिहनत और पानात्ययमें दिनमें सोना हितकर है।

(२५) लाल चाँवलोंके भातमें, शीतल होने पर, "शहद" मिलाकर खानेसे बहुत समयकी प्यास भी आराम होजाती है।

(२६) धनिया, अड़ूसा, आमला, काले दाख और पित्त-पापड़ा—इनको २।३ तोले लेकर जौकुट करलो और रातके समय मिट्टीकी हाँडीमें, सेर-भर पानी डालकर, भिगो दो। सवेरे ही यही पानी रोगीको थोड़ा-थोड़ा पिलाओ। इससे प्यास निश्चय ही शान्त हो जाती है। खूब परीक्षा की है।

(२७) रातको २ तोले धनिया मिट्टी की हाँडीमें पानी डालकर भिगो दो। सवेरे ही छानकर और १ तोले "मिश्री" मिलाकर रोगीको पिलाओ। इससे प्यास और दाह नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२८) धनिया सिलपर पानीके साथ पीस लो। फिर उसे पानीमें घोलकर और कपड़ेमें छानकर, उसमें थोड़ा-थोड़ा "शहद और चीनी" मिला दो और रख लो। इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा पानी पीनेसे प्यास और दाह आराम हो जाते हैं। खूब परीक्षित है।

(२९) अगर बालकको प्यासका रोग हो, तो छोटी ब्राह्मीके

पत्तोंको पीसकर रस निचोड़ लो। उस रसमें "सफेद जीरा और मिश्री" पीसकर मिला दो। इसमेंसे माशे-माशे भर दवा, दिनमें कई बार, पिलानेसे बालकोंकी प्यास शान्त हो जाती है। खूब परीक्षित है।

(३०) सफेद प्याजको भूँजकर महीन पीस लो और थोड़ासा "घी" मिलाकर गोली बना लो। इस गोलीको बालकके भेजे पर लगाकर, ऊपरसे अरण्डका हरा पत्ता रखकर, कपड़ा बाँध दो। नित्य शामके समय गोलीको सिरसे छुड़ा लो और सिरको अच्छी तरह धोकर, उस जगह "गायका ताजा मक्खन" लगा दो। साथ-साथ, थोड़ेसे सफेद प्याजके रसमें जरासा "सफेद जीरा और मिश्री" पीसकर मिला दो और बालकोंको पिलाओ। जब तक आराम न हो जाय, नित्य इस तरह करो। बालकोंके प्यास रोग पर यह उपाय सर्वोत्तम और सुपरीक्षित है।

(३१) आमके पत्ते और जामुनके पत्ते अथवा आम और जामुन की छाल अथवा आम और जामुनकी गुठलियोंकी मींगी लेकर पानीमें औटा लो। आधा पानी रहने पर मल-छान लो। फिर इसमें "शहद" मिलाकर पीलो। इस काढ़ेसे प्यास और वमनके रोग निश्चय ही शान्त हो जाते हैं।

(३२) धनियाका काढ़ा बासी करके पीनेसे भी प्यास शान्त होती देखी गई है।

(३३) बड़े नीबूका जीरा, शहद और अनारके दाने एकत्र पीस कर कुल्ले करनेसे प्यास नाश हो जाती है।

(३४) अगर तालू सूखता हो तो दूध, ईखका रस, गुड़ या किसी खट्टी चीजको पानीमें घोलकर कुल्ले करनेसे आराम हो जाता है।

(३५) ताम्बाभस्म २ माशे और बंगभस्म १ माशे, दोनोंको

मिलाकर खरलमें डालो और ऊपरसे "मुलेठीका काढ़ा" डाल-डाल कर १२ घण्टे तक खरल करो। इसका नाम "कुमुदेश्वर रस" है। इसकी मात्रा २ रत्तीकी है। इसको "चन्दनादि काढ़े" के साथ सेवन करनेसे हर तरहका प्यास रोग शान्त हो जाता है। प्यास रोगकी यह सर्वश्रेष्ठ दवा है। जब और जड़ी-बूटीकी दवाओंसे प्यास रोग शान्त न हो, इसे काममें लाओ।

नोट—चन्दन, अनन्तमूल, नागरमोथा, छोटी इलायची और नागकेशर तीन-तीन माशे लो और धानकी खीलें १५ माशे लो। इन सबको १६ गुने पानी में औटाओ, जब आधा पानी रह जाय उतार लो। यही "चन्दनादि क्वाथ" है। काढ़ेके साथ कुमुदेश्वर रसकी १ मात्रा खानेसे प्यास और वमन दोनों आराम हो जाते हैं।

(३६) आलूबुखारा लाकर ज़रा आगमें भून लो और उसे मुँहमें रखकर चूसो। इससे प्यास अवश्य दब जाती है। सुपरीक्षित है।

तृष्णा रोगमें पथ्यापथ्य।

पथ्य।

संशोधन, वमन—कय करना, स्नान करना, मुँहमें कवल या दवाओंका गोला रखना, जीभके नीचेकी शिराओं-नसोंको चिराग़ पर जलाई हुई हल्दीसे दागना, चन्दन लेपित स्त्रीको आलिङ्गन करना, रत्नादि आभूषण पहनना और शीतल पदार्थोंका लेप करना ये सब पथ्य हैं।

शालि चाँवल, पेया, विलेपी, खील, सत्तू, मिश्री, रागखांडव, भुने हुए मूँग, मसूर या चनोंका रस, केलेका फूल, माठेमें रही हुई घीकी गोलियाँ, दाख, पित्तपापड़ेके पत्ते, कैथ, बेर, कमरख, कुम्हड़ा खजूर, अनार, आमले, ककड़ी, खसका पानी, जँभीरी नीबू, बिजौरा नीबू, करौंदा, महुएके फूल, गायका दूध, चरपरे और मीठे रस, शीतल जल, पना, शहद, सरोवरका जल और शीतल हवा ये सब पथ्य हैं ।

हाऊबेर, शतावर; नागकेशर, इलायची, जायफल, हरड़, धनिया, सुहागा, कपूर और कपूरकचरी आदि द्रव्य भी पथ्य हैं ।

सारांश यह है कि, रुचिजनक, मधुर रस वाले और शीतल पदार्थ तृष्णा रोगमें सुपथ्य हैं ।

अपथ्य ।

स्नेह कर्म, पसीने निकालना, अञ्जन लगाना, धूआँ पीना, कसरत-कुश्ती करना, नस्य लेना, धूपमें रहना, दाँतुन करना, भारी अन्न खाना; खट्टे, कसैले और अति नमकीन रस सेवन करना; त्रिकुटा—सोंठ, मिर्च, पीपर सेवन करना, दूषित मैला पानी और तीखे पदार्थ तृष्णा रोगमें अपथ्य हैं ।

दवाएँ बनाने और सेवन करनेमें जानने योग्य बातें ।

स्वरस ।

स्वरस, कल्क, क्वाथ, हिम और फाँट इन पाँचोंको "कषाय" कहते हैं। ये उत्तरोत्तर हल्के होते हैं। स्वरससे कल्क, कल्कसे क्वाथ, क्वाथसे हिम और हिमसे फाँट हल्का होता है ।

उत्तम बनस्पति लाकर, सिलपर कूट-पीसकर कपड़ेमें होकर रस निचोड़ लो। इस निचुड़े हुए रसको ही "स्वरस" या "अङ्गरस" कहते हैं।

अगर गीली दवा न मिले, तो सूखी दवासे दूने पानीमें, मिट्टीके बर्तनमें, २४ घण्टे तक भिगो रखो। फिर मसलकर पानीको छान लो। यह पानी भी "स्वरस" ही है।

अगर गीली बनस्पति न मिले तो सूखी लाकर, उससे आठ गुने पानीमें डालकर आगपर पकाओ। जब जलते-जलते चौथाई पानी रह जाय, मल-छान लो। यह भी "स्वरस" है।

अगर स्वरसमें शहद, चीनी, मिश्री, गुड़, जवाखार, जीरा, सैंधा नोन, घृत, तेल या चूर्ण वगैरः मिलाने हों, तो एक-एक कोल या आठ-आठ माशे डालने चाहियें।

स्वरस भारी होता है, अतः वह दो तोले देना चाहिये। यदि रात में दवा भिगोकर सवेरे काढ़ा किया जाय, यानी दवा आगपर पकाई जाय, तो चार तोले दे सकते हैं।

कल्क।

गीली या सूखी दवाको पानीमें मिलाकर सिलपर पीस लो। यही "कल्क" है। इसकी मात्रा १ तोले की है।

कल्कमें शहद, घी, तेल प्रभृति मिलाने हों, तो स्वरससे दूने यानी दो-दो कोल या १६।१६ माशे डालने चाहियें। मिश्री और गुड़ डालने हों, तो बराबर डालने चाहियें और पतले पदार्थ चौगुने डालने चाहियें।

पुटपाक।

पुटपाक और कल्क इन दोनोंका ही स्वरस लिया जाता है, अतः यहाँ पुटपाकके सम्बन्धमें लिखना उचित है।

सोलह तोले गीली दवाको महीन पीसकर उसका गोला बनालो।

उस गोलेपर बड़के पत्ते या जामुनके पत्ते अथवा कंभारीके पत्ते लपेट कर, एक अंगुल मोटा या दो अंगुल मोटा मिट्टी और कपड़ोंका लेप करो। मिट्टीका लेप करनेसे पहले, पत्तों पर डोरी या रस्सी लपेट दो, ताकि पत्ते जमे रहें। मिट्टी लपेटकर, गोलेको धूपमें सुखा लो। इसके बाद एक गज-भर गहरा गड्ढा खोदो। उस गड्ढे के तीन भागमें जंगली या आरने कण्डे भर दो। कण्डोंके ऊपर दवाका गोला रख दो और गोले पर फिर कण्डे डालकर उसे ढक दो। अब आग लगा दो। जब उस गोलेकी मिट्टी अंगारोंके समान लाल हो जाय और कण्डोंकी राख हो जाय, उस गोलेको निकाल लो।

अब उस गोलेकी मिट्टी और पत्ते दूर करके, भीतरकी पकी हुई दवाको कपड़ेमें रखकर रस निचोड़ लो।

इस रसमें कल्क, चूर्ण या पतले पदार्थ मिलाने हों, तो स्वरसमें लिखे अनुसार यानी आठ-आठ माशे डालने चाहियें।

नोट—जब गोलेके ऊपरकी मिट्टी लाल हो जाय, तब समझ लो कि पुटपाक हो गया। उस समय गोलेको आगसे निकाल लेना चाहिये।

क्वाथ या काढ़ा।

चार तोले जौकुट की हुई दवाको, सोलह गुने पानीके साथ, मिट्टीके बासनमें, मुँह खुला रखकर पकाओ। आग सदा मन्दी रखो। जब आठवाँ भाग पानी बाक़ी रहे, छानकर गरमागर्म या निवाया-निवाया रोगीको पिला दो। इसको शृत, कषाय, क्वाथ और निर्यूह कहते हैं। वृद्ध वैद्योंके मतानुसार ८ तोले काढ़ा पीना चाहिये।

अगर काढ़ेमें जीरा, गूगल, खार, नमक, शिलाजीत, हींग, सोंठ, मिर्च और पीपल—ये पदार्थ डालने हों तो चार-चार माशे डालो। अगर दूध, घी, गुड़, तेल, मूत्र या और पतले पदार्थ तथा कल्क और चूर्ण वगैरः डालने हों तो एक-एक तोले डालो।

अगर काढ़ेमें "चीनी या मिश्री" डालनी हो, तो वातरोगमें काढ़ेकी चौथाई; पित्तरोगमें काढ़ेका आठवाँ हिस्सा और कफरोगमें काढ़ेका सोलहवाँ भाग डालो।

अगर काढ़ेमें "शहद" डालना हो, तो वातरोगमें काढ़ेका आठवाँ भाग, पित्तरोगमें सोलहवाँ भाग और कफरोगमें चौथाई डालना चाहिये।

नोट—काढ़ेके बासनको ढकना ठीक नहीं है; ढकनेसे काढ़ा भारी हो जाता है।

आजकलके योग्य नियम।

काढ़ेमें जितनी दवाएँ हों, वह सब बराबर-बराबर कुल मिलाकर दो तोले लेनी चाहियें। जैसे,—काढ़ेमें दो दवा हों तो दोनों एक-एक तोले लेनी चाहियें, चार हों तो ६।६ माशे और आठ हों तो तीन-तीन माशे लेनी चाहियें। इस तरह जितनी दवाएँ हों, सब मिलाकर दो तोले लेनी चाहियें। सब दवाओंको सोलह गुने या ३२ तोले पानीमें औटाना चाहिये। जब चौथाई पानी रह जाय, उतारकर काढ़ा छान लेना चाहिये। काढ़ेमें कोई और चीज़ मिलानी हो, तो काढ़ा पीनेके समय मिलानी चाहिये। अगर एक चीज़ मिलानी हो, तो ६ माशे मिलानी चाहिये। अगर दो चीजें मिलानी हों तो तीन-तीन माशे मिलानी चाहियें। अगर रोगी कमज़ोर हो, तो मात्रा कम भी कर सकते हैं। काढ़ा नित्य ताज़ा बनाकर पीना चाहिये। सवेरेका पकाया हुआ भी शामको न पीना चाहिये।

नोट—आजकलके लोग आयुर्वेद ग्रन्थ लिखे जानेके समयके जैसे बलवान नहीं होते, इसीसे वैद्योंने चार तोलेकी जगह दो तोले दवा काढ़ेके लिये मुक़र्रर कर दी है। काढ़ेके सम्बन्धमें "चिकित्सा-चन्द्रोदय" दूसरे भागके पृष्ठ १३२-१३४ और पृष्ठ १७३ में बहुत कुछ लिखा है, उसे ज़रूर देख लेना चाहिये।

हिम।

चार तोले दवाको जौकुट करके, छै गुने जलमें, मिट्टीके बासनमें,

रातके समय भिगो दो। सवेरे ही उसे मल-छानकर पी लो; इसकी मात्रा ८ तोलेकी है। इसे "हिम" या "शीत कषाय" कहते हैं।

नोट—आजकल हिमके लिये भी चार तोलेकी जगह दो तोले दवा लेते हैं और छैगुने यानी बारह तोले पानीमें रातको भिगोकर, सवेरे ही मल छानकर पीते हैं। आजकल यही नियम ठीक है। मात्रा भी २ तोले की है।

फाँट।

मिट्टीके बासनमें चार तोले जौकुट की हुई दवा रखकर, ऊपरसे चौगुना यानी सोलह तोले गरम पानी डाल दो और कुछ देर बाद दवाको मसलकर पानीको छान लो। यही "फाँट या चूर्ण द्रव" कहलाता है। इसकी मात्रा ८ तोले की है। इसमें मिश्री, शहद और गुड़ प्रभृति काढ़ेके नियमानुसार डालने चाहियें।

चूर्ण।

अगर दवाओंका चूर्ण बनाना हो तो सब दवाओंको अलग-अलग कूटकर कपड़ेमें छान लो। फिर चूर्णमें जितनी चीजें मिलानी हों, सबको अलग-अलग तोलकर एक बर्तनमें इकट्ठी कर लो। इसके बाद फिर कपड़ेमें छान लो। चूर्ण जितना ही महीन होगा, उतना ही अच्छा और गुणकारी होगा।

सभी चीज़ोंको एक में मिलाकर कूट डालना और चलनीमें छान लेना ठीक नहीं है। उस तरह आफ़त काटकर बनाये हुए चूर्ण आदि ठीक काम नहीं देते और रोगी खाते भी बेमन से हैं।

जो चीजें एक मेलकी हों, उन्हें उनके मेल से ही कूटना-पीसना चाहियें—सबको मिलाकर नहीं। मान लो, किसी नुसखेमें और-और दवाओंके अलावः "पारा और गंधक" हों, तो पारे और गंधकको सब से अलग करके खरल करना चाहिये। जब इनकी काली कज्जलीमें पारे की चमक न रहे, तब ठीक घुटी समझकर अलग रख देनी चाहिये।

और सब दवाओंके कुट-छन जानेपर, शेषमें कज्जलीको मिला देना चाहिये।

मुनक्का, अंजीर और छुहारे एक मेलके पदार्थ हैं। ये यदि सोंठ मिर्च आदिके साथ पीसे जायें, तो ठीक नहीं पिसेंगे, अतः इन्हें अलग पीसकर शेषमें मिला देना चाहिये। यह बात दवा बनाने वालेकी बुद्धिपर मुनहसिर है। वह बुद्धिसे समझकर प्रत्येक वर्गकी दवाओं को मिला-मिलाकर कूट सकता है।

पारा और गंधक कहीं भी आवें, सदा दोनोंको अलग पीसना चाहिये और पीछे और चीजोंमें मिलाना चाहिये। अगर किसी नुसखेमें अभ्रक भस्म, बंग भस्म और ताम्बा भस्मके साथ सोंठ, मिर्च, पीपर आदि हों, तो इन भस्मोंको सोंठ, मिर्च आदिमें मिलाकर न पीसना चाहिये। ऐसा करनेसे ये छीजेंगी और गड़बड़ हो जायगी। किसी दवाकी भी तोल ठीक न रहेगी। ये तो आप ही काजलके समान बारीक होती हैं। सोंठ मिर्च आदिको अलग-अलग पीस-छानकर रखना चाहिये। मिलानेके समय अभ्रक भस्म आदिको तोलकर मिला देना चाहिये।

अनेक नुसखोंमें हींग पड़ती है। हींगको खानेकी दवाओंमें बिना घीमें भूने कभी न डालना चाहिये। कच्ची हींग डालनेसे चूर्ण और गोली आदि बदजायके हो जाते हैं। हाँ, लेपादिमें हींग डालनी हो तो कच्ची ही डाल सकते हैं।

अगर किसी नुसख़ेमें गंधक, पारा, कुचला, विष, जमालगोटा, सिंगरफ, धतूरेके बीज, कपूर, गूगल, शिलाजीत, मूँगा, मोत, भिलावे, सुहागा, फिटकरी, चिरमिटी, अफीम और मैनशिल आदि पदार्थ लिखे हों, तो चाहे उनके पहले "शुद्ध" शब्द लिखा हो या न लिखा हो, आप शुद्ध ही डालें। ऐसे पदार्थ बिना शोधे हुए डालनेसे लाभके बजाय हानि होती है।

नोट—प्रायः इन सभी चीज़ोंके शोधनेकी विधियाँ "चिकित्सा-चन्द्रोदय" चौथे भागमें और दूसरे भागके अन्तमें मिलेंगी ।

वटिका या गोली ।

अगर गोली बनानी हों, तो लिखी हुई दवाओंका चूर्ण बनाकर, जिस चीज़के साथ खरल करनेको लिखा हो, उसके साथ खरल करके जौ भर, सरसोंके दाने बराबर, जंगली बेर-समान अथवा रत्ती-रत्तीभर की गोलियाँ बनानी चाहियें । जितनी घुटाई ज़ियादा होगी, गोलियाँ उतनी ही अच्छी बनेंगी ।

अगर यह न लिखा हो कि अमुक पतली चीज़के साथ खरल करके गोलियाँ बनाओ, तो आपको 'पानी' के साथ खरल करके गोलियाँ बनानी चाहियें । अगर गोलीका परिमाण या तोल न लिखी हो, तो रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बनानी चाहियें ।

अवलेह या लेह ।

अवलेह बनाना हो, तो पहले दवाओंका काढ़ा पकाओ । काढ़ा पक जानेपर छान लो और उसे फिर आगपर पकाओ । जब गाढ़ा हो जाय, तब समझो कि अवलेह बन गया । मतलब यह है कि, क्वाथादि को फिर दुबारा औटाकर गाढ़ा करनेसे जो रसकर्म होता है, उसे ही "अवलेह या लेह" कहते हैं ।

अगर चीनीसे अवलेह बनाना हो, तो जितना चूर्ण हो उससे चौगुनी चीनी डालनी चाहिये । अगर गुड़ डालना हो, तो चूर्णसे दूना डालना चाहिये । अगर पतले पदार्थके साथ अवलेह बनाना हो, तो वह भी चौगुना डालना चाहिये ।

अवलेहकी चाशनी भी मोदककी तरह पक्की होनी चाहिये । अलेवहकी परीक्षा यह है कि, चाशनीमें से तार छूटें, पानीमें डालनेसे चाशनी डूब जाय और फैले नहीं तो समझो कि अवलेह ठीक बन गया ।

मोदक।

जो मोदक पाक करके न बनाने हों, तो दवाओंके चूर्णको चूर्ण से दूने गुड़ और बराबरके शहदमें खरल करके निर्दिष्ट मात्रामें गोलियाँ बनालो। अगर पकाकर मोदक बनाने हों, तो चूर्णसे दूना गुड़ या चीनी पानीमें औटाओ; जब पक्की चाशनी हो जाय, तार छूटने लगें, चाशनी पानीमें डूब जाय और फैले नहीं—तब चाशनीको नीचे उतार कर, उसमें चूर्ण डाल दो और अच्छी तरह मिलाकर गोलियाँ बना लो। मोदक या गोलियाँ बन जाने पर, उन्हें घीके या चीनी-मिट्टीके बर्तनमें रखदो।

नोट—कभी-कभी चाशनीके आगपर रहते हुए ही उसमें चूर्ण डाल दिया जाता है और नीचे उतार कर मोदक बनाये जाते हैं।

गुग्गुल पाक।

त्रिफलाके काढ़ेमें गूगलको गलाकर छान लो और उसे फिर पका कर जिसमें मिलाना हो मिलाओ। इस तरह गूगल शुद्ध हो जाता है। अथवा गायके दूध या त्रिफलाके काढ़ेमें गूगलको पकाकर छान लो। फिर उसे धूपमें सुखाकर उसमें घी मिला दो। इस तरह भी गूगल शुद्ध हो जाता है। अगर गूगलको आगमें पकानेको लिखा हो, तो पकाना चाहिये; नहीं तो चूर्ण वग़ैरः के साथ मिला लेना चाहिये।

नोट—गूगल शोधनेकी विधि बहुत अच्छी तरह समझाकर "चिकित्सा-चन्द्रोदय" चौथे भागके पृष्ठ ७५ में लिखी है।

तेल और घी पकानेकी तरकीबें।

तिलीके तेलको मूर्च्छित करनेकी विधि।

तेलको पकानेसे पहले उसे मूर्च्छित कर लेना चाहिये। अगर तिलके तेलको मूर्च्छित करना हो, तो तेलको लोहेकी या क़लईदार कढ़ाहीमें डालकर, कढ़ाहीको चूल्हेपर रख दो और नीचेसे मन्दी-

मन्दी आग लगाओ। जब तेलमें झाग आने बन्द हो जायँ, कढ़ाही को नीचे उतार लो और तेलको शीतल होने दो।

कुछ शीतल होनेपर, उसमें हल्दीका पानी, फिर मँजीठ और उसके बाद क्रमशः लोध, नागरमोथा, नालुका, आमले, बहेड़ा, हरड़, केवड़ेके फूल, बड़की सोर और नेत्रवाला पीसकर मिला दो। ऊपरसे तेलसे चौगुना पानी डाल दो और मन्दाग्निसे पकाओ। जब थोड़ा-सा पानी रह जाय, उतार कर रख दो और सात दिन तक मत छेड़ो। इसके बाद जब कोई तेल पकाना हो, तेलको छानकर ले लो और यथाविधि पकाओ। इस क्रियासे तेल मूर्च्छित हो गया।

नोट—चार सेर तिलीका तेल लिया हो, तो मँजीठ पाव-भर और बाक़ीकी हल्दी आदि दवाएँ छटाँक-छटाँक भर लो। हल्दीको पानीमें घोलकर तेलमें पहले ही मिला दो। इसके बाद पिसा हुआ मँजीठ मिला दो और मँजीठके बाद क्रमशः लोध प्रभृति मिला दो।

वातनाशक तेलमें एक ख़ास बात।

अगर वात नाशक तेल बनाना हो, तो मूर्च्छित तेलके आठवें-आठवें भाग आम, जामुन, कैथ और बड़े नीबूके पत्ते ले लो। जितने पत्ते हों, उनसे चौगुना पानी मिलाकर पत्तोंको औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, पानीको छान लो। इस काढ़ेको पहलेके मूर्च्छित किये हुए तेलमें मिलाकर औटाओ। जब थोड़ा-सा पानी रह जाय तेलको उतार लो। यह तेल वातनाशक तेल पकानेके लिये उत्तम है।

नोट—जब वातनाशक तेल पकाना होता है, तब पहलेके मूर्च्छित किये हुए तिलके तेलको आम-जामुन आदिके पत्तोंके काढ़ेके साथ फिर पकाते हैं, तब वह तेल वातनाशक दवाओंके साथ पकने लायक होता है। वातनाशक तेल पहले हल्दी और मँजीठ आदिके साथ पकाया जाता है, इसके बाद आम-जामुन आदि के काढ़ेके साथ पकाया जाता है। दो बार इस तरह पका लेनेपर तीसरी बार वात नाशक दवाओंके साथ पकाया जाता है। तीन बार पकनेपर वातनाशक तेल

उत्तम बनता है। और तेल (सिवाय वातनाशक तेलके) दो बार ही पकते हैं। एक बार मूर्च्छित होते हैं और दूसरी बार जिन दवाओंके काढ़े वगैरः के साथ पकाने होते हैं पकाये जाते हैं। वातनाशक तेल ही तीन वार आग पर रखे जाते हैं। यह भी याद रखो, कि तिलीके तेलके मूर्च्छित करनेकी और दवाएँ हैं तथा सरसोंके तेल और रैंडीके तेल वगैरः की और हैं।

सरसोंका तेल मूर्च्छित करने की विधि।

सरसोंके तेलको मूर्च्छित करना हो, तो यथाक्रम हल्दी, मँजीठ, आमले, नागरमोथा, बेलकी छाल, अनारकी छाल, नागकेशर, काला-जीरा, नेत्रवाला, नालुका और बहेड़ा—इन सबको पीसकर तेलमें मिला दो और तेलसे चौगुना पानी ऊपरसे डाल दो और पकाओ। जब थोड़ा पानी रह जाय, तेलको उतार लो।

नोट—चार सेर सरसोंके तेलमें मँजीठ पाव भर और बाकी हल्दी प्रभृति दवाएँ दो-दो तोले डालनी चाहियें।

रैंडीका तेल मूर्च्छित करनेकी विधि।

रैंडीके तेलको मूर्च्छित करना हो, तो मँजीठ, नागरमोथा, धनिया, त्रिफला, जयन्तीके पत्ते, बन-खजूर, बड़की सोर, हल्दी, दारुहल्दी, नालुका, केवड़ेका फूल, दही और काँजी—इन सब चीजों और पानीको तेलमें डालकर तेलको पका लो। मँजीठ पाव-भर लो और बाक़ी चीजें चार-चार तोले लो।

घीको मूर्च्छित करनेकी विधि।

अगर घीको मूर्च्छित करना हो, तो पहले घीको आगपर चढ़ाकर मन्दाग्निसे पकाओ; जब झाग उठने बन्द हो जायँ नीचे उतार लो। जब घी कुछ शीतल हो जाय, उसमें पहले हल्दीका पानी, फिर नीबूका रस और उसके भी बाद पिसी हुई हरड़, आमले, बहेड़े और नागर-मोथा डालो। ये सब दवाएँ चार सेर तेलमें कुल मिलाकर आठ तोले होनी चाहियें और पानी तेलकी तरह चौगुना डालना चाहिये। जब पकते-पकते थोड़ा पानी रह जाय, घी को उतारकर रख देना चाहिये।

तेल और घी पकानेकी विधि।

तेल और घी—कल्क और काढ़े अथवा दूध, मूत्रादि पतले पदार्थों के साथ पकाये जाते हैं। जब पतले पदार्थ जलकर तेल या घी मात्र रह जाते हैं, तब तेल और घीको पका हुआ समझते हैं। जैसे—पाव भर दवाओंकी पिसी लुगदी, सेर भर तेल और चार सेर दवाओंका काढ़ा इन तीनोंको मिलाकर आगपर पकाओ। जब काढ़ा जलकर तेल मात्र रह जाय उतारकर छान लो। यही साधारण विधि है।

पर शास्त्रमें अनेक स्थलोंमें तेलकी तोल लिखी रहती है, पर लुगदी या कल्ककी तोल नहीं लिखी रहती; काढ़ेकी दवाएँ लिखी रहती हैं, पर कितना काढ़ा होना चाहिये, यह नहीं लिखा रहता। कहीं तेल या घी और लुगदीकी दवाएँ लिखी रहती हैं, पर पतली चीजका नाम नहीं लिखा रहता। ऐसे मौक़ोंपर अनजान आदमी चकराता है। इसके लिए शास्त्रमें नियम हैं। उन्हें तेल और घी वगैरः चिकने पदार्थ पकाने वालोंको जानना चाहिये। हमने तो हर जगह तेल, कल्क और काढ़े आदिका वजन वगैरः लिख दिया है। फिर भी कहीं भूलसे हमने न लिखा हो, इसलिये नियम बतलाये देते हैं:—

(१) कल्क या लुगदीकी दवाओंके वजनसे चौगुना घी या तेल लेना चाहिये। तेल-घीसे चौगुने काढ़े, दूध और गोमूत्रादि लेने चाहियें। जैसे—पाव-भर लुगदी या कल्क हो, तो एक सेर तेल या घी और चार सेर काढ़ा या गोमूत्र आदि पतले पदार्थ लेने चाहियें।

(२) दूध, दही, स्वरस अथवा माठा डालकर तेल और घी आदि पकाने हों, तो तेल या घी का आठवाँ भाग कल्क होना चाहिये; यानी एक सेर तेल हो, तो आध पाव कल्क या लुगदी होनी चाहिये। यह भी नियम है और वह भी नियम है। ऊपर पाव-भर कल्क और सेर भर तेल-घीका नियम है और यहाँ आध पाव कल्क और सेरभर तेल-घीका नियम है। पर ख़ास बात यह है, कि अगर तेल-घी—दूध, दही,

स्वरस या माठा डाल कर पकाने हों। अगर काढ़ा डालकर पकाने हों, तो कल्क तेलका चौथाई ही रहना चाहिये।

नोट—काढ़ेसे तेल या घी चौथाई लेने चाहियें अथवा तेल या घीसे काढ़ा चौगुना होना चाहिये। काढ़ा चार सेर हो, तो तेल या घी एक सेर होने चाहियें अथवा तेल या घी एक सेर हों तो काढ़ा चार सेर होना चाहिये।

(३) अगर तेल या घी पकानेके लिये काढ़ा पकाना हो, तो काढ़ेकी दवाओंमें उनसे चौगुना पानी डालकर उन्हें पकाना चाहिये। और जब चौथाई पानी रह जाय, काढ़ेको उतार कर छान लेना चाहिये। इस काढ़ेके साथ घी या तेल मिला कर औटाना चाहिये। जब तेल या घी मात्र बाक़ी रह जाय, उतार कर तेल या घीको छान लेना चाहिये। तेल या घी एक सेर हो तो काढ़ा चार सेर होना चाहिये।

नोट—गिलोय वगैरः नर्म दवाओंका काढ़ा पकाना हो, तो दवाओंसे चौगुना पानी डालकर काढ़ा पकाना चाहिये; किन्तु अमलताश आदि सख़्त दवाओंमें अथवा दशमूल आदि मध्यम दवाओंमें अठगुना पानी डालकर काढ़ा पकाना चाहिये। पञ्चाख प्रभृति बहुत ही कड़ी दवाओंका काढ़ा पकाना हो, तो सोलह गुना पानी डालकर काढ़ा पकाना चाहिये, यह शास्त्रका नियम है। पर आजकल लोग इन नियमोंका पालन बहुत कम करते हैं। बंगालके नामी-नामी कविराज चौगुना या पँचगुना पानी डालकर काढ़ा पका लेते हैं और चौथाई रहने पर छान लेते हैं। फिर भी विचारके साथ काम करना उत्तम है। जितना ही ज़ियादा काढ़ा पकेगा, उतना ही अच्छा होगा। यह बात साधारण आदमी भी समझ सकता है। काढ़ेकी सभी दवाओंको अठगुने पानीमें पकाना और चौथाई रहने पर उतार लेना सबसे अच्छा नियम है। यह बीचका नियम है। जैसे,—आठ सेर काढ़ेकी दवाको ६४ सेर पानीमें औटाओ, जब सोलह सेर पानी रह जाय छान लो।

(४) अगर किसी तेल या घीमें कल्क या लुगदीकी दवाओंका जिक्र न हो, तो उस तेल या घीको काढ़े और दूध आदिके साथ अथवा केवल काढ़ेके साथ पकाना चाहिये।

(५) बहुत बार तेल और घी काढ़ेके साथ पकाये जानेके बाद

दूध, दही, काँजी, गोमूत्र और स्वरस आदिके साथ फिर पकाये जाते हैं। अगर ऐसा हो, तो पहले काढ़ेके साथ पकाकर, फिर दूध, दही आदि जिसके साथ पकाना हो पकाने चाहियें। अगर कहीं दूध, दही आदि कितने लेने चाहियें—यह बात न लिखी हो, तो इनको घी या तेलके बराबर लेना चाहिये; बशर्ते कि ये पाँचसे अधिक हों। जैसे किसी तेलको काढ़े, दूध, गोमूत्र और काँजीके साथ पकाना हो, तो काढ़ा तेलसे चौगुना और दूध वगैरः तेलके समान लेने चाहियें। मसलन् एक सेर तेल पकाना हो, तो काढ़ा चार सेर, दूध एक सेर, काँजी १ सेर, गोमूत्र १ सेर इत्यादि।

नोट—यह भी क़ायदा है, कि अगर दूध, गोमूत्र, काँजी आदि पदार्थ गिन्तीमें पाँचसे ज़ियादा हों, तब तो ये तेल और घीके बराबर लिये जायँ, लेकिन यदि ये पाँचसे कम हों—दो, तीन या चार हों—तो इनको तेल और घीसे चौगुना लेना चाहिये।

(६) कहीं तेलके साथ काढ़े वगैरः पतले पदार्थोंके साथ पकानेकी बात न लिखी हो, केवल दूधके साथ पकानेकी बात लिखी हो, तो दूध तेलसे चौगुना लेना चाहिये—नं० ५ नियमके अनुसार तेल या घीके समान न लेना चाहिये।

(७) अगर कहीं कल्कका जिक्र तो हो, पर पतले पदार्थका उल्लेख न हो, तो उस जगह तेल या घीसे चौगुना "पानी" लेना चाहिये। जैसे,—एक सेर कल्क, चार सेर तेल या घी और सोलह सेर पानी मिलाकर तेल पकाना चाहिये।

(८) अगर कहीं तेल वगैरः फूलोंके कल्कके साथ पकानेको लिखा हो, तो तेल या घीका चौगुना पानी डालना चाहिये और फूलोंका कल्क तेल या घीका आठवाँ भाग डालना चाहिये।

नोट—यह भी क़ायदा है, कि अगर काढ़ेके साथ घी या तेल पकाने हों, तो उसमें घी या तेलका छठा भाग कल्क डालना चाहिये। अगर मांस-रसके साथ घी या तेल पकाने हों, तो घी या तेलका आठवाँ भाग कल्क डालना चाहिये।

गन्धपाक विधि।

बहुतसे तेल गन्ध पाक करनेसे उत्तम होते हैं। गन्धपाककी चाल बंगालमें बहुत है और अच्छी चाल है; अतः हम "गन्धपाक-विधि" लिखते हैं:—

कूट, नालुका, खसकी जड़, जटामासी, तेजपात, जायफल, शीतल-चीनी, दालचीनी, लता कस्तूरी, बच, अगर, मोथा, गठिवन, धूप—सरल, गुन्द बरोसा, लौंग, गन्धमात्रा, शिलारस, सोवा, मेथी, नागर-मोथा, कचूर, जावित्री, देवदारु और जीरा—इन सबको पानीके साथ सिलपर पीसकर, चौगुने पानीमें औटाओ। जब चौथाई पानी रहे छान लो। इस पानीके साथ तेल को पकाओ। पकते समय तेलमें "खटासी" डालो। जब वह पककर गल जाय, निकाल लो। जब तेलका पाक हो जाय, पानी जल जाय, नीचे उतार लो। तब उसमें छरीला, कुंकुम, नखी, इलायची, सफेद चन्दन, कस्तूरी और कपूर—इन सब को डाल दो। फिर पाँच दिन तक तेलको मत छेड़ो। छठे दिन तेलको छान कर बोतलोंमें रख लो।

नोटः—घीका गन्ध पाक नहीं होता।

दवा सेवन करनेके समय।

रोग और रोगीकी अवस्थानुसार भिन्न-भिन्न समयोंमें दवा सेवन करायी जाती है:—

पित्त और कफके रोगमें तथा विरेचन आदि संशोधनके लिए सवेरेके समय दवा लेनी चाहिए।

अपान वायु दूषित हो, तो भोजनसे पहले; समान वायुका कोप हो तो भोजनके बीचमें यानी भोजन करते समय; व्यान वायु कुपित हो, तो भोजनके बाद; उदान वायुके कोपमें सन्ध्या समय—भोजनके

साथ और प्राण वायुके कोपमें सन्ध्या समय भोजनके बाद औषधि सेवन करनी चाहिये।

हिचकी, आक्षेपवात और कम्प रोगोंमें भोजनसे पहले और पीछे दवा सेवन करनी चाहिये।

अग्निमांद्य और अरुचिमें भोजनके साथ दवा खानी चाहिये।

प्यास, वमन, हिचकी, श्वास और विष रोगमें बारम्बार दवा सेवन करनी चाहिये।

साधारणतया प्रायः सभी औषधियाँ सवेरे ही सेवन करानेकी चाल है, पर यदि दो तीन दवायें रोज सेवन करनी हों, तो विचार-पूर्वक कोई सवेरे, कोई उसके दो तीन घण्टे बाद, कोई दोपहरको और कोई तीसरे पहर या शामके समय सेवन करानी चाहिये।

नोट—दवा खानेके समयोंके सम्बन्धमें विशेष जाननेके लिये "चिकित्सा-चन्द्रोदय" दूसरे भागके पृष्ठ १३१-१३३ देखिये।

अनुपान-विधि।

अनेक दवाएँ सेवन करनेके बाद कोई पतला पदार्थ पीते हैं, इसी को "अनुपान" कहते हैं। लेकिन आजकल "शहद" वगैरः जिस भी पतले पदार्थमें दवाको मिलाकर खाते हैं, उसे ही "अनुपान" कहते हैं। अनुपानके साथ दवा सेवन करनेसे दवा जल्दी अपना काम करती है, अतः प्रायः सभी दवाओंको अनुपानके साथ सेवन कराना चाहिये।

जिस रोगको नाश करनेवाली दवा हो, उसी रोगको नाश करने-वाला अनुपान भी होना चाहिये।

शीतल जल, गरम जल, आसव, मदिरा—शराब, यूष, काँजी, दूध, स्वरस वगैरः इनमें से जो रोगीके लिए मुफीद हो, उसीको अनु-पान रूपसे देना चाहिये।

संसारको जन्मसे मरण तक पानी हितकारी है। सारे रस पानीसे ही तैयार होते हैं, इसलिये किसी भी अनुपानमें पानीकी मनाही नहीं है। मतलब यह कि स्वच्छ साफ पानी सभी अनुपानोंमें उत्तम है। कहा है—तोयं वा सर्वत्रेति; अर्थात् सर्वत्र जलका अनुपान ही श्रेष्ठ है।

वातादि रोगोंमें अनुपान।

वात रोगमें चिकना और गरम; कफ रोगमें गरम और रूखा तथा पित्त रोगमें शीतल और मीठा अनुपान हित है।

वात और कफके रोगमें गरम पानी तथा पित्त और रक्तके रोगमें शीतल जल पथ्य है।

ज्वरमें अनुपान।

वात ज्वरमें—शहद, गिलोयका स्वरस और चिरायतेके भिगोये पानी आदिका अनुपान पथ्य है।

पित्त ज्वरमें—परवलके पत्तोंका रस, पित्तपापड़ेका रस या काढ़ा, गिलोयका स्वरस और नीमकी छालका रस या काढ़ा अनुपान रूपसे पथ्य है।

कफ ज्वरमें—शहद, पानका रस, अदरखका रस और तुलसीके पत्तोंका रस अनुपान रूपसे पथ्य है।

विषमज्वरमें अनुपान।

विषम ज्वरमें—शहद, पीपरका चूर्ण, तुलसीके पत्तोंका रस, हारसिंघारके पत्तोंका रस, बेलके पत्तोंका रस एवं काली मिर्चका चूर्ण आदि अनुपान रूपसे पथ्य हैं।

अतिसारमें अनुपान।

अतिसार रोगमें बेलकी छाल, कुड़ेकी छाल और धायके फूल—इनका अनुपान देना चाहिये।

श्वास, खाँसीमें अनुपान।

खाँसी, कफ प्रधान श्वास और जुकाममें—अड़ूसेके पत्ते, तुलसीके पत्ते, पान और अदरखका रस, अड़ूसेकी छाल, बभनेटी, मुलेठी, कटेली, कायफल और कूट आदिका काढ़ा एवं बच, तालीसपत्र, पीपर, काकड़ासिंगी और वंसलोचन आदिका चूर्ण अनुपानके तौरपर दिये जा सकते हैं।

वात प्रधान श्वासमें—शहद, बहेड़ेका काढ़ा या बहेड़ेके बीजों का चूर्ण अनुपान रूपमें दे सकते हैं।

रक्तभेद, रक्तवमन और रक्तस्रावमें अनुपान।

खून गिरने या खूनकी कय होने वगैरः में—अड़ूसेके पत्तोंका स्वरस, अनारके पत्तोंका रस, दूबका रस, कुड़ेकी छालका काढ़ा, मोचरसका चूर्ण, विशल्यकरणीका रस या काढ़ा या बकरीका दूध अनुपानके तौर पर देना चाहिये।

शोथ रोग या सूजनमें अनुपान।

बेलके पत्तोंका रस, सफेद पुनर्नवेका रस या काढ़ा, सूखी मूली का काढ़ा और काली मिर्चका चूर्ण वगैरः अनुपान रूपमें दे सकते हैं।

पाण्डु और कामलामें अनुपान।

पाण्डु और कामला अथवा पीलियामें पित्तपापड़ेका रस या गिलोयका रस आदि अनुपान रूपसे देने चाहियें।

दस्त करानेके लिये अनुपान।

निशोथका चूर्ण, दन्तीकी जड़का चूर्ण, सनायका काढ़ा या सनाय-भिगोया जल, गरम दूध, कुटकीका काढ़ा या हरड़-भिगोया पानी अनुपानके तौरपर दे सकते हैं।

पेशाब करानेके लिए अनुपान।

पेशाब करानेके लिये पत्थरचूरके पत्तोंका स्वरस, शोरा-भिगोया

पानी, शीतल मिर्चोंका चूर्ण, गोखरूके बीजोंका चूर्ण, खसकी जड़का काढ़ा या काली ऊखकी जड़का काढ़ा अनुपानके तौरपर दे सकते हैं।

बहुमूत्र नाश करनेके लिये अनुपान।

बहुमूत्र रोग नाश करनेके लिये गूलरके बीजोंका चूर्ण, जामुनके बीजोंका चूर्ण, मोचरस, कच्ची हल्दीका रस, आमलोंका स्वरस, सेमलके नये मूसलेका रस, दारुहल्दीका चूर्ण, मँजीठ और असगन्धका काढ़ा, घिसा हुआ सफेद चन्दन, कदमकी छालका स्वरस और गोंद भिगोया हुआ पानी अनुपानके तौरपर दे सकते हैं।

प्रदर रोग नाशार्थ अनुपान।

प्रदर रोगमें अशोककी छालका काढ़ा या गिलोयका रस वगैरः अनुपान रूपसे देना चाहिये।

मन्दाग्नि रोगमें अनुपान।

मन्दाग्नि नाश करनेको अजवायन, अजमोद और सौंफका भिगोया पानी, या पीपल, पीपरामूल, कालीमिर्च, चव्य, सोंठ और हींगका चूर्ण—इनमेंसे किसीको अनुपानके तौरपर दे सकते हैं।

वमन रोगमें अनुपान।

वमन रोगमें बड़ी इलायचीका काढ़ा या चूर्ण अनुपान रूपसे दे सकते हैं।

वात रोगोंमें अनुपान।

वात रोगोंमें त्रिफलेका भिगोया पानी, शतावरका रस या बरियारेका काढ़ा इनमेंसे कोई अनुपानके तौरपर दे सकते हैं।

वीर्यवृद्धिके लिये अनुपान।

वीर्यवृद्धि और शरीर पुष्टिके लिये मलाई, मक्खन, दूध, विदारीकन्द,

असगन्ध, कौंचके बीज, सेमरके मूसलेका रस आदि अनुपानके तौर पर दे सकते हैं।

गिलोयके अनुपान।

घीके साथ गिलोय सेवन करनेसे वात रोग नाश हो जाते हैं।
गुड़के साथ गिलोय खानेसे मलकी रुकावट नाश हो जाती है।
मिश्रीके साथ गिलोय पित्तको नाश करती है।
शहदके साथ गिलोय कफको नाश करती है।
रैंडीके तेलके साथ गिलोय वातरक्तको नाश करती है।
सौंठके साथ गिलोय आमवातको नाश करती है।

शहदके साथ गिलोयका स्वरस कामला या कमल पीलियाको नाश करता है। इतना ही नहीं, गिलोयका स्वरस शहदके साथ खानेसे बीसों तरहके प्रमेह नाश कर देता है।

गिलोयका काढ़ा छोटी पीपरोंके चूर्णके साथ पीनेसे कफज जीर्ण ज्वरको नाश करता है।

गिलोयके काढ़ेमें घी औटाना चाहिये, जब "घी" मात्र रह जाय छान लेना चाहिये। इस घीके सेवन करनेसे वातरक्त और कोढ़ नाश हो जाते हैं।

गिलोयका १० माशे स्वरस, एक माशे शहद और १ माशे सैंधानोन इनको मिलाकर खरल करो। इसको नेत्रोंमें लगानेसे पिल्लार्म, तिमिर, दिनौंधी, काँचबिन्दु, खुजली, लिंगनाश और नेत्रके सफेद और काले भागके सब रोग आराम हो जाते हैं।

त्रिफलेके अनुपान।

त्रिफलेके चूर्णको नित्य रातको शहद और घीके साथ खानेसे समस्त नेत्र रोग आराम हो जाते हैं।

त्रिफलेका काढ़ा गोमूत्रके साथ पीनेसे बादी और कफसे उत्पन्न हुई फोतोंकी सूजन भी दूर हो जाती है।

त्रिफलेका काढ़ा शहदके साथ पीनेसे मेदवृद्धि नाश हो जाती है।

नोट—गरम पानी शीतल करके और उसमें शहद मिलाकर पीनेसे भी मेदवृद्धि नाश हो जाती है।

त्रिफलेके काढ़ेको बहेड़ेकी मींगी, मिश्री और शहदके साथ पीनेसे रक्तपित्त, दाह और पित्त शूल आराम हो जाते हैं।

त्रिफलेके काढ़ेको केवल शहदके साथ सेवन करनेसे कामला नाश हो जाता है।

त्रिफलेका चूर्ण—शहद, घी और कान्तिसार इन तीनोंके साथ, नित्य रातको, खानेसे पुरुष चिड़ेके समान मैथुन करने लगता है; यानी मैथुनसे थकता नहीं।

निर्गुण्डीके अनुपान।

निर्गुण्डीका चूर्ण गोमूत्रके साथ सेवन करनेसे कोढ़ नाश हो जाता है।

निर्गुण्डीका चूर्ण घीके साथ खानेसे दुबला-पतला और कमज़ोर आदमी खूब ताक़तवर हो जाता है।

निर्गुण्डीका चूर्ण गरम पानीके साथ खानेसे मनुष्य रोगरहित हो जाता है।

निर्गुण्डीकी जड़ घरमें रखनेसे साँप घरमें नहीं आता।

भाँगरेके अनुपान।

भाँगरेके पत्तोंका रस काले जीरेके चूर्ण अथवा तेलके साथ पीनेसे मनुष्य बुढ़ापेमें भी जवान हो जाता है।

भाँगरेके पत्तोंका रस गिलोयके रसके साथ एक महीना सेवन करनेसे समस्त रोग नाश हो जाते हैं।

मृत्युञ्जय रसके अनुपान।

सब तरहके ज्वरोंमें	....	....	शहदके साथ।
वातज्वरमें	....	....	दहीके पानीके साथ।
भयंकर सन्निपातमें	....	....	अदरखके रसके साथ।
अजीर्णज्वरमें	....	....	जम्बीरद्रावके साथ।
विषमज्वरमें	....	....	जीरे और गुड़के साथ।

वसन्त कुसुमाकर रसके अनुपान।

समस्त क्षय रोगोंमें	....	शिलाजीत, मिर्च और शहदके साथ।
सब तरहके प्रमेहोंमें	....	हल्दी, शहद और मिश्रीके साथ।
हर्ष, पुष्टि और कामवृद्धिको		त्रिजात,गजपीपल और चन्दनके साथ।
वमनमें	....	शंखाहूलीके रसके साथ।
अम्लपित्तमें	....	शतावरके रस,मिश्री और मधुके साथ।
भयंकर रक्तपित्तमें	....	मिश्री और चन्दनके काढ़ेके साथ।

लोकनाथ रसके अनुपान।

ज्वरमें	....	धनिया और गुर्चके काढ़ेके साथ।	
रक्तपित्तमें	....	शहद और मिश्री मिले अड़ूसेके काढ़ेके साथ।	
कफ रोगमें	....	,,	,,
श्वासमें	....	,,	,,
खाँसीमें	....	,,	,,
स्वरभंगमें	....	,,	,,
निद्रानाशमें	....	शहदमें मिली हुई सिकी भाँगके साथ।	
अतिसारमें	....	,,	,,
संग्रहणीमें	....	,,	,,
मन्दाग्निमें	....	,,	,,

शूलमें .... संचरनोन, हरड़ और पीपरके चूर्ण एवं गरम जलके साथ।
अजीर्णमें .... „ „
प्लीहोदरमें .... अनारके फूलके रसके साथ।
वातरक्तमें .... „ „
वमनमें .... „ „
गुदांकुरमें .... „ „
नकसीरमें .... „ „
नकसीरमें .... दूबके रस और चीनीमें मिलाकर सुँघाओ।
वमनमें .... शहदमें मिलाकर खिलाओ।
हिचकीमें .... „ „

नोट—जो अनुपान लोकनाथ र हैं वे ही पोटली रस, मृगांक, हेमगर्भ और मौक्तिक रसके हैं।

स्वर्णमालिनी वसन्तके अनुपान।

जीर्णज्वर .... छोटी पीपर और शहदके साथ।
धातुगतज्वरमें .... „ „
रक्तातिसारमें .... „ „
रक्तज नेत्र रोगमें .... „ „
पित्तज सब रोगोंमें .... „ „
गर्भिणीके ज्वरमें जयन्ती के फूलोंके साथ।

शिलाजीतके अनुपान।

मूत्रकृच्छ्रमें .... छोटी इलायची और पीपरके साथ।
मूत्ररोधमें .... „ „
प्रमेहमें .... „ „
क्षयीमें .... „ „

रससिन्दूरके अनुपान ।

वातरोगमें ... पीपर और शहदके साथ ।

कफरोगमें ... त्रिकुटा और चीतेके चूर्णके साथ ।

पित्तरोगमें ... शिलाजीत, मिश्री और कपूरके साथ ।

व्रणरोगमें ... त्रिफला और गूगलके साथ ।

पुष्टिके लिये—चतुर्जात अथवा त्रिफला और सेमरके मूसलेके साथ ।

गंधकके अनुपान ।

नेत्रज्योतिवृद्धिको—४ माशे गंधक त्रिफला, घी और भांगरेके रसमें ।

दीर्घायुको ... " " "

वीर्यवृद्धिको ... ... ४ माशे गंधक दूधके साथ ।

निर्बलता नाश करनेको ... ... चीतेके साथ ।

चमड़ेके दोषोंको ... ... मोचफलके साथ ।

खाँसी और श्वास नाश करनेको ...अड़ूसेके काढ़ेके साथ ।

मन्दाग्नि नाश करनेको ... ...त्रिफलेके काढ़ेके साथ ।

शरीरके ऊपरी भागके रोगोंको ... " "

अनुपान की दवाओंका वज़न ।

काढ़ा या दवाका भिगोया हुआ पानी पाँच तोले, स्वरस दो तोले या एक तोले और चूर्ण एक माशे या आधा माशे अनुपानमें देना चाहिये । चूर्णमें शहदका अनुपान हो, तो उपयुक्त मात्रामें देना चाहिये । पित्तकी अधिकताके सिवाय और सब हालतोंमें शहद देना चाहिये । गूगल, मोदक और गुड़ वगैरः दवाएँ अवस्था विशेषके अनुसार गरम जल, शीतल जल या गरम दूधके साथ देनी चाहियें । दवाओंसे बने घीको छटाँक भर गरम दूध और तीन माशे चीनीके साथ खाना चाहिये ।

रसादिक सेवनमें अनुपान ।

कोई रस या रसोंके योगसे बनी दवा अथवा मकरध्वज, अभ्रक,

बंग वगैरः सेवन करानी हों और अनुपानमें कपूर, जायफल, पीपर वगैरः का चूर्ण हो, तो ये एक-एक रत्ती देने चाहियें। शहद एक माशे देना चाहिये। अगर रस खिलाकर काढ़ा पिलाना हो, तो सूखी या हरी दवा एक तोले लेकर आध पाव पानीमें पकाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, शीतल करके छान लो और ३ माशे "शहद" मिलाकर पिलाओ। अगर गिलोय वगैरःका हिम अनुपानमें हो, तो एक तोले दवा लेकर आधी छटाँक पानीमें भिगो दो। सवेरे ही मल छानकर और "मिश्री" मिलाकर सेवन कराओ।

दवा सेवन करानेके क़ायदे।

दवा सेवन-विधि।

नये रोगमें सवेरे-शाम या चार-चार घण्टेके अन्तरसे दवा देनी चाहिये और दवाके एक घण्टे बाद पथ्य दे सकते हैं। तेज़ और प्राणनाशक अथवा मारात्मक रोगोंमें दो-दो घण्टे या एक-एक घण्टे पर दवा देनी चाहिये।

पुराने रोगोंमें "चन्द्रोदय" आदि दवाओंके देनेसे अधिक लाभ होता है। पहले जड़ी बूटीसे बनी हुई दवा देनी चाहिये; क्योंकि आजकलके अधिकांश रोगी गरमी सोज़ाककी सनद पाये हुए होते हैं। ऐसे रोगियोंको एकाएकी बिना विचार किये रस दे देनेसे हानि होती है। हाँ, जब काष्ठादिककी बनी दवासे लाभ न दीखे, तब रस देना ही चाहिये। काष्ठादिक दवाओंकी अपेक्षा रस अपना फल जल्दी दिखाते हैं।

अगर चार दफा या दो दिन तक दवा देनेसे कोई लाभ नज़र न आवे, तो दूसरी दवा देनी चाहिये। कैसी ही उत्तम और परीक्षित दवा क्यों न हो, सभी को फायदा नहीं कर सकती। यही बात होती, तो एक-एक रोगकी हज़ारों दवाएँ मुनि लोग न ईजाद करते।

अगर एक ही रोगकी दवा सेवन करानी हो, तो दिनमें दो बार सवेरे-शाम सेवन करानी चाहिये।

अगर दो रोग एक साथ हों, तो सवेरेके समय प्रधान रोगकी दवा सेवन करानी चाहिये और शामको अप्रधान रोगकी अथवा सवेरे-शाम प्रधान रोगकी दवा और बीचमें दुःखदायी उपद्रवकी दवा देनी चाहिये।

कुछ पथ्य तैयार करनेकी विधि।

बारली या अरारूट।

बारली या अरारूट पकाने हों, तो इन्हें पहले गरम पानीमें खूब मिला लो। इसके बाद दूध और मिश्री मिलाकर पका लो।

साबूदाना।

अगर साबूदाना पकाना हो, तो पहले साबूदानेको बीन-चुनकर शीतल जलमें भिगो दो फिर गरम औटते हुए जलमें डाल दो और पकने दो। जब गल जाय—दाना अँगुलीसे पिस जाय, उसमें मिश्री वगैरः मिलाकर उतार लो। साबूदाना पानीमें भी पकाया जाता है और दूधमें भी।

आटेकी रोटी।

आटेको एक घण्टे तक गूँदकर भिगो रखो, फिर खूब गूँद कर एक गोलासा बना लो और औटते हुए जलमें उसे रखकर २० मिनट तक पकाओ। इसके बाद उसे निकालकर फिर गूँदो और पतली-पतली रोटियाँ बना लो। रोटियोंको ऐसी सेको, कि वे जलें भी नहीं और कच्ची भी न रहें। जब लाल-लाल चित्तियाँ पड़ जायँ, रोटीको तवेसे उतारकर कोयलोंमें फुला लो। ये रोटियाँ हर किसीको हज़म हो जाती हैं। इनके खानेसे बदहज़मीका ज़रा भी डर नहीं।

मूंग-मसूरका जूस।

मूँग या मसूर जिसका जूस बनाना हो, उसमें नमक और मसाला बहुत कम मिलाओ। रोगीके लिये एकाध तेजपातका पत्ता, ५।७ कालीमिर्च और ज़रासा पिसा हुआ धनिया ही काफी मसाला है।

नोट—यूस वगैर की विधि "चिकित्सा-चन्द्रोदय" दूसरे भागमें देखिये।

मानमण्ड।

मानकन्दका चूर्ण दो भाग और चाँवलोंका आटा एक भाग उन्नीस गुने पानीमें औटाओ। फिर माँडको निकाल लो। यही मानमण्ड है।

लाजामण्ड।

ताज़ा धानकी खीलें लाकर थोड़ेसे गरम जलमें थोड़ी देर तक भिगो रखो। फिर खूब मसलकर कपड़ेमें छान लो। जो माँड़-जैसा पदार्थ कपड़ेसे नीचे गिरे उसे ही लाजामण्ड या धानकी खीलोंका मण्ड समझो।

यवागू।

अधकचरे चाँवल या जौके चाँवलोंकी यवागू बनती है। मण्ड, पेया और लापसी तीन तरहकी यवागू होती हैं। चाँवलोंको १८ गुने पानीमें पकाकर कपड़ेमें छान लेनेसे सफेद पानीसा नीचे गिरता है। उसे "माँड" कहते हैं। चाँवलोंको ग्यारह गुने पानीमें पकानेसे "पेया" बनती है और नौ गुने पानीमें पकानेसे "लपसी" बनती है। यवागू जब पानीकी तरह पतली होती है, तब उसे पेया कहते हैं और जब वह गाढ़ी होती है "लपसी" कहते हैं। यह पेया और माँडकी तरह छानी नहीं जाती।

नोट—चिकित्सा-चन्द्रोदय दूसरे भागमें पेया वगैरः की अनेक विधियाँ खूब समझाकर लिखी हैं।

अन्नपथ्य।

लंघनोंके बाद यवागू वगैरः के बाद अन्न का पथ्य देना हो, तो चाँवलोंको पचगुने पानीमें पकाना चाहिये। चाँवलोंके खूब सीज जानेपर माँड निकाल देना चाहिये। यह भात रोगी खा सकता है।

कुछ विष-उपविषोंके शोधनेकी विधि।

मीठा विष।

विषके छोटे-छोटे टुकड़े करके, तीन दिन तक, गोमूत्र में भिगो रखो, विष शुद्ध हो जायगा। गोमूत्र हर सवेरे रोज़ ताज़ा बदलो। शेषमें उसकी छाल निकाल डालो।

नोट—सींगिया विष गोमूत्रमें भीगनेसे नर्म हो जाय, उसमें सुई घुसानेसे पार हो जाय, तब ठीक हुआ समझो। उसके टुकड़े करके सुखा लो और काममें लो।

जमालगोटा।

जयपालके बीजके बीचमें जो पतलीसी जिभली या पत्ता रहता है, उसे निकाल डालो। फिर दोलायन्त्रकी विधिसे बीजोंको दूधमें पका लो। जमालगोटा शुद्ध हो जायगा।

कुचला।

घीमें भून लेनेसे ही कुचला शुद्ध हो जाता है। अथवा मुलतानी घोले पानीमें पन्द्रह दिन तक कुचलेके बीज भिगो रखो। फिर एक दिन दूधमें और एक दिन गोमूत्रमें उबाल लो। फिर छीलकर टुकड़े कर लो। टुकड़े करते समय बीजके दोनों पर्त्त अलग कर दो। उन पत्तोंके बीचमें पानके आकारकी पत्तीसी निकले उसे फेंक दो। इन टुकड़ोंको गीले ही पीसकर सुखा लो।

धतूरेके बीज।

धतूरेके बीज कूटकर, गोमूत्रमें १२ घण्टे तक भिगो रखो। बस, वे शुद्ध हो जायँगे।

नौसादर।

नौसादरको गरम पानीमें घोंटकर, रेज़ीके कपड़ेमें छान लो और उस पानीको रखा रहने दो। बासनके पैंदेमें, पानीके शीतल होने पर, जो चीज़ जमी हुई दीखे, उसे शुद्ध नौसादर समझो।

भिलावे।

ईंटके चूर्णमें खूब घिसनेसे भिलावे शुद्ध हो जाते हैं। पका हुआ भिलावा जो पानीमें डूब जाय, वही अच्छा होता है।

नोट—भिलावेके फलोंको आग पर खूब लाल किये हुए ठीकरे पर डाल दो। गरमीके मारे तेल निकल जायगा और ये कामके योग्य हो जायँगे; क्योंकि भिलावेका ज़हर उसके तेलमें ही होता है। जहाँ तेल निकल गया कि ये शुद्ध हो गये। यह तरकीब आसान है, पर भिलावेका धूआँ शरीरमें लगनेसे शरीर सूज जाता है। अतः अगर इस तरकीबसे भिलावे शोधो तो, धूआँसे बिल्कुल बचना; नहीं तो एक व्याधि खड़ी हो जायगी। यदि गफ़लतसे धूआँ लग जाय और शरीर सूज जाय, तो सातवें भागमें "शोथ-चिकित्सा" में भिलावेकी सूजन नाश करनेके जो उपाय लिखे हैं उनसे काम लेना। धूआँसे बचनेके लिए ही लोग भिलावोंको ईंटके चूर्ण या कूकुएसे घिसकर शोधते हैं। अनेक वैद्य भिलावोंको भैंसके गोबरमें डालकर भी उबालते हैं; पर उसमें भी धूआँका कुछ भय रहता है।

हींग।

लोहेकी कढ़ाहीमें थोड़ा घी डालकर गरम करो, फिर उसमें हींग डालकर चलाओ। जब हींग लाल हो जाय, उसे शुद्ध समझो।

समन्दर फेन।

काग़ज़ी नीबूके रसमें समन्दरफेनको पीसो। बस, वह शुद्ध हो जायगा।

गेरू।

गायके दूधमें पीसने या गायके घीमें भून लेनेसे गेरू शुद्ध हो जाता है।

सुहागा और फिटकरी।

इन दोनोंको आगपर रखकर फुलाओ; जब खीलसी हो जायँ, शुद्ध समझो।

रसौत।

रसौतको बड़े नीबूके रसमें मिलाकर दिन भर धूपमें रखो, रसौत शुद्ध हो जायगी। अगर नीबू न मिले तो पानीमें घोलकर छान लो। इस तरह भी शुद्ध हो जायगी।

सिन्दूर।

दूध और नीबूके रसमें खरल करनेसे सिन्दूर शुद्ध हो जाता है।

शंख, सीप और कौड़ी।

शंख आदिको काँजीमें दोला यन्त्रकी विधिसे तीन घण्टे तक औटाओ, बस ये शुद्ध हो जायँगे।

नोट—अगर शंख वगैरः की भस्म करनी हो, तो इन्हें एक मिट्टीकी हाँडीमें रखो और हाँडीका मुँह बन्द करके, हाँडीको आगके बीचमें रख दो, भस्म हो जायगी।

शिलाजीत।

शिलाजीतको तीन घण्टे तक गरम जलमें भिगो रखो। फिर उसे कपड़ेमें होकर एक मिट्टीके बर्तनमे छान लो और धूपमें दिन-भर रखा रहने दो। सन्ध्या-समय पानीके ऊपर जो मलाई सी जमी देखो, उसे उतार-उतार कर दूसरे बर्त्तनमें रख लो। इसी तरह फिर उस पानीवाले बर्त्तनको दूसरे रोज धूपमें रखो। शामको, पहलेके मलाई वाले बर्त्तनमें फिर मलाई उतार कर रख लो। यह मलाई ही शुद्ध शिलाजीत है। इसे सुखाकर रख लेना चाहिये।

शिलाजीतको त्रिफलेके काढ़ेमें घोलकर धूपमें रख दो। ज्यों-ज्यों सूख-सूख कर मलाई सी जमे, उसे उतारते जाओ और सुखा लो। यह भी शुद्धिकी एक विधि है।

नोट—शिलाजीत शोधनेकी और भी अनेक विधियाँ हमने "चिकित्सा-चन्द्रोदय" चौथे भागके पृष्ठ ५०–५३ और ४०८–४०९ में लिखी हैं। ये सीधी तरकीब हैं इसीसे लिखी हैं।

मण्डूर।

सौ बरसके पुराने लोहेके मैलको आगपर सात बार तपा-तपाकर गोमूत्रमें बुझा दो। इसके बाद उसे पीसकर गजपुटमें फूँक दो। बस, वह कामका हो जायगा।

खपरिया।

दोला यंत्रकी विधिसे, सात दिन तक गोमूत्रके साथ औटानेसे खपरिया शुद्ध हो जाता है।

गंधक।

लोहेकी कलछीमें थोड़ा घी गरम करो। फिर उसमें गंधक पीस कर डाल दो। जब गंधक गलकर घीमें मिल जाय, उसे पानी मिले दूधमें डाल दो। फिर उसे दूधसे निकाल कर और साफ पानीसे धोकर सुखाल ो। इस तरह गंधक शुद्ध हो जायगी।

हरताल।

पहले हरतालको दोला यंत्रकी विधिसे सफेद कुम्हड़ेके रसमें औटाओ। इसके बाद चूनेके पानीमें औटाओ। उसके भी बाद तेल में औटाओ। तीनों ही बार, तीन-तीन घण्टे तक, दोला यंत्रकी विधिसे औटाओ।

वंसपत्र हरताल सात दिन तक चूनेके पानीके साथ खरल करने या भावना देनेसे शुद्ध हो जाती है।

हिंगुलसे पारा निकालना।

पहले हिंगलूको ३ घण्टे तक बड़े नीबूके रस या नीमके पत्तोंके रसमें खरल करो। फिर उसे एक हाँडीमें भर दो। उसके ऊपर दूसरी हाँडी औंधी रखकर, दोनोंके जोड़ोंपर पाँच सात कपड़-मिट्टी कर

दो। ऊपरवाली हाँडीपर मोटे कपड़ेकी आठ दस तह करके रख दो और उस कपड़ेको पानीसे तर कर दो। हाँडीको चूल्हेपर रख दो और नीचेसे आग देते रहो। जब ऊपरकी हाँडीका कपड़ा गरम हो जाय, उसपर शीतल पानी टपकाते रहो। इस तरह करनेसे हिंगुल से पारा निकल-निकल कर ऊपर वाली हाँडीमें लगता रहेगा। आठ घण्टे बाद उतार कर, ऊपरकी हाँडीसे पारा निकाल लो। यह पारा काले-काले मैले धूलेमें मिला होगा। पारेको कपड़ेमें होकर पाँच सात बार छान लो। यह पारा शुद्ध होता है और सब काममें बरता जा सकता है।

नोट—अगर यह हिंगुलसे निकाला हुआ पारा नीबूके रसमें दो-तीन घण्टे घोटकर पानीमें धो लिया जाय, तो बहुत ही विशुद्ध हो जाय। अगर नीबू न मिले तो इमलीके घोले हुए पानीमें भी खरल करनेसे काम चल जायगा।

भीमसेनी कपूर।

भीमसेनी कपूर बनानेकी विधि चिकित्सा-चन्द्रोदय चौथे भागके पृष्ठ ८७-८८ में लिखी है। जहाँ तक हो सके भीमसेनी कपूर ही बना लेना चाहिये। अगर न बन सके, तो कपूरके छोटे-छोटे टुकड़े करके एक तवे पर रखो और ऊपरसे एक गहरा कठोरा औंधा मार दो। कटोरे और तवेकी सन्धियोंको पानीमें सने हुए उड़दके आटेसे बन्द करदो। जब जोड़ सूख जायँ, तवेको आग पर चढ़ादो। थोड़ी देरमें कपूर उड़-उड़ कर कटोरे में जा लगेगा। यह कपूर शुद्ध होगा। शुद्ध कपूर या भीमसेनी कपूरकी जगह इसी कपूरको काममें लाना चाहिये।

मोती-मूँगा।

मोती और मूँगोंको तीन घण्टे तक चूनेके पानीमें औटाकर धो लो। फिर इनको अर्क़ गुलाबके साथ खूब घोटो। जितनीही जियादा घुटाई होगी, उतनेही ये अच्छे होंगे। यह सीधी शोधन-विधि है।

नोट—अगर शुद्ध मूँगोंको सफेद काँचके बर्तनमें भरकर ऊपरसे अर्क़ गुलाब

भर दोगे और उस बर्तनको चार दिनतक चन्द्रमाकी चाँदनीमें खुले मुँह रखोगे तो "चन्द्रसिद्धप्रवाल" तैयार हो जायगा।

सत्त।

अगर किसी चीजका सत्त निकालना हो, तो उसे गीली ही पीसकर पानीमें घोल दो और ऊपरका पानी निकालो। फिर पानी दो और निकालो; इस तरह बारम्बार करनेसे नीचे सफेद पदार्थ रह जाता है; वही "सत्त" है। अगर गिलोयका सत्त निकालना हो, तो इसी तरह निकाल लो। उसे गीली ही पीसकर पानीमें घोल दो और बारम्बार पानी डाल-डालकर धोओ। नीचे जो श्वेत पदार्थ रह जाय, उसे गिलोयका सत्त समझो।

संखिया।

संखियाके छोटे-छोटे टुकड़ोंको पोटलीमें बाँधकर, दोला यंत्रकी विधिसे, चूनेके पानीमें औटाओ। इसके बाद उनको गोमूत्रमें औटाओ। इस तरह दो चीजोंमें दो बार स्वेदन करने या औटानेसे संखिया शुद्ध हो जाता है।

मैनशिल।

मैनशिलके उत्तम रंगीन टुकड़ोंको तोड़कर अदरखके रसमें तीन घण्टे तक घोटो और सुखा लो। बस, मैनशिल शुद्ध हो जायगा।

नोट—अगर अदरख न मिले तो अगस्तके पत्तोंके रसमें मैनशिलको घोट कर सुखा लो। इस तरह भी मैनशिल शुद्ध हो जाता है।

अफीम।

अफीम अदरखके रसकी बारह भावना देनेसे शुद्ध हो जाती है। अथवा अफीमके छोटे-छोटे टुकड़े करके अदरखके रसमें घोल दो। फिर रसको कपड़ेमें छानकर सुखा लो। इस तरह भी अफीम शुद्ध हो जाती है।

क्षार या खार।

किसी चीज़को जलाकर, उससे उसके क्षार या ऐसिडको अलग करना ही क्षार बनाना है। कमोबेश खार या क्षार सभी तरहके काठों में पाया जाता है। अगर चिरचिरेका क्षार बनाना हो, तो चिरचिरे का पेड़ जड़से उखाड़ लाओ और सुखा लो। जब सूख जाय, उसमें आग लगा दो। जब राख हो जाय, उस राखको एक बासनमें राख से दूना पानी डालकर भिगो दो। छै घण्टे तक मत छेड़ो। इसके बाद उस राखके पानीको धीरे-धीरे नितारकर दूसरे बासनमें छान लो और उस राखको फैंक दो। फिर एक घण्टा होनेपर, उस साफ पानी को धीरेसे नितारकर कढ़ाहीमें छान दो और मन्दी आग लगने दो। जब सारा पानी जल जाय, यहाँ तक कि एक बूँद भी न रहे, कढ़ाही को नीचे उतार लो और उसमें जो पदार्थ लगा दीखे उसे चाकूसे छील-छीलकर उतार लो। बस, यही चिरचिरेका खार है। इसी तरकीबसे आप ढाकका क्षार, जवाखार, चनेका खार, मूलीका खार, केलेका खार, कटेरीका क्षार और इमलीका खार वगैरः तैयार कर सकते हैं।

नोट—इमलीका वृक्ष आप जड़से उखाड़कर जला नहीं सकते, अतः ऐसे-ऐसे भारी वृक्षोंकी पत्तियोंको ही जलाकर राख कर लो और ऊपरकी विधिसे क्षार बना लो।

संख्यावर्ग।

क्षारद्वय।

सज्जी और जवाखार, दोनोंको मिलाकर "क्षारद्वय" कहते हैं। ये मिले हुए भी गुल्म रोग नाशक हैं।

क्षारत्रय।

सज्जी, जवाखार और सुहागा—ये तीनों मिले हुए "क्षारत्रय" या "त्रिक्षार" कहाते हैं।

क्षारषट्क।

तिलोंकी नालका खार, कलिहारीका खार, उड़दका खार, चिरचिरेका खार, मोखेका खार और कुड़ेका खार—इनको "क्षारषट्क" कहते हैं। ये वात, गर्भ, गुल्म और रुधिर-विकार नाशक हैं।

द्विकटुक।

पीपल और कालीमिर्चको "द्विकटुक" कहते हैं।

त्रिकटु।

पीपर, मिर्च और सोंठको, "त्रिकटु" त्र्यूषण, व्योष और कटुत्रिक कहते हैं।

लवण त्रय।

सैंधानोन, विरिया संचर नोन और संचल नोन,—इन तीनोंको "लवणत्रय" कहते हैं। ये कफनाशक और पित्तवर्द्धक हैं।

लवण पंचक।

सैंधानोन, संचर या काला नोन, विरिया संचर नोन, औद्भिद नोन और समन्दर नोन,—इन पाँचोंको "लवणपंचक" कहते हैं। ये शोषक, रुचिकारक, मल अनुलोमक तथा वात, कफ और शूलनाशक होते हैं।

त्रिफला।

हरड़, बहेड़ा और आँवले—इनको समान-समान लेनेसे "त्रिफला" कहते हैं। इनको "फलत्रिक और वरा" भी कहते हैं।

नोट—किसी-किसीके मतसे एक हरड़, दो बहेड़ा और चार आमले मिले हुए को "त्रिफला" कहते हैं। त्रिफला कफपित्तनाशक, प्रमेहहारक, कुष्ठ निवारक, दस्तावर, नेत्रोंको हितकारी, अग्निप्रदीपक, रुचिकारी, विषमज्वर नाशक, मुखरोगनाशक, गलगण्ड निवारक, व्रणनाशक, अवस्था स्थापक, वीर्यवर्द्धक, किसी क़दर दस्तावर, नासूरनाशक, कण्डू-खुजली नाशक, मेधा और स्मरणशक्तिवर्द्धक, मेद रोगनाशक और व्रणपूरक तथा क्लेदनाशक है।

मधुर त्रिफला।

दाख, कुम्भेर और खजूर—इन तीनोंको "मधुर फलत्रय" कहते हैं। ये धातुवर्द्धक और कफवातनाशक हैं।

सुगन्ध त्रिफला।

जायफल, सुपारी और लौंग—इन तीनोंको "सुगन्ध त्रिफला" कहते हैं।

त्रिसुगन्धि।

दालचीनी, तेजपात और इलायची—इनको "त्रिसुगन्धि" कहते हैं। नोट—इन तीनोंमें "नागकेशर" मिली हो, तो "चतुर्जातक" कहते हैं।

त्रिसम।

हरड़, सोंठ और गुड़—इन तीनों एकत्र मिले हुओंको "त्रिसम" कहते है।

चतुर्जातक।

इलायची, दालचीनी, तेजपात और नागकेशर—इन चारों मिले हुओंको "चतुर्जातक" कहते हैं।

पंचकोल।

पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—ये पाँचों एकत्र मिले हुए "पञ्चकोल" कहाते हैं।

पंचत्वक्।

बड़, नदी बड़, गूलर, बैंत और पीपल,—इन पाँचोंकी एकत्र मिली हुई छालोंको "पञ्चत्वक् कहते हैं।

नोट—कोई-कोईके मतसे बड़, गूलर, पीपर, पारिस पीपर और पाखर—इन पाँचोंकी एकत्र मिली छालोंको "पंचत्वक" कहते हैं। इन पाँचों वृक्षोंके पत्तोंको "पंच पल्लव" कहते हैं।

पंचाङ्ग।

किसी एक वृक्षके पत्ते, फल, फूल, छाल और जड़—इन सबको एकत्र "पञ्चाङ्ग" कहते हैं।

लघु पंचमूल।

शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, कटाई, कटेरी और गोखरू—इन पाँचोंको "लघुपञ्चमूल" कहते हैं। ये न अत्यन्त गर्म और न अत्यन्त शीतल हैं।

बृहत् पंचमूल।

बेल, स्योनापाठा, कुम्भेर, पाढल और अरणी—ये पाँचों एकत्र मिले हुए "बृहत् पञ्चमूल" या "महत् पञ्चमूल" कहाते हैं। यह कफ-वात-नाशक, श्वास-खाँसी हरनेवाले, हल्के और अग्निदीपक हैं।

मध्यम पंचमूल।

खिरेंटी, पुनर्नवा, मुगवन, मषवन और अरण्ड—इन पाँचोंको मिलाकर "मध्यम पञ्चमूल" कहते हैं।

तृण पंचमूल।

शर, ईख, दाभ, काँस और नल—इन पाँचोंकी जड़को "तृण पञ्च-मूल" कहते हैं।

नोट—"चक्रदत्त" में लिखा है,—कुश, कांस, सरपता, दाभ और ईख—इन पाँचोंकी मूलको "तृण पंचमूल" कहते हैं।

अष्टवर्ग।

जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली और क्षीर-काकोली—इनको "अष्टवर्ग" कहते हैं।

जीवनीयगण।

अष्टवर्गकी दवाओंमें "जीवन्ती" और मिला देनेसे "जीवनीयगण" हो जाती है।

समाप्त

स्वास्थ्यरक्षा

पर

मौजी की मौज

श्रीमान् पण्डितवर महादेवसिंहजी शर्म्मा एम० ए० सम्पादक "मौजी" मौजीमें लिखते हैं :—

"स्वास्थ्य-रक्षा उर्फ़ तन्दुरुस्तीका बीमा। लेखक;—श्रीयुक्त बाबू हरिदास वैद्य; प्रकाशक;—हरिदास एण्ड कम्पनी; कलकत्ता। आठवाँ संस्करण है। पृष्ठ-संख्या कोई साढ़े चार सौ। मूल्य अजिल्द तीन रुपये; बढ़िया सजिल्द पौने चार रुपये; प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशकसे प्राप्त। इस समय अन्यान्य भाषाओंकी तरह हिन्दीमें भी स्वास्थ्य-सम्बन्धी पुस्तकोंका बाहुल्य होता जा रहा है, किन्तु यह स्वास्थ्य-रक्षा अनेक पुस्तकोंमें एक है। अपनी उपादेयता, सरलता और उत्तमताके लिये बेजोड़ है। वैद्यक जैसे नीरस विषयको इतनी सरल भाषामें लिखके समझाना यह बाबू हरिदास जैसे सिद्धहस्त लेखकके घोर परिश्रमका ही प्रतिफल है। हिन्दी जाननेवाले दूर-दूर के ग्रामोंमें रहनेवाले देहाती भाई; शहरके जीवनसे बिल्कुल अनभिज्ञ मनुष्य; डाक्टर और वैद्यहीन ग्रामका कृषक केवल स्वास्थ्य-रक्षा घरमें रखके किस तरह भीषण रोगोंसे अपनी रक्षा कर सकता है; यह इस पुस्तक में अच्छी तरह समझा दिया गया है। आज प्रायः वैद्यराजोंकी भरमार हो रही है; इनमेंसे बहुतेरे इस 'स्वास्थ्य-रक्षा' पुस्तक की करतूतसे ही हुए हैं; इस पुस्तकके इतने संस्करणोंका होना ही इसकी उपयोगिताका अकाट्य प्रमाण है। जो तन्दुरुस्तीको लाख नियामत समझते हैं; जो अपने जीवनको निरामय बिताना चाहते हैं और केवल हिन्दी जानते हैं; उनके लिये यह पुस्तक दोस्तका काम करेगी; समयपर वैद्यकी तरह प्राण बचायेगी; बेकारी घटायेगी और चिकित्सा-शास्त्र-प्रेमियोंकी प्रवेशिका बनेगी। पुस्तक सर्व्वथा संग्रहणीय है।"

नोट—सन् १९४२ के जनवरीमें इस ग्रन्थका १३ वाँ संस्करण है। पृष्ठ-संख्या ५३६ के करीब है।